

॥ वाचनम् ॥

॥ १ ॥

॥ ईनमः सिद्धेभ्यः ॥ अथ श्रीनन्दीश्वरदीपपूजाविधानप्राभ्यते ॥ पंडितजिनेश्वरदासजेनकृत ॥ दोहा ॥
अरुहंतमहंतपद ॥ सिद्धस्वहितकरतार ॥ सिद्धदेव निरंशुणुस ॥ भवजलतारकसार ॥ निजपदपदके
भोजयौत्रियोगसम्हार ॥ हृत्याहृत्यजिनेशकीप्रतिमास्तुतिकार ॥ भानदीश्वररक्षीपमेवा
आगार ॥ स्वपरहेतपूजनस्वीसर्वसिद्धिदातार ॥ ३ ॥ जिनराजस्तुति ॥ चालकुसुमलता ॥ धुन्दा ॥ जैजैजैजिनव
राजगन्नाताजनम ॥ असातादूरिकरौ ॥ जैजैजैभवताप ॥ निकंदनभवातापममदूरिकरौ ॥ जैजैजैजगशरण
सहायकममसहाय ॥ भरपूरकरौ ॥ जैजैजैसुखकंदचंद्रप्रभुममउरवासजेरूरकरौ ॥ १ ॥ जैजैकरम
करूरघातिचकचूरकरवलदूरिकरौ ॥ जैजैजैजैवर्षीरुहतिकरनिजशरीरवलपूरकरौ ॥ जैजैकेवलज्ञा
नभानप्रभुमोहमहातमदूरिकरौ ॥ जैजैजैवर्षाति ॥ अशममउरप्रकाशभरपूरकरौ ॥ २ ॥ आननचंद्र
वचन ॥ अमृतसेकुबुधितापतमदूरिकरौ ॥ वसुविधिरनकरनअनुपमसुखसुबुधिप्रकाशजसर
करौ ॥ जगहितकरउपदेशकवानीदिव्यरूपवदुलूपकरौ ॥ सुनरपशुगणसभानिवासीस्वयस
पूरकरौ ॥ ३ ॥ जिनवरचरनखावलिरुपमाकहतशक्रअकुलायेहो ॥ गणधररुषिमुनिभक्ति
इकटकनेत्रलगायैहो ॥ जिनकीप्रभाशचीपतिशिरकेमुकुटरत्नचिमकायेहो ॥ जिनवरचरनस
जनखावलिकेशरममउरआयेहो ॥ ४ ॥ अजडताभ्रमवमकुबुधिविनाशीसुबुधिप्रकाशीसुखदाता ॥

॥ १ ॥

पुण्यसंयाजगमाहीकदाकालकोईभविषांत॥ अजकजसुखसाजमिलो जिनराजसुयशयांतेंगा
 ताख्यातलाभकीचाहनेमैरेआत्मलाभममउरआता॥ दोहा॥ दीजेनिजकीरुद्धिकै॥ कीजेयहउ
 पगाराचाहनेहीपरइव्यकीयरुअरजीवितधारा॥ पुष्पाजलि॥ अथढाईधीपसंवंधी॥ अहतिमजि
 नालयहूनामाह॥ दोहा॥ सार्द्धद्वयवर्धीपमैअहतिमजिनालयेभ्योनमः॥ अत्र॥ अत्र॥ उजल
 शिवधाम॥ उईहीढाईधीपसंवंधी॥ अहतिमजिनालयेभ्योनमः॥ अत्र॥ अत्र॥ उजल
 जलश्रुविसारा॥ कंचनकारीमेंभरो॥ ढाईधीपमजारा॥ जिनवरपदपूजारेत्ता॥ उईहीढाईधीपसंवंधी॥ अह
 तिमजिनालयेभ्योनमः॥ जल॥ १॥ चंदनगंधजुसारा॥ केशसंगयसाईये॥ ढाईधीपमजारा॥ उईहीचर
 ना॥ २॥ अक्षतशशिउनहार॥ कंचनयालविकेंभरो॥ ढाईधी॥ उईहीअत्र॥ ३॥ कुसुमअनेकप्रकारकु
 सुमवानमदहननकौं॥ ढाईधीप॥ उईहीपुष्प॥ ४॥ प्रटरसपूरितसारा॥ वरुउत्तमवनवाईयो॥ ढाईधीप॥
 उईहीचरु॥ ५॥ तमहरजोतिअपारा॥ त्वदीपसुरलावही॥ ढाईधीप॥ उईहीदीप॥ दाफेलीगंधअपार
 उत्तमधूपवनायकौं॥ ढाईधी॥ उईहीधूप॥ ६॥ फलवहुविधिकेसारा॥ उत्तमयालभरोसुधी॥ ढाई॥ उईही
 फल॥ ७॥ जलफलइव्यमिसाया॥ प्रध्वनार्धभावसौं॥ ढाईधी॥ उईहीअर्थ॥ ८॥ दोहा॥ शतमुखशतसे
 वेंसदा॥ जिनवरकमलअनूप॥ सोममउरमैंवासकरु॥ सिरसिखिजरुप॥ ९॥ धंदरु॥ तिवादान॥ जयोजग

में अरुंतमहंत ॥ सुरासुराध्यानधरै सतसंत ॥ प्रकृतिमश्री जिन विं वमलाना म मूंदय अर्द्ध अदीयप्रमान
 ॥ प्रसीपण मेरु विवै जिन धाम ॥ प्रसीवत्तारकहे सुलनाम कुलाचलती सकहे नगदी शतयाग जदंत नि
 नालय वीश ॥ कहे शत सतरि श्री जिन धाम सवै विजयारध के अभिराम सुशालमली जंवूत रुडार ॥ क
 हेदश श्री जिन मंदिर सार ॥ कहे चहुं पर्वत इच्छु अकारण हो जिन मंदिर चार निहार ॥ महागिरमान वउत
 रजोर जिनालय चार कहे चहुं ओरा ॥ सो शत चार सुर सोय विहीना ॥ प्रकृति म सर्व जिनालय चीन्हा ॥ अ
 दाई दीप विवै भविजी वाकरै जिन पूजन देव सदी वा ॥ कहे शत आर सु विं वमलाना ॥ सवी प्रतिहार ज ॥ अ
 रप्रमाना ॥ कलोरचना सम वष्टति सार ॥ प्रना दिवनी ॥ प्रतिही सुख कार ॥ घसुरा सुर पूजत है नय काला ॥ क
 रे वहु भक्ति नवाय सुभाल ॥ सुम्ही उपदेश क हो च देवा ॥ सुम्ही जग में ॥ प्रघघायक देवा ॥ सुखरायक देवा ॥ क्रो
 प्रदायक देवा ॥ भूति कारक वायक देवा ॥ सुम्ही प्रभु जी गुणदायक देवा ॥ सदा भविकों सुखरायक देवा ॥ क्रो
 हा ॥ दाई दीप विवै जितो ॥ प्रकृति म जिन धामा ॥ तिन कों मन वचकाय कों ॥ फु निध करै प्रणामा ॥ ॥ उहो
 अर्घ ॥ सोरठा ॥ वंदौ मन वचकाय म मेरी ॥ परक मल कों ॥ सु मही निज निधि राय यही ॥ जिनै श्वर उर भ
 रो ॥ ॥ इत्याशी वंद ॥ ॥ अथ श्री नंदी श्वर दीप ॥ प्रंजन गिरिके शिखर जिन मंदिर पूजा माहा ॥ कुसुम लता घं द
 नंदी श्वर वर दीप ॥ आहमौ वाकी पूरव दिशामहान ॥ सहस्र वोर सी यो जन ऊँ वा स्याम वरन ॥ प्रजन गिरि

ज्ञान॥ डोलसमानगोलतिरुऊपरजिनमंदिरउत्कृष्टमहान॥ एकशतवसु॥ अधिकीजिनप्रतिमासेन
 पदपूजौउरधारिध्यान॥ १॥ उँहीनंशीघ्रदीपकीसुर्वदिशा॥ अजनगिरकेशिखर॥ श्रीजिनमंदिर॥ योनमः॥ अ
 न्न॥ अन्न॥ पुष्प॥ सुदरी॥ इहतिगंयसुनीरसुहावनी॥ अचिसुभाजनमेंधारिपावनी॥ जलजि
 नेश्वरचरनचढावनी॥ शिवमहीरुहमूलवढावनी॥ २॥ उँहीनंशीघ्रदीपपूर्वदिशा॥ अजनगिरकेशिखर
 जिनालये॥ योनमः॥ जल॥ १॥ मलयचंदनपावनलायकौ॥ कुसुमकेशरसगंधसायकौ॥ जजतश्रीजिनरुष
 वढायकौ॥ लहतभविदुखतापनशायकौ॥ २॥ उँहीचंदन॥ सरसनिर्मलशालिसुहावनी॥ अनुपमानमयक
 मभावनी॥ साय॥ अक्षतश्रीजिनपूजियो॥ पाय॥ अक्षयपदशिषहूजियो॥ ३॥ उँहीअक्षत॥ अतिसुगंधसुव
 र्णसुहावनी॥ कुसुमविधिके॥ अतिहीमावनी॥ जिनपदंबुजपूजार्चाइये॥ अतनतापहि॥ आपवचाइये॥ ४॥
 उँहीपुष्प॥ चरु॥ अनूपपवित्रवनायकौ॥ अतिप्रमोदहृदयमें॥ लायकौ॥ स्वर॥ आचार॥ जौजिनराजकौ॥ करण
 नारसवैसुखसाजकौ॥ ५॥ उँहीचरु॥ शुचि॥ अनूपप्रकाशमहागौरतनदीपमनौ॥ दुतिवानहो॥ स्वर॥ पूजक
 शौजिनराजजी॥ मगटरु॥ छिकरै॥ हितसाजजी॥ ६॥ उँहीदीप॥ अतिसुगंधसुद्वयमिलायकौ॥ स्वर॥ पूजित
 श्रीजिनपायकौ॥ अनुभक्तसनिवारनहेतसे॥ सुखसमाजसवै॥ नितदेतहे॥ ७॥ उँहीधूप॥ सरसमिष्टविशि
 ष्टसुहावनी॥ निजसुयोगमहाफलपावने॥ स्वर॥ नभेटधरौ॥ जिनराजकी॥ लहेरु॥ छिसवै॥ शिवसाजकी॥ ८॥ उँही

ले ॥८॥ जल फलादिकद्रव्यमिलाईये ॥ अर्घ्यश्रीजिनचरनचढाईये ॥ लहतसोजगमेंसबकुठिकों
 कतहेशतसिद्धिकों ॥ उद्दो ॥ अर्घ्य ॥ ८ ॥ दत्ता ॥ जयजयसुखसागरजगतउजागरद्वारलागविश्व
 में ॥ पूजराजं तुमगुणगाऊं ॥ निजनिधियाऊं ॥ रूपायती ॥ १ ॥ जयमाला ॥ धंदमोतियादाम ॥ जयो
 गमें ॥ ग्रहंतमहता ॥ जयौतुमध्यानधरेसुनिसंता ॥ जयोगर्भागमंगलमाहि ॥ शचीपति ॥ आयप्र
 कंराहि ॥ १ ॥ जयौप्रभुदायकसम्यकज्ञान ॥ जयौत्रयज्ञानसमेतमहान ॥ जयौजगमेंजवजन्मदे
 यशदकरैसुरसेवा ॥ सुराधिय ॥ आयसवैजगशीश ॥ वसुगोदलयेवसुधापति ॥ ईश ॥ महा
 मस्तकंपाडुकनामा ॥ महावनजायकियो ॥ विशराम ॥ ३ ॥ तह ॥ अविशेषशिलामणिरूप ॥ नंदोत्रय
 दिव्य ॥ अनूप ॥ सुमध्यसिंहासनपैजिनभूप ॥ विराजितज्यौनभचंद्रसरूप ॥ ४ ॥ सुवर्णसुरत्नजडे
 ना ॥ महाकलशसुरहाथन ॥ अनाभरेजलंपंचमसागरताना ॥ सुहायहिहाथनलायमहान ॥ ५ ॥
 ॥ ॥ स्वन्हावनकाला ॥ जैसुरंदुभिदिव्यरसाला ॥ नचैसुरतारिनवावंतमाला ॥ नने
 विशाला ॥ ६ ॥ महारसभक्तिभरी ॥ सुरनारा ॥ सुजन्ममहोच्छवके ॥ अनुसारा ॥ सुगावतगान
 समवाना ॥ ७ ॥ जैपगनेवरतानसमान ॥ ८ ॥ फनाकननेवरकी ॥ नकाराकरैवहुसुपगमै ॥ धनका
 तनतानने ॥ तानसरूप ॥ धनाधनघोरा ॥ रसंग ॥ अनूप ॥ ९ ॥ सुवीनकजायसुरी ॥ परवीननवौर

भावमईलबलीन॥ तिसी अनुसार करे जयकार॥ सुरा सुरहर्ष हिये अनिवार॥ सुरा सुरधिप नैनक
रोजि ह्वार सवै मिलि शब्द करे जयकार॥ हिन मुदुर्ष हिये अनिवार॥ बजेन भमै सुरदुंदुभिघोर सुधा
यरहौ दशहंदि शिसोरा॥ निरंतर नित्य प्रसन्न शरीरा॥ असंख्य सुरीशु एगान गहीरा॥ करै बहु भक्ति
भरी सत भाव॥ धरे जिन दर्शन कौं उखावा॥ एहो चिरजीव जिनै श्वर आपुरा॥ हो जग मै जय वत प्रता
पा॥ करै हम कौं भव सागर पार॥ बरौ प्रभु जी शिव सुंदर नार॥ एह सरोज गजीवन को हित काज॥ भरो सु
ख संपति श्री महाराज॥ करौ हम रौ भव वेदन॥ आज करौ मम काज गरीवन वाज॥ १३॥ प्रभु यह जन्म
होत्सव सारा॥ हमैं करि यो भव सागर पार॥ सुरा सुर सर्व नवाय जुशीशा॥ नये निज थान क देख अशीशा॥ ध
प्रभू कर राज धरौ तप सारा॥ हरो अरि मोह बली अनिवार॥ लयो वर केवल जान अनूप॥ कही सत तत्व वरा
वर रूप॥ १४॥ बही धवि सुंदर है प्रविकार॥ प्रहृत्य जिना लय मै अनिवार॥ करै सुर सैव सवै सुख कार॥
जिने श्वर कौं भव सागर तार॥ १५॥ पंभू करै एग न धरौ तप सारा॥ हरो अरि मोह बली अनिवार॥ स्वयं मो वर केवल
ज्ञान अनुपम॥ नखो सत तत्व नग चर रूप॥ १६॥ दोहा॥ नंदी श्वर एव दिशा॥ प्रजन गिरि के शीश॥ जिन मंदि
र॥ जिन विंव कैं वंदन या निज शीशा॥ १७॥ उहौ अर्थ॥ नंदी श्वर वर्ध प॥ आरु मो जा निबे ता की चहुं दिशवो
वन जिन गरुड मा भिये॥ पूर्व प्रजन शिखर॥ जिना लय कौं नमो॥ पा प्रशाद जग मां हि मिले बष्ट॥ अनुपमो

।वनपू०

॥४॥

बुधि

॥२॥ ॥अथश्रीनंदीश्वरदीपकेपूर्वदिशमध्यंजनगिरिकेपूर्वदधिसुखपूर्व
परजिनालयपूजामाह॥चालजोगीरासा॥नंदीश्वरवरदीपआढमौपूरवदिशसुखदाईअंजननि
ताकीपूरवदिशनंदवायिकाभार्जतिहिंवीचदधिसुखउजलदधिसमगिरवरगौलसुहाईतापश्री
नमंदिरसोहेपूजनतर्षवढाई॥उईनंदीश्वरदीपपूरवदिशअंजनगिरिकेपूरवदधिसुखजिना
लयेभ्योनमः॥अत्र॥अत्र॥चालजोगीरासा॥जन्मजराअरुमरणमहादुखका
नादिसद्योसोखऔखंडुतदुखजातिजगतमैवाकीनाहिरह्योहेतिहिंदुखरुणकरासुखसाताजल
सौजिनवरपूजै॥परमवीतरागीनिजनिधिकेईशजिनेश्वरहूजै॥उईनंदीश्वरदीपपूरवदिश
नगिरिकेपूर्वदधिसुखजिनालयेभ्योनमः॥जल॥भक्त्यातापतपतयरुयाणीशांतिकभीनहिआवै
रनारकनरपशुगतिमाहीविषयदाहदुखपावै॥सीतलशुद्धसुगंधितचंदनलेजिनमंदिरआवै
श्रीजिनवरपदपंकजशंतिमुधासुखपावै॥उईचंदन॥जोकुछउपजतजगमैदीसेसवत्तय
ताईअथिरपदाथअपनेमानेयेभ्रमंदुखदाईयेभ्रमबुद्धिराणकेकारणअततसौजिनपूजै॥अ
पदकीप्रापतिकारणसुबुधिसतीवरहूजै॥उईअतत॥याजगमैवलंबंतंतनअद्याविशुमरुणाश
कचक्रप्रतिमकरध्वजनेकरकीनेसुरशेखाताअशरीरपीरनिस्वानकारणसुमनमगावै॥देशकाल

जशक्तिसमानाजिनपरकुसुमचढावौ॥४॥उद्दीपुष्यं सकलचराचरकौदुखदातादोषक्षुधाविख्याता
ताकेवशाविललातजीवसबछिननहिपावैसाता॥बहुदुखदूरकराएकेकारणचरुसौजिनवरपूजौ॥हु
धादोषनिरवारजगतजननिजलह्मीपतिहूजौ॥५॥उद्दीपकं॥ मिथ्यामोहमहातमभारीजगजीव
नकेछाये॥तावशमावसपावसकीज्यौज्ञानशशीनलखायौ॥ताकेदूरकराएकेकारणदीपकसौप्र
भुपूजौ॥ज्ञानप्रकाशविषैनिजनिधि कौपायभवि कसुखहूजौ॥६॥उद्दीदीपा॥कर्मगरुनवनमाहि
प्रयानकविषयचोरदुखकारी॥प्रवलकषायसिंहसर्पादिकरहतसदाअतिभारी॥भोवनगरुनदह
नकेकारणधूपदशांगीलावौ॥परमपूज्यअरुतदेवकेचरनअग्रचढावौ॥७॥उद्दीधूपम्॥ जाफलक
रूषिमुनिसवचोहंदशादिकललचावै॥श्रीअरुतचरणविनजगमैअतकहनिहिआवै॥ताफलमाप
सिकारणशुभफलएनरउत्तमलीजै॥श्रीअरुतचरणयुगआगैभेटमनोहरदीजै॥८॥उद्दीफल॥जलफ
लद्रव्यमिलायमनोहरअर्घवनारौभार्दसहुविधिहर्षसहितउच्चवकरित्त्यकरोसुखदाइभवभामरिनि
रवारनकारनअर्घजिनेश्वरआगैभक्तिवढायचढायगायगुणअशुभउसीत्तएभागैरे॥उद्दीअर्घ॥ध
ता॥जैजैत्रिपुरारीजगसुखकारीनुमस्वामीत्रैलोक्यपती॥जिनकेपरपूजैशिवसुखहजेततत्तएपावैशा
नअप्रती॥१॥जयगाल॥छंदसोतियादाम॥जयवंतजगतपतिदेवतुम्ही॥सुखदायकवायकएवतुम्ही॥

॥५॥

अध्यायकदायकदानमहाहृषत्तायकसमकज्ञानकहा॥समवश्रुतिमैप्रभुराजतहै॥शिसूजेकोद
कलाजतहै॥चतुराननआपविराजतहै॥धुनिदिव्यमनोघनगाजतहै॥अहरिआसनऊपरपद्ममहाप
आसनआसनआपगहा॥सुरचामखौसठिठारतहै॥अधपुंजमनोसवटातहै॥अनयधनुमहेश्वर
श्रीशफिरेअनयलोकसुरासुरसेवकरोजहै॥रत्नअशोकविराजतहै॥फलफूलमहाछविछाजतहै॥
नभमैसुरदुभिगाजतहै॥मधुरीमधुरीधनिवाजतहै॥नंदरुप्रभावदुफैलिरही॥भवसातनिहारतस
बैमही॥अमरआवतहै॥सुरपुष्पसही॥तिनकीमहिमानहिजायकही॥प्रतिहारजआठविराजतहै॥जिन
केनिरखेअथभाजतहै॥आमसुतत्वकाशकसेबही॥तवजीवअजीवकहेसवही॥उपयोगमईयह
जीवकह्यो॥निहदर्शनज्ञानदुभेदमह्यो॥अवउदर्शनचतुअचतुमहा॥प्रवधीअरुकेवलउदर्शजया॥बहुभेद
मतिश्रुतिओधिकही॥मनपर्ययकेवलज्ञानसही॥बहुमतिकुश्रुतिकुविभंगमहा॥इमआठप्रकारसुज्ञान
कहा॥असथावरभेदविषैलहि॥सवजीवअनंतप्रभाकरिये॥असचर॥छिंद्रियआदिकहे॥पणथावर
इंद्रियएकलहे॥एषिवीजलेतेजसमीरअवौ॥अरुजानिवनस्पतिभेदसवै॥अरुइंद्रियसूतमवादर्
क्षेविकलत्रयतीनसवीपरहे॥पणइंद्रियदोयप्रकारकहे॥समनाअमनाइमसातभयो॥असमर्यासअप्रया
सकजुकही॥अमचौदरुजीवसमासभईछनआदिअनेकजुभेदकहे॥भविजीवननैसतरूपगहो॥असह्यो

॥५॥

॥५॥

जिनकी छवि छाजत है। जिन मंदिर साहिब गिराजत है। जिन पूजन कौं सुर आवत है। हिरदैव हुभक्ति कदा
वत है। २५॥ जिन गज गणैवन वाज सुनौं। हमरी अरजी प्रभु आज सुनौं। भव पार करै जग ता सुनौं। शिव का
मिनि के भरतार सुनौं। २६॥ दोहा॥ अंजन गिर से पूर्व दिशि दधि मुख गिर जिन धाम। जिन प्रपति विवि विवा
रि के बहु विधि करूँ प्रणाम ॥ २७॥ उद्दी अर्घ ॥ सार क॥ सुनौं स्व पर हित को रटति पती महमजजी। मेरे का
रज सार अथ ही कृपा कर दीजिये ॥ २८॥ इत्याशीर्वाद ॥ २९॥ अथ नंदी श्वर दीप के पूर्व दिशि अंजन गि
रिता की दक्षिण दिशि दधि मुख जिन लय पूजा माह ॥ कवित ॥ नंदी श्वर पूर्व अंजन गिर ता की दक्षिण दिशि
मुख कारण नंदवती वापिका मध्य है दधिसस्तु पद धिमुख गिर सा ॥ दश हजार योजन उन्नत गिर दोल स
मान गोल आकार ॥ ता पर श्री जिन मंदिर प्रतिमा अकृति मवंदूनि रधार ॥ उद्दी नंदी श्वर दीप के पूर्व अंज
न गिर के दक्षिण दधिमुख पर्वत पर सिद्ध कुटजिन मंदिरे भ्यो नमः अत्र अत्र अत्र ॥ पुष्प ॥ उद्दी जोगी
रासा ॥ सहज शंस तो बर सायन ज्ञान विना मुख पायो ॥ तसा तषा बहुत दुख दाई काल अनंत माया ॥ तिहि
दुख के निरवारन कारन सीतल जल ले आये ॥ शोति सुधा सागर जिन वर के चरन नमाहि चढायो ॥ उद्दी नं
दी श्वर दीप पूर्व दिशि अंजन गिर के दक्षिण दधिमुख जिन लये भ्यो नमः ॥ जल ॥ ३०॥ विति च उरिं दी विक
ल त्रय मै भटकि भटकि दुख पायो ॥ विषय चाह की दाह द्यौ जग कवहुन निज मुख पायो ॥ भवा ताप निवा

क्तिभरेसुरहं दसार॥ प्रभुचरणकमलमैवारवार॥ निजशीशनाय उरहर्षधार॥ सुरदेहसकल
 जुसार॥ ह्रमशरणगत आये जिनेश॥ सच दोषमाफ करिजे मेहश॥ ह्रमरंकवाकरीचू
 प्रभुजी करुणा कीजे ह्रमेश॥ मतिमेरी कृति निखो ह्रजू॥ विरदा अपनो करो पूर॥ विनकारण
 जगबंधव जिनेश॥ यहनसमनिवाह करौ ह्रमेश॥ भवभवमै मिलियो तुम्ही देव॥ भवभवमै मि
 गुरुसेव॥ भवभव जिनबानी ग्रह न देवा॥ हे देव जिनेश्वर सुयश लेवा॥ दोहा॥ श्री अरहत महं
 जो पूजे मन लाय॥ छलिसिद्धि जगमै मिले॥ सुख पावै शिव जाय॥ ध॥ उद्दी अर्घी॥ सारठा॥
 छंदोतार॥ सिद्ध देव मम उख सो॥ करो कर्म परिहार॥ हवा छमैरी कुरो॥ ध॥ पुष्प॥ ॥३॥

प्रथम नंदीश्वर दीपपूर्व दिश अंजन गिर के पश्चिम दधिमुख जिन लय पूजामाह॥ कुसुमलता छंद॥ नंदीश्व
 व अंजन गिर ताकी पश्चिम दिश मै जाना नंदोत्तर वापिका मध्य ह्रद धिमुख गिर दधि वर्ण समान॥
 शीश जिनेश्वर मंदिर त्वमर्द्ध उत्कृष्ट महाना॥ तामै जिन वर विंच विराजे॥ तिन कै पद पृजे गुण खाना॥
 उद्दी नंदीश्वर दीप पूर्व दिशि अंजन गिर के पश्चिम दधिमुख पर्वत पर सिद्ध कुटोच्यो नमः॥ अत्र अत्र
 पुष्प॥ चाल चौपाई॥ जन्म जरा मरणो दुख दर्शनाथ तै रहित तुम्ही जग रंश जल सौ॥ जिन वर पूज रचावै
 नम रण या तै नहि पावै॥ उद्दी नंदीश्वर दीप पूर्व दिशि अंजन गिर के पश्चिम दधिमुख जिन ल

नमः॥ जलं॥ १॥ कर्म उदय दुखदाह प्रपाश सो तु मने की नो प रिहारा मी तल चंदन आ निचढा आया तैरा
त मुधा सुख पाऊ ॥ उद्दी चंदनं ॥ अक्षत पुंज म नो हरे जै श्री जिन वंकी भेट करी जै ॥ अक्षत य पद के पा
वन का जै पूजत भवि जन श्री जिन रा जै ॥ ३॥ उद्दी अक्षतं ॥ कामवान दाहन के का जै कामवान दाह क ज
न रा जै पूजत जन्म सफल हो जावै प्रगट स्वभाव ज्ञान दर्शावै ॥ उद्दी पुंज ॥ दोष दहन गुण ग्रह न अपा
रा श्री अरु त चरा सुख का रा दोष तु धा निरवार न का जै बरु सौं पूजत श्री जिन रा जै ॥ ५॥ उद्दी चक्र ॥
ज्ञान विना न रं प्रध समाना ॥ आ पा पर को भेदन जाना तम अज्ञान न शा वन का जै दीप क सौं पूजौं जि
न रा जै ॥ उद्दी दीप ॥ कर्म कलंकर हित जग नामी नंत चतुष्टय मंडित स्वामी कर्म कलंकर विनाशन का जै
खेवौ धूप जिनेश्वर आ गै ॥ उद्दी धूप ॥ मोक्ष महा पुर उत्तम भारी जा भैरु लौकिक शिर दारी तितिं पुर क
जर ए के का जै फल सौं पूजत श्री जिन रा जै ॥ ५॥ उद्दी फल ॥ जल फल द्रव्य मिलाय वनाये उत्तम अर्घ्य प
वित्र सुहाये ॥ जिन वर पद पूजत मुख पायो जन्म जन्म को अशुभ नशा यो ॥ ६॥ उद्दी अर्घ्य ॥ जय माला ॥ दो
हा ॥ श्री जिन वर पद पूजि कै रिर देव पुत कुशाल भक्ति सहित जिन एज की अव वर नौ जय माला ॥ चाल
अहो गुरु देव की ॥ जै जै जै जिन रा जतु मजग दीश्वर स्वामी मेरी अरु जै सुनिये अंतर्जामी ॥ अथा म
व वन के माहि काल अनंत गमायो सुख को नाम हुना हि दुख ही दुख बहु पायो ॥ ७॥ इक इद्रिय तन माहि

लअग निसमीगाघनस्पतीकीकायपाईवहुविधिमीगाधफोरितोरदेरुखोदकुचरैवहुभारी॥दोरैवो
 खअनिवारी॥उदयभयोदुर्भागदमरीरूंकविकार्योबहुरिपचायोआगसागह
 भासाईत्रसपरजायविकलचतुक्कारीगासमूर्धनतनपायवहुतसहीअतिपीराघसेनीपशुन
 विबैदुखपायोतनधनसौकरनेहविधरतवहुघरायोअविधिवशनकंमकारअथवास्वर्ग
 ॥ज्ञानविनाअविचार्योहीजन्मगमायोअहमचार्योगतिमाहिफिराफिराथिनरहायोनिजहित
 एउपावसम्पकज्ञाननपायोअत्रअपायोयहदावहुमजिनदेवनिहारेधनियरुदिवससुभा
 धनिभागहमारेअपायेजिनवरदेवशीगुरुपरमविरगीधर्मदयामयएवसम्पकबुधिरधारी॥१९
 प्रपनोसुगुएविशालविद्याव्रतहितकारीदीजेदेवहपाललीजियशजगतारी॥२०मेरेउरयहचाह
 नदूजीस्वामीमूरनकरजगनाहतुमसमरथसुखदामी॥आज्योआगेजिनदेवजगजीवनसुख
 ह्योअजहंसयमेवममदितकरनिजचीनो॥२१दोहा॥गएधरपारनयावहीहारेसुरपतिशेष
 समरथहेजगतमेजोकहिसकैविशेष॥२२उईअर्घ॥सोरठा॥नाममानआधारअविवेकीप
 सोजिनवरउरधारमेयोनलेहेसुखसंपदा॥२३इत्याशीवादा॥५॥अथनंदी
 पपूर्वदिशिअजनगिरकेउत्तरदधिसुखजिनालयमूजामाह॥कुसुमलताधंद॥नंदीश्वररहीपआठ

मों ताकी पूरव दिश अ विका रा स्या म व र ए अंजन भू धर के उत्तर दिशि दधि मुख गिर सा रा न दिखे ए वा पी
 म धि रा जै स्व त वर्ण म न र न अ पा रा ता प र जि न में दि र की प्र ति मा ति न प र ज जौ वि न य उ र धा रा ॥ उ ह्रीं न
 दी श्व र दी प पूर्व दि श च त्रु र्ध द धि मुख जि ना ल ये अ न मः ॥ अ न्न न ॥ अ न्न न ॥ पु ष्य ॥ कु सु म ल ता छ द ॥ प म्प ड रु
 स म उ ज्ज ल ज ले ले शु चि शी त ल उ र भ क्ति व द्या ज न्म ज रा दु त दू क र ए कौ जि न च र णा कु ज दे य च ढा य मं दी
 श्व र के पू र व दि श में अंज न गि र सो हे सु ख का रा ता की उत्तर दि श द धि मुख गि र ता प र पू जं जि न ग रु सा र
 ॥ उ ह्रीं नि दी श्व र दी प पूर्व दि शि च त्रु र्ध द धि मुख जि ना ल ये अ न मः ॥ ज ल ॥ वा व न चं द न दा ह नि कं द न कु
 कु म अ रु क र पू र मि ला य मू न सु खी ज ग त प ति प द कौ सु ख का रा ए पू जौ ह र बा या ॥ उ ह्रीं चं द न ॥ श शि
 स म स्वे त कि र ए मो ती स म उ ज्ज ल अ क्ष त धो य व न थ ॥ अ क्ष त य नि धि प ति य मे श्व र के च र ए क म ल पू जौ ह
 र धा य ॥ उ ह्रीं अ क्ष त ॥ कु सु मा द धि स रोग नि वा र त कु सु मा यु ध वि ज यी जि न र ज कु सु म पू जि नि दी व मि
 ला क र जि न च र न में दे त च ढा य ॥ उ ह्रीं मु ख ॥ फे नी गुं जा मो द क खा जा ता जा तु र त हि ले त व ना य सु धा ह
 र ए जि न च र ए क म ल भ वि भ क्ति स हि त जि न दे त च ढा य ॥ उ ह्रीं चं द ॥ श शि स म उ ज्ज ल वि वि ध व र ण के
 अ थ वा दी प क अ न्य प्र का रा श क्ति स मा न शु छ दी प क सौ जि न व र प द पू जौ हि त का र न ॥ उ ह्रीं न
 द श वि धि धू प सु गंध व ना क र ह र्ष स हि त जि न में दि स्ता य क र्म द रु न का र ए जि न व र के च र ए अ ग्र खे वा

बौवनपू.
॥८॥

चितलायनं॥ उद्दीर्घं॥ ७॥ सरसमिष्टफलशुचिफललेकैवीतरागकेपदउरध्यायवीतरागपद
काजसुधीनरजिनचरणंबुजदेतवढायनं॥ ८॥ उद्दीर्घं॥ जलफलवसुविधिद्रव्यमिलाकरप्रर्धव
नावतमनहर्षया॥ वसुविधिरुतनजतनजिनपूजनकरतजिनेश्वरकेपदपायनं॥ उद्दीर्घं॥ जयमा
ल॥ दोहा॥ वसुविधिजिनपदपूजिकैससुविधिअंगनवाया॥ सुविधिवढावणवुधिपणीगुण
रयाय॥ मद्धीछंद॥ जेजेजगदीश्वरतुमरुपालसुभक्तिकैरेसुलायभालाप्रभुसमवशरणकै
जानउपदेशकरतकरुणानिधान॥ सतधर्मदेशनाकैरेदेवसुनिश्चावकधर्मदुभेदएवसुनिधम
नागारीमदानग्रहवासोधर्मछितीयजाना॥ सवधर्मरूपसरधानजानासम्पददर्शनआगमप्रमान
ताकेसवभेदकेहपुराण॥ सोसुऐभव्यसुरुचीमहाना॥ जीवादिससतत्कार्यजाना॥ तिनकीप्रतीत
क्रमानासहिसंशयादिइनमैलगाराणषचीसदोषकरहितसारा॥ अग्ररुतदिगंवरसुगुरुदेवाछन
नीआगमलखेकाइनकीप्रतीतदृढसतसरूपासोसम्यकहैचवहाररूपा॥ धर्मोनिश्चयनिजआतम
शालासवजानप्रवर्तैसुगुनखाना॥ अथआगेदोषपचीसजाना॥ जिनकौल्यागेसमकितमरुता॥ स
दिकआगेदोषस्यागमदआरहितदृषयंथलसा॥ सजिबदअनायतनपंथरूपा॥ सयषदतात
शुद्धरूपा॥ भाविनसंसारसमुद्रपाणकबहूनहिप्रावैभव्यपाण॥ जयतपव्रतपाविनविकल्जान

॥९॥

का विन विंदी महाना ॥ श्री जिन वरनेये प्रथम सार ॥ उपदेश कियो जग हित विचार ॥ ताही किम कहत म
 एग एगो श ॥ सव परसे दिगंवर गुरु अशेष ॥ १७ ॥ यहु जिन वर आज्ञा समरु वीरा ॥ सम कित गुण हिर देखी ॥ रघी
 रा ॥ यहु दुर्लभ नर भव पाय वीरा ॥ नर स्व हित काज मन लाय वीरा ॥ १८ ॥ जय जय जग वधव देव सार ॥ जिन
 नै जिन धर्म कियो प्रचार ॥ जय जय विनकार ए हित सरूप ॥ जग जीवन कौं कल्याण रूप ॥ १९ ॥ जिहि मग
 जग जीव अनंत वार ॥ शिव पुर पहुंचे पंहुंचे अपार ॥ जिहि मग की महिमा ॥ अग मजान ॥ कर सकै नही सुर
 पति वखान ॥ २० ॥ मैं हाथ जोडि मै शी शनाया ॥ नवकार करूं मन वचन काय ॥ मेरे उर तिष्ठे वै स्वभाव जो
 मोहि वन वै मुक्ति एय ॥ २१ ॥ हे करुण निधिय ह ॥ अज सार ॥ अहंत जिने श्वर सुणि ॥ अवार ॥ अवढील
 करै मत देव ॥ एवम मकार ज सब की जो स्वमेव ॥ २२ ॥ दोहा ॥ श्री अरुंत अपार गुण को कहि सकै वखा
 ना ॥ नाम मात्र उधारि कै ॥ प्रोवेशि वकल्यान ॥ २३ ॥ अर्ध ॥ सार ॥ सुनौ अगत पति देव ॥ शिव मग साज
 क साज देखत नौ ॥ यश प्रभु लेव तुम दाता ॥ शिर ताज हो ॥ २४ ॥ इत्या शी वीदः ॥ २५ ॥ अग्रमने
 दी श्वर दी ग्यूरु वदि रावा ॥ पिका प्रथम रतिकर ॥ पूजा महा ॥ गीता छुद ॥ वर दी पंनं दी श्वर मनोहर दिशा ॥ पुर
 जानिये ॥ अंजन मला ॥ गिरनं दवा पीव हिर कौन प्रमानिये ॥ ति रुथान रतिकर ॥ जान पर्वत कन कवण सुन
 वनौ ॥ सां पर ॥ जिने श्वर भवन सो हे सुग सुर मन मोहनौ ॥ २६ ॥ उद्गो नं दी श्वर दोष पूर्व दिश प्रथम रतिकर ॥ पर्वत

रजिनालयेभ्योनमः॥ अत्र॥ अत्र॥ पुष्पं॥ प्राणीश्रीजिनवरपदपूजियेजाकेपूजतपातकजायप्रा
 ॥ उज्जलजलशुचिशीयगेभरिकनककटोरीसारभाणीश्रीजिनचरणचढायासवजन्मजरानिरवारया
 नंदीश्वरपूवदिशारतिकरगिएहिलोजानाभाणीतापरश्रीजिनपूजियेजिनवरविवअहतिमजाए
 ॥ उद्दीनेदीश्वरहीपपूवदिशप्रथमरतिकरजिनालयेभ्योनमः॥ जल॥ प्राणीकेशरचंदनडारिकैकरपूर
 गंधमिलायभाणीकर्मनिवारणकारणैजिनचरणजैमनलायाभाणीबानंदी॥ उद्दीगंधं॥ प्राणी
 मसमानसुहावनौमुकाफलकीउनहारभाणीअक्षतसंजुचढायेकैपदपावौअक्षयसारभाणीबानंदी॥ अ
 उद्दीअक्षत॥ प्राणीउत्तमकुसुमसुहावनेशुचिगंधमनोहरसार॥ अथवासुवरणआदिकैजिनचरणज
 जैअनिवारभाणीबानंदी॥ उद्दीपुष्पं॥ प्राणीधेवरमोदकआदिलेनानाविधिपकवानाभाशुक
 रिलीजियेपदपूजैश्रीभगवानभाणीबानंदी॥ उद्दीचक्रं॥ प्राणीदीपमनोहरलीजियेनिर्दोषशक्ति
 मानाभाणीश्रीजिनवरपदपूजियेयातैपावौकैचलजानाभाणीबानंदी॥ उद्दीदीपं॥ प्राणीचं
 रकरपूरलेशविधिकीधूपवनायभाणीखेवौजिनगृह्णाइकैयातैकर्मवलीजिजायाभाणीबानंदी
 ॥ उद्दीधूपं॥ प्राणीफलवहुविधिकैलेयकैशलाअरुलौगवदामाभाणीश्रीजिनवरपूजाक
 वौशिवअभिरामभाणीबानंदी॥ ॥ प्राणीजलफलद्रव्यमिलायकैकरिअर्घमहाअभिरामभाणी

श्रीजिनैवरयद्रूजाकोगोयातेंपावोंअविचलधामआणीअनंदीबडे॥उहोअंधीअयमालादीवा॥पूरबअ
 जनगिरतणो॥रतिकप्रथमविशालाअरुतिमजिनगरहजहोभाकीसुनिजयमाला॥पछडीछंद॥जैनरी
 अरदिशपूर्वजानजेअंजनगिरपर्वतमहानजयताकीपूरवदिशअनूपजेनदावापीजलससूपराजे
 ताकीबाहरकोनमध्यजेरतिकरपर्वतस्वयंसिद्धकुंचोयोजनइकसरसजानजेतायजिनगरहशो
 भ्रमानअलिवाईशतयोजनप्रमाणचौडार्द्धहपचासजानयेपचरुतरयोजनऊंचजाससवसमोशरण
 शोभाप्रकाश॥शतआठरुलमयजिनसस्तूपमझासनगरजतहैअनूपबत्तीसजुगलसुरचमरहाथ
 दोनोफसवाडेसाथ॥अजयध्वत्रतीनअतिजगमगायाजिनकीमहिमावरणीनजायाबहुमगल
 इव्यधरेअनूपबहुमातिहार्यमंगलसस्तूप॥अजिनविंवविराजेअंतरित्तवैराग्यभाववाहैसुभित्त
 जिनकीमहिमाकहुंकहिनजाया॥मनुअप्रवीहसेवोलेसुभाव॥अजयलालवरणनखमुखमहानजे
 नयनस्यामस्वितअरुनजानअयभौहऔरशिरकेशस्यामवाकीघारीसवस्पर्णधाम॥अजेजिनदे
 खतवढतमोद॥भविजीबलहेसमकितप्रबोधजेवर्षवर्षमेंतीनवारजेकतिकफंगुणसाढसारह
 जेअंअच्छादिनहर्षधारासवदेवकरैपूजनअपाराबहुगीतनत्यवाजेकजायादिनरातिजिनेअरभ
 किभाया॥१॥हमएक्तिहीनपहुंचोनजायायातेंअप्रनेघरभकिलाया॥जिनरजअपकोकरैध्यान

जिनवरपूजेआगमप्रमाण॥२॥तुमचरणकमलकल्याणरूप॥ममहृदयविराजोहितसरू
प॥हमशरणगतआयेहृपाल॥जगबंधवकीजेरुपाहाला॥यनिजदर्शनचारितज्ञानरुद्धि॥दी
जेप्रभुजीजगमेंप्रसिद्ध॥ससारस्वारतेंकरोपारा॥यहअरजजिनेश्वरसुनोसारा॥३॥सोहा॥पहिले
रतिकरजिनभवने॥पूरायहजयमालमनवचकायलगायकेंभव्यनवावतभाला॥४॥उद्गीअ
र्ध॥सोहा॥सुखदाताजिनराया॥जगतविषैसाताकरो॥यहअरजीशिरताजा॥आशजिनेश्वरकी
भरो॥५॥इत्याशीर्वादा॥॥७॥ ॥अथनंदीश्वरदीपपूर्वदिशिपूजाद्वितीयरतिकरमाहा॥कि
विष्णु॥पूर्वअजनगिरिताकीपूर्वदिशिमंदिरसुखकारणनदावापीवहिरकोनमेंरतिकरपर्वत
वृजोसार॥स्वर्णवर्णगोलतलऊपरऊंचोयोजनएकहजारतापरजिनगरहजिनवरप्रतिमाजिन
पदपूजनेमित्रयचार॥॥उद्गीनंदीश्वरदीपपूर्वदिशिद्वितीयरतिकरजिनालयेभ्यानमः॥जउं॥
बंदनसरससुगंधकरमिलार्हण॥सवरत्नकदोरीमेंधरिलार्हण॥भवातापनिवारणकारणवृजिये
श्रीजिनवरकैचरणसुखीनितहूजियो॥॥उद्गीचंदन॥वासमतीसुखदासकमोदअनूपहोचंदकिरण
समतदुलस्वत्तसरूप॥अक्षयपदकेकाजभक्तिउरलायको॥जोंजिनेश्वरचरणजिनालयजायको॥३
उद्गीअत्तना॥वरणवरणकेकुसुममुहावने॥सुखअनूपमशक्तिसमानवनावने॥कामवाणकेदाहक

जिनपदपूजियो। कामदाहनदिव्यापेनिर्भयहजिये॥ उँहीधूयं॥ व्यंजनबहुतप्रकारअनूपवनाई
ये। षटरसमयमुखकारजिनालयजाईये। लुधोहरएकेकाजभक्तिउरलायकै। जजौलुधाहरदेव
चरणचितलायकै॥ ५॥ उँहीचक्र॥ दीपलनमयसारतथाशुचिव्रतमई। तथाआपनारूपऔरबहु
विधिसहीमोहअज्ञाननिवारज्ञानपतिहजिये॥ उँहीदीन॥ दशविधियपवनायसुगंधअपाए
खेवौजिनपदअग्रभक्तिउरधारै॥ धूपधूममिसदुष्टकर्मअरिजतहोयहीभावउरधारपूजभवि
करतहो॥ उँहीधूयं॥ एलालोंगविदामणुहारैसारहै॥ औरविविधिकेशुचिफलसुवरागाराहै। भ
क्तिभावउरलायजिनागममैंसजो। सुक्तिमहाफलकाजजिनेश्वरपदअजो। पाउँहीफलं॥ बहुविधिकी
शुचिद्रव्यमिलोवेसर्वही॥ पूजजिनवरचरणकमलचययर्वही। मंदीश्वरजिनधामहृदयमैंलायकै॥ पू
जंश्रीजिनचरणसुहर्ववढायकै॥ उँहीअर्घ॥ जयमाल॥ त्रिभंगीछुट॥ जयजयस्वामीत्रिभुवनना
मीशिवसुखधामीधर्मयतीमैंतुमपदध्याऊंसुगुणमनाऊंअचलरुद्धिदोहपापती॥ मछडीछर
जेतीर्थकरत्रिभुवनदयाल। एतइंजैजैनितनायभाल। तुमचरणकमलकीहुतिप्रवाह। सुरमुकट
प्रभादूनीलखाव॥ जयजयमुखचंद्रप्रभाअनूपजयजयजिनवचनसुधासरूप॥ भविजीवनकेदुख
जन्मरोगजयश्रवणकलसकजायसोग॥ गतिआरवोएसीलखयोनि। बहुवारभ्रमोदुखजियस

मोनाये दुर्लभनरपरजायपायमतिभ्रातिगमां वो सुकल आया ॥ नित इतरनिगोद दुर्भेद जान भूते ज
वायुपाणी प्रमाण ॥ सब सात सात सब जो निभेद ॥ शलाख बनस्पति चो निखेला ॥ विकलें द्रिय दो दो
ख जाना ॥ पंचें द्रिय पशु च उलाख मान ॥ सुरनारक च उच उलाख सार ॥ मर जो निच तुर्द शलाख जान ॥
मलाख चौ रासी जान भेद ॥ इन माहि भ्रम तबहु लहत खेदा ॥ हे दीन वंधु जग पति दयाल ॥ तुम इन सब से
रेक पाला ॥ धस सार भ्रम एतैं दूरे होय ॥ सो किरिया करि सुख दमोय ॥ सो सर्व प्रकाशी हे जिनेश ॥ इन ज
उपगार कियो अशेष ॥ अजिहिके प्रभाव ॥ बिमुनि महुं ॥ निजरू छिले हे जग पुण्य वंता ॥ अजह
करै प्रकाश ॥ भविषिव पद पावै जिहिं उजासा ॥ यहै पुण्य वंत ॥ अरुं तंदेव ॥ जिन की नित करत सुरेश से
रुमशी शन बों वंत वारवार ॥ तुम गुण हिरदै में धार ॥ धाय ह ॥ अजक रत वहु विधि पुकारा ॥ संसार
रतैं कै रोपा ॥ तुम ही जग में वरदाथ देव ॥ कर जो रिजिने ॥ अरु करत सेव ॥ १० ॥ घत्ता ॥ जय जय सुख
कजग पति नायक ॥ अघ घायक नै लोकाप पती ॥ तुम ही सब लायक हो वरदायक ॥ दो गुण लायक सर्व प
११ ॥ अर्घ ॥ सो रठा ॥ तारण तिरण जिहाज ॥ स ॥ असार संसार में ही न वंधु महा राजा ॥ मम उवा स क
सदा ॥ २ ॥ इत्याशी वीद ॥ ॥ ११ ॥ ॥ अथ श्री नंदी श्वर श्री पपूर्व दिशत तीव्र रतिकर पूजा माह ॥
कविता ॥ नंदी श्वर पूरव अंजन गिरता की दक्षिण दिश मै जाना ॥ नंद वती वापिका वहिर को न मध्य मेर

ति करमान एक सहस्र योजने उन्नत तन कंचन वरन गोल पहि चान तापर जिन मंदिर जिन प्रतिमा तिन पर प
जं उर धारि ध्यान ॥ १ ॥ उद्दी नंदी श्वर रूढी पर पर्व दिश अंजन गिर के दक्षिण दिश बहिर कौन मैल ती यजिना लजे
भ्योन सः ॥ अन्न ॥ अन्न ॥ पुष्पा ॥ अथाष्टकं ॥ चाल घंटा जल उजाल चं प्रसमाना ॥ शुचि कंचन भंगम
राना ॥ जिन वर के चरण बढावै स मुज नम मरण दुख जावै नंदी श्वर पूरव जानौ ॥ अंजन गिरि दक्षिण मानौ
रति कर पर जिन गरुह सो हो सुर अमु रजै मन मो हो ॥ उद्दी नंदी श्वर रूढी पर पूर्व दिश अंजन गिर के दक्षिण दि
शित ती यरति कर जिन लये योन म ॥ जल ॥ शुचि चंदन के शालावो ॥ जिन वर पद अंगु चढावो ॥ भवता
पस वै न शिजावै कणु ज नम लेय शिव पावै नंदी ॥ उद्दी चंदन ॥ सित स्वत्सर लघु चिसारा ॥ अक्षत के पुज
अपाग ॥ श्री जिन वर अग्र धरी जे ॥ अक्षय पद संपतिली जे नंदी ॥ उद्दी अक्षत ॥ बहु विविध वरण सुख कारी
दश दिश सुगंध विलारी ॥ शुचि पुष्प जिन श्वर आगै ॥ धरम दन मोरु ॥ अगि गौ नंदी ॥ उद्दी पुष्पा ॥ चरु
विविध प्रकार वन वै ॥ शुचि श्री जिन मंदिर लावै श्री जिन पद अंगु चढावै ॥ सव पाप कर्म न शिजावै नंदी ॥ ५
उद्दी चरु ॥ दीपक निज शक्ति समाना ॥ अरु शक्ति प्रमाण कलाना ॥ श्री जिन वर अंगु चढावै ॥ क्रम क्रम के व
ल पद पावै नंदी ॥ ६ ॥ उद्दी दीप ॥ दश गंध हुताशन माही ॥ खेवै बहु भक्ति चढाई ॥ तसु किंचित भव के माही
वसु कर्म अरी जलाई नंदी ॥ ७ ॥ उद्दी भूपत ॥ फल परम सुगंध अयाण ॥ शुचि शोभित कंचन थारा ॥ जि

नवरकीभेटकरीजेक्रमक्रमशिवनाखिरजिनंदी॥८॥ उंदीफुलं॥ जलफलवसुद्रव्यमिलाईपुभ
अर्घवनाई॥ श्रीजिनपदपूजराघो॥ निजजन्मसफलकरपायोमंदी॥ ९॥ उंदीअर्घ॥ रतिकरजिन
रुभवनकीपूजाकसुविशाल॥ अवजयमालावरनअभक्तिसहितनयमाल॥ १०॥ पछडीछंद॥ जयज
नराजमहानदेव॥ त्रैलोक्यसुरासुरकरतसेव॥ जयसमवशरणकैमध्यसार॥ पतुराननराजेनिराधार॥
वसुमातिहार्यमंगलसुदर्ष॥ इत्यादिअतुलमहिमासुसकी॥ लोकोत्तरलक्ष्मीदेवशेष॥ सवविस्मयवंतभये
सुरेश॥ धुनिदिव्यअनंतरघनसमान॥ प्रतिअवणसुखदगरजेमरुना॥ नहिहोततालवालगेसोय॥
नहिजीभकंदतनहलैजो॥ अक्षरअतिशयवंत॥ अवाजसार॥ संधिअवणमाहिअक्षराक्षर॥ जयसुर
पुजोजनरुज॥ होवेतिनकेसंदेह॥ ११॥ तिजातिआदिवहुभेदसार॥ हरणयेमभुनेवहुमकार॥ जना
जातिभेदजिनराजभूषणनवेतचोपण॥ अक्षरूपा॥ इन्दीजो॥ आत्माकोसुविस्तार॥ सोइंदीजानो॥ अवि
आहमिद्रदेवस्वाधीन॥ जेमानिजविषय॥ अक्षस्वाधीनतेमा॥ सोइव्यभावकरिहोयमेद॥ प्रनकेभीदोदो
वेदभावेंदी॥ आतमअंशजाना॥ इव्येंदीतनुउपकरणमाना॥ भावेंदीज्ञानस्वभावसार॥ इव्येंदीजइपुज
प्रचारभावेंदीलब्धमुपयोगरूप॥ जीनिर्वलुपकरणरूपा॥ विधिकेत्तयापशमज्ञानअध्यासो॥ जानो
भावेंदियलब्धिज्ञाननप्रवर्तिजो॥ तदनुसार॥ सोभावेंदीउपयोगसार॥ सामार्गणवर्गणाजीवसंग॥ निरुति

जानौ अभंग॥ सितस्याम अरुण इत्यादि रंगाद्वारा पलक आदिसर्वजन उन्मगा ह्वाये सब उपगार सुभेद जान
जिनवर नैकी नो श्रुत वयाना मरुधन्य देव उपदेश दाय हंस कौ भव भव हूँ जो सहाया रह्य लुमवच जग माहिक
रो प्रकाश पातैं भविष्य वै मुक्ति वासा विनकार ए जग हित कर ए जा सा निजरु छि जिने भर यही आशा राख
दोहा ॥ जिनवर चरण सो जल खालो सदा हमशीश ॥ प्रजनिने भर की यही पूरा फल जग दीश ॥ २३ ॥ अर्घ्य ॥
सोरठा ॥ रतिकर जिन गृह सार मूजा मुख राय कस दा येन रसन वच धार का पूजा जिन राज की ॥ २४ ॥ इत्याशी वर्
दा ॥ १८ ॥ ॥ अथ नंदी श्रद्धी पंथूर्वादिए चतुर्थ एति कारिनालय पूजा माह ॥ कुसुम लता बंध

नंदीश्वरपूरवअंजनगिरताकीदक्षिणादिशाअनूपवापीवाहि। कोनवीचमेंवैयोगतिकरस्वर्णसस्त्याएक
सहस्रयोजनकोइंचोबोलसमानगोलसमस्तप्रातापरजिनगरहप्रतिमावंदेमुखदायकजोशांतसस्त्याए
उड्डीनंदीश्वरदीपपूर्वदिशचतुर्थरतिकरपर्वतपरजिनालयेभ्योनमः॥अन्न॥अन्न॥अन्न॥सुब्बा॥चाल
अस्थान्हिकाकीपूजाकी॥गंगासमनिर्मलनीरप्राशुकशुद्धमहाभरसुवरएगंधगहीरहिरदेहबंलहानंदी
श्वरपूरवकोनअंजनगिरिसोहोदक्षिणरतिकरजिनभौनपूजतमनमोहो॥उड्डीनंदीश्वरदीपपूर्वदिशच
तुर्थरतिकरजिनालयेभ्योनमः॥जले॥थ॥केशरकरपरमिलायचंदनगंधमसा॥पूजंजिनवरपदपायशांत
स्वभावगहामंदी॥थ॥उड्डीचंदन॥तंदुलसितचंदसमानसरलसुगंधभरो॥करपूजजिनेश्वरयानसवअ

घं पुं जहरे नंदी ॥ ३ ॥ उँ ह्रीं अक्षतं ॥ वर सु मन सु मन सु खदा यद्वा ए द ग न प्यारे जिन वर पद पू ज र चा य का म
 वा ता रो नं दी ॥ ४ ॥ उँ ह्रीं पुष्पां ॥ च रु स र स अ ने क प्र का र उ त्त म व न दा वो जिन वर पद भक्ति सु धा र मू ज त सु
 वो नं दी ॥ ५ ॥ उँ ह्रीं चं ॥ अ ति उ ज ल ही प व न य जिन पद पू ज त सो सो भ वि ज न के व ल पा य शि व प ति ह
 न ह्ये नं दी ॥ ६ ॥ उँ ह्रीं दीपं ॥ रु हा ग र म ल य क पू र्ण पु सु ग ध के रो वि धि द ह न ग रु नै गु ए पू र्ण जिन पद अ ग्र य
 नं दी ॥ ७ ॥ उँ ह्रीं धूपं ॥ फ ल उ त्त म व हु य र का रु स र स सु ग ध भ ये भ वि पू ज त जिन पद सा र व सु वि धि ना श
 रो नं दी ॥ ८ ॥ उँ ह्रीं फलं ॥ ज ल फ ल व सु द्र व्य मि ला य जिन गु ए गा व त ह्ये भ वि पू ज त श्री जिन पां य सो
 जा व त ह्ये नं दी ॥ ९ ॥ उँ ह्रीं अर्घ्यं जय माल ॥ दो हा ॥ नं दी श्व र पू र्व दि श र ति क र वो यो जा न मू ज न क र जि
 भ व न की वि न य क रू हि त मा न ॥ प ऋ डी छं द ॥ जै जै जिन रा ज द या नि धा न ॥ गु ए सा ग र आ ग र ध र्म
 न ॥ तु म व र ण क म ल कौं श चो ई श ॥ नि त न व न क र त नि त ना य शी श ॥ ज य द या ध र्म कौं स दु प दे श
 द या नू जी अ शे क्क नि ज आ त म की र स्ना क रं ता अ ग्र ध मूल म हा मि ष्ठा रु रं ता ॥ क र श क्ति स मा न कं षा
 ती न म र से छि भ क्ति मे स दा ली न नि ज श क्ति मा न व त क रै भा वा य रु ख द या जा नौ हि त उ पा वा ॥
 स क ल प र जी व ण शि ता प र क रु ना म न व च प्र का श ष ट का य जी व आ ग म प्र मा ण प्र त्य स के व ली
 खे जा न ॥ भू ते ज नी र त रु प व न रू पा ये पं च क ह्यौ या व र स रू ष ॥ न य काल ए क त सु काल भ वे वा

चठपंचेदीकहेदेवा॥ इम छहौं कायरक्षक महान॥ सोपरम दिगंबर सुगुरु जान॥ नित इतर निगोद दु
 भेद जान॥ सरवर विनया वरचा रमान॥ द्यह छहसूतम अरु थूल रूप॥ इम वारु भेद भये अनूप
 दो भेद वनस्पतिके मिलाय॥ विकल त्रय मिलि सतरा मिलाया॥ मन सहित रहित दो भेद जान
 पंचेदी और करो मिला न॥ इम उगनि शजीव समा सहो या इत की रक्षा पर दया सोया॥ द्यह दया भे
 द गभित अनूप॥ सब जीव भेद गुरु कियो रूप॥ गो मट सार अगम प्रमाना ता में देखो है बुद्धि मान है
 इत्यादि दया वरनी महंत जो धोरै निज सो गुण है संत॥ हे देव दया निधिक र्म जीति मुम भये सुखी स
 र्वदा निवीत॥ भव भवतु मही हू जो सहाय॥ भव भवम मष्टि र देव सो आया॥ भव भव सत सगति सु
 गुण दाय॥ भव भव मे भेद॥ सुगुरु राय॥ संसार के पार हो न जग में नहि को ई और भौन॥ इस क
 रण अरु जकरु जिनेश॥ कर हया जिनेश्वर पै अशेष॥ २॥ दोहा॥ दीन वंधुम हारा जनु म सदा सुधारो क
 जाय॥ अरु जीवित धारिये रुपा करो शिर ताज॥ ३॥ अर्थ॥ सो रठा॥ प्रशर नशर न सहाय इम संसा
 र॥ प्रसार में तुम देखे जिन रायाया तै म अरु जी सुनो॥ ४॥ इत्याशी वीद॥ ॥ ६॥
 अप्रपन्न दीश्वर दीप पूर्व दिशा पंच मरति कर गिना लय पूजा माह॥ कुसुम लता ध्वनि नंदी श्वर पूरव
 अंजन गिर ता की पश्चिम दिशा विशाला सज लवायिका वरि को न मै जिन गर हरति कर गह के भाल

कंचनमयपर्वतछविराजैजिनगरुशिखरसुरंगप्रवाल॥ पूजनकरतमिततभवफेरीमैपूजंनययोग
 म्हाला॥ उईहीनंदीश्वरदीपपूर्वदिशंपंचमरविकरजिनालयभ्योनमः॥ अत्र० अत्र० अत्र० पु
 शाखकं॥ चालपंचमेरुपूजाकी॥ दयानिधिहोदयानिधिहो॥ जयजगवंधुदयानिधिहो॥ देरा॥
 तलनीरसुगंधअपाकं चंनमणिमयभरभंगारुह्या॥ जन्मादिकदुखहरणअनूप॥ पूजैजिनवर
 गभूमाह्या॥ नंदीश्वरपूर्वदिशजानो॥ पंचमरविकरजिनगरुमानादया॥ सकलसुरासुरपू
 ॥ हूमजिनगरुपूजतहरषायाह्या॥ उईहीनंदीश्वरदीपपूर्वदिशंपंचमरविकरपर्वतपरजिनाल
 जल॥ १॥ वावनचंदनपावनलायसासुगंधसैदिशमरुकाय॥ दया॥ पूजतजिनवरभक्तिवढायामा
 भवअतापनशयाह्या॥ नंदी॥ उईहीचंदन॥ चंदकिरणसमस्वेतअनूप॥ मदुलसारसुगंधसरूप
 या॥ अततशुचिजिनउचितचढायामातैअस्तययदमिलजायदया॥ नंदी॥ उईहीअस्तंत॥ वरण
 एकेकुसुमअनूयाएतनेहेमनिजशक्तिसरूपादया॥ समरमूलनिरवारनकाजपूजोसमरजईमहा
 जाह्या॥ नंदी॥ उईहीपुष्पा॥ ३॥ षटरसव्यंजनविविधप्रकारमनइंद्रियकोसुखदातारुह्या॥ हु
 एजिनचरणमहानपूजतपावैनिधिशतज्ञानदया॥ नंदी॥ उईहीचंह॥ दीपअनूपयथाविधि
 भक्तिभावउरहर्षभरयोह्या॥ केवलज्ञानपतीमहाराज॥ पूजनिजनिधिपूजनकाजदयावन

६॥ उँद्रीदीपं॥ अग रतगरकरप्रमिलायास्तश विधिधूपसुगंधवनायादया॥ कर्मरहित जिनवर्के
पाय॥ पूजतसवविधिसुकवलहायादया॥ नंदी॥ उँद्रीधूपं॥ बहुविधित्तमफलमगवायाकंच
नयालभे सुखदाय॥ दया॥ मुक्तिमहाफलपावनकाज॥ पूजो मुक्तिपतीमहाराज॥ दया॥ नंदी॥
उँद्रीफलं॥ जलफलं॥ आठोदर्वमिलायागीतनृत्यवाजित्रवजाया॥ दया॥ अष्टकर्मकेनाशनकाज
पूजो मुक्तिपतीमहाराज॥ दया॥ नंदी॥ उँद्रीअर्घं॥ जयमाला॥ दोहा॥ मनवचकायत्रियोगकरूपजि
जिनेश्वरदेव॥ निजहितकारणकहतमै॥ सहायकसवगुणएव॥ पद्मदीष्टं॥ जयजयजगबंधवदे
वसार॥ जयप्रसन्नानधारी॥ अपा॥ जयजयदर्शनगुणनतधार॥ जयसुखअनंतवलनतसार॥ जयधि
यालीसगुणयुक्तदेवदशजन्मतअरुदशज्ञानभेवसुररुतचौदहअतिशयमहान॥ वसुमातिहाय
अतिशोभमान॥ अरुनतचतुष्टयगुणप्रकाशकीनोभवि कोअसमोहनाश॥ जगमाहिकर्मते
धोजीव॥ मनवचनकायतैवंदनीव॥ अछनजोगनमैमिथ्याकषाय॥ मिलिकर्मबंधकोदेवढाय॥ पुत्रल
विपाकितनउदयसोय॥ मनवचनकायसंयुक्तलोक॥ कर्मगमकारणशक्तिधार॥ आत्मोपयोगहेजो
गसार॥ तिहिभेदकहेपंदरुजिनेश॥ मनवचनकायत्रयमूलदेश॥ सतअसतअभयअतुभयसुखन
इनचारामनवचनमान॥ जयकायजोगकेसातभेद॥ जयजीवनकूवहुदेतवेद॥ दोओदरिकअस्त

चौवनपद
॥२६॥

जान॥ वैक्रियिकमिश्रवैक्रियकप्रमान॥ आहारमिष्य॥ आहाररूपाकार्मणसातवौ सार्कभूप॥
यथायोगजगजीवसंग॥ चेतनकौंकरतेवहुतरंग॥ कवहुनरनारकपशुमकार॥ कवहुनिगोहमे
॥ कवहुसुरगतिमैसुखदिखाया॥ हातैइकइंद्रीपशुवनया॥ बहुविधिभटकावैभवमकार॥ साकेदु
नहिलैहैपार॥ हेदीनवंधुकरुणानिधान॥ मलवीरपराक्रम॥ प्रमाणा॥ तुमनैसवरोगनिरोध
॥ शिवसंपत्तिनिजआधीनकीन॥ मैंनिजसरूपलखिमुदितगाता॥ प्रतिरुषवढोन
नंद॥ प्रभुमिसनयनछाहा॥ हरवखैमनुसुधाधार॥ प्रपथवाजलकोमिसहृदयताफा॥ सबदू
योसवजनमपाप॥ प्रपथवाजिनमूर्तिउरमकार॥ हेविद्यमानतसुचिन्हसार॥ प्रथवाजिनदेखतपु
रा॥ उरवहैविशेषतरंगसीरा॥ सोसर्वपूज्यसर्वज्ञदेकागणधरमुनीशनिनकरतसेवा॥ जयजयज
लौंममजगमैवासजवलौंविधिदुश्मनदेवत्रासा॥ तवलौंसहायममकरेखासा॥ जगदी नेश्वर
भरोआसाध॥ दोहा॥ जोगधारिकैजोगसबहारैदुखराता॥ सोअरहंतमहंतपदमव
सासा॥ सोरठ॥ दीनचंधुमहाराज॥ हौंस्मारीवेदना॥ असुविधिकृतजिनरा॥ सुविधिषा
जी॥ २६॥ इत्याशीर्वाद॥ ॥२७॥ ॥ अथनंदीश्वर॥ पूर्वदीपक्षमरतिकरजिनालुय
॥ कुसुमलताछद॥ नंदीश्वरस्वदीप॥ आरमौंताकीपूर्व॥ भागमैजाना॥ अजनिमिमैमव

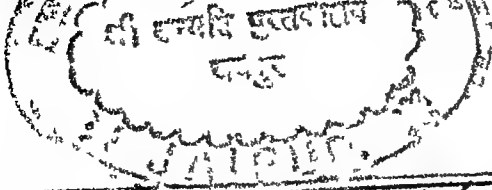
मूर्त्तौ जलमपि कासे भगवान् ॥ ता केवलं हि को नैवैष मरुतिकर गिरहै हेमसमाना ॥ ता के ऊपर स्त्री जिनमें
 लिख्य सुविधित्वा स्ति जमौ उग्रध्यान ॥ उद्गै नंदी श्वर पूरु बहिः अंजन गिर के पश्चिम दिश मरुतिकर
 जिना लभ्यमाना ह ॥ कुसुमस्तनां छंसा ॥ नंदी श्वर वरदीय आठमो ता की पूर्व भाग में जाना ॥ अंजन गिरि पर्वत
 के पश्चिम साजल वापि काशे भगवान् ॥ ता केवलं हि को नैवैष मरुतिकर गिरहै हेमसमाना ॥ ता के ऊपर स्त्री
 जिन मंदिर त्रसु विधिता हि जजौ उग्र ध्यान ॥ उद्गै नंदी श्वर पूरु बहिः अंजन गिर के पश्चिम दिश मरुतिक
 र जिना लभ्यमाना ह ॥ अत्र ॥ अत्र ॥ अत्र ॥ अत्र ॥ अत्र ॥ गीता छंद ॥ मंदा किनी कोनी र उजल उठत ते जतरंग हो ॥
 शुभजल जकें लभनं दकारी ता समाहि अंभंग हो सो नीर कंचन भंग भरि कै श्री जिना लय जाईये ॥ अत्र ॥ तप
 द को ध्यान करि कै विनय सहित च दाईये ॥ रा उद्गै नंदी श्वर दीप पूर्वे दिश अंजन गिर के पश्चिम दिश मरुतिकर
 तिकर पर्वत पर जिना लभ्यमाना ह ॥ जल ॥ अत्र ॥ अत्र ॥ अत्र ॥ अत्र ॥ अत्र ॥ अत्र ॥ अत्र ॥ अत्र ॥ अत्र ॥ अत्र ॥
 र अरु गो सी रमलिया गिर सुचंदन लाय कै ॥ भरि रत्न कारी हर्ष धारी श्री जिना लय जाय कै ॥ अत्र ॥ अत्र ॥ उद्गै
 चंदन ॥ हिम कर किरण हिम हीर कण काम नो कुंद अमंद हो ननु फटिक मणि मुक्ता विराजे मनो दासिन
 दंड हो अत्रै से अखंडित शालि अक्षत तला प्रजिन गरुजा ईये ॥ अत्र ॥ अत्र ॥ अत्र ॥ अत्र ॥ अत्र ॥ अत्र ॥ अत्र ॥ अत्र ॥ अत्र ॥ अत्र ॥
 ददू रि दिश तै आ य कै ॥ कल रक्त मधु गुंज भारी वहु प्रमोद वढाय कै ॥ अत्रै कुसुम वर सुद्ध गंधित लेय जि

गुरुजाईये ॥ उँहीपुब् ॥ शुचिसुरभिघृतसुंदरमनोहरमिष्टरसपूरितमहाहृगमनप्रफुल्लि
 करणहारेसुपूरुतउत्तममहासोचरुअनूपमयालभरिकैश्रीजिनालयजायकैअपुँ ॥ उँहीचरु ॥
 वृत्तिसनेरुदीपकजोतिजगमगहोतहोअथवाअनेकप्रकारदीपकस्वत्तुपुछुउद्योतहोसुवरणारके
 रकरिकैश्रीजिनालयजायकैअपुँ ॥ उँहीदीप ॥ निर्दोषपरिमलसुरुचिकारीगंधव्यमहा
 सर्वकरएकत्रचूरणसरसधूपप्रधानहोवहलेयअतिउमगेयमनमैश्रीजिनालयजाय
 ॥ उँहीधूप ॥ जिहिंगंधनाशारध्रजाकरलुब्धरसनाकोकगोहृगलखेमनविनचखेउपमाकरसत्त
 हाधरोसोशुछफलचहुलायताजेश्रीजिनालयजायकैअहंतअबाँहीफलो ॥ जलगंधअद्वतकुसुम
 वरदीपधूपमहानहोफलललितमिश्रितअर्घकीजिगत्तिकेअनुसारहोअतिहर्षसहितव
 जिनालयजायकैअपुँ ॥ उँहीअर्घ ॥ जयमाला ॥ दोहा ॥ नामयापनाइव्यअरुभावरूपभगवान
 हृत्तायकपूजौसदाकरोसकलकल्यान ॥ पछडीछंद ॥ जयजयसर्वदर्शीप्रभुदेयालजयजय
 गमेंतुमरुमालाकरिछयादियोउपदेशसारयातैभवजलभविलहैयाग ॥ अनुसदुपदेशहोसुधा
 विसुनिकरतविभयेअपागकोईकुजीवतरुअर्कमाननहिरुचैसोयरुद्रजभागजानाअज्ञोसूरज
 तिप्रकाशहोयमेदिनीसर्वसुखलहैसोयाअरुचमगादइअरुपशुअलूकाइखपावैरविकीनाहि

ब्रूक ॥ जे जे जिन राज महान देव ॥ सव वस्तु प्रगट करि कहै भेव ॥ निक्षेप चार करि ज्ञान होय ॥ इति वि
 नन हि जानै वस्तु कोय ॥ ४ ॥ जस्य नाम ध्यापना द्रव्य भावो निक्षेप चार ॥ आगम लखाव ॥ सतमान वस्तु
 को नाम कोय ॥ निज इच्छा को कि ह्युधरो होय ॥ सो प्रथम नाम निक्षेप जान ॥ वाको विशेष आगम
 प्रमाण ॥ जो और वस्तु के और माहि ॥ यापे सो यापन भेद जाहि ॥ दाता के दो भेद कहै पुराण ॥ अतदा
 कृति आकृति भेद मान ॥ हिरावस्तु सम जो स रूप ॥ सो तदाकार जानै अनूप ॥ ५ ॥ जो वाहिर आ
 कृति मिले नाहि ॥ जउ चेतन को कछु भेद नाहि ॥ सो अतदाकार कह्यो स रूप ॥ यौ वर एणो श्री जिन
 राज भूप ॥ ६ ॥ यह वर्णन श्री गोमट सारतत्त्वार्थ सूत्र वार्तिक मफार ॥ सव श्री गुरु नैकी नौ वखान
 भविजन भूमं जन अनतुलमान ॥ ७ ॥ अरहंत विं वं पूजनीक निक्षेप यह उर जा निधीक ॥ जिन वचन
 ध्यापना शास्त्र जान ॥ नित ही सैं पावै भविक ल्यान ॥ ८ ॥ जिन पूजन मै कल्यान काल ॥ अरु पुण्य क्षेत्र
 बहु विधि विशाल ॥ तिन कों पूजै ध्यापना रूप ॥ ९ ॥ यह आज्ञा श्री जिन राज भूप ॥ १० ॥ जो मंडल मांडेरंग धा
 रा वह जान थापना को प्रचार ॥ अथ वा वस्तु द्रव्य मफार सोय ॥ कुसुमादिक की थापना होय ॥ ११ ॥ ये सब
 श्री जिन आज्ञा प्रमाण ॥ हे मित्र ॥ अन्यथा मती मान ॥ यदि भर्म होय तो शास्त्र देखि ॥ या तै उर ज्ञान वढै
 रोय ॥ १२ ॥ जो होन हार ॥ जिन स रूप लोया ता की तिस रूप कह्यो जु सोय ॥ सो जान द्रव्य निक्षेप सार ॥ जो न प

वौवनम्
॥२८॥

सुतकोत्तपकैसार ॥२८॥ जिह्वरूपजासमैवहीनाम ॥ सो कलौ भावनिक्षेपमान ॥ जागमनसमय
नाम ॥ महिअन्यसमयनिक्षेपताम ॥ २९ ॥ इत्यादिवहुतविधिवस्तुभाव ॥ रसायोग्रनुजीमुखउपाव
देवजगतपतिसदाकाल ॥ उरवसोजिनेश्वरकैविशाल ॥ ३० ॥ दाहा ॥ जयवैतौजगमेरहो ॥ जिनवरणि
महान ॥ याप्रशादकलिकालमेपावैधर्मप्रमान ॥ ३१ ॥ अर्धासार ॥ सुन विनतीभगवानज्ञानदानम
दीजिये ॥ यहीसर्वकल्यानकरैरूपामुद्रदीनेपे ॥ ३२ ॥ इत्याशीबोद ॥ ॥२९॥ ॥ अथस
मरतिकरपर्वतपरजिनालयपूजामाह ॥ कुलुमलताछंद ॥ नंदीश्वरपूरवअंजनगिरताकीउत्तरदिश
मेंजाननंदोत्तरवायिकागहरी ॥ इकहजारयोजनजलधाराएथीकायजलजकरिशोभितफैलीगंध
विस्ताराताकेवहिरकौनमेंगतिकरगिरतापरपूजंजिन ॥ ३३ ॥ उद्दीनंदीश्वरहीपपूरवदिशअंजन
गिरकीउत्तरदिशरतिकरसप्तमजिनालयेभ्योनमः ॥ अत्र ॥ ॥ पुष्प ॥ ॥ अथाऽष्टकं ॥ गीता
द ॥ भवभ्रमत्कालअनादिखोयोशानदुतमैफिरौ ॥ कोईनपायोनिजसहायकमोहवशभ्र
धिरौ ॥ परमोपकारीसुगुणमुखसेसुजसप्रभुसुनपाईयो ॥ झललायतुमपरतचढायोजन्म
गमाईयो ॥ ॥ उद्दीनंदीश्वरहीपपूर्वदिशसप्तमरतिकरजिनालयेभ्योनमः ॥ जल ॥ भवतापदाहो
योमोहज्वरतेजीचढी ॥ निजवलगमायोदुखलहायोअतीतभातलावटी ॥ मभ्रगज्यवेधमहा



सुनिकै चरन शरै आई यो शुचि गंध चंदन लाय के सर पूज्य शी शानवाई यो ॥ उद्दी चंदन ॥ जव वस्तु जो
कछु अथवा एगो चर तथा दृष्टि प्रतक्ष है पर्याय रूप विना शिसव को लखत दुष्ट प्रतक्ष हो ॥ इस हेतु सुनार
सर्व पदवी उर विना शक धारने तु मचरन अक्षत सौ ज जो मैं अक्षय पद के पावने ॥ उद्दी अक्षत ॥ नर नार
संदि सुभाव वेदी सर्व ही दुख मे फसे ॥ सत ज्ञान निज विन परम सूरै कर्म बंधन मै कसे ॥ विधि बंध फदनिके
दकार एतु मे सुनिके आई यो ॥ वर पुष्प ले मै करू पूजा ॥ आप वास वसाई यो ॥ उद्दी पुष्प ॥ चउओ
र जा को जोर ध्यायो सुर अमु र सवयर हरे ॥ बहु ज्ञान ॥ अतुल पदया हि मे इ सी सेशं का करे ॥ ति हिंनु धायो डि
तचतुर्गति मे बहु तवार दुखी भयो ॥ जिन राज बल चरु वर चलावत शत सुख सरु जै लयो ॥ उद्दी चरु ॥ जि
स मोहत म मे जगत् घूमत स्वहित मगन हि पावही ॥ विधि ज्ञान अध समान वहु विधि कुपय पथ मे धारि
यो ॥ प्रभु सर्व ज्ञायक हान ता ज्ञान दीयक लाई यो ॥ पद अर्च श्री ॥ अरु तम भुके मोह ॥ अरि विन शगई
यो ॥ उद्दी दीप ॥ वज्राग्नि वडवानल भयान कतया चपला चंड है ॥ नारक तनी विषम मि ॥ प्रथवाओ
र अग्नि अखंड है ॥ विधि अंश भी नहि जर सके सो कर्म तुम सब दाहियो ॥ यरु जानि निज अरि हरु न कारन
धूप अग्नि च दाई यो ॥ उद्दी धूप ॥ नर राय चको यत्न नायक उर गपति धने शजी ॥ शशि सरकल्प सुरेश
कोई दशम को नहि शेष जी ॥ सो फल अतृपम ॥ आप पायो ॥ आप ही दाता वडे ॥ ति हिं फल सुमापति हेत फ

लसें पूजि पद आगै खडे ॥ छ ॥ उँही कलें ॥ जल गंध अक्षत तपुष्प चरु वरी पधूप सुहावना ॥ फल ललित
आगेँ द्रव्य मिश्रित अर्घ कीजि पावना ॥ बहु हावभाव प्रभावना करि चरण जिन वर के जौ ॥ ससार सत
विष्टे दि के शिव मह की सामा सजो ॥ छ ॥ उँही अर्घ ॥ जय माल ॥ होहा ॥ हे जिन वर कल्याण कर तुम क
ल्याण ससूना ॥ मम भव भा मा मे ट के घो कल्याण अनूपा ॥ १ ॥ पड़ डी छंद ॥ जय श्री पति गुण सागर महा
ना जय महि मा को करि सके आना जे शुद्ध स्वस्वी शुद्ध भाव जय शुद्ध शरीरी शुचि प्रभाव ॥ जय अक्ष
रुति निर्दोष ज्ञान जे मुक्ति पंथ निर्दोष मान जे सदुपदेश निर्दोष एह जय इ सप्रवाह निर्दोष देह ॥ सो रत्न
त्रय गुण अतुल जना संसै परूप सुनियो वयना ॥ शुचि सम्यक् दर्शन ज्ञान सा ॥ अक्षरु सम्यक् चारित म
प्रकाश ॥ अक्षरु द्रव्य ॥ दिव लोकपाल ॥ अस विन नहि ते वै कोटि काल ॥ दिव पंचम देव ॥ रूखी महान
रुदक्षिण दिश सव इंदमाना ॥ अपार तत्र य विन मुक्ति नास्ति सो भासी जिन आगम सुमाहि ॥ अह मिंद्र
क अनुत्तर विमान ॥ सर्वार्थ सिद्धि नहि मिलै थाना ॥ मन पर्यय केवल ज्ञान सिद्धि ॥ आहार आदि उल्क
रुद्धि ॥ विन रत्न त्रय के मिलै ना सिचाहे कोइ कोटि कोउ पाया ॥ दू श्री तीर्थ कर त्रय लो क ईश ॥ सो जा
य विरजै जगत शीश ॥ सो पूरवर तत्र य अराधि ॥ पावै पुरुषारथ पूर्ण साधि ॥ आइ स भव
सुख लहाय ॥ हर तत्र य जानौ सहाय ॥ या कैं वदु रूषि सु निवस मंहता ॥ उर धा

याक्रेप्रभावनश्चुचिकाय॥ तिसकौशिरनावैदेवराष्ट्राकेप्रतापयहकायसोय॥ प्रतिजोतिचंताछियै
 एमाहिहोयाध्याकेप्रभावश्चतिशयअनेकावरप्रापतिहोवैस्वहितेका॥ याकेप्रभावनरपम्पूकरस
 वशांतहोयकरहेदू॥ ॥ बहुदुष्टयत्तयंतरपिशाचशिरनायकरैपदअग्रजासाशिसूजोतिवीक
 रऔरइनकीनचलैबहुभातिदोरा॥ ॥ सर्वनिधिमेंरत्नत्रयमहानरत्नमेंसवकीखानजाति। सुखदा
 यकजितनीवस्तुभायातिनसवकीजानौ॥ ॥ ५॥ सेमाय॥ ॥ जिनजननीसमयहपूज्यधामकराएअररुतनि
 तप्रतिप्रमाण॥ तिहुंलेकऔरतिहुकालमानसुखदायकरत्नत्रयप्रमाण॥ ॥ यहजिनवरकोउपदेशजा
 नापहजानौहिवकरसोभ्यमान। मरमोयदेशदाता॥ जिनेश॥ तुमचरणकमलमउरमहेश॥ ॥ प्रभुवासक
 रोदातामहानकरहपादेहुप्रभुज्ञानदान॥ हेकरुणानिधियेकाजसाज॥ जयवंतजिनेश्वरदेहुआजा॥ ५॥
 दोहा॥ तुमदातादानिकेदायकसर्वसमाजावही॥ कृपाभोपैकगेदीनबंधुमहाराज॥ १६॥ अर्थ॥ सो
 रसा॥ सरवसंगसुखसाज॥ दायकतुमनेजेकमैंकरौ॥ तमामहाराज॥ निजपरहितकारकसही॥ १७॥
 पुष्य॥ ॥ १२॥ ॥ अथश्रीनंदीश्वरदीपपूर्वदिशअष्टमरतिकरपूजासाह॥ ॥ कुसुमल
 ताछंद॥ नंदीश्वरकेपूर्वभागमेंअंजनगिरकेपूरवभागमीरभरोवावरीमनोहरदेवीदेवकरैअनुरागता
 केवाहिरकौममेंसोहेरतिकरगिरशेभावइभाग॥ श्रीजिनमंदिरताकेऊपरमेंपूजैनिजहितमेंलागा॥ १

1201

ताशनमाहीखेवैवहुभक्तिवढाई॥विधिदहनउपावनल्यायो॥जिनवरकेशरणेंआयो॥नंदी॥७॥
 ३॥ धूम॥ नागाविधिउत्तमल्यावो॥फलश्रीजिनचरणचढावो॥वहुभक्तिसहितगुणभावो॥या
 वफलपावो॥नंदी॥३॥उद्दीफल॥जनफलवसुद्रव्यमिलाई॥करिअर्घहृदयहरषाई॥जिनवरपद

रक्षा यो न स जन्म तनौ फल पायो संदीप्तः ॥ ५ ॥ उँ ही अर्धं ॥ जयमालः ॥ दोहा ॥ तुम जिमंद जगमें वै दे परम रुचि
दाता राय हर अरजी सुणि ली जिये करो भवो दधि पारा ॥ पछडी छंद ॥ जे जे जिन राज दया निधान भ
व कानन हानन देव प्रमान ॥ जय मोहति मिर कौर विसरूपा ॥ मिथ्या तदा हू कौंचंद्र रूप ॥ जे देव कषाय
कौं मेघ सारा जय विषय जह कौं सुधा धारा ॥ जे कुल य स र्प कौं मंत्र रूप ॥ जय जय तुम वच अत्त त स रूपा
संसार महावन विकट रूप ॥ तां में कु मार्ग वहु अधकूपा ॥ अज्ञान प्रवल चल चहुँ औ रा सुदृष्टा य रक्षो तिरुं
चले जो राधे म तुम नै प्रगट कियो अनूपा ॥ सुख कार क रूष कर रूष सरूप ॥ अजहूँ हर मार ग विद्यमा
ना भे सुगुरु दिगंवर रूप ॥ जाना फल तप चमकाल क राल वीच ॥ कुलवान चलै वहु चाल नीच ॥ निर्मल जिन
मत कौं दीष देया ॥ भैसे कुजी वशिष्ठा पलेय ॥ ॥ यरु काल प्रभाव डोक राल ॥ मिथ्या तउ दय विपरी
त चाल ॥ भहु चले जीव निर्भय महान निव होय तिन्हो के ज्ञान हान ॥ प्रह प्रह अन्न तें मै भाग मात्र ॥ रूपा
य ज्ञान पर्याय मात्र ॥ मरु भाव निगोद मरु रज्जान ॥ मिथ्या तत नौ यरु फल निधान ॥ ॥ हेरु पा सिंधु यरु
सर्व हाल ॥ हर शायो तुम नै हेरु पाल पातें ॥ मिथ्या त सुत जन योग ॥ सत मार ग अरु पा ग्रहण योग ॥ स
वगेय हेय सव ड पा देय ॥ सत भेद प्रमाण तथा प्रमेय ॥ नय भेद औ र अमु योग दार ॥ सत वस्तु म काशन
हार सार ॥ ॥ तुम नै वर नन की भौं जिने श ॥ यरु पा तु मारी ॥ अनु लवेश ॥ उपगार भार ॥ कर सु सु रे श ॥

विमुनिध्यावै नितनाथशीश ॥२०॥ हे देवकृपालमये करेहु निजजान शक्तिप्रभु रुमै देहु तु
 होअनंतगुणधारदेव तुमअनुयनिधि शिरदारदेव ॥२१॥ जो जीवअनंत करेया गुणअप्रव
 एनहि कीन विचार तुम मेरी वार ह्या निधान मत ढील करे जगपति मझान ॥२२॥ दोहा ॥ ता
 नतरन सुने प्रभू या ससार मरणा पा रजिने श्वर कों करी भवसागर अनिवार ॥२३॥ अर्ध ॥ सोरठ
 ह प्रजो उरया समेरी सुध प्रभु लो जियो की जे भव दधि पा राओ रक धूइ च्युन ही ॥२४॥ इत्यप्रशीव
 ॥ ॥२३॥ ॥ अथ समुच्च अर्ध ॥ कुसुमलता छंद ॥ नंदी श्वर पूर्व दिश माही स्यामवरना
 जन गिरि जाना तां के चहुं दिश दधिमुख पर्वत ते रव तम नहरन अमो न ॥ रतिकर सुवरण वर्ण
 ये एक चार वसु संख्या जाना सव पर्वत ते रह जिन ऊपर ते रह जिन गृह जगो महान ॥ उद्दिने
 श्वर ढीप के पूर्व दिश संवंधी एक अंजन गिर्या रदधिमुख प्रष्ट रतिकर त्रयोदश पर्वत पर जिन
 दिग्बतौ एक हजारे चार सैं चार श्री जिन विवेच्यो नमः ॥ अर्ध ॥ नंदी श्वर पूर्व जिन मंदिर समो
 राण शोभा अनिवार मान सथ भ प्रतिमा सुख राई चैत्य रुत्त उपति माहित कारा अथ व्यतरेंद्र भुव
 दिक् जहो जहो जिन प्रतिमा सात तिन सव के मन वचन काय कर अर्ध चंदाय करूं मे ध्यान ॥२५॥ उ
 द्दीनंदी श्वर ढीप पूर्व दिश संवंधी वर्तमान चैत्य रुत्ता दि विवै जिन विव तथा व्यतर अवनारि क न के नगर

वनादिक विषे जिनप्रतिमा महाधर्मे निर्वपामीति स्नाहा ॥ अथ दक्षिणादिश संवंधी पूजा ॥ अथ नंदी
 मुरदीप दक्षिणादिश अंजन गिरस्य बर्तय रजिनालय पूजा माहा ॥ जोगी रासा ॥ नंदी अथ वही पतास के
 दक्षिणा भाग ममरा ॥ सरु सचौरासी योजन ऊंचे अंजन सम अति काए ॥ डोल समान गोल अंजन गि
 रता पर जिन सा रा ॥ शीशन माय जज्ज जिन प्रतिमा हर्ष हृदय अति धारा ॥ राई द्वे नंदी मुरदीप दक्षिणा
 दिश अंजन गिरजिनालये भोनमः ॥ अत्र बा अत्र बा ॥ अथ पुष्पा ॥ अथ पुरु ॥ तुं दी छंद ॥ मुर नंदी जल
 निर्मल ली जिये ॥ कनक भाजन में भरि ली जिये ॥ जिन पदां बुज अग्र च बार्हये ॥ सुगुण एत ममान वढा
 ई ॥ दीप नंदी अथ दक्षिणादिशा गिरसु अंजन पणिन गलसा ॥ विंवशस्त अरु आहम मान हो जज्ज तडु
 रपति सुरहित दान हो ॥ राई द्वे नंदी मुरदीप दक्षिणादिश अंजन गिरजिन गंदिरे भोनमः ॥ जल ॥ रा ॥
 मलय चंदन वांवन पावनो ॥ घिसिक पूर सुगंध सुहावनो ॥ वृषपती पद पूजन की जिये ॥ विषय भोग
 नयों तज दी जिये ॥ दीप नंदी ॥ राई द्वे चंदन ॥ शशिमरी चिलुवार समान हो ॥ सरल सित सुचि रूप ममान
 हो सर ॥ सज्जि मुरदीप नंदी ॥ अतस्तले जिन राज के सर एयूज कस्तूहित साज को दीप नंद ॥ राई द्वे
 तत ॥ कल्प वृत्तन की कुसुमावली ॥ अति सुगंध लिये सुर आवली ॥ हृदय भक्ति शिर नाय को करत पू
 ज जिनालय आय को दीप नंद ॥ राई द्वे पुष्पा ॥ देव तरु के चरु वलेय को ॥ धोक जिन वर पद को ॥ दय के

वौवनप्र

॥२॥

सुरसमूहजैवहोंजायकै॥रुमजजैजिनगरहरषायकै॥दीपनं॥ईंद्रीचंद्र॥सुरमहीरुहंतैसुरला
॥रतनदीपजिनंदचढाचहीरुमखशक्तिसमानवनायकै॥जजतदेवजिनालयजायकै॥हीपनही
दीप॥अतिसुगंधशौदिशमैभरी॥जिनपदाग्रसुराधिपनेंधरी॥जगतपतिजिनचरणसरोजकै॥
तसुरपतिधारप्रमोदकै॥हीपनं॥ईंद्रीधूपं॥विविधभूरुहकैफलल्यायकै॥सुरसमूहजजैनित
प्रायकै॥करतनृत्यसुभक्तिवढायकै॥फलजिनेश्वरचरणचढायकै॥हीपनं॥ईंद्रीफलं॥जलफ
द्रव्यमिलाईयोअर्घकरजिनपूजनआईयो॥प्रसकर्मविनाशनरुतैहो॥भयकै॥शिवसंपतिदेवह
नं॥ईंद्रीअर्घ॥जयमाल॥दोहा॥वर्द्धमानमहारजतुमाभगमैसुनेमहान॥बुद्धिविवर्द्धित
मो॥धरुतुमारोध्याना॥तोटकछंद॥जयवंतजगतपतिराजमहोसमवहरतिमैछविछजतसैम
रजआठविराजतहो॥जिनवानिसुधासमगाजतहो॥सततत्वप्रकाशकियोप्रभुजी॥सर्वज्ञपदस्य
योप्रभुजी॥एवकै॥उपदेशदियोप्रभुजी॥उपगारैकियोप्रभुजी॥इकधर्मदयामुसारकह्यो॥तिरु
नेकप्रकारकह्यो॥सुनिश्चावकरूपदुनेदगिनो॥अथवानिश्रययवनारभनो॥अरत्नत्रयरूपत्रि
दकहोसुनिचार॥आराधनभेदभयो॥अथपंचमहात्रतरूपभयो॥एरुकायदयाघटभेदभयो॥सत
प्रतीतिप्रभेदमहासहुकर्मविनाशकधर्मकहा॥त्रयजोगकृतादिकसंगुणियोमवभेदयही

विशेष

[illegible]

श्रीमैराजैदधिमुख्यर्चनभाईरहंजारथोजनकोंउंचोउज्जलवह्यीसुहाशेवापीवीचढोलसमतापरजि
गुरुपूजोभाई॥ॐह्रींनंदीधरदीपदक्षिणदिशामंथमदधिमुख्यर्चनवर्तपरजिनहलयेथ्येनमः॥अत्रनअत्रन
प्रवन्मुखा॥भविष्योजिनवरकेपायसुकारणभूजतहेभाई॥देर॥सुरसरिताकेउज्जलजललेकंचनभं
भरायाजन्मजरानिरवारनकारणश्रीजिनचरणचढायसुबनंदीधरदक्षिणअंजनगिरताकीपूर
दधिमुखपरजिनमंदिरसोहेजतसुरासुराईसु॥ॐह्रींनंदीधरदीपदक्षिणदिशामंथमद

लयेभ्योनमः॥जलो॥मलियागिरकोवावनचंदनपावनगंधप्रचारश्रीजिनवरकेचरणचढाव
पावतमुखअनिवारीसुबनंदी॥ॐह्रींचंदन॥शशिसमउज्जलस्वेतमनोहरसूरलसुगंधअपा
देतजिनचलनअर्गेजन्मजरानिरवाणसुबनंदी॥ॐह्रींअक्षताप्रतिनिर्देवसुरंगसुगंधीफूलम
लौकेश्रीजिनवरकीपूजाकरकेहर्षहर्षणगवौसुबनंदी॥ॐह्रींपुष्प॥घटरसंयंजनताजे
दिवनावोमलिवलिजायजिनेधरपरकीधूजनकरिगुएगावोसुबनंदी॥ॐह्रींफुलवध॥जगमग
तिहोतदीपककीअतिपवित्रवनवावोमोहरअज्ञानविनाशनकारणश्रीजिनचरणचढावोसुब
॥ॐह्रींदीप॥कहागरकरघृतगरअरुचंदनगंधमिलावोखेवतधूपजिनेधरअर्गेमनवा
वोसुबनंदी॥ॐह्रींधूप॥एलालोगविदामधुहरेपिस्ताकिसमिसलावोश्रीफलदायकश्र

जिनवरकेचरननमाहिचढावो॥ सुवानंदीना॥ ८॥ उँहीफलं॥ जलफलंद्रव्यमिलायगायगुणाजिनच
रणचितलावोभावभक्तिसेंश्रीजिनवरकीपूजाकरसुखपावो॥ सुवानंदीना॥ ९॥ उँहीअर्घा॥ जयमाल
घता॥ जयजयजिनचंदोजोतिअमंदाआनंदकहाजगन्नाता॥ तुमशिवसुखदानो॥ त्रिभुवननामीस
वकेस्वामीहितदाता॥ तोतकछु॥ जयजयजिनराजहृयासदनो॥ सुखकंदअमंदचतुर्वदनो॥ प्रभुरले
सिंहासनराजतसेप्रतिग्राज॥ आठविराजतहो॥ शसुहो॥ ओरसभादशदोयकहो॥ परदक्षिणरूपअनप
मरीमुनिराजसुग्रीखिलोक्तनीअजियापुनिकोतिषनारिगनी॥ भुवनोधिपचंतरनारिवराभु
वनत्रिकदेवसुकल्पसुराजनारिसबैरकठोरसही॥ गिरअंतविवेयपुगशिकही॥ १०॥ इमजीवसबैउप
देशसुने॥ विधिमाफिकधर्मसुरूपतने॥ पशुजातिविरोधसबैतजिके॥ घिरभावरहेसमता॥ सजिके॥ ध
सुरभीसुतसिंहखिलावतहो॥ तिहिसिंहनिदूधपिलावतहो॥ मगकेलरिवालविहारकरैवहुआपसमैउर
प्रीतिधरै॥ अहिन्योलकिलोकैरैमोलिके॥ अरुसुसविलावहो॥ हिलिके॥ यहअतिशयश्रीजिनराज
नों॥ गणराजहुपैनहिजायुभनौ॥ धनिहेधनिहेतुमरेतपको॥ धनिहेजगमैतुमरेजयको॥ धनिहेतुमवा
रितयावनको॥ धनिहेजिहिकेमगध्यावनको॥ तुमजोकछुधर्मप्रकाशकियो॥ अरुकेवलज्ञानउजास
कियो॥ अजहूवहूचलिआवतहो॥ अनिसुरएउदेनरपावतहो॥ जजयश्रीगुरुदेवरपालभयेसतन

रगकेसवभेदकत्वे जिनशाशनमें सवपावतहै ॥ हितकारक जीवतावतहै ॥ ६ ॥ यह श्रीगुरुदेवसदाज
गमें अनयवंतरहो शिवमारगमें ॥ शिरनावतहू तुमरेयगमें ॥ निजसंपतिसिद्धकरो जगमें ॥ ७ ॥ प्रभुमो
हियवासकरो जवलो विधिकों नहिना शकरो तवलो ॥ यह अर्जप्रभूचितमें धरियो ॥ भवपारजिनेश्च
रकों करियो ॥ ११ ॥ दोहा ॥ तुमही स्वामी जगतपति ॥ तुमही दीनदयाल ॥ रूपपाजिनेश्चर्यै करो ॥ हरोच
तुर्गतिजाला ॥ १२ ॥ उँही अर्घ ॥ सोरठा ॥ साचे प्रभु शिरताज ॥ आजकजमेरोकरो ॥ अरजसुनो शिरता
ज ॥ भवसाधामेरी हरो ॥ १३ ॥ युष्प ॥ ॥ १४ ॥ ॥ अथ नंदीश्वरदीपदक्षिणदिशद्वितीयदक्षि
मुखपर्वतपर जिनालयपूजा माहा ॥ जोगी रासा ॥ नंदीश्वरदक्षिणअंजनगिरताके दक्षिण जानो ॥ बर्मा
बीचकक्षोदधिसुखगिरतापर जिनगरुजानो ॥ अरुक्तिमंजुल्लस्यप्रमाणिकारतलसुवर्णसुहानो ॥
तिहिमधिएकशतकचसुप्रतिमापूजतपुण्यमहानो ॥ १२ ॥ उँही नंदीश्वरदीपदक्षिणदिशअंजननि
रके दक्षिणदधिसुखपर्वतपर जिनालये अंजनमः ॥ अन्न ॥ अन्न ॥ अन्न ॥ चाल - ॥ यह उत्तमन
एदुखराहनिवारणपूजो ॥ दोहा ॥ इहतिगिंछ निर्मलसरिताको जलसीतलसुखराई जन्ममर
दधिसुखगिरपर श्रीजिनमंदिरजै सुरासुरार्क्षमला ॥ १३ ॥ उँही नंदीश्वरदीपदक्षिणदिशअंज

न गिर के दक्षिण दधिमुख पर्वत पर जिनालये भोजनः ॥ जल ॥ वावन चंदन राहनिकंदन सुंदर रघ साई
भवाताप निवारण कारण जजो जिनेश्वर पार्श्व भला बंन दी ॥ ५ ॥ उद्दी चंदन ॥ सुंदर शालि मृत्ता ल मनोहर
कंचन थाल भराई प्रसन्न य पद पावन शुभ भावन जिन पद पूज करार्थ ॥ भला बंन दी ॥ ६ ॥ उद्दी चंदन ॥
वरण वरण के पुष्प मनोहर सुचि सुगंध ॥ अधिकार्थ काम दाह निवारन कारण ॥ पूजो जिन सुख दाई
भला बंन दी ॥ उद्दी पुष्पा पावन मन भावन वहु व्यंजन मोदक ॥ आदि वनार्थ ॥ सुधा हरण विधि अरि वि
जयी के चरन नंदन चंदन ॥ भला बंन दी ॥ ७ ॥ उद्दी चंदन ॥ जोतिवत ॥ अनुपम रत्न केरी पसु ए सु
रत्नावौ पूरण ज्ञान पती जिन वर के चरण न माहि चटावौ ॥ भला बंन दी ॥ उद्दी चंदन ॥ अगर तग
चंदन वहु केश रधू सुगंध वनार्थ ॥ जगदीश्वर पद पावन कारण ॥ जिन वर चरण चटावौ ॥ भला बंन दी
॥ उद्दी चंदन ॥ सरस सुगंध समूह भरे यहु मिष्ट महा फल भार्थ ॥ शिव फल पावन ॥ शिवर मनी पति चरन न
ंदन चटार्थ ॥ भला बंन दी ॥ उद्दी चंदन ॥ जल फल द्रव्य मिलाय गाय गुण उत्तम ॥ अर्घव नार्थ ॥ केर्मा
रय दुख हरण कौं श्री जिन चरन नंदन चटार्थ ॥ भला बंन दी ॥ उद्दी चंदन ॥ जय मा ल नंदन ॥ शानिक
रण भव भ्राति हरण मणिं वर देव मन वच कायल गायकै कसू सदा में सेव ॥ ए भव दुख दुखिया
जाने कै करे कृपा महाराज ॥ तुम ही या संसार में वास तरन निहज ॥ २ ॥ ब्रह्माति चादम ॥ सुखी

सुमहीजगमेंजिनराय॥सुनेंपरमागममैहितदाय॥कहंकष्टुभेद॥अनूपवनाय॥सुथानकपुण्यतनौ
हुजाय॥सुगर्भहिसैंछरमासअगार॥रत्नपागएभैवरखैमणिधार॥सुरीबहुसेवकरैजिनमात॥
नेकप्रकारसम्हारतगात॥सुगर्भविषैजवआवतदेव॥सुरासुर॥आयकरैबहुसेव॥सुरलसिंहास
पैपितुमात॥सुराधियन्होनकरैबहुभांति॥अमोलमणीयुतमोतिपदाम॥करोबहुभेदशचीअ
रामनवायजिनभरकौनिजभाल॥करैबहुसंचयपुण्यविशाल॥धनवौमहिनासवनग्रमहार
मणिवर्षतहेत्रयवार॥सुजन्मलेयीत्रयज्ञानसमेत॥भयेतवचिन्हसवीसुरखहेत॥भैरोसुरसाज
रावतवीर॥सुराचलन्होनकियोहरिधीर॥सुरासुरलतयकियोबहुभांति॥बढोअतिहर्षहियेन
घनियोगसवैकरिजन्मकल्यान॥प्रायेनिजथानकदेवमहान॥भूतनजोतिवढैदिनरात॥सु
तहीभ्रममोहविलाता॥अहजारदृगंजुलिस्येंसुरनाथ॥सरूपसुधारसपीवतसाथ॥निमेषन
तहैबहुभांति॥निहारतपेनहित॥सिलगाता॥जयोजिनस्वैअलौकिकरूप॥निहारतहीसुख
होतअनूप॥कहागिनतीनरजीवनसार॥पशुगणमोहितहोतअपार॥धराश्रममेंबहुबलुअ
नूप॥महामेणिभूषणवस्त्रस्वरूप॥सवैसुरलोकत्रनौसचसाजा॥खडेरहेतेसुरसाजसमाजा॥अ
रतनीबहुबलुअनेका॥अहेसुरलोकतनीपरटेका॥अनेकसुरासुरभत्यरहाय॥अनूपमनृत्यरुगान

[illegible]

रीविविधिसुरसुक्तिमगके॥ उँहीं नंदी चारीषद द्विपद्विस्तरतीचदधिमुखजिनलयेयेनमः॥ २
लं॥ असांसायाजममाहीस्वानलसें अधिकतपी सुसुखशकीनेनतोभीयों हृदयधापी इसके
स्वारनचरनकेजिनकेस्वहितपूजो महचंदनलेकैस्वहितकरपूरुघसिंदूजे॥ २॥ उँहीचंदनभ्रमों
मेंभारीचतुरगतिमेंनसुखपायो महारसहितकारीकुबुधिवसतेनकरआयो शुभोदयसेंभा
अंतिरुचिआर्द्र॥ जजौजिनराज अस्तसोंइसीविधिसेंस्वनिधिपाई॥ ३॥ उँहीअस्तं॥ सुरासुरस
जीतेप्रवलअशरीरविधिबैरहरहैनाइसआगेप्रवलनरकरपशुजहरी॥ करोवशमेंयाकोंकुसुम

एजिनकेजौनिजहितकाजेंस्वनिधिआवैसहीतिनिके॥ उँहीपुष्प॥ सुनौस्वामीमेरी
दाताजगतमाहीइसीसेंदुखपावैजगतकेजीवसुखनारी॥ महाचरुविधारीसुजिनआ
बुधोंकेदुखभारीइसीविधिसेंसर्वहस्ति॥ उँहीचं॥ महाभ्रमतमण्यायोकुबुधिमिध्या
सेती॥ नहीसतमगसुखस्वसुहास्वविधजतीस्वपरीपकैलेकैचरणजिनराज जौ॥

होकेसुखीभविजौवनितहूजे॥ उँहीदीप॥ सुगंधीवनिवाजेरुचिरदशधाधूपअ
रेभक्तीभरिकेजिनपूजविधिअधिकी॥ सहीशिवसुखयावैनआवैवोजगतवनमेंयहीअ
खोसहीसुखदासुखीमनमें॥ ७॥ उँहीपुष्प॥ सफलदगमसाणैरुज

नपतिपद॥ आगे सुबुधिधारी भेर शिववरालो॥ पहीवसुविधिपूजाजिनागममें वताई हो॥ कह श्री
जिनवरनें परमगुरु सो सुनाई हो॥ उद्दीकलं॥ जलारिकसवले वैदेरववसुधामिलाकर कोम
रघयहभरियाशी चढावै चरणजिनवरके॥ सही शिवसुखपावै न फिर॥ आवै वही जगमें॥ कही यह
जिनवरनें गही भविजी शिवमगमें॥ उद्दी॥ अर्थ॥ जयमाल॥ होला॥ कल्याणकनायकनमस्सर्व
सिद्धिदातार॥ मम॥ अरजी सुनिलो॥ जिये हेतु कृष्णि प्रनिवार॥ ॥ पच्छी छंद॥ जै जैनराजदया
निधान॥ भवसागरतारणपोतजान॥ जै जै करुणा निधि देव ईश॥ सयवारनमोमें मेनायशीश॥ र
जयधन्य देव॥ प्रवता॥ सार॥ भवपारकरे भविजन॥ अपार॥ जै दियोधर्म उष्य देश सोय॥ जिह्वात
भविभवपार होय॥ सह्यर्म सदावर्ती॥ मध्यन॥ जय दिशिवसुखदायक॥ ममान॥ जै सम्यक् दर्शनम
लसार॥ डाहलाज्ञानजानौ॥ अधारा॥ अश्वधुविधिचारिततरुपातफूल॥ दिवशिवसुखजिहिकेरह
कूल॥ जो भविजनसर्वै मनलगाय॥ जिह्वै तिहिके सब दुखपलाय॥ दो भेदधर्म के जगप्रसिद्ध
मुनिवर॥ अरु आवक स्वयं सिद्धाश्रावक के ग्यारह भेद जान॥ दर्शन प्रतिमा पल्लि प्रमाण॥ भजव
दूजी व्रत प्रतिमा॥ अनूप॥ वारहव्रतधारण तिहस रूप॥ जय सामायक तीजी महान॥ प्रोषधचतुर्थ
गुणखानजान॥ हजय सचित त्याग प्रचम सुजान॥ दिन ब्रह्मचर्य बलम मस्तन॥ सप्तम हेतु एणव

बौवनपू.
॥२७॥

चर्या॥ आरंभत्याग॥ अष्टमसुवर्गः॥ जयपरिग्रहत्यागीनवमजान॥ अनुमतत्यागीदशमै
नोउद्दिष्ट्याग्यारमपवित्र॥ यहउत्तमश्चावकजातिमित्र॥ अजबपहिलीप्रतिमापूर्णहोय
दूजीकोतवआरंभहोय॥ जवदूजीपूरणसधैसोय॥ सवतीजीकोआरंभहोय॥ दे॥
तिमाभैदजान॥ पूखसाधैउत्तरप्रमाण॥ पहलीप्रतिमाविननाहिकोय॥ बहत्तपसीमुनिकों
नहोय॥ २७॥ यहजानिसुधीहिरदैविचारि॥ महलेसमकितकोहृदयधार॥ समकितविनको
हि॥ समकितविनअभगतिपर्मनाहि॥ २८॥ यहजिनवरआज्ञामानवी॥ हिरदैविचारवधारि २
कदेखकरउरविचार॥ जिनवरकीआज्ञाहृदयधार॥ २९॥ जगधन्यदेवअग्रहंतसेव॥ जिहिसेंभ
वैसर्वभेचा॥ ममउरमैनिष्टोदेवसार॥ धौखवलबुद्धिअग्रहमेवसार॥ ३०॥ हेदेवअग्रजममवारवार
रुनाकरसुवदधितारता॥ अवविघ्नभयकरआज्ञार॥ निजस्वहितकरुछिकरलारलार॥ ३१॥ दोह
र्थकरत्रिभुवनधनी॥ सुमगुणअग्रमअपार॥ रुपाकरोमुजदीनयैकोभवोदधिपार॥ ३२॥ अ
रु॥ सिद्धशिरोमणिसार॥ सिद्धकरोपुरुषार्थकी॥ मेरीबुद्धिविस्तार॥ सिद्धकरोसतस्वारथी॥ २
त्याशीर्वाद॥ ॥३३॥ ॥अणनंदीश्वरदोषदक्षिणदिशउत्तरदधिसुखजिनालय
ह॥ बालजोगीरासा॥ नंदीश्वरदक्षिणदिशमाहीअग्रनपर्वतसेहोवापीवीचशोकावापीभैंद

गिरमनमोहेतापरश्रीजिनभवन अरुतिमसुरपपूजनआवे॥शक्तिहीनहमनिजगृहमाहीजि
 नपदकोशिरनावे॥२॥उद्दीनंदीश्वरधीपदक्षिणादिशचतुर्थदधिसुखजिनालयेभ्योनमः॥अत्र॥
 अत्र॥अत्र॥पुष्या॥सौरा॥पद्मद्रुजलसाराकंचनभाजनमैभरो॥जिनपदतरत्रयवाराधा
 रदेयसवदुखहो॥३॥उद्दीनंदीश्वरधीपदक्षिणादिशचतुर्थदधिसुखजिनालयेभ्योनमः॥जल॥२
 केशरचंदनसारकर्पूरादिमिलाईएजिनवरपदसुखकारपूजतभविसातालहो॥२॥उद्दीनंदन
 देवजीरसुखदास॥अक्षतस्वस्तसुहावने॥पूजनशिवपदखासमुक्तिवासनिश्चेलहो॥३॥उद्दीन
 तं॥पारिजातमंदारसुंदरकुसुमअनूपले॥भक्तिभाकउरधारजिनपदपूजतशिवलहो॥४॥उद्दी
 नपुष्या॥नानाविधमकवानाजेशुद्धसुहावने॥जोपूजतभगवानस्तुधादोषसोसबहरो॥५॥उद्दी
 नरुं॥दीपकजोतिप्रकाशशुद्धवस्तुसंजोगसे॥पूजैजिनसुखराशिज्ञानजोतिप्रगटसही॥६॥
 उद्दीदीपं॥रुक्षागारकरपूरचंदनधूपवनाईये॥भक्तिभावभरपूर॥जिनवरचरनयदाईये॥७॥उ
 द्दीधूपं॥एलाकेलाआदिफलउत्तमवहुरसभोक्तकैमनअहलाह॥जिनवरकीपूजाकरोपउद्दीफ
 जलफलवस्तुमिलायअर्घवनावे॥भयजन॥पूजौंश्रीजिनपांयमुक्तिमहलनिश्चमिलो॥८॥उद्दीन
 द्यं॥जयंमाल॥देहा॥तुमस्वामीत्रैलोक्यकोअशरतअधार॥इसअसारसंसारसोमेरीसुनोपुकार

था॥ यच्छडीच्छद॥ जैजैजिनराजदयानिधानभवदुवमेतनसमरपमहानजैजैमैयासंसारमा
दुखसहेवहुतसोधिपेनाहि॥ तहुकालनिगोदकुवासकीन॥ दशआठजन्मइकसासली
जीवअहारसुसाससार॥ प्ररुजन्ममर॥ एइकसातधारा॥ क्रमक्रमसेतासैनिकसदेवयावरग
तिपाईपचभेवातहोकालअसत्यविनाशहोय॥ बहुवारजन्ममरणदिहोय॥ छयइंद्रिय
कविकलेदेह॥ धरिसहेदुक्खताकोनछेह॥ यहातकसन्मूर्छतलहीदेह॥ मनविनातदयितनसे
धा॥ पचइंद्रीतनदोभेदसारमनरहितजीवनहिंगर्भधारमनसस्तिगर्भमैवसेआय॥ नाहरनि
कलपाया॥ भयोजतीतारकरैरुनारा॥ योजीवगर्भेसैंहोयपार॥ जन्मसमयअतिदुख
नवरजानैकैसहेसोय॥ धमश्रुजोनिमहादुखवातिजानि॥ हिमउसचुधाअरुतवावान॥
रधारफिरपेरैमारा॥ पश्रुगतिकेदुखकीकहासम्हार॥ संलेशभावसेनर्कजायतहोती
एदुखपावैअघाय॥ फिरनिकसितहोतैबहुभ्रमताकोनहिपावैकहीअत॥ ७॥ कोईमुएउ
रैरुपाय॥ तहोविषयलो लपीहुएजाय॥ विनधर्मध्यानआपूगमाय॥ ८॥ रथावत

चितमणिसममनुप्रदेखसतवुफिरुचकुलधर्मनेह॥ अतिदुर्भपावैजगवचीकात॥ एत
ऊपररहैमीच॥ हेदेवजागयहमिलोसार॥ यातेप्रभुनुनियेममपुकार॥ प्रभुदेहुहमैनिजरु

नाप्ररुप्रगटकरोउरसत्यज्ञान॥ममद्रव्यक्षेत्रप्ररुकालभावानासमदीजिचारित्रभाव॥यहरत्नत्रय
शिवमगउपावधाकेसाधकगुरुदेवभाव॥भवभवमैमिलियोजोगएव॥भवभवमैमिलियोतुम
चरणसेवाभवभवगुरुमिलियोअनागाए॥भवभवसतधर्मरहोप्रचार॥अयहअरजरुमारीसुनो
देवाहृतनौवरदेप्रभुसुयशलेवप्रभुतुमसवल्लायककहेदेवकरजोगिजिनेश्वरकरतसेव॥हो
हा॥जवतकरविशशिगगनमैसवतकथिरभिरगिराजमवतकयासंसारमैधर्मरहोतिनराज
२५॥अर्धेदोह॥शिववासीप्रभुशिवसुखी॥सुखल्लयकभरपूर॥मेरेहिरदेमैवसो॥तुमजयवंतह
ज॥२६॥इत्यामीर्वादा॥ ॥२६॥ ॥अष्टभूमिनिंदीश्वरदीपदक्षिणदिशप्रथमरविकरजिनलि
यपूजाभाह॥जोगीराया॥नंदीश्वरदक्षिणअंजनंगिरअरजापूर्ववापी॥ताकेवाहिरकौनप्रथममै
रतिकरगिरआलापी॥एकसहस्रयोजनकोऊचौगोलदोलसमसोहो॥तापरश्रीजिनगेरुअरुतिम
सुरनरकेमनमोहे॥ईद्वीनंदीश्वरदीपदक्षिणदिशप्रथमरविकरजिनल्लयच्योनमः॥अबने॥अबनेनने
पुष्पाचोपाई॥रूपकैदेवदोर्घकेउजलनीजिमीतरागकीपूजनर्कजि॥यातैजन्मजरानशिजावेक
मक्रमसोशिवमंदिरयावे॥मंदीश्वरदक्षिणदिशजानो॥अरजावापीकेपरमानो॥एतिकरगिरजिनगरु
सुखराईसर्वसुरासुरपूजनआशय॥ईद्वीनंदीश्वरदीपदक्षिणदिशप्रथमरविकरजिनल्लयच्योनमः॥

वौवनपू॥
॥२६॥

जले॥ शशि समसीत सुगंध अपारा वावन चंदन अरु धन साग जि न व र च र ण ज ज न त हित का रा श
ति सु धा प्र गे ती हि वा रा नं दी न ॥ ३ ॥ उ ह्रीं च द न ॥ अ त्त त स्व त्त स र ल सु चि सा रा ॥ भ र्ति क र ले खु व ण के
या रा ॥ पू ज त जि न व र भ क्ति सु धा रा सो पा व त अ त्त य प द सा रा नं दी न ॥ ३ ॥ उ ह्रीं अ न्त ॥ पा व न फु ल सु गं
ध अ नू पा ॥ अ ष वा सु व र ण के सु चि रू पा ति न सो जि न व र प द भ वि पू जे काम दा ह द हि शी त ल हू जे
नं दी न ॥ ३ ॥ उ ह्रीं पु ष ॥ व ट र स म य च रु स घ व ना र्द्र ॥ घ्रा ण ने न म न कै सु ख दा र्द्र ॥ ले क र स्त्री जि न मं दि र
जा वै जि न प द च र न न भे ट च टा वै नं दी न ॥ ४ ॥ उ ह्रीं ने वे द ॥ क न क र त न म य जो ति सु त्त नी ॥ शु चि क र पू सु
र भि घ ट वा ती दी य क क र जि न व र प द पू जे के व ल पा य अ म र प द हू जे मं दी न ॥ ५ ॥ उ ह्रीं दी प ॥ क र्पू रा र्द्र
सु गं ध अ पा रा र्द्र व्य मि ला य धू प शु चि सा रा जि न व र च र ण जै म न ला र्द्र ति न नै न ति शि व संप ति पा र्द्र न
दी न ॥ ५ ॥ उ ह्रीं धू प ॥ फ ल उ त्प ल य अ ने क प्र का रा स्ना व त भ वि ज न ह र्क अ पा रा जि न व र च र ण ज ज त भ वि
प्रा णी ति पा वै दि व शि व सु ख दा नी नं दी न ॥ ६ ॥ उ ह्रीं फ ल ॥ ज ल फ ल द्र व्य मि ला य व नो कै अ र्घ क न क म य
या र भ र वै जो भ वि श्री जि न व र ण च टा वै सो नि अ उ त म ग ति पा वै नं दी न ॥ ७ ॥ उ ह्रीं अ र्घ ॥ ज य माल ॥ शि
वा ॥ दे व रू षी सु र प ति स वै जि सै न वा वै शी श जि न के च र ण स रे ज र ज र हो स दाम म शी श ॥ ८ ॥ प ह्नी
छं द ॥ ज य श्री ध र श्री क र श्री जि ने श ज य व्र त्सा शि व शं क र म ह्म श ज य च तु रा न न स र्व त्त दे व तु म ब्र ह्म

सुरासुरकरतसेवा॥ हनयमुनिमहंततुमध्यानधार॥ तेहोयअगमभवसिंधुपार॥ प्रभुतुमगुणमहिमा
अतिअपार॥ गणधरसुरेशनहिलहेपार॥ अतौअल्पमतीनरऔरकौनप्रभुवणैसकैगुणरतनभोन
प्रभुतुमगुणनिर्मलगगनमाहि॥ सुनिविद्यानिधिनहिपारजाहि॥ अतौहमसमाननरकीटसोय
किरिविधिगुणअंवरपारहोय॥ पैभक्तिभावहमशक्तिहीनतुमगुणवर्णनआरंभकीन॥ ४॥ ज्योंनिजसु
तपालनहिरणआप॥ हरिसन्मुखजायकैरेकलाप॥ ज्योंवालकशशियतिविंवदेखि॥ तिहिग्रहणकरे
योरुषविशेष॥ अत्योंतुमगुणकथनमगरसार॥ मुनिईशकहतयाहीप्रकार॥ प्रभुहमकछुजानत
नाहिदेव॥ क्याकहिकैप्रभुपदकरैसेव॥ द्वाप्रभुतुमसवकैरत्तपालसोय॥ जगमाहि॥ सुनेवहुवारसोय
तातैयहनिअपुनरमधार॥ हमरोभीवेडाकरोपार॥ ७॥ ज्योंत्यायवंतभूपतिमहान॥ इकग्रामतणो
शिरदारजानबहुनीनिर्वलकौंदया॥ आनिप्रतिपालकरैसुनियेसुजान॥ जतौआपदेवत्रैलोक्यनाथ
सुरईशनवावैतुमैमाथ॥ रुखिसुनिमहंतसवकरैआश॥ प्रभुदेहुतिहेनिजकरुछिवासा॥ ८॥ क्योमेरीवा
रअप्रवारकीनमोकूँजानूअत्यतहीन॥ तुमयदतरमेरोसदावासा॥ यहमेरीपूरणकरो॥ आस॥ ९॥ बहुक
रकरूपअनेका॥ तिनकोगखीप्रभुतुमहिटेकनरअधमवहुतनिस्तारदीन॥ अदृश्यसुबुधि
विस्तारकीन॥ १॥ ज्योंखड्गकुसुमकीकरीमाल॥ ज्योंवालभुजंगिनफूलमाल॥ ज्योंसेयविपातिसव

करीदू॥ ज्योमैरोसंकटकरेदू॥ १॥ ज्योविकटअग्रिथलभयोनी॥ असमानवदो॥ ज्योसतीचीरा॥
ज्योजहरसुधासमकियोदेव॥ ज्योमैरोसंकटहरोदेव॥ २॥ काहूकोखर्गविमानदेहाकाहूकोरुफि
निधानदेव॥ काहूकोछत्रपतीकरेसुभमपासवासघोसुयशलेदु॥ ३॥ अतिजसुतकेतुतलेवचनपे
उरहर्षकरेसाताविशेकसुभतातमातसेअधिकदेव॥ मेरेसुनिवचनकपाकरेवो॥ ४॥ अजय
तोअजगमेंतुमदयालुअजयवंतोतुमनामीविशालजैवंतोतुममगचलनहाएअभुमीहिकरे
सारपाए॥ ५॥ दोहा॥ तुमस्वामीशिवमहलकेषासीसुखीअनूप॥ करोजिनेश्वरकोप्रभूउसी
पनैस्वामी॥ अर्ध॥ सोरठा॥ दुस्तरपाएवारखानीरससारो॥ प्रभुतुमअधमउधारो॥ मोहूपा
रियो॥ ६॥ इत्याशीर्वाद॥ ॥ ७॥ ॥ अथनंदीश्वरदीपदक्षिणादिशद्धितोगंपूजाभात

सा॥ नदीश्वरकीदक्षिणादिशमेंअंजनगिरहेभाशे॥ ताकेपूरवअरजावाप्यो॥ ताकेकोन
शेदूजोरतिकरपर्वतसोहंकंचनवर्णकियालासापरजिनगरहूकौनितपूजौमनवचका
कोला॥ १॥ उहैनंदीश्वरदीपदक्षिणादिशद्धितोयरतिकरेभ्योनमः॥ २॥ अत्र॥ अत्र॥ अत्र॥ अत्र॥
लचोपाईरूपक॥ निर्मलगुणधारकजगनामी॥ परमपूज्यनीर्धंकरस्वामी॥ तिरुगुणमा
रणसेथ॥ जिनपदजलसैंजजिभवि॥ लोयाअष्टमदीपदिशादिखणाई॥ अंजनगिरकेपूर

भाईप्रतिकरदितियजिनालयसोहे॥सकलसुरासुरकेमनमोहे॥३॥उद्दीनंदीश्वरदीपदक्षिणा
 दिक्षाद्वितीयरतिकरजिनालयेभ्योनमः॥जल॥१॥दुष्टकषायतापदुखकारीसातेरहितसर्वहि
 तकारी॥श्री॥अर्हतपरमपद्मकाजै॥बंदनसोपूजौजिनराजै॥अष्टम॥२॥उद्दीचंदन॥अक्षयपदमे
 आपविराजै॥स्निहसस्त्रूप॥अनूपमछाजै॥तिहिपदजापविकाजसुरेशा॥अक्षतसोंजिनजतल
 गशा॥अष्टमरति॥३॥उद्दीअसक॥कामदाहजगमैदुखकारी॥जिनजीतौतिनकीबलिहारी॥ब्रह्म
 स्वभावज्ञानवलधारी॥मुख्यचढायकस्तनवकारी॥अष्टम॥४॥उद्दीगुण॥भूखप्यासआदिकदुख
 कारी॥दोषअंगारहेजिनपरिहारी॥जिनपदमैनेवैद्यचढाअं॥भक्तिभावसैजिनगुणाऊअष्ट
 प॥उद्दीचक्र॥अभुअनंतगुणाधामविकामी॥ज्ञानजोतिअनुपमपरकाशी॥तिनकेचरणकम
 लनितध्याअं॥भक्तिसहितनितदीपचढाअं॥अष्टम॥५॥उद्दीदीप॥कर्मरहितभगवंतरूपाखा
 अनुपमज्ञानदर्शगुणामाला॥अक्षयज्ञानदर्शवलकाजै॥अजतधूपसोंश्री॥जिनराजै॥अष्टम
 ॥६॥उद्दीधूप॥परमसुगुनफलसंपतिभारी॥जोभविजनताकेअधिकारी॥सो जिनवरपदको
 चितल्यावै॥येउत्तमफलले पूजराचावै॥अष्टम॥७॥उद्दीफल॥जलफल॥आठौदलमिलावै
 भक्तिसहितजिनमंदिरजावै॥श्री॥जिनवरको पूजाचावै॥सोदिवलोकसंपदापावै॥अष्टम॥८

॥ उँही अर्धी जयमाल ॥ दोहा ॥ दूजोरतिकरजिनभवना ॥ पूजासुखदातार ॥ भक्तिसहितजीनरक
 शेतेपावैभवपाश ॥ पछडी छंद ॥ जे दीप आठमो हे प्रंधान ॥ मंदीश्वरताकोनामजान ॥ येसस
 समुद्रके औरपासगोलारुतिसोहे ॥ अतिउजास ॥ छकशतकतरेसठिकोरिजान ॥ अरुला
 खचौरासी अधिकमान ॥ इतनेयोजनसरस्वेतजान ॥ प्रतिदिशमैंचोडाईप्रमान ॥ रत्नाकीद
 एदिशकहीसार ॥ अजनगिरि ॥ अजनवर्णधार ॥ अजावापीतिरुपूर्वजान ॥ तसुकोनवीचर
 करसहान ॥ अतिहियरजिनमेंदिरशे ॥ भमान ॥ अंत आठ ॥ अधिकप्रतिमाप्रमाण ॥ सवधनुषमा
 सेतुगजान ॥ पद्मासनछ ॥ विवरणीपुराण ॥ जिनदंतवज्रसणिमयमहार ॥ अर ॥ अधरपद्म
 एलालयार ॥ दृगकंज ॥ अरुण ॥ सितस्यामसार ॥ सुरसुरीयकितजिनष्विनिहार ॥ भूलता
 रशिरकेशस्यामपर ॥ एत्तपुंजलसुधामा ॥ मखलालमने ॥ उत्तमप्रवालसुनिपद्मकमलेकी
 कलीवाल ॥ धमाकीशरीरकी ॥ इति ॥ अपार ॥ मायेसुवर ॥ एतमष्टविनिहार ॥ हुलसायमान ॥ अ
 जवता ॥ खिसुरसुरेश ॥ अतिरुषवंता ॥ अविगयभावफलकै ॥ अपार ॥ निरखतविभावसवनशेसार
 मुरसम्यकदशगिलहै ॥ सोयाधनिजन्मतिन्है ॥ तुमदर्शहोय ॥ जहमपुएयहीनपहुंचौ ॥ नजायाचसभा
 कियहोवसुमोदलाय ॥ मुमव ॥ एकमलकौशीशनाय ॥ अरुध्यानधरै ॥ शिवसुखउपाय ॥

तनी बहुद्रव्य लाया सुख पूजत हेतु मचर्ण जाया ॥ हम शक्ति ही न उर भक्ति लाय सुमचरण जैजिन
भव न जाया ॥ अथ ह भक्ति हमें भव असाया ॥ ह जो यह अर्ज सुनौ जिन अय संसार खार दुख कार सोय
या में दूजोन हि शरण कोया ॥ यथा तै यह अर्ज जीवार वा एह मकर तनु नौ जग पति उरार नुम दर्श
आज पायो अतृप ॥ सब अर्पे अज आयो अतृप ॥ अथ मम विघ्न मूल निरवार देव निधि दुहु महि
त कार देव ॥ यह अर्ज हमारी सुनौ देव ॥ कर जो रीजिने चरकर तसेवा ॥ १३ ॥ दोहा ॥ रतिक गिरा जिन भ
वन की पूर्ण यह जय माला ॥ जो वौ चै सत भाव सौ ताकि भाग विशाला ॥ अर्थ ॥ सोरठा ॥ दीन वधु म
हार ज दीन जान करुणा करो ॥ योगी वन वाज नु म्ही सुने संसार मो ॥ १४ ॥ ॥ इत्याशी वीर ॥ २० ॥
अथ श्री नंदी श्रवणी यदक्षिणा दिश तृतीय शक्ति रक्षिना लय पूजा माला ॥ ॥ जोगी यथा ॥ ॥ अष्टमही
पदिशा दक्षिण में ॥ अर्ज जावायी सो हो ताके वीच कौन रतिक गिर कनक वणि मन मो हो ॥ ता पर श्री जिन
भवन अरु तिम सुर पति पूजन आवौ ॥ हम तिन की आह्वान कर के ॥ अपने घर गुण गावौ ॥ ॥ उद्देश्य दक्षिण
दिश तृतीय शक्ति रक्षिना लये अर्चन ॥ ॥ अर्चन ॥ अर्चन ॥ पुण्या दोहा ॥ जन्म मरण के दुख सहै रजि
ने श जंगमां ॥ हिम कर संमजल लया य कै रचूं पूज जिन पाणि नंदी श्रवण क्षिणा दिशार ति करत तिय
महान ॥ जिन गरुड सुर पति जत सैन मूति के धारि ध्यान ॥ १५ ॥ उद्देश्य नंदी श्रवणी पदक्षिणा दिशार अर्चन

त्रिमोहवारहमैयानमभुनाशकियोपहिलेम्हानफिरज्ञानदर्शनावरणहोयअरुअंतरायत्रय
घातहोयाइहमचारघातियाकर्महानप्रगत्योकेवलप्रभुज्ञानभानजयजयनवत्तायकलब्धि
यायाबहुसुखीभयेत्रैलोक्यारायाअज्ञेसायकसम्यकगुणप्रथमज्ञानसायकचारितदूजोमहा
नाजयतीजोसायकदर्शहोयाअरुवैषोसायकज्ञानसायअज्ञेगोपभोगसायकजुदोय
अरुज्ञानलाभसायकजुहोयावलनतसायकीनवमिलब्धिऐसीनवलब्धिअनंतअब्धिअनि
जआत्मरमणयरुनोगज्ञानअविभिन्नवृत्तिउपभोगमानपरवस्तुत्यागयरुदानधीरभीष्ट
उपदेशीवनतवीर॥ निजगुणग्रापतियहलाभजनवलनतप्रगल्बीरजमज्ञानसकबलुनि
कालिकलखनहारसोकेवलदर्शनहेउदारअनयकालद्रव्यपर्यायसर्वजनकौयुगयतजानौनुस
र्वसोकेवलज्ञानकक्षोजिनेशप्रसन्नअनंतउद्योतवैशाखेदत्पादिअनुलसपतिमहानस्वाधीन
अंतरंगीसुज्ञानअरुसमवशरणरचनाअपारनाहिजलयिनीकोनहियार॥ जिहिदेखतहरि
अचिरजकरंतशिरनायध्यानहिरदेधरंतहेरुपासिंधुप्रभुवीतिरागतुमदर्शभयोममजग्योभाग
२॥ ममजन्मसफलअवभयोसारजनवदेखप्रभुतुमनयनहरकरिहपादेवममवासवासउर
यहीजिनेश्वरकरंतआसा॥ २॥ धन॥ जयजयजगतारीशिवमगचारीअर्जहमारीसुनिलीजोनि

अनिधिहितकारी संपत्तिसारी धर्मप्रचारी प्रभुदीजे ॥ ३ ॥ अर्घ्यं सोरठा ॥ दानेश्वर महाराज ज्ञानदा
नममदीजिये ॥ निजपरहितव्रतसाज शिवमगदेषश्लो जिये ॥ ४ ॥ इत्याशीर्वाद ॥ ॥ १३ ॥
अथ श्रीनंदीश्वर दीपदक्षिण दिशचतुर्थरतिकर पूजा माह ॥ जोगी राया ॥ नंदीश्वर के दक्षिण
अंजन पर्वत सो हो ॥ ताके दक्षिण विराजा वायो ॥ सुरपतिके मनमो हो ॥ ताके को न विषें शुभराजें ॥ चौथो रति
कर भाई तापर श्रीजिनमें दिर जानों ॥ सुरपति पूज स्वाई ॥ १४ ॥ वैष्णवी श्रीचंदीश्वर दीपदक्षिण दिशचतुर्थरति
कर जिना लये नमः ॥ अन्नं पुष्पं ॥ सोरठा ॥ हिमशितसमश्रुचिसार ॥ हेमाच

रले॥ जन्मत्रिदोषनिवार॥ जिनपदकी पूजाकरो॥ दक्षिणदिशसुखकार॥ नंदीश्वरकीजानिये॥
ग्रहसारसुरपतिजिनपूजाकरो॥ उद्द्रीनंदीश्वरकीपदक्षिणदिशसुखकार॥ नंदीश्वरकीजान
तिकरजिनालयेभीनसः॥ जलं॥ चंदनगंधमिलाय॥ होतसुवासदशोंदिशा॥ मूर्जोंजिन
भवातामयासोंमिते॥ दक्षिणबध॥ उद्द्रीचंदनं॥ निर्मलग्राह्यनृपांशिकरसमश्चतमहापूजों
जगभूपश्चतयपदयासोंमिते॥ दक्षिणबध॥ उद्द्रीग्रसंतं॥ कुसुमसुगंधितसासुवरणयात्रविकैभ
मूर्जोंभवंदधितासभववाधायोंमिते॥ दक्षिणबध॥ उद्द्रीबुध्यां॥ नेवजजातिअनूपसुचिसुगंधष
॥ पूजोंषष्टपतिभूपयांतेंशिवसुखपाईये॥ दक्षिणबध॥ उद्द्रीनैवेद्या॥ शेषकविविधिप्रकारय

धायोगशुचिलीजियेभावभक्तिउरधारजिनवरकीपूजाकरेदक्षिणा॥६॥ उँहीदीप॥ कृष्णागरकरप
रुओरसुगंधितद्रव्यलोशुचिंदनकोचूलाधूपलेयजिनपदजजोंदक्षिणा॥७॥ उँहीधूप॥ पिस्ताओर
विदामालोंगछुहारेआदिलेस्वहितजिनैश्वरधामजिनवरकीपूजाकरेदक्षिणा॥८॥ उँहीफल॥ ज
सफलद्रव्यमिलायाप्रर्घकरेंअतिचावसोपूजौश्रीजिनरायाविनयसहितबहुभावसोदक्षिणा॥९॥
उँहीअर्घी॥ जयमाल॥ दोहा॥ तीनलोकपतितुमधनी॥ पूराब्रह्मपुराण॥ परमब्रह्मपदकारणेंधरेंसह
मुनिध्यान॥ सुरपतिनितप्रतिष्ठुतिकरेंधरेंदृश्यमेंध्यान॥ भैसेश्रीब्रह्मवत्पदजजोंसदागुणखान
आपदहीछुंद॥ जयढीपआठमैंमध्यजान॥ दक्षिणादिशअंजनगिरमहान॥ तिरुगिरकीदक्षिणादि
शिविचार॥ विरजावापीगंभीरसार॥ श्रद्धोजनद्रकलाखवनोप्रमाण॥ चौडीलांवीडकसारजानम
णिरत्नजडितजानोंसिचान॥ जलसहसएकयोजनप्रमान॥ अचंडुओरवेदिकाछारसोय॥ आगेवन
बारेदिशाजोय॥ योजनपञ्चाससार॥ बहुवनकीचौडार्धनिहार॥ अलेवेवापीसमजानवीर॥ मणिमईको
दिगोपुरगहीर॥ तिसमाहिमहलबहुशोभमान॥ मुख्यंतरभवनरहेसुजान॥ धतिहिवापीवीचकह्यो
जिनेशदधिसुखगिरजानौखेतभेष॥ ऊचोदेयोजनदशहजार॥ बहुरेकरोलसमगोलसार॥ प्रताप
पीकेंवाहिरीकोन॥ शक्तिकरगिरताप॥ जैनभोना॥ सवसमवशरण॥ चनामहान॥ जाकेदेखतसवपापह

नक्षत्रं शक्रशचीमिति भक्तिभावः ॥ नृनृत्यकरैः आनंदचावः ॥ सवसाजवाजः प्रभुतः प्रपारः ॥ कवि
नलहैताकौजुपाः ॥ अरुहंतं विजसंतं सर्वार्थशः ॥ अरुनृत्यकरैः सुरनायश्रीशः ॥ जलदेवनरुतः शुभगा
होयः ॥ अरुहदेवदुंदुभीकजैसोयः ॥ सवन्त्यभेदनवरसप्रचारः ॥ सुरसुरीदित्वावेभक्तिपारयः ॥ हवर्ण
नकिं हिमुखकरैः कोयजोलखैति सैधनजन्महोयः ॥ जैजैजिनराजदया ॥ निधानमभुमुण्यरूप
जगमैप्रधानमयतीर्थकरपदपायदेवत्वपधरौ स्वपरमुखदायदेवः ॥ लहिकेवललवषउप
सागदीनोभवसागरकरनपाएजवअलुकीर्तिजगरहीछाया ॥ नहिगणधरपावैकहृतपाए
तुमअशरनशलसहायदेव ॥ तुमसवजगकौमुखदायदेवः ॥ निजरुद्धिदेवुरदायदेवः ॥ करजीरि
जिनेभरकरतसेवारः ॥ दोहा ॥ वारनतरनजिहजहैयाभवसागरमासिमोकौषारकरोसही
सशयनासिः ॥ अर्घ्यः ॥ सौरः ॥ कर्मकलंकनिवारभयेषु छपरमावमासोप्रभु रुमकौतारयांस
रअसारसेः ॥ ॥ इत्याशीर्वादः ॥ ॥ ॥ अथ श्रीनंदीश्वरदीपदत्तिलादिस

रयूजामाहः ॥ जोभीरासा ॥ नंदीश्वरकेदत्तिलादिशमें अंजनगिरहैमहात्माकेयश्विमनामअशोका
चापीनीरसुहाई ॥ ताकेप्रथमकौनमें सोहें मंचमगतिकर्जानौ ॥ ताकेऊपरस्त्रीजिनमेंदिरतम
खदानौ ॥ उद्दीनंदीश्वरदीपदत्तिलादिरपंचमरतिकर्जिनावजेचोनमः ॥ अत्र नमः ॥ अत्र नमः ॥

धं॥ गीता छंद॥ पंचमपयो निधिनीरता समरतनभाजनमें भएँ॥ जलसों जिनेश्वर पदकमलकी भ
क्तियुत मूजा करों॥ वरदीप अष्टमदिशा दक्षिणपंचभोर तिकर जहाँ जिनराज गरुसुर अमुर मि
लिके जिनचरण मूजतत हो॥ २॥ ईही नदी श्वर दीप दक्षिण दिश पंचमर तिकर जिनालये योनभभाज
ल॥ १॥ शुचि गंधकदली करमलिया गिरि सुचंदन लाईये॥ भवदाह राहन काज श्री जिनचरण अ
ग्रचटाईये॥ ईही चंदन॥ चोखे अनोरख सरलधोखे स्वत्त अत्ततली जिये॥ अक्षयमहा निधि
पति जिनेश्वर अग्र पुंज सुदी जिये॥ वर॥ ३॥ ईही अत्तको॥ वर कुसुम शुद्ध सुगंध रंगित अतन नंदन ह
रनको॥ मनलाय भक्ति चढाय भक्तिजन जौ जिनवर चरण कौ॥ वर॥ ४॥ ईही पुष्प शुचि शायदाय सु
गंधत जे सुरभि घटक सोहनै॥ अति मिरसने वेद्य ले कर एद जौ जिनवर तने नवर॥ ५॥ ईही चंद
वानी कपूर सुधार उज्जल जौ तिज गमग होत है॥ तसु दीप सों जिनचरण पूजौ॥ ज्ञान जौ तिउद्योत है
वर॥ ६॥ ईही दीप॥ घनसार कृष्णगर तरंग चंदन सुगंध अंपार है॥ तिरुधूप सै जिनचरण पूजौ॥ यही
मुण्यप्रचार है॥ वर॥ ७॥ ईही धूप॥ फलसार खदु विधिया लभ करे॥ भक्तिभाव वढाय को मूजा करे
जिनराज पदकी भविजिनालय जाय को॥ वर॥ ८॥ ईही फल॥ जल गंध अक्षत वपुष्य चरु वरदीप भूष
कलावली करि अर्घ जिनवर चरण पूजौ॥ पार है उभवावली॥ वर॥ ९॥ ईही अर्घ॥ जयमाला दिहै॥

वैवर्तनम्

॥३५॥

हिमकरमुक्ताहातुप्ररुचंद्रक्रांतिवलधारइतसवसेंशीतलप्रभूतुमवचनामतसार॥
दाहदुखहरनकौं॥अरकोनहेउपाया॥सुधाधारतुमवचहिये॥सत्सातुषानशया॥२॥भुजगप्र
प्रातछट॥जयौदेवजगमेंतुम्हीहोविधाता॥जयौदेवजगमेंतुम्हीहोविख्याता॥वताईतु
सवधर्मनीती॥जताईतुम्हीनेशुभाशुभप्रतीती॥॥महापापकेभेदजगत्यागरूपा॥तुम्ही
तायेजिन्होंकेसरूपा॥पथमपापहिंसा॥महापापघात॥इसेंजोगिनेजोपुण्यसोपहृपा
चनमूढबोलैयहीपापदूजो॥मगूटेमनुष्यकूकनीपापसूको॥महापापचोरी॥गिनोतीस
॥इसीकीवजैसेजीवनकैपरीहो॥अमहापापचोथोपरदारसवा॥लहेदुक्खभारी॥करेजोपरवा
सीजन्ममेंराजकोतंडपावो॥कुधीआपअरवापकोकुललजावो॥अमहाव्याधितन्नापरि
धावो॥यहीयंचमोपापश्री॥गुरुवतावो॥महालोभकेजोमेघोरधूम॥हाहोयगाफिलदिनरा
॥महादुष्टइशिविषयमोगभारो॥मडेदुक्खदातामनोंनागकोरो॥इन्हीकीवजे
सारे॥वोपुरुषनामीनकैमेंसिधारो॥घांइहीपापकोतजैसत्यज्ञानी॥ब्रतीवोकहावैकही
नी॥तजैपापकिंचित्अणुब्रतकहावो॥सर्वीपापत्यागोमहाब्रतलहावो॥अप्रहिंसाविषे
तंगनामी॥ब्रतीसत्यधनदेवनामी॥अकामी॥अचौर्यवती॥मैंकुमवारिसेणा॥महाशीलमेनी

लीप्रवीणा॥ चपुसिगुहप्रमाणी बडोनामधारी॥ भयोहेजगतमाहिजप्रभूपभारी॥ ईकीप्रशंसागु
हदेवकीनीकहीप्रावकाचारमेंदेखलीनी॥ भोव्रतोंकीवजहसंगहीको॥ प्रागरीनमेंदेव॥ आके
करैभेटभारी॥ महाघोरउपसर्गमेंसेवचावै॥ धनीजीवकेचरणकोशीशनावै॥ १०॥ महास्वर्ग॥ अप
वर्गकेसुकुलसारेसवीजीवपावैव्रतोंकेसहारे॥ प्रहोवीरस्वामीतुम्हीसुकुलदाता॥ सुधर्मोपदे
शीतुम्हीहोविख्याता॥ ११॥ प्रभूजीतुम्हारेचरणहैंचंद्ररेखा॥ वसेउरसीनैस्वपरभेददेखा॥ प्रभू
कमेरीयही॥ अर्जमानों॥ स्वपरभेदविज्ञानदीजोप्रमाणों॥ १२॥ दोहा॥ निजपरज्ञायकभावनाज
यवंतोत्रयकाल॥ याप्रशादससारमेंभविष्यवैशिवचाल॥ १३॥ अर्ध॥ सोरठा॥ सत्प्रतीति॥ अरुज्ञा
ना॥ सत्प्रवृत्तियलैलत्रय॥ दीजेश्रीभगवान॥ तुमदानीजगमेंवडो॥ १४॥ इत्याशीर्वाद॥ ॥ १५॥
अथषष्ठमरातिकरजिनालययूजामाह॥ जोगीरासा॥ नदीश्वरवर्दीप॥ आठमौताकेदक्षिणभागे
षष्ठमरातिकरपर्यंतसोहेजिनमंदिरतिहिंजागे॥ शक्रशचीमलिसूजरचावैहिरदेहर्व॥ अप्पारा
अकृत्यमजिनविंवजिन्होंकोवाप्तवाएनवकार॥ १६॥ ईशानंदीश्वरदीपदक्षिणदिशेबहुदूरविकसित
नालयेन्योनमः॥ १७॥ अन्नबन्धनभयत्रक॥ पुष्प॥ सुदरीचंद्र॥ सुरतरीजलउजललाईये॥ जिनपदोबु
जमाहिवलाईये॥ असतकर्मउहेदुखनाशिये॥ सलजशांतस्वरूपप्रकाशिये॥ दीपनंदीश्वरदक्षि

बौवनम्
॥३६॥

एदिशगगिरिसुषष्टमरतिंकरतहोलसा॥तासपरजिनभवनसुहावनौ॥करतपूजासुरा

॥३॥उद्दीनंदीधरदीपबध्ममरतिंकरजिनालये॥योनयः॥जल॥॥मलयचंदनकुंडु

अंतोघसिकमूर्कदलीदलआश्रितं॥जिनपदांबुजपूजनकी॥जिये मनुष्यजनमतनौफलली
दीपबा॥३॥उद्दीनंदन॥सीरहीरजतसमजानिये॥सितसरलअलतशुचिआनिये॥

चंद्रजिनेशको॥सजतभविमुखलहतसुरेशको॥दीपबा॥३॥उद्दीनंदन॥कमलआदिअनूपम
कुसुमचारुवणचितदीजिये॥जिनपदांबुजपूजराईये॥अलनमारिअभयपदयाईये
पु॥३॥उद्दीनंदीपुष्प॥सरसषट्समिप्रितव्यजनो॥मरुवनायसुधीमनंजनंचरणश्री

मुक्तिसारागसंमलकौंफजो॥दीपबा॥३॥उद्दीनंदन॥तमनिवारकदीपमहानहोजग
तिवानेहो॥जिनपदांबुजअग्रचढाईये॥परमज्ञानमहानिधिपाईये॥दीपबा॥३॥उद्दीनंदीप॥

कारसुगंधअनूपहो॥मलयचंदनकीवहुधूपहो॥करतपूजनश्रीजिनराजकी॥हरतम
वसाजकी॥दीपबा॥३॥उद्दीनंदन॥बहुफलावलिपावनलाईये॥वरनश्रीजिनराजचढाईये

रमापतिसपतिलहनको॥यहउपावसुधीभविगहनको॥दीपबा॥३॥उद्दीनंदन॥जलफला
द्रव्यमिलाईये॥अग्रघलेजिनमंदिरजाईये॥करतपूजनभक्तिवढायको॥लहतसुकवशिवा

जायको दीयन ॥ ६ ॥ ईष्टीं अर्च्य ॥ जयमाल ॥ दोहा ॥ करुना निधि त्रिभुवनधनी ॥ अशरनशरन अथा
रकरुना विधि कर मुरु दीन पै दीन वंधुगु ए धारा ॥ तोटक छंद ॥ जय श्री धर श्री कर श्री पतिने
अघ घायक दायक संपति हो ॥ वर केवल ज्ञान प्रकाश कि यो ॥ भविजीवन को भ्रम मे रहियो ॥ स
वजीव ॥ अजीव ॥ प्रभावत जो ॥ गुण पर्ययरूप भेद मनो ॥ जहा जीव सुतल सुभाव महा ॥ ए भेद
सुजीव प्रभाव कहा ॥ महलो उपशम कित भाव कह्यो ॥ द्रग चारित स्तु भेद मन्यो ॥ पुनि सायक भा
व दुतीय गिनो ॥ तिहि केन वने दसु पेस मनो ॥ उचि सम्यक चारित ज्ञान महा ॥ अरकेवल दर्शन बा
न कहा ॥ उपमोरा शुभोग ॥ अनेक वली ॥ प्रह्ला भनवौ ॥ इम लब्धि वली ॥ ततियो ग निभाव क्षयाप
शम ॥ तिहि भेद ॥ अहार हजा निगम ॥ वउ ज्ञान कु दर्शत्रय ॥ मणि लब्धि सुपंद्रह भेद ॥ अय ॥ ५ ॥
अरु सम्यक् चारित भाव युग ॥ एक संयमा संयम भाव भं ॥ इम भेद ॥ अहार हजा निसे वै ॥ उदईक ॥ अकी
स सुनो ॥ जो अर्च्य ॥ हागति चार कबाय जु चार कही ॥ त्रय लिंग छलेस्य विभाव यही ॥ कुदृष्टि ॥ अज्ञान ॥
संजमहे ॥ प्रसिद्ध मिले ॥ इक ईश यहै ॥ अपरिनामक पंचम भाव कह्यो ॥ भविजीव ॥ अमय त्रिभेद ल
ह्यो ॥ मण भावतरे पुन भेद भयो ॥ सव श्री जिन ॥ आगम माहि कह्यो ॥ अर्चन मै को ईत्या गन जाग गिने
के ई ॥ आदर योग जिन शभने ॥ को ई श्री अर्चत भये प्रगटे ॥ तिहि माय वि को गण राज रटै ॥ ६ ॥ वही श्री गु

दक्षिणदिशसमरतिकरजिनालयेभ्योनमः॥ जलं॥ १॥ चंदनकेसरगंध॥ अनूप॥ शीतलसुखका
 रणशुचिस्त्यदया॥ पूजौ जिनवरचरणविशालभवात्पातापमितेततकालदया॥ २॥ ईश्वरीचंदनं॥
 अमलप्रखंडिततंदुलसारादेवआदिकजीरहितकारदया॥ शुचिअक्षतलेजिनगरहजायपूजौ
 जिनवरयदहरखायादया॥ ३॥ ईश्वरीअक्षत॥ पावनपुष्पसुगंधअपारा॥ कंचनयालभरोहितका
 रदया॥ कुसुमायुधअरिजीतनकाजपूजौ चरणकमलजिनराजदया॥ नंदी॥ ४॥ ईश्वरीदुष्यानि
 वजसद्यपवित्रअनूप॥ घ्राणनेनमनमोहनरूपदया॥ पूजौ श्रीजिनचरणमहान॥ परमशान्तिदायक
 कल्याणदया॥ नंदी॥ ५॥ ईश्वरीचंद्रं॥ उज्जलदीपकस्वत्तवनायमोहमहातमहरजपाय॥ दया॥ ६॥ शा
 नजोतिपरकाशनकाजपूजौ चरणजगत्शिरवाजदया॥ नंदी॥ ७॥ ईश्वरीद्वयं॥ कृष्णागरचंदनकर्पूर
 धूपसुगंधीकरवरचूरादया॥ आरोकेरमजलावनकाजपूजौ श्रीजिनवरहितसाजदया॥ नंदी॥ ८॥ ई
 श्वरीधूपं॥ लोंगलाइवीओरवदामपिस्ताओरसफलअभिरामदया॥ नंदी॥ मुक्तिमहाफलदायकदेव
 पूजौ श्रीजिनवरकरसेवादया॥ ९॥ ईश्वरीफलमूलफलअथौठें इव्यमिलाय॥ उत्तमफ्राठें इव्यमि
 लायदया॥ श्रीजिनरायचरणसुखदाय॥ पूजतजन्मजराज्वरजायदया॥ नंदी॥ ईश्वरीअर्थ॥ १०॥
 जयमाल॥ दोहा॥ भवभंजनभगवानभिजिसाहसशिवरूप॥ करहया॥ एगहिध्यानकीमारिमा

हृदय रूप ॥ १ ॥ अथ गंगया तच्छुद्ध ॥ जयो देवेंद्र श्री देव स्वामी ॥ महा मोह जीने वडे वीरनामी ॥ वनायी विजे
बोने अंक पा ॥ तिसें देख कै मोह चहुं ओर कं पा ॥ चली वीर गज राज तप की सवारी ॥ धरौं शीश ये संज
पभारी ॥ महा वीर रागी कवच देह धारी ॥ प्रभू आपनो आप योरो रुष सम्हारो ॥ सुचारि वनामी
क्ति पुर की ॥ वही भूमि जा नों प्रभू के समर की ॥ नही ध्यान तल चार तीनु एण ग्रहारी ॥ दयी मोह के शीश
दभारी ॥ अगिरो मोह वैरी तबै कर्म घाती ॥ हुने शेष तीनों फिर पक्षपाती ॥ न जे जीव के देव वाजा
अयो सोर वै लोका में धोर रूप्या ॥ सभी देव आय महा भक्ति धामो ॥ चहुं ओर न भैं जे जे पुकारे ॥
थ माये वहुनं प्ररूप ॥ करै देव की वंदना विप्र भूपा ॥ महा भक्ति सै मिष्ट वाय क उचारे ॥

ही सहाय कहमारो ॥ जयो देव तुम एक नै लोक स्वामी ॥ निशानी महाशीश त्रय घत्रना
६ सुलक्ष्मी पति हो तुमी एक देवा ॥ प्रली की कलक्ष्मी करै आपसे वा ॥ वली वीर जग में तु
प्रधानी ॥ विनाश स्वधारे हल्यो मोहनामी ॥ अमुमी हो सुखी एक स्वाधीन स्वामी ॥ हल्यो दुःख को
हे प्रकामी ॥ तुम्ही श्रेष्ठ स्वामी जग में वतायो ॥ सुध्यावै तुम्है श्रेष्ठ वह भी कहाये ॥ ७ ॥ तुमी इष्ट दा
प्रभू इष्ट रूप्या ॥ महा इष्ट कल्यान के आप भूया ॥ तुम्हें जो हरे माहिनि श्रित्य ध्यावै ॥ वही स्वर्ग
के सुकल पावै ॥ सभी देव इंद्रावर्गें द्रामुनी शशा मुहारे चरण कौं जे न आयशी शान करै आप्र

नाशनकाजै पदद्वैजै श्री जिनराजै शुभ ॥ उँही चंदन ॥ ३ ॥ सुखदासक मोद अनूपा ॥ शशि
रसमखदसकृपा ॥ पावन अततभरथारी ॥ जिनचलजजौ सुखकारी ॥ शुभ ॥ ३ ॥ उँही अन्नता ॥
नाविधिवर्णसकृपा ॥ अरु सारसुगंध अनूपा ॥ असेवरकु सुममगावै ॥ जिनवरसम्भवे सुम
पू ॥ जरचौवै शुभ ॥ ३ ॥ उँही पुष्प ॥ नेवजमनमोहनहारा ॥ अचिभरकंचनकाधारा ॥ जिनवरके
णचदावै सवदोषनुधानशिजावै शुभ ॥ ३ ॥ उँही चरु ॥ तमहरदुतिउजलसोहो ॥

जिनवरपदअंगैजौवै निजज्ञानपतीभविहोवै शुभ ॥ ३ ॥ उँही दीप ॥ दशगंधअनूपमि
अतिपावनधूपवनावै ॥ वसुकर्मजलावनकाजै ॥ पूजौ पदश्री जिनराजै शुभ ॥ ३ ॥ उँही धूप
वरुतुके फलशुचिसारा ॥ पिस्तावादामअपारा ॥ निजलत्मीपापतिकाजै ॥ पूजौ पदश्री जिन
शुभ ॥ ३ ॥ उँही कंठ ॥ जलफलवसुद्रव्यमिलावै सुवणकेयालभएवै ॥ श्री जिनवरचर
सोभविशिवलत्मीपावै शुभ ॥ ३ ॥ उँही अर्घ ॥ जयमाला दोहा ॥ हे जिनै प्रजयवंतजगजाहर
अपारा ॥ सुरपाराजै खिसुरपती ॥ लहेनतुमगुणपार ॥ तौ अचवकौनरकहिसकै सुमगुणअग
रमै तुमभक्तिप्रभावकरुतलहतभवयास ॥ धरदो नियादाम ॥ जयो जिनदेवदयागु
जयौ तुमसेवकरै सुरआनजयौ तुमध्यानधरै कृषिराज ॥ जयौ भवसागरमाहिजिहाज

बलीश्रुतपारागइंद्रमहानवलीबुधधारिसुनीचरजानप्रभृतुमरेगुणकौमहिपारालहेकवह्वं
हकालमगारप्रनोपमरूपिपतीमहारजसदासवकौसुखदायकसाजप्रभृहरिआसनपै
अनिवारविराजतहेपद्मासनसारधिरेशिरष्टत्रसुतीनअनूपमनोशशिआपभयोत्रयस्त
प्रमहामुक्ताफलफालसारमनोशशिसूजजोतिअपाराधमनोहरचौसठिचामरदेवसुढा
रतनित्यकरैसुसेवदशोदिशिदुंदुभिकोवहुसोराकरैउभक्तिभरेसुरजोराधसदावरसावतहेसु
रसारसुकल्पतरोवरफूलअपाराकरैचहुंओरहिसंजयकारधरेवहुभक्तिरुदैअनिवारधकरै
बहुचष्टिसुगंधेतमीरामहासुरमेयकुमारगहीरावलावतगंधसुगंधप्रचारधरेउभक्तिसुवात
कुमारगखडेदिवदंजलदरवानबलेवलरूपिपतीगुणखानतहोभुवनत्रिककौनमहान
रहेपशुमानुषजोतिहियानप्रभृतनदिव्यप्रभाअनिवारअनोपमचक्रसमाननिहारलखेम
विजीवभवांतरसातप्रभृअतिसेयहजानिविख्याततैतवटवृक्षअशोकदिपंतप्रभाजिहिं
कीशशिसूरष्टिपंतहरेभविजीवनकैसवशोकधरैगुणयेहिबिख्यातअशोकप्रभनंतचतुष्ट
यमंडितदेवप्रभृन्नयलोकपतीस्वयमेवकरोसवकौउपदेशअनूपकरोमविकौसुखअयसस्त
पप्रसिद्धयहीसुनकैतुमनामलयौशरतौसुनियेगुणधामप्रयोहमरेउरसत्यविचारसुख

गमैहितदायकसार॥२॥करोहमरोमन्वांछितकाज्जहरोहमरोदुखसाजसमाजभरोमभुजी
शअनूपाधरोयहअर्जहदेजगभूपा॥३॥दिह॥प्रभूपतितपावननुम्हीमैअतिप्रतितअपा
वलदीजियेसम्यक्ज्ञानमहान॥२॥अंध॥सारठा॥करुनानिधिमहारजसरनस
भवजलमाहिजिहाजमोकौपारकरोसही॥२॥इत्यादीवीद॥ ॥२६॥

प्रथम कार्य॥नंदीश्वरदत्तिणवियोजोप्रतिमातिहयानतिनसर्वकैवययोगकशिपूजोनिज
दान॥१॥ ॥इतिने० दत्ति० पूर्णार्घ्य॥ ॥इतिदत्तिणविशसंवंधीयूजासंपूर्णम॥
एवंनंदीश्वरदीपयश्रिमदिशअंजनगिरिनालययूजामाह॥गीताध्व॥वरदीपअहमेदिशापश्रि
मष्टविगिरिहोलोत्तसुनामअंजनतासउपरजिनागारअमोलहोसहोएकशतवसुअ
नविंवमतानहैतितनकेवरनमनलायपूजोदेतशिवकल्यानहो॥इहो॥नंदीश्वरदीपयश्रिम
अंजनगिरिपर्वतपरजिनालयेभ्योनमः॥अन्न॥अन्न॥चालद्यानतरायजीरुतयू
की॥समभावमहाशुचिनीरमानभंगभरो॥अंरहंतवरनधरिधीरपूजनध्यानधरो॥नंदीश्वरदी
वानयश्रिमदिशसोहोसापरजिनमंदिराजअसुरपतिमनमोहो॥इहो॥नंदीश्वरदीपपर
अंजनगिरिपर्वतपरजिनालयेभ्योनमः॥अल॥ए॥वसुकर्मविनाशनहारपरनतिआतमकी॥म

दनगंधअपार॥ शिवपदपूजनकी॥ नंदीगर॥ उद्धीचंदन॥ अतिनिर्मलशुद्धस्वभावोअतस्वह
कहा॥ श्रीसिखरनचितलाय॥ पूजतंसुक्वलहामंदी॥ उद्धीचतंत॥ शुचिब्रह्मस्वभावसुगंध
कुसुमावलिजानो॥ पूजतजिनचरनअमंद॥ निर्भयपदपानो॥ नंदी॥ उद्धीपुष्प॥ निजज्ञानदेह
बलधार॥ परनतिचरुसोहो॥ शतइंद्रपूज्यपदसार॥ पूजतशिवमोहो॥ नंदी॥ उद्धीचक॥ मतज्ञानजो
तिअविकारहीपकतेजकरो॥ धरिध्यानस्वरूपविवार॥ ममुपदपूजकरो॥ नंदी॥ उद्धीचो॥ सित
ध्यानदहनसहचार॥ आतमभावमहा॥ यलूथपसुगंधअपार॥ पूजतसुक्वलहामंदी॥ उद्धीचपु
विधिभंजेनभावअनूप॥ उत्तमफलसोहो॥ पूजतभविसितचिद्रूप॥ सोशिवयतिहोवे॥ नंदी॥ उद्धीच
हीफल॥ वसुकर्मविनाशकवीरवसुगुणधारकहो॥ वसुद्रव्यलायभविधीर॥ पूजतसुक्वलहो॥ उद्धी
हीअर्धा॥ जयमालो॥ दोहा॥ नंदीश्रवयश्चिमदिशाअजनगरिसुविशाला॥ तापरजिनगृहसूजियो॥ अ
ववरनंजयमाला॥ पद्धदीछुद॥ जयनंदीश्रवरहीयजाना॥ ताकीपश्चिमदिशेमेमहानतहोअज
नगरिवरस्यामंग॥ चौफेरगोलसमढोलरा॥ योजनचौरासीसरसजानउन्नतचौगिरदशशो
भमानचौरेदशवापी॥ चारजानवर्गाकृतिलखयोजनप्रमान॥ अजलजोजनगरा॥ इकहजारअ
तिनिर्मलसुद्धकोली॥ नाम॥ तिहिबीचपरेदधिमुखपहार॥ अतिस्वेतवर्णमहिमा॥ अपाए॥ शुग

वौवनमू

॥४५॥

कोनमाहिरतिकरलसंत॥ तिनसवपरजिनगरहृक्षिवंत॥ अवंअंजनगिरकोसु निवखानऊपरजि
नमंदिरेशोभमान॥ सवसमवशरनरचनाअतूपतिहिमध्यविराजेजिनसस्तुप॥ यद्यासनछवि
नीनजायसुरसुराधीशनितनमैआया॥ भूप्रतिभक्तिभरीपूजाएवाअधुनृत्यकरैवाजेवजाय
तहोदेवीदेवनचैजुसंग॥ नवरसयरकाशकरैअभंग॥ धनुवजैदुंडुभीगगनजोर॥ दिशछायरहोज
यशब्दसोएजेजिनसागरजगजिहजजेजिनसुखरायकसमाज॥ आप्रानंदजलधिकोशशि
अ यमविमनकमलनकौरविसरूप॥ जयजन्मरोगकोसुधाधार॥ जयकैशरहनकोमेघधार॥ ८

सर्पकोवैनतेय॥ जयमोहजहरकोअमीपेय॥ जयअंतककोअंतकसमान॥ जयविषयवनी
दवमहान॥ जयज्ञानसंपदकेअधीशाषातइदंनमै नितनाथशीश॥ प्रमुध्यानद्वारममहद्वय
स्त्रिकरवासओरकछुचाहनाहि॥ रथरुहकरोरुमासर्वज्ञदेव॥ कलारआपयगुहविरदलेवनिजनि
त्वयपरमदेव॥ करजोरिजिनेश्वरकरतसेवा॥ दोहा॥ तुमसतासाताजगत्तमै सुखसाताकर
आताममऊपरकरोरुपासहितकारा॥ १॥ ईहोअर्थ॥ सोरठा॥ केवलज्ञानप्रकाश॥ स्वपरस
ज्ञायकसदा॥ महतजिनेश्वरदासाप्रासभरोसेवकतनी॥ १३॥ इत्याशीर्वाद॥ ॥२७॥

प्रथमीनंदीश्वरदीपपश्चिमदिशप्रथमदधिसुखपूजामाहा॥ कुसुमलताछंद॥ नंदीश्वरकीपश्चिम

दिशमेंस्यामवरनअंजनगिरजानाताकेपूरववीचवायिकास्वेतवरनदधिमुखगिरमानदशहज
 र्योजनउन्नतप्ररुढोलसमानगोलअभिरामताकेरुपरजिनगरहमतिमाअरुत्तिमसोहेगुणधाम
 राईद्वीनंदीधरदीपपश्चिमदिशप्रथमदधिमुखपर्वतपरजिनालयेभ्योनमभाअनभअनभपुष्प॥
 चालहिलीकी॥जजोजिनवरसुखदाईसुनिहोभविभाईजजो॥दिर॥पद्मद्रुकोउज्जलनललेकं
 वनभंगभराईमनवचकायलगायविनयसंयुजौ॥श्रीजिनराईअनमत्रिदोषनशाईसुनियोभविभाई
 जजोजिनपदसुखदाईनंदीधरपश्चिमअंजनगिरताकेपूरवभाईदधिमुखगिरपरजिनगरहसोह
 मूजतसुरपतिआईदेवबहुभक्तिवदाईजजो॥राईद्वीनंदीधरदीपपश्चिमदिशप्रथमदधिमुखजि
 नालयेभ्योनमः॥जल॥केशरअगरकपूरसंगमैबंदनगंधमिलाईत्रिभुवनपतिपदपूजरचायोभव
 आतापनशाईलहोनिजशीतलतार्जुजजो॥राईद्वीबंदन॥मुक्ताफलकेसुंजमनोहरसुरपतिचरण
 बढावै॥हमनिजशक्तिसमानशालिले॥जिनजजिपुएयवढावैसहीमनवांछितपावो॥नंदी०ज
 जो॥३॥ईद्वीअक्षत॥वरनवरनकेमुखसुगंधितकंचनशालभराईकामकरूरगरुननकौचर
 णजजो॥जिनराईसहीअयसंयतिपाईसुनिहो॥नंदी॥अजजो॥३॥ईद्वीपुष्प॥कैनीगोंजामोदकख
 जेतातेतुरतचनाईदोषसुधादुखदूरकरनकौ॥वरननरेतचढाईजिनेअभक्तिवढाईसुनिहो०

नंदी॥जजों॥॥॥उईं॥चक्र॥परमागमअनुकूलदीपले श्रीजिनमंदिरजादीचरणजत
 कोमोहतिमरविनशाईलई॥त्रिभुवनप्रभुताईसुनिहो॥नंदी॥जजों॥॥॥॥उईं॥दीपं॥दशवि
 द्यशुचिलेको॥उतमधूपवनाईपूजतश्रीअरुंतचरणको॥षसुविधिकर्मनशाई॥वरोशिवनारिसु
 हाईसुनिहो॥नंदी॥जजों॥॥॥॥उईं॥धूपं॥एला लोंगवदमधुहारेपिस्ताआदिमिलाई॥शिवक
 दायकदेवजिनेश्वरपूजतसुकवलहाई॥यहीउरनिश्वलताईसुनिहो॥नंदी॥जजों॥॥॥॥उईं॥फू
 जलचंदनेअरुतप्रसूनलेनिवजसद्यवनाई॥दीपधूपफलद्रव्यमिलाकरअर्घवनावेभाई॥
 श्वरचरनचढाईसुनिहो॥नंदी॥जजों॥॥॥॥उईं॥अर्घी॥जयमालादेहा॥शतमुखशतसैन
 शारदशीशनवायाशारदजनकजिनेशपदबंधेंमनवचकाया॥॥पछडीबंद॥जयदीपअ

नोताकीपश्चिमदिशशोभमान॥तहेंअंजनगिरिपर्वतउतंग॥अतिगोलढोलस
 रताकीपूरवदिशमेंसुजानदधिसुखगिरवापीवीचजाना॥योजनहुजारदशहैउतंगा॥अ
 लगोलदाधंग॥जंरगा॥साऊप्रजिनवगेहजानसोयेअंजनजाभौलवंमान

कुंचोपचहत्तरउरविचार॥तिहिवीचनीरचनाअनूपसवसमवशराशोभासल्ल्या
 आदविंवअतिशोभमानवसुप्राविहार्यशोभासमान॥॥पद्मासनछविवरणीनजाया

करेसुरशीशनाय॥हरिशचीसहितपूजारचाय॥बहुभक्तिसहितजिनगुणसुगाय॥५॥निजज
 न्मसफलसुरकरेसोय॥तुमचरेण॥जजतप्रतिमुदितहोय॥धनिजीवनजिनकोजगमहार
 जोप्रभुकोदेखतनयनहार॥दुमुमधन्यदेवअद्भुतसरूप॥छविनिरखततस्मिनत्रिदशभू
 तवहृत्तिनेकीनीसहस्रआखकारजीभसहस्रवचविनयभाखा॥बहुस्तुतीकरीनिजशीशना
 य॥ज्ञानोनिजकौंधनिदेवराय॥निजभक्तिसहितजिनजपेनामसोनिश्चयेपावैशुकलधाम॥६॥
 भुवीतरागछविनिरविकार॥अटप्रागटअचेतनअंगसार॥तोभीभक्तिजनकोसहजरूपदाय
 कदिवशिवसंपतिअनूप॥जिमचिंतामणिनररतनपायसार॥निजीववस्तुजगकेमहार॥म
 नकल्मितसुखदातारसोय॥त्योंसुखदायकजिनविवहोय॥१॥यहआगभवचनप्रमालाजान॥भ
 विजीवलख्योपारसपुराण॥सहनिर्णयतहंकीनोसुनीश॥हमतिनकौनमतनमायशीश॥२॥
 बहसुगुरुवचनजिनछविअनूप॥वरदातासाधकतानरूप॥भवभवंमेशकीज्योसहाय॥ज्योसु
 खीजिनेअनितरहाय॥३॥दोहा॥दधिसुखजिनमंदिरतनी॥पूरतग्रहजयमाल॥जोवांचैमन
 लायकै॥ताकेभागविशाल॥३॥ॐ ह्रीं अर्च॥सोरठा॥जन्मरोगअनिवारताकोहरकरोप्रभू॥आ
 योलुमदरवारंतुमसहायसबजगविवो॥४॥इत्याशीर्वादाः॥

नौवनपू
॥ ४३ ॥

श्रद्धीपयश्चिन्मदिशद्वितीपरत्तिकरपूजायाह॥ हुरमुमलता छंद॥ नंदीश्वरपश्चिमअंजनगिरताकी
दिशमैजानावापीवीचविराजैदधिसुखमैदधिसुखगिरमुभगोलमस्तनताकेऊपरश्री
मंदिररत्नमईअरुत्तिमथानश्रीजिनविंवप्रठोतरइकसोमनवचक्रमवंदीसुखदान॥ छंद
श्रद्धीपयश्चिन्मदिशद्वितीपरत्तिकरदधिसुखजिनालयेभ्योनमः॥ अन्न॥ अन्न॥ अन्न॥
निभंगीछंद॥ शुचिसागरत्तोत्सीतगहरीनिर्मलनीरंसुरलोकैभरिकंचनगरीलषानिवारी

रत्नोकैमंदीश्वरपश्चिमअंजनगिरकेदक्षिणादधिसुखगिरसोहो॥ नापरजिनमंदिर
मंतपुरंदरजिनप्रतिमाअतिमनमोहो॥ उद्दोहोमंदीश्वरद्वीपयश्चिन्मदिशद्वितीअदधिसुख
जिनालयेभ्योनमः॥ जल॥ एमलियागिरस्वंदनदास्तनिकंदनकदलीनंदनसहितवसो॥ भवताप
वारनशिवसुखकारनजिनपद्मजिजिनपासवसोमंदीभार॥ उद्दोहोचंदन॥ शशिकिरणसमा
तमहानामुक्ताफलसुरलावतहो॥ ह्मशक्तिसमानाशालिप्रधानाअत्ततपुनचदाव
अत्तत॥ दगमनैकोप्यारेगंधप्रचारसुवनवारयुष्ममहाजिनचरनचढावैभक्तिवदा
चावैसुकवगहामंदीअध॥ उद्दोहोपुष्पा॥ कंचनकीथारीभरिसुखकारीविविधप्रकारीचरुलावो
एनचढावैभक्तिवदावैमभुगुणगावैशिवपावैमंदीअध॥ उद्दोहोचंदन॥ वहुउज्जलजोतंतमघ

नंदीपकसों जिन पद पूजै ॥ अरि मोह नशा वै जिन दरसा वै केवल ज्ञान यती हूँ जैनंदी ॥ ६ ॥ उद्दीर्घ
कृष्णा गार्धपूंगंध अन्नूपंति हुं जगभूषण पूजक रौष सुकर्म जला वै जिन पद पावै ज्ञान जोति शिवना
रिव रोग मंदी ॥ ७ ॥ उद्दीर्घ ॥ फल सरसनवीने पावन लीने त्रिभुवन पति पद भेट करौ उत्कृति नशि
जावै पुण्य वढावै कर्म कमसों शिव नारिव रौ नंदी ॥ ८ ॥ उद्दीर्घ ॥ वसुद्रव्य मिलावै जिन गुण गावै
अर्ध वना वै भरि थारी ॥ जिन चरण चढावै भक्ति वढावै दिव सुख पावै भवि भारी नंदी ॥ ९ ॥ उद्दीर्घ ॥ अर्ध
जय माला ॥ दोहा ॥ मुनि महंत कृष्ण जस वै ध्यान धरै मन लाय ॥ सुर पति नर पति नाग पति चरण
ज जो मन लाय ॥ सर्व आस पूरै एक रौ भरो सर्व हित साज ॥ हरो हमारी वेदना वीतराग महाराज
२ ॥ बोट कछु द ॥ जय वंत तुम्ही शिव लाय कहे ॥ सत संत न कौ शिव दाय कहे ॥ अघ कर्म अरी गणघाय
कहे ॥ निज संपत्ति लाय कदाय कहे ॥ विषयादिक में न हिराग भयो ॥ भर जोवन मांसि विराग लयो प्रभु
अंतर जोति प्रकाश रही ॥ तजि नेह दिगंवर वृत्ति गही ॥ बल खंडर सा छुए मै तजि कै निग्रह दशावन मै
सजि कै ॥ निजरूप सुधी मन मै नजि कै ॥ अरि मोह नौरन मै पजि कै ॥ अत्रिक घाति मरे छन मै लजि
कौ ॥ मनुजी तलही तवही सजि कै ॥ नभ मै सुरवाहन ॥ आवत है ॥ वहु दुंदुभि धोए जावत है ॥ अजय
कारन की धुनि छाया रही ॥ रमजी तधुजा फहराया रही ॥ दश हंदि शसै सुर ॥ आवत है ॥ वहु दूर हिते

बौवनपू.

॥४४॥

रतावत है ॥ अउर हर्ष भरे गुणा गावत है ॥ मुर कामि निवीन वजावत है ॥ न च हूर सभा बरिखा
भुनि भक्ति प्रचारि सिखावत है ॥ सुश कशची मिलन त्य करै ॥ सब साज सजावत भृत्य भरे
मानहि जात कही तिन की ॥ अनिमेष लखै छवि श्री जिन की ॥ फिर की जव लेत मलाघ्य वि
पमानहि जाय कही कवि सौ बल या कवि की दुम भादरौ ॥ मनु दामि निगोल मलापरौ ॥
ए सत्स रूप महान धरौ ॥ त ए थूल शरीर अकाश भरे ॥ त ए भै गति मंद प्रकाश करै ॥ त
ल प्रकाश करै ॥ हरि अद्भुत नाटक आप करै ॥ जिन की महिमा कहि नाहि परै ॥ यवन्त
रेव सही ॥ जिन की महिमानहि जाय कहै ॥ प्रभु मोउर साहिब सो नित ही ॥
सो नित ही ॥ मम विघ्न समूह नशो नित ही ॥ परसम्यक ज्ञान लसो नित ही ॥ १॥ सवसें निस्प्रह
त हो ॥ सच राग विरोध न लावत हो ॥ सव की सुनिमो न राखत हो ॥ तदि दीन दया ल कहावत हो ॥ २॥
यह अद्भुत वात वरी प्रभुजी ॥ जस वैल त्रिलोक वडी प्रभुजी ॥ भविके उर भक्ति वडी प्रभुजी ॥ सुख
कज डी प्रभुजी ॥ ३॥ य ह भक्ति महानिधि देहु हमै ॥ सत ज्ञान दया निधि देहु हमै ॥ जग
देव तुम्ही ॥ भव पाखु तारु खटे वतुम्ही ॥ ४॥ दोहा ॥ करुना कर जिन राजजी ॥ अशरम
सहाया ॥ प्रज जिनेश्वर की सुनी ॥ सुम त्रिभुवन के साया ॥ ५॥ अर्थ ॥ सो रहा ॥ देहु खरु

नूपायहीरुपाप्रभु कीजिये। फिरनपसुंनवकृपासाआज्यअवदीजिये॥६॥ उँहीअर्थ॥ इत्य
शीर्वाद॥ ॥२८॥

॥अथश्रीनंदीश्वरदीपयश्विमदियास्ततीयदधिसुखपूजामाहा॥
कुसुमलताछंद॥ नंदीश्वरपश्विमदिशरजेस्यामवनअंजनगिरलाम॥ ताकेपश्विमदधिसुखसा
सेवापीवीचखेतप्रभिरामताकेकपरश्रीजिनमंदिरप्रतिमाइकशतआठललाम॥ जिनकेचरण
कमलसुरपूजे॥ हमपूजतनिजघरवसनाम॥ उँहीनंदीश्वरदीपयश्विमदियास्ततीयदधिसुख
पर्वतपरजिनालयेभ्योनमः॥ अन्न० अन्न० पुष्प॥ चालहोलीकी॥ सुधीजिनपूजरखावे
यातेनिजसंपतिपावे॥ देह॥ कंचनकारीसेजलउत्तमभरिजिनमंदिरजावे॥ जन्मजरगदुखदूरक
रतकोंश्रीजिनचरनचढावे॥ हर्षअतिहिरदेलावे॥ याते० नंदीश्वरकीपश्विमदिशमेंअंजनगि
रसुभरजेताकेपश्विमदधिसुखगिरपरजिनमंदिरछविछाजे॥ तहोन्निजभावलखावे॥ याते
उँहीनंदीश्वरदीपयश्विमदियास्ततीयदधिसुखजिनालयेभ्योनमः॥ जला॥ चंदनअरुकरपूर
मिलाकेकेशरसंगघसावे॥ जिनवरचरनजतभविजनजोभवआतापनशावे॥ यहीनिश्च
यउरल्यावो॥ याते० नंदीश्वर॥ उँहीचंदन॥ देवजीरसुखदासकमोदकाप्रसन्नतथोयवनाव
त्रिसुवनतिलकदिगंबरप्रभुकेचरनपूजचढावे॥ इत्यमैंजिनगुणगावे॥ याते० नंदीश्वर॥

सुखपरश्रीजिनपग्रधरे॥प्रभुराजतचोसठचमरदरे॥शिरध्वजफिरैत्रयजोतिमहा॥शशिसृज्जो
तिछिपावलहा॥रामभमेंसुरहुंदुभिघोरवजैवरसैवहुपुष्पसुगंधफवै॥धुनिदिव्यअनहराअर
ही॥जिहि कीउपमानहिजायकही॥सवजीवअजीवअभेदगनौ॥अप्ररुधर्मअधर्मसरूपभनो
सवकालअकालप्रकाशकियो॥षट्द्रव्यद्रहोभविजानिलियो॥धजीवअकाशमि लोकतनौ॥अ
रुधर्मअधर्मजुद्धव्यगनौ॥इनिचारिनिकेपरदेशसही॥सममध्यअसंखप्रदेशसही॥धनभसव
अनंतपरदेशकियो॥अरुहुजलद्रव्यत्रिभेदभयो॥महसंखअसंखअनंतकहा॥भविजीवन
भैसतभावगहा॥दुपुनिकालअणसवभिन्नकही॥तिसतेदसकौनहिकायकही॥सवजानिअ
संख्यप्रमाणअण॥पलनिअयकालजिनंदभनौ॥अववहारत्रिकालअनंतप्रभा॥वरतावभवि
व्यतअोरगना॥षट्द्रव्यपसारनिलोकविवै॥परुवरणानआपजिनंदअखै॥दशहूदिशअोर
अलोकसही॥नहिदूसरिद्रव्यजिनेशकही॥इनकीसरथाभविजीवकैरै॥दृढसम्यकसौउरमा
हिरै॥धे॥जिनराजहुपालहुपाकरिये॥दुखजनमजरामरणोहरिये॥जयवंतजिनेअधर्मसदा
उरमाहिरैसतमर्मसदा॥६॥दोहा॥अशरनशरनसहायतुमशरनागतसुखदायहीनजानि
कीजेदया॥तुमदयालजिनराय॥१॥अर्च॥दोहा॥हरैसर्वअघसाज॥करोराखनिजभावकी

三

25

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

जगमाहिष्ठयोऽनिवारी॥ तिहिदूकरणकैकाजै॥ दीपकसोंजजिजिनराजै॥ नंदी॥ ७८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
कर्मवडेदुखकारी॥ सकजीवकरैभयनारी॥ विधिगर्वजलावनकाजै॥ धरिधूपजजै॥ जिनराजै॥ नंदी॥ ७९॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
फलउत्तमजेजगसारी॥ भरिसुवरणभाजनमाही॥ जिनवरैकेचरणचढावै॥ सोभयमहा
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
फलपाकै॥ नंदी॥ ८०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
पूजरचावो॥ यातैपंचमगतिपावो॥ नंदी॥ ८१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
भोदारिकदेहा॥ जिनकेपदपंकजजै॥ उरमेंधारिसनेहा॥ दोहा॥ नंदी॥ ८२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
रकेभाला॥ जिनमंदिरपूजाभई॥ ब्रवसुनियेजयमाला॥ २॥ जयोजगमेंजिनराजमत्तानजयोप्रगत्यो
जवकेवलज्ञाना॥ जयोसवइंद्रसुरासुरसंग॥ जयोजयकारकरंतंभंग॥ ३॥ वजैवहुहुंदुहुं॥ भिजोभ्रमका
शादशोदिशछापरह्यो॥ बहुसो॥ अनेकसुवाचिनकोचहुसो॥ तथाजयकारमहाचहु॥ ओरा॥ सु
चारितरूपमही॥ रनरंगप्रभू॥ असस्ताय॥ अरीवहुसंगमहा॥ महा॥ अरिच्यारहनेवलजो॥ ४॥ इसीजयप्रा
पतिकोयरुशो॥ ३॥ सभादशदोयविषैंजिनराजकरै॥ उपदेशमहाचषकाज॥ सबीजगजतूकेहि
तकाज॥ रिवैजिनकीधुनिदिय॥ प्रवाजा॥ सुनै॥ भविजीवलहैसतज्ञान॥ जगेउरमाहि॥ सुभेदविज्ञान
धरेखभावसुधीलघुभेदा॥ करैखतसंजमद्यतिविशेष॥ ५॥ तजै॥ भविजीवपरिग्रहभार॥ सजै॥ जिनरूप

1129

26

ख अनंत भोग्यो विशाला ॥ सवद्रव्यनकी परजाय सारा ॥ हो गई तया जो हो न हारा ॥ तिन सव कौं जानो
 समय माहि ॥ यौ ज्ञान अनंत तो तुम्ही माहि ॥ पात्रय काल तेने सव द्रव्य रूप ॥ इक समय माहि देखे ॥ अनंत
 पा ॥ यौ दर्शन देव अनंत था ॥ जिन के पर देव दौ बार बार ॥ क्षे सव जीवन के गुण दर्श जान ॥ कमवती प्रगट
 सत्य ज्ञान ॥ तुम युग पत जानौ लखो सारा ॥ यहु लोको तर माहि मा अपारा ॥ प्रभु तुम गुण मरि मा अप
 गम सो ॥ यहु मपर कै सैं निरवाह होय ॥ यौ कहत वडै रूषि राज देव ॥ भविजन कौं सुख देवै स्वमेव ॥ राजो
 वडे वीर नहि लहे पा ॥ तो रंक जीव की ब्यास म्हा रा ॥ पै तुम समर थदा ता दया ला ॥ सव को फल द्यौ तिहि
 योग लाल ॥ य तुम पद सरोज की ॥ सेव देव ॥ भविजन कौं सुख देवै स्वमेव ॥ यहु प्रभु त शक्ति ॥ अनंत रूप ॥
 तुम विन नहि ॥ अत लहै अनूप ॥ १३ ॥ तुम पद कौं वै दौ बार बार ॥ ससार जलधि से करो पार ॥ तुम सव दे
 वन के देव देव ॥ कर जो रिजिने ॥ अरकत सेव ॥ १४ ॥ दोहा ॥ सुपतिन रयति नाग पति ॥ तुम सव के पति
 देव ॥ अरज जिने ॥ अरकी सुनौ ॥ देहु सुगुन सव भेव ॥ १५ ॥ अर्थ ॥ सो रह्य ॥ तुम भव जलधि जहाजो तारन त
 रन सही प्रभु ॥ अरज सुनौ ॥ मलारजो मा कू भव दधिता रिये ॥ १६ ॥ इत्यादी वीदा ॥ १२१ ॥ अरज
 श्री नंदी प्रदीप ॥ यंत्रि म दिव्य द्विदीप ॥ यंत्रि विद्वत् रत्न ॥ गी ॥ तुम लता सुद ॥ अष्टम दीप दिशा यंत्रि
 मभें ॥ अंजन गिर के पूव सारा ॥ दूजे कौं न वापि का मा ही ॥ रतिकर पर्यवतन ॥ आकाश ॥ ठोल समान गोल

नौवनपू
॥ ४८ ॥

तरफां जो जनम सहस ऊर्धता सारा ता पर श्री जिन मंदिर सो है जिन तसुरा सुर अष्ट प्रकार ॥ उद्दिन
मय ध्वज मंदिर द्वितीय रतिकर लक्ष्मी नमः ॥ अत्र नमः ॥ पुष्प ॥ गीता
॥ अचि गंध मिष्ट महान उजाल नीरम निहारी भरो सुर लोक पति अरु असुर पति जिन राज क
यन पौरो वरही पञ्चम दिशा पश्चिम द्वितीय रतिकरा जही ॥ जिन भवन ता पर देव पूजे
मही ॥ २ ॥ उद्दिन नंदी श्वरही पश्चिम दिशि द्वितीय रतिकरा जिन लक्ष्मी नमः ॥ जल ॥ १ ॥ घन शाल क
ली शाल मिश्रित दशो दिश महु का बहू भवता पनाशन हेतु सुर मति जजत जिन सुख पावही ॥ २ ॥
॥ उद्दिन चंदन ॥ सुख दास अरु क मो दत दुख सरस उजाल धोइयो ॥ जिन चरन पूजन काज अक्षत

लस जोई यो वर ॥ उद्दिन अक्षत ॥ सुर लोक केशु चि गंध पूरित कुसुम सुर पति लावही ॥ त्रैलो
विजयी पंच सरसं कस्त पूज स्वावही ॥ ३ ॥ उद्दिन पुष्प ॥ पकवान नाना भाति ताजे मो द का दिव
इयो दुख तु धाना शक सुर अ सुर नित चरन मा ल्विटा इयो वर ॥ ४ ॥ उद्दिन चंदन ॥ वरही पमणि मय
विनाश क सुर अ सुर नित लावही ॥ त्रैलोक्य पै नि श्री अरु त प्रभु के चरन मा हि चटावही ॥ ५ ॥ उद्दि
प ॥ ६ ॥ दश गंध सार सुगंध दश दिश होय धूप म हान हो ॥ जिन चरन पूजित अ सुर सुर पति
ख हित दान हो वर ॥ ७ ॥ उद्दिन धूप ॥ फल सार मिष्ट विशाल लक्ष्मी स्वादिष्ट मिष्ट सुल्ला वही ॥ ८ ॥

॥ ४८ ॥

रवानकारणभयजननजिनराजचरणचढावही॥वरदा॥ उद्दीपल॥ जलगंधअक्षतपुष्पनेव
जरीयधूपफलाचली॥जिनराजचरणचढायपाकै॥अव्यजिनगुणआवली॥वर॥ ८॥ उद्दीपल॥ ज
ममाला॥ दोहा॥ अंतरवाहरकेसवै॥ जाहरशत्रुअनेक॥ तिनसवमै॥ जिनराजजी॥ राखोनिजहित
टेक॥ १॥ पासवासकी॥ आसउवासासयही॥ अरदासा॥ परमजिनेश्वरदेवतुमा॥ मंहंजिनवरदास
पद्मदी॥ जयजयअरहंतमहंतदेव॥ जयचरननकी॥ सुरकारतसेवतुमना॥ मजपतसु॥ लोकाया
मानप्रविवेकी॥ पशुभीलहेनामा॥ येतोभक्तिवतन॥ भव्यजीव॥ क्योनहीलहे॥ शिवसुखअतीवाअरहं
तनामको॥ अर्थसारा॥ याकेविवरण॥ सुखदायसार॥ २॥ इसअर्हंदातुको॥ पूज्यअर्थ॥ पाकेअर्हंत
पदनही॥ व्यर्थजगपूज्यपुरुषकी॥ विनयसेव॥ सुखदायकसेवको॥ स्वमेवा॥ अक्षतर॥ अरिहरि
करिलई॥ रुखिअरहंतनामयातें॥ असिद्ध॥ निअयसु॥ दृष्टिकरि॥ कर्म॥ एवा॥ परमागममेय॥ हकि॥ योभेव
॥ अज्योहोच॥ आपशि॥ वसुखससुखा॥ औरनको॥ दिवाशि॥ वसुखअनूपा॥ तुमसर्वसुखी॥ सुखदेवदाना॥
यातें॥ तुमसुखदायकममाण॥ भजा॥ आपयाचना॥ करै॥ कोयसो॥ औरनको॥ कया॥ दयसो॥ या॥ तुमअज्या
वीकपणयति॥ अनूपा॥ याही॥ तें॥ तुमदाता॥ अनूपा॥ द्यलोकी॥ कसपदानशे॥ सोया॥ नाको॥ ननिर॥ त॥ रदान
होया॥ प्रभु॥ तुमसेपति॥ अक्षय॥ अनंत॥ याही॥ तें॥ तुमदानी॥ महंता॥ ७॥ लोकी॥ करजसवविनशि॥ जाया

जीवकौंईअघायलुमअलौकीकरजाधिराजजगमाहिधन्यमभुतमसमाज॥वहिरंगर
 कौनहीपार॥तौअंतरंगकोकहेसार॥तिसयरभीतुममभुनिरविकार॥जगधन्यवीतरागीअपार
 ध॥विनक्रीधमोहअरिलयोमार॥विनलोभसयदागहीसार॥विनछेयदुखननकडार॥विनरागसु
 देयतार॥१७॥यहअहुतमहिमाअप्रकथदेव॥काहिकोनसकैजगमाहिमेव॥इत्यादि
 न॥अभुप्रउपगारैवचप्रमाण॥१८॥जिनराजवृत्तिनरसुखदतार॥जिहधारिभव्यजनभयेपार॥
 आगौंभीमविधैरसोय॥सोसवनिश्चैभवपारहोय॥१९॥यातैमैआयोगरजहार॥हेरुपासिंधुस
 रतार॥मनवचनकायसूकंस्सेवभवपारजिनेश्वरदेहुदेव॥२०॥दोहा॥वसुवि
 सुविधिभविजनकाज॥वसुविधिविजयीदेवकोचरतजजृहितसाज॥२१॥अधी॥सोरा॥वीतर
 गमहार॥जनीतरागताकाजमै॥शिवसुखपावनआज॥पूजपदमनलायकै॥२२॥सुख्य॥॥३३॥
 अथनेदीपूरदीपपुष्पिनादिशालतीयरतिकरभूजासाह॥सुसुमलताछंद॥नंदीश्वरवरदीपआ
 तांकीपश्चिमदिशमेजान॥अंजननगिरएवतहेताकीदक्षिणचापीकौनप्रमाण॥सुरसुरेशवहा
 चावैरुमनिजरहपूजैरहितदान॥रतिकरगिरकैऊपरजिनगरुजिनवरविवअरुतिमजान॥
 दूनीनंदीश्वरदीपपुष्पिनिदिशालतीयरतिकरगिरएवतपरशिवकूटजिनमंदिर॥अथने॥

नमः ॥ अथ ॥ सुव्य ॥ चालेखता ॥ जिनंदेरे पूजवासुरेश आवते ॥ प्रसंख्य देव भक्ति नरेशी शानावते ॥
 ॥ जल ऊजल सुरलोक के काम एमय भाजन धार जिन पद आगे धार देता पर जिन मंदिर जौ दायक शि
 वक ल्यानां तीर्थ पर पश्चिम दिशा रतिकर ततिय महान ता पर जिन मंदिर जौ दायक शिवक ल्यानां
 जिनंद ॥ ईश्वर नदी चर दीप वधि मंदिर तती पर तिरु लिंग लखे मोन मः ॥ जल ॥ चंदन गंध दशो
 दिशा ॥ कैलिर हो भर पूरा ता सों जिन वर पद जजै सुरग एर हेतु जूनी ॥ जिन ॥ ईश्वर नदी चर दीप
 जल लोक को सुरला वै भरि या ॥ जिन वर पद पूजा करे वदुरिन वा वै कालजी ॥ जिन ॥ ईश्वर नदी चर दीप
 रिजात मंदार के पुष्प सुगंध अ पार ॥ काम दहन के कारणे ॥ पूजौ जिन पद सा र्जनी ॥ जिन ॥ ईश्वर नदी चर दीप
 सुरयादव के चरु महा ॥ षट् स पुरित सारा देव जिनेश्वर चरन को ॥ पूजे हर्ष अपार जी ॥ जिन ॥ ईश्वर नदी चर दीप
 जाति वंत मणि दीप ले करे आरती देव मोह म हात मन न को ॥ जजै जिनेश्वर देव जी ॥ जिन ॥ ईश्वर नदी चर दीप
 तिसुगंधन भवित्तो र ही दिशा प्रतिष्ठाया ॥ पूजे देव जिनेश्वर को ॥ ऐसी धूप चढायनी ॥ जिन ॥ ईश्वर नदी चर दीप
 उक्त मफल सुर दत्त के ॥ मिष्ट महार स पूरे देव चढा वै भक्तियों ॥ जिन वर चरन लूनी ॥ जिन ॥ ईश्वर नदी चर दीप
 ईश्वर फल ॥ जल फल आठों द्रव्य ले प्रार्थव नाय अनूप ॥ चल जिनेश्वर के जजै ॥ सवे असुर सुर भूपा जि
 नंदी ॥ ईश्वर नदी चर दीप ॥ जिनेश्वर नदी चर दीप ॥ विद्या धर ॥ असि चक्र धर ॥ अरु त्रिशूल धर देव ॥ सर्व स्वग ए धर देव

की करै सुरासुरसेवारे ॥ पृथ्वी छंद ॥ जयवीरधीरजयवंत देवा विधिअरि कराल को काल एव जय सं
तम हंत न कौं रूपाल ॥ जय दुष्ट मोह कौं हनन काल ॥ जय चारित की रण धरा वीच सन्मुख देवा
रि मोहनी चतकाल वीर भेष धारा ॥ जिहि देखत मोह मुक्ति नार ॥ तन धार दिगंबर कच वसार ॥ अ
रु वीतरागता मुकट धारा सत संजम चाप ॥ अनूप जाना सवरचित पूरण संवर महान ॥ कर ध्यान रुपा
ए अरोक धारा ॥ अथ गुप्ति रूप धारा ॥ अरु उपशम रूप ॥ अनी कराला विधि उद
न न भाल ॥ दश धर्म चक्र की धारा देखा सव क्रमेश ॥ अनु भागे विशेषा द्वय रत्न शक्ति सह मा ल शोय
रुन पगज परह सवार होया ॥ अप्रसह्य अपाप ॥ अरिगण मजारा ॥ अरि मोह वली नीह कारा महु अ
रि समूह कै मध्य सा ॥ नीं तुम नै अरि मोह मारा ॥ फि रट्टा स एमै लगा तारा ॥ अरि सिशु लक्ष्म ध्यान को
रि प्रलक्ष्म रिती न घातिया लये वीन सव ॥ ओर कर्म भागे ॥ अहीन ॥ अथ पाय जिनि श्वर देव सोय ॥ त्रि लो
पती न पए बहाय ॥ सव चतुर निकाई देव आया ॥ तुम पद कौं पूजै ॥ शिनाया ॥ प्रभु समो श
सा रचतुरानन ॥ आसन मझ धारा ॥ मणि सिंह पीठ पर ॥ अंतरीक्ष ॥ राजे सुर ॥ सुनिकं पति ॥ धन्य छ
श ॥ अति तेज वंता ॥ शिर सूर ॥ भाको टिक लज ॥ वीर ॥ अरु शोक तना ॥ चारों प्रसंग ॥ सुर ॥ दुभिन भमै ॥ जोर
होया ॥ अरु कुसुम ॥ दृष्टि सुर ॥ करै सोया ॥ ॥ जिन की धुनि दिव्य खिरे ॥ अगाध ॥ सव तत्व प्रकाश

* अरु चौ सद चामर दिव्य सार ॥ सुरा लख र्ष हरे अपार ॥ जहौ रहस्य अशोक दिपै उतंग ॥

धाजिनराजशरीरप्रभाअनूपाप्रतिचक्राकारदिव्यैसस्तपा॥ इत्यादिअतुलसंपतिमहानजिंहदेव
तभविजनयायनानातुमपदसरोजकौंवारवारहमनमतशीशकरधारधार॥ अविधिविघ्नमूलतस
जारजारान्विरसंचितविधिवलदारदारउरप्रर्जजिनेश्वरधारधारहृदयकारवभोदधितारतार॥ अक्ष
हा॥ इत्यसअसारसंसारमौशरनतुमारीदेवासोप्रभुहमकौंदीजिये॥ करोरुपायहदेवा॥ पांडिहोअंध
सोरहा॥ तुमअनाथकेनाथभैअनाथचिरकालतौस्वहितनमाऊमाथममउरआसभरोप्रभू॥ दापुष्प
इति॥ ॥ ३४॥ ॥ अथयप्रिमदिशचतुर्धरतिकरपूजामाह॥ कुसुमलताधर॥ अस्मदीपरि
शापश्चिममौअंजनगिरकेदक्षिणभागमापीक्षितियकौनमेंचोथोरतिकरपर्वतअतुलसुभाग
सुवरणचर्णसहसयोजनकौउन्नतगोलढोलसमलागतापरश्रीजिनमंदिरप्रतिमापूजतहु
रसुरेशवडभाग॥ ॥ इंद्रीनंदीश्वरदीपपुष्पिमदिसचतुर्धरतिकरपर्वतपरसिद्धकूटजिनमंदिर
भ्योनमः॥ अन्न॥ अन्न॥ पुष्प॥ जोगीरासा॥ गंगाजलसमनीरअनोपमकेचनफारीभरि
ये॥ जन्मजरदुखरहितजिनेश्वरएदतधारकरिये॥ अष्टमदीपदिशायश्चिममेचोथोरतिकर
भाईतापरश्रीजिनभवनअच्छत्रिमसुरपतिपूजतआई॥ ॥ इंद्रीनंदीश्वरदीपपुष्पिमदिसचतुर्ध
रविकरपर्वतपरसिद्धकूटजिनमंदिरभ्योनमः॥ जल॥ मलियागिरघनसारसुचंदनकेशरंगमि

वैवनपू.
॥५२॥

लोवो॥भवआतापरहितजिनवरकेचरनेनपूजरचावो॥अष्टम॥२॥उद्दीगंधं॥देवजीरसुखदा
कमोदकअक्षतस्वत्तकरीजे॥अक्षयपदकेईशजिनेष्वरचरननपुंजधरीजे॥अ॥उद्दीअक्षत
रनभूकेफूलमनोहरनिरदोषेसुरलावैकामराहदाहकजिनवरकेचरणपूजगुणगावैअ॥
॥उद्दीगुंधं॥फेंनीगोंजामोदकखांजेलाडुआदिवनावैदोषअठारहरहितप्रभूकेचरणन
प्रग्रचढावैअष्टम॥उद्दीचक्रं॥तमहरजोतिप्रकाशीदीपकरत्नमईसुरलावैकेवलज्ञानध
जिनपतिकेचरणपूजहर्षवैअष्टम॥उद्दीदीपं॥दशविधिधूपसुगंधमईकरलेजिनमंदि
आवैअपरमशुक्लध्यानो॥जिनवरकेचरननमाहिवढावैअष्टम॥३॥उद्दीभूयं॥लौंगलायची
स्ताकिसमिसखारिकलावै॥मुक्तिमहाफलदायकप्रभुकेचरणपूजिगुणगावोअष्टम॥उद्दी
फलं॥जलचंदनअक्षतकुसुमावल्लिनेवजदीपकसारो॥धूपफलावलिअर्घवनाक॥जिनवरपद
तरधारोअष्टम॥४॥उद्दीअर्घ्यं॥जयमाल॥दोहा॥अरिजरहसिनिवारिकेवहसिलियोनिज
यानममउरवासकरेप्रभूभरदायकभगवाना॥पृच्छीछंद॥जयकेवलज्ञानधनीजिनेशतु
रणकमलसैवेंसुरेश॥जयसमवशरणकेमध्यसारो॥उपदेशदियोदसुधाधारो॥जयजी
प्रजीवसुनित्यभेदाहरसायोचउसवअनुयोगवेदजयपुरुषशलाकासाठतीन॥तिनकोसवभेद

द्योप्रवीन ॥ चौबीशी शतीर्थकर प्रथम जान ॥ दशचक्रवती दूजे महान प्रति हरि वलि हरि नव प्रमाण ॥ स
 नत्रै सठ पुरुष कहै पुरान ॥ इक सो उन हत स्त्री व सो ॥ सो मुक्ति पात्र जग माहि होय ॥ जिन मात तात
 प्ररु काम देव ॥ हर कुल कर नारद जी ॥ डिएव धामे सर्व मुक्तिके पात्र जान ॥ कछु तदभव कछु भव धरम
 हान भै मुक्ति रूप वंदौ ॥ त्रिकाल भुमे रोका दो जगत जाल ॥ दिव दसि ए ॥ इंद्र शची महान ॥ तिन लो
 कपाल लोकांत जान ॥ अर सरवार थसि ॥ देव सा एका भव ता शेर ॥ उर विचार ॥ जिन मात तात जिन
 राज आया ॥ हलि हरि चक्री पूरन प्रताप ॥ अरु भोग भूमिया जीव जान ॥ इन के मल मूत्र नही प्रमाण ॥ १
 जय शंकर ॥ जिन तप करै साग ॥ दश पूर्व द्वाका दश अंगे ॥ धा गल खि ॥ अवलाग ए कौ भूष होया ॥ चिरका
 ल भ्रम ए जग कै ॥ सोया ॥ मव नारद ब्रह्मचारी ॥ अया ॥ उर कौ धमान माया सु साग ॥ शंकर नारद कै मा
 त तात ॥ इन की उर धग ॥ तिजग दिखात ॥ चक्री नर ॥ उर ध अंधौ लोका ॥ निज कृति ॥ अनुसार फले जु
 योका ॥ इत्या दिव हुत वर्णन ॥ अनूप ॥ उप देश ॥ किं योत्रै लोक भू ॥ १॥ मो मन भै ॥ तिखो सदा काल ॥ जव लो
 न ल हो ॥ त्रै लोक भाल ॥ मन वचन काय कर कंसे वा ॥ य हलाम जिने ॥ श्वर देव देया ॥ २॥ देहा ॥ चौथार
 तिक र गिरत नी ॥ पूरन य ह जय माल ॥ जो नर वौ ॥ चै भाव सो सा के भाग ॥ विशाल ॥ ३॥ अर्थ ॥ सो रा ॥
 जिन वर विं व महान ॥ कृति म ॥ अ कृति म सबै ॥ देहु ह मैं कल्यान ॥ म दूम न वच काय कै ॥ ४॥ इति ॥ ३५

५ न ॥ ३५ ॥ अर्थ ॥ का कहे जात ॥ हरि प्रति हरि नारद महा देव ॥ घर जाय ॥ अयोग गति नियम एह ॥ वलि ॥ अनन ॥ गुल ॥ कुल ॥ मात तात ॥

अथ नंदी चरदीपयश्चिन्मदिशं चमरति करणं जाभाह ॥ दुसुमलतां द्युद ॥ नंदी चरदीप आठमौ ॥ प
 श्चिमदिशं ज्ञानगिरिजानुसाके पश्चिमवापीराजैताके प्रथमकौ नमैमाना रतिकरगिरिपंचमकंचनम
 यं ऊचो योजन सहस्रमाणा तापरजिनमंदिरजिनप्रतिमा अर्घ्यचढाय कस्तुं मैध्याना ॥ उद्दीनं दी
 रदीपयश्चिमरतिकरजिनाच्छयेभ्योनमः ॥ अमनः अमनः ॥ सुदशेष्टुदः ॥ सुरनदीजलनि
 ललायकौ कनकभृगु अनूपभरायकौ भनमदाह निवाहन हेतुसो धाराजिन पद्मप्रगु सुदेतसे सरस
 अष्टमदीप सुहावनौ भासपश्चिमदिशमनभावनौ सरसा ॥ गिरिसुमंचम
 रसेहृदी ॥ उद्दीनं दीश्वरदीपयश्चिमदिशं चमरति करणं चतुर्गजिनमंदिरभ्योनमः ॥ अलं
 मलयचंदनकेसरडारिकौ भक्तिभावविवियोगसम्हारिकौ कर्मबंधनिवारणकाजजी ॥ भव्यपूजंतप
 जिनराजजी ॥ सरसः ॥ उद्दीचंदनं ॥ कठिनशुचिसमस्वेतसुहावनौ ॥ प्रमल अक्षतसत्त्वप्रभावने
 चुरमुण्यवढावन हेतुसो ॥ जिनचरन वसुदेतसो सरसः ॥ उद्दी अक्षतं ॥ सुरमही सुहकी कुसुमाव
 त्तिहिसुगंध अमैत्रमरावली ॥ जिनचरन लखिदृगहरषातसे जतमन्मथजरजजातसे ॥ उद्दी
 पुष्प ॥ सरसमोदिक आदिवना ईणस्वरु कनकमयया लभराई ए ॥ जायजिन गरुजिन वरपूजिये
 भगतिवंतमुदित उररुजिने ॥ सरसः ॥ उद्दी चरु ॥ कनकमणिमय सुंदरजो इत्ये ॥ दीप प्रतिदुति

वंतसुजोर्दयोविकटमोहमहातमनाशने॥मूजिजिनपदज्ञानप्रकाशने॥सरबाधोर्दोहीदीप॥अति
सुगंधसुधूपवनाईयोमुदितमनजिनमंदिरजाईयोवरणपूजितभविजिनराजके॥हृदयभक्तिभरेसु
रसाजकेसरसका॥उर्दोहीधूप॥ परमपावनफलभरिधारहो॥अमरपतिसुरसंगअपारल्लेखरएपूज
तश्रीजिनराजकेसरएणभवदधिसाजसमाजके॥सरसबा॥उर्दोहीफल॥जलफलादिकद्रव्यमिलाइ
कीरतनसुवरनथालभरायके॥अतिशचीयतिभक्तिवढायके॥मजतजिनपदअर्घवढायके॥सखे
उर्दोहीअर्घ॥जयमाल॥लेहा॥विधिअरिभंजनपरमविधिविधप्रकारवताय॥सोजिनराजजयोस
दासमउरवसियोआयार॥छंदमोतिपादास॥जयोजगमेंजिनदेवमहान॥जयोजिनकोउपगारम
हान॥षाचीपतिपायपरेनितआयसदाप्रभुजीममहोहुसहाय॥अदयोसतधर्मदयाउपदेश॥अयोजग
जीवसुधानविशेष॥चतुर्दशभेदकहेजिनभूषाकहोतिनकोस्वभेदअनूपा॥मिथ्यातससादनमिश्रत
तीय॥सुअप्रतसम्यगदृष्टिरीयाइकादृष्टतिकभावकरीति॥सुऊपरहेसुनिधर्मअनीति॥अप्रमत्त
दोगुणानअनूपा॥सुसप्तमहेअप्रमत्तसस्प॥अप्रवर्कससुअप्रमजानतथाअनिरुत्तिनवोपहि
चोन॥सुहेदर्शमोगुणसूक्ष्मलोभाइकादर्शमोउपशांतअष्टोभ॥सुछीनकषायदुवादशभावय
होतकतीछद्मस्यप्रवाह॥सुतेस्मजानसुजोगजिनेश॥यहोतकजोगतयासितलेश॥अजोगचसुदर्शमे

वैवनम्
॥५३॥

गुणयानां मही भवकारण की सवहानां धर्मिण्या त विवैग ति इंद्रिय काया स वै जिन राज दर्श सुवताया स
श्रुति एका मुकाय कही त्र स एक विशेष ॥ प्रसशा दन आदि सु जोग प्रजता स वै मन त्र स
त्व तु र्ण क ऊ ग ति मै गु ण या न मु प च म ह्ये शु मा तु ष मा ना ध म त त्ति तै स व ही गु ण या ना
स्ज वा ना भू ती य दु वा द श ते र म था ना क ह्यो म र नो न हि श्री भ ग वा ना ध मि ण्या त म रे ग ति चा र दु जा
न न क वि ना त्र य भा य मु प्प व आ यु वं धै जि ह्नि वा म तु र्ण च ऊ ग ति जा य स दी वा सु पं च म
ता ल्हे ग ति एक मु दे व म ह न्त ॥ प्र जोग जि ने श्व र मु कि ल हा य क ह्यो य ह् व र्ण न श्री जि न रा य
ज ग दी श्व र ज्ञान प्र वा हा च र व सु प्र त्य च्छ ल वा य ॥ त्रि लो क त्रि काल स्त्व भा व वि भा वा स वै रु
भा क ॥ सु नो प्र मु जी इ स वा र पु का र करो ह म कों भ व सा ग र या ए करो य ह एक व दो उ प गा
ई दु ल भा रा ॥ ३ ॥ दो हा ॥ जि न व र ज्ञा ता ज ग व दो वि प ति नि वा न हा ॥ इ स अ सा र सं सा र सै क रे मो
रा ॥ अ र्ध ॥ सो रा ॥ दी न वं धु भ ग वा ना क री रु पा मु रु दी न यै क रु णा नि धि गु ण जा न्त् प्रा यो तु म द र वा
॥ इ ति ॥ ॥ ३ ॥ : ॥ अ थ नं दी श्व र ही प ष ष्ठ म र ति क र जि न पू जा मा ह ॥ कु सु म ल ता छ द ॥ नं दी
ए य श्वि म अं ज न गि रा की प श्वि म दि श मै जा न भा पी कौ न दू से मा ही ए ति क र कं च न व र्ण म हा न ता के
र श्री जि न मं दि ए अ क र्त म सो ह्ये अ म ला न ता मै श्री जि न प्र ति मा र जे ति न कौ वं दो उ र ध मि ध्या ना रा

उँह्रीं नंदीधरदीपघट्टमरतिकरप्रवर्तितपरसिद्धकूटजिनमंदिरेश्योनमः॥ अन्नं॥ अन्नं॥ अन्नं॥ पुष्पं॥ जिनी
रामा॥ गगाजलसमञ्जलजललेखवरणभृगभगवैभ्रतमजरादुखदूरकरणकौं श्रीजिनचरणचढ
वोमं दीश्वरपश्विमं अंजनगीरताकेपश्विमसौहृतरतिकरऊपरश्रीजिनमंदिरा॥ निरखिशचीपति
मोहो॥ उँह्रीं नंदीधरपश्विमद्विगलधुगरतिकरजिनालयेश्योनमः॥ जलं॥ १॥ केशरअरुकरपूरमिला
केचंदनसंगघसीजोपरमपूज्यअरहंतदेवकेचरणनपूजकरीजोमंदीवर॥ उँह्रीं चंदन॥ मुक्ताफल
समउज्जलभ्रतसुंदरधोयवनावो॥ अक्षतप्रपदकेपावनकारणश्रीजिनचरणचढावोमंदीवर॥ उँह्रीं
अक्षतं॥ सुरतरुकेवरफूलमनोहरहर्षसहितसुरलोवोममरशूलनिर्मूलकरनकौं श्रीजिनचरण
चढावोमंदीवर॥ उँह्रीं पुष्पं॥ लाडूघेवरमोदकखाजेसाजेसरसवनावो॥ शोषक्षुधादुखदूरकरण
कौं श्रीजिनचरणचढावो॥ नंदीवर॥ उँह्रीं चंदनं॥ मणिमयदीपप्रजालमनोहरतनरकेवीधारोमोहम
हातमनाशनकारणश्रीजिनपरतरवारोमंदीवर॥ उँह्रीं दीपं॥ दशविधिगंधमनोहरलेकोश्रीजिन
मंदिरावोमव्यजीवभवतापविनाशनश्रीजिनचरणचढावोमंदीवर॥ उँह्रीं धूपं॥ यिस्तालोग
सुपारीएलाआदिकफलसुखकारीभव्यजीवशिवफलकेकारणजिनचरणपूजप्रचारोमंदीवर
उँह्रीं फलं॥ जलफलअर्घवनायगायगुणभक्तिसहितशिरनावोसुरेशसवश्रीजिनवरकेभर

कमलकौंध्यावोमंदीना॥६॥उह्रींअर्ध॥जयमाल॥रोहा॥जगदीश्वरमहाराजके॥वरननशीशान
 षरएज्जयमालाअवैषभुजीहोहुसहाया॥७॥छंदमोतियादाम॥जयोजगमेंजिनराजमहा
 ।मुनिराजधरैतुमध्यानारैसुरशेषमहेशअशेषाकटेसवकर्मप्रबंधविशेष॥८॥सुजनमतदेव
 वैभविआपाकरैप्रभुसैवसुमस्तकनायागयंदइरापतपैअसवारासुगोदलियेंहरिओजगता
 सुरछत्रईशानसुरेश॥सुचामरदारतव्यसुरेश॥करैजयकारसवीसुरशेषासुभक्तिवढा

आशमहागिरिपांडुककाननवीचसनानशिलामनुचंद्रमरीचासहोतरविष्टरत्न
 नरैवे हकौनरहेउरभूखाधुआसनपद्मविराजितदेवसवैविधिन्होनकरैहरिसेवासुपेद
 हिआठप्रमानाभैजलसीरहिसागरआनाभप्रभूअसनानकरैहरिआपासुधन्यजिने

पुण्यप्रतापासुरसर्वकरैजयकाराषजैचंद्रसाजसमाजअयाशघसुरीवदुनृत्यक
 तिसमेतनवोरसभाकासुआनदनाटकहोतअनूपासुजनमकल्याणकपुण्यसत्पा॥९॥अपरा

श्वरसाधिनियोगगणयेसुरआपनेथानमनोगाप्रभूरहवासविवैकराजाधरोफिरनेव
 साजावाहनेचउघातिलयोवरज्ञानचराचरवस्तुप्रकाशकभानाकरैउपदेशमहासुखदान
 दधितारकपोतमहाना॥१०॥जगमेंवहदेवअनूपाहनेवसुकर्मभयेशिबभूपासवीसु

पतिरायअनूपकरोहमकौप्रभुआपसरूपा॥ दोहा॥ वषचषकेदाताप्रभूदृषभेश्वप्रभुदेव
 करोरुपासमदीनकैतुमशिवदायकदेवा॥ अर्थ॥ सोरठा॥ भवदधितारनहारकारणालुमया
 जगतमौओरनदूजोसारनिमितवलीइसलोकमै॥ इति॥ ॥ अर्थयप्रियम
 दिशससमरतिकरपूजासाह॥ कुसुमलताछंद॥ अष्टमदीपदिशापश्चिममैअंजननगिरकेउत्त
 रसारवापीप्रथमकोनमैसोक्षैरतिकरपर्वतगोलाकारतापरश्रीजिनमंदिरसोक्षैजाकीमहि
 माअगमअपारासाकीआहाननविधिकरिकैपुष्पचढावतहमत्रयवार॥ २॥ उद्धीनंदीअरदी
 यपश्चिमदिशससमरतिकरैयेनमः॥ अन्न॥ अन्न॥ पुष्प॥ चालछंद॥ जलसारसुधासम
 लीजैसुवरत्केभंगभरीजि॥ जिनअग्रधालयदीजोमहुपुण्यभंडारभरीजिनंदीअपश्चिमदि
 शओराससमरतिकरगिरजोसतापरजिनगरहसुखकारीसुरष्ट्रजतभक्तिसुधारी॥ उद्धीनंदी
 अरदीपपश्चिमदिशससमरतिकरजिनमंदिरैयेनमः॥ जल॥ ॥ वरवावनचंदनलावोक्षैशरकेस
 गयसावोभवदाहनिवारणाकैभविपूजतश्रीजिनरजैमंदीबांधूद्धीचंदन॥ सुखदासप्रमोदम
 हानाभंदुलसितउत्तमलाना॥ जिनवरपदअग्रचढाना॥ निअयअसुपपदपाना॥ नंदीबा॥ उद्धी
 अस्त॥ मेदारनैरुअनूपा॥ इत्यादिकुसुमवदरूपा॥ जिनवरपदअग्रचढावैसवकामव्यथानशि

वौवनयूः

॥५८॥

वौनंदीवाध॥ उँहीयुषं॥ षटरसपकवानुनंवीनि॥ नुरतहिक्पावनकीने॥ जिनवरपदमाहिचंडा
दुखदोषदुधानशिजावौनंदीवाध॥ उँहीचंडा॥ दशहंदिशजोतिप्रकाशो॥ एसेंदीपकतमनाशे
जिनवरपदअग्रचढावौ॥ भविकेवललक्ष्मीयावौ॥ नंदीवाद्याँद्वीदीपं॥ वरधूपदशांगवनावो॥ तसु

८ गनआवौसोधूपधनंजयखेवौ॥ विधिनाशिनिजातमवेवौ॥ नंदीवा॥ उँहीधूपं॥ फलउत्तमवहु
धल्यावौ॥ जिनवरकेचरणचढावौ॥ भविविधिअरिवंधनशावौ॥ निश्रयशिवलक्ष्मीपावो॥ नंदीवा
हीफलं॥ वसुदत्तममिलायवनोवौ॥ कनयारविकेभरवावौ॥ जिनवरपदअग्रचढावौ॥ सोभविदिव
मुखपावौ॥ नंदीवा॥ उँहीअर्धं॥ जयमात्रा॥ दोहा॥ अगोइंद्वयमिलायकैप्राप्तौ॥ अंगनवाया॥ जिनवर
कंठजयमालासुखदाया॥ ॥ छंदसोतियादाम॥ जयोजिनराजभवाएवतारा॥ जयोजिनराजशि
पधारजयो॥ जिनराजसुधर्मजिहजभंयो॥ जिनराजलिपो॥ शिवसाजा॥ सुनौभवकाननमाहिजिनेश
नौ॥ हमनैदुखघोरकलेरा॥ अंतलघौ॥ अजहूनिदेवकरूतुमरी॥ इहकारणसेकाअहरोर्वि
सवफलभरो॥ सुखसंयति॥ आनंदकंदलहरो॥ हमरोयहकाजजिनंदा॥ करोकरुनाकरुनाबुधिचंदा॥ स
नैदुखघोरकरूणरहेनितही॥ शिवसंयतिदूरा॥ रुअवतौतुमचर्ण॥ जरूणसहेसुखघोअभुजीभ
रा॥ धामभूतुमरूपअनूपपारा॥ रत्नीशाशिकोटिलेजंतअगाएविचातही॥ भविकौसु

के सुख कौं कहि कोय ॥ प्रपन्नंतवली अरु वज्रशरीर ॥ मह हाथ विभुं दरगंध समीर ॥ प्रखेद अपखेद नही म
ल कोय ॥ महावच अमृत कोमल होय ॥ धमभूच यज्ञान विराजित एव सुजन्मत ही ॥ अति श्रेष्ठ जिन देवा लखे
जव केवल ज्ञान महान ॥ लहे ॥ अति श्रेष्ठ ॥ और सुजान ॥ अन्नंत चतुष्टय चारि वखानि ॥ धरे गुण ध्यालि
स श्री भगवान ॥ वास मोष्ठ तम ॥ ध्य विराजित देवा सु रा सुर सर्व करे ॥ प्रभु सेवाम हा धुनि दिव्य खिरंत अगाध
अनंतर सर्व प्रकाश ॥ प्रवाध ॥ चतुर्दश मार्ग एगुण ॥ यानि ॥ छेद व्यसने गुण पर्यय वान ॥ सुतत्व कहे मनु
सा त प्रकाश तीति भवार्णव तार गहा ॥ बंधो सत ज्ञान प्रमाण स रूपान ॥ यान व भेद ॥ अभेद अनूपा ॥
कक्षो शुभ चारित शुद्ध प्रयोग ॥ यही रत्न त्रय जा नि ॥ प्रयोगो सथा दश लक्षण धनूपा ॥ बादश भावन सत्प
स रूप ॥ कहे प्रभु बोडश कारन सारा ॥ सुतीर्थ पती पद के करता ॥ १॥ इत्यादि ॥ अने कहिये उपदेश ॥ व सोहम
रे ॥ रमा हि समेश ॥ करौ हमरी बुधि च्छि विशाल ॥ भरो प्रभु जी शिव संपति हा ला ॥ ३॥ दोहा ॥ जन्म मरण
दुख नाश को ॥ करौ ज्ञान पकाश ॥ अरज जिन श्रव की सुनौ ॥ सुमदा ता गुण राश ॥ १॥ अध ॥ सीरहा ॥ जग
मेश ॥ ए सहाय साम ॥ आप को मैं सुन्यो ॥ करौ कृपा जिन राज ॥ नियट ॥ अधम मम जा नि को ॥ १॥ ५॥ इति ॥ ३॥
अथ नंदी पुर दीप अष्ट मरति कर पूजा माहा ॥ कुसुम लता धंद ॥ नंदी पुर पश्चिम ॥ अष्ट मगिरा तिक र कंच
नवर्ण सुहाग ॥ एक सहस्र योजन को ऊंचो ॥ इंदु दिशा वापी वहि भाग ॥ छितिय को न मैं पर्वत राजै ॥ गीला कार

बौवनपूः

॥५७॥

होलसमलागताकैफपरश्रीजिनमंदिरपूजतसुरपतिकरअनुराग॥९॥ उईहैनंदीश्वरदीपयश्विमदि
अष्टभरतिकरएवतपपरसिद्धकृतजिनमंदिरभ्योनमः॥ अन्न॥ अन्न॥ चालदीहा॥ पूजनकरले
जिनवरदेवकीजीकोईद्विशिवसुखदातार॥ देरगंगाजलसमनीरलेजीकोईभसुवरणभंगा
जिनवरपदतरभावसौजीकोईकरधारात्रयधारपूज॥ नंदीश्वरपश्विमदिशाजीकोईअष्टम
तिकरसारसुरसुरेणपूजेंसदाजीसापरजिनआगारपूज॥ उईहैनंदीश्वरदीपयश्विमदिश्वअष्टम
तिकरजिनमंदिरभ्योनमः॥ जल॥ १॥ केशरसंगघसायकैजीचंदनगंधअनूप॥ भक्तिभावउरलायकै
जीपूजंजिनवरभूषा॥ पूज॥ नंदी॥ २॥ अत्ततसरससुहावनैजीदेवजीसुखदासाअत्तयपदे
कारणैजीपुंजकरोजिनपासापूज॥ नंदी॥ ३॥ उईहैनंदीश्वरदीपयश्विमदिश्वअष्टम
मदहनकैकारणैजीपूजेंजिनआगारपूज॥ नंदी॥ ४॥ उईहैनंदीश्वरदीपयश्विमदिश्वअष्टम
वाय॥ लुधाहरनकैकारणैजीजिनवरभेदकहायपूज॥ नंदी॥ ५॥ उईचिचं॥ कनकरतनमयदीपलैनगर
जोतिप्रकाशमोहतिमरकेनाशनेजीकरहुआरतीपासापूज॥ नंदी॥ ६॥ उईहैनंदीश्वरदीपयश्विमदिश्वअष्टम
नायकैजीधूपकरोभविजीवाजिनवरपदकूपूजिकैजीमावोसौख्यअतीवापूज॥ नंदी॥ ७॥ उईहैनंदीश्वर
तमफलसुरलोककैजीलावतसुरपतिआयाकरपूजनजिनराजकीजीमाशतभवसतापापूज॥ नंदी॥ ८॥

॥५८॥

दुई फलं॥ जलफल अर्घवनाय के जी॥ प्रर्घक ते गुण गाया॥ अष्टकर म के नाशने जी॥ मज्जो जिन वर पाया हू
 नंदी बाटे॥ दुई अर्घी॥ जय माल॥ दोहा॥ त्रिसटि प्रहृति खियाय कै मायो केवल ज्ञान॥ तिन पदवंदों भावसों
 राय क शिव क ल्या न॥ १॥ छंद मोति याद म॥ ज्यो जग में जिन चंद जिनेश॥ हुने जिन ने च उघाति अशेष
 लहो यहि लै विधि मोह पछार तंदरती न करै विधि छार॥ हुने यहि लै अरि सात करूष तुर्थ मथान
 लयै गुण भू॥ न में गुण थान अरी छुती सादशे गुण मैं अरि लो भगरी श॥ श्रुवा दश में गुण थान सु अ
 त॥ अशेष अरी क्षण माहिन शंत॥ तहां गुरु देव दिगंवर रूप॥ क्ता वत सर्व प्रकार अ न्या॥ ३॥ सु केवल ज्ञान
 धनी जिन राज॥ सु तेर मथान स मो श्रुत साज॥ करे उपदेश महा भविका ज॥ भवो वधिता रन परम जह ज
 धा भ्र संल्य सुग सु रचार प्रकार॥ तथा पशु जाति भ्रने क्रम कार॥ महा मुनिर अतथान रगज॥ बहु विधि स
 घ मुने जिन राज॥ कई भविसम्य क वंत सुजी ब॥ धरे व्रत सजम भाव॥ अती व॥ करै व्रत देश धरे दढ मेय करै
 डरचा हृदि गंव लेष॥ ६॥ कई भविसम्य क दर्शन पाया॥ मिथ्या तव मैं अति ही दुख दया॥ कई जिन पूजन कै
 व्रत धार॥ करै जिन भक्ति॥ अने क प्रकार॥ ७॥ कई बारान पणों व्रत लेय॥ कई निश भाजन त्याग करे पा कई व्रत
 व्रत धरे दढ स्था स वै दुर्भाव तजै॥ दुख कूप॥ ८॥ धरे व्रत भाव सुशक्ति समान॥ करै दृष्य में पुरुषारथ थान ह
 रो विधि पूव संचित कूर॥ धरे पग मुक्ति सुमार गभू॥ ९॥ तुम्ही प्रभुजी भवतार नहार॥ तुम्ही प्रभुजी करु नानि

नौवनपू

॥५८॥

शुभ्रंहीप्रभुजीजगमेंसुखकारजिनेश्वरकौंभवसागरतार॥ दोहा॥ कर्मबंधकौंनाशकर
सेमुक्तिआगागसोप्रभुमेंरेखसो करोभवोदधियाग॥१॥ अर्ध॥ सोरखा॥ अशरुशरुनसहाय
असारसंसारमोहजोसदासहायसुमदाताजगमेंवडो॥२॥ इति॥ ॥३॥ ॥कुसुमलता
॥ नंदीश्वरपश्विमदिशमाही जिनमंदिरतौमुनौअधिकागजहाजहौजिनप्रतिमागजैअनु
मईसुखकारगतहौतहोवहुभक्तिभावकरपूजो जिनवरविंवविचारसर्वसिद्धिसुयकअघघा
रोसहायअनेकप्रकार॥ उँहीनंदीश्वरहीपपश्विमदिशसंवंधीअथोसर्गतएवनाविशो
जिनविंवेभ्योनमः॥ अर्ध॥ पश्विमदिशवर्तीव्यंतरभवनपतीसुरसागअथवाज्योतिषदेव
जैतिनकेचरणकमलकौंवहुविधिअर्धचढायजपूनवकार॥ इति॥ उँहीश्रीनंदीश्वरही
दिशसंवंधीव्यंतरभवनवासीज्यातिषीदेवोंकेजिनमंदिरजिनविंवेभ्योअर्ध॥ पश्विमदिशपूरी
थउत्तरदिशसंवंधीपूजामाहा॥ अथनंदीश्वरहीपउत्तरदिशसंवंधीअंजनगिरिजिन
रपूजामाहा॥ जोगीरासा॥ नंदीश्वरकोउत्तरदिशमैअंजनगिरवरसोहो॥ जोजनसहसचो
। ऊँचोस्यामवरनमनमोक्षोदोलसमानगोलतहाऊपरश्रीजिनमंदिरजानौ॥ आठअधिकइक
जिनप्रतिमापूजतसुखअधिकानौ॥१॥ उँहीनंदीश्वरहीपउत्तरदिशअंजनगिरजिनम

॥५८॥

नमः॥ अत्र॥ अत्र॥ अत्र॥ अत्र॥ चालहोली॥ जिनपदकी पूजरावाओ हृदे तिनके गुणगाओ॥ हरे॥ नि
मैलनीरकनककी मारी॥ भरजिनमंदिरजाओ॥ श्री अरुंत चरणके आगे धारदेय शिरनाओ नंदीश्व
र उत्तरदिश सो हो॥ अंजन गिरगृह्याओ मनवचकायल गायगायगुण जिनपदशीशनवाओ॥ हृदे बा
उं ह्रीं नंदीश्वर दीप प्रवृत्तर ह्रीं अंजन गिराके शिखर जिनमंदिर ये नमः॥ जल॥ चंदन के शर गंध मिल
कर रतन कटोरी धारो॥ मुरसुर पति जिन गज चरण की पूजा विधि विस्तारो॥ हृदे नंदीश्वर॥ चंदन के रत्न
उज्जल अस्तत धोय मनोहर॥ कंचन थाल भरावै॥ भव्य जीव वहु भाव भक्ति सो॥ जिनवर चरण चढावै
हृदे नंदीश्वर॥ उं ह्रीं अक्षरं॥ पास्त्रा तम दार॥ आदिके सुष्य विविध गुण लावै॥ श्री जिनमंदिर जाय
शची पति॥ जिनपद अग्र चढावै॥ यहा मैशीशनवाओ॥ हृदे॥ धा॥ चंदन पुष्प॥ षट् र समय पकवानव
नाकर रुक्म सहित सुरलावै॥ श्री जिनचरण पूजकर सुरगण सुएय प्रहृति उपजावै॥ यही मै निशदि
नचाओ॥ हृदे नंदीश्वर॥ उं ह्रीं चढ़ावनवरनके तन मनोहर सुरसुमति मिल लावै॥ श्री अरुंत देवकी
पूजा करत ज्ञान निधि पावै॥ यही मै आस लग जाओ॥ हृदे नंदीश्वर॥ उं ह्रीं शेष॥ कृसागर वर धूप दशा
गी॥ भव्य मनोहर लावै॥ वसु विधिकर्म दर्शन के कारण श्री जिनचरण चढावै॥ षट् ए मै भी पाओ॥ हृदे
नंदीश्वर॥ उं ह्रीं धूप॥ षट् रतुके फल उत्तम लेके॥ श्री जिनपूजरावावै॥ भव्य जीव अति हर्षित मन मै ज

三

五

साजवाजसमाजअद्भुतधन्यजनत्रिभुवनधनीधराणधरपारतपावही॥जग॥इंद्रहैशिखनायमुनि
जनध्यानधरैसदाजगत्तुमत्रिभुवनकेराय॥जगएयजगहितदायतुमगुणवैलकीरतिनिस्सी
त्रैलोक्यमंडपसर्वछाये॥शीशपरसुखफलफरी॥बहुफलअनूपमअविच्छिन्नअग्रेकअमितस्वभाय
हो॥दीजेजिनेश्वरदेवहमकोंवलसुफलसुखरूपहो॥देहा॥तातमातभ्राताडुम्ही॥मालिकयसमदया
लायहनिअप्यमनजानिकेलीनीआसरूपाल॥॥अर्थ॥दोएजा॥वैरागीवनिवाजमेगरीवजगमेवड
दीजोसर्वसमाजजोऐसोजहौचाहिए॥॥॥॥अर्थ॥दोएजा॥वैरागीवनिवाजमेगरीवजगमेवड
वायवंधीपूर्वदिग्गमयामदधिमुखपूजा॥॥॥॥देहा॥दधिसमदधिसुखखेतअविधेयजनदशहजार
उन्नततापरजिनभवनापूजेसुरयतिसारा॥ताकीबहुविधिभक्तिकरि॥आखाननविधिसारा॥अपनेय
रपूजनकरोमोछितार्थदातारा॥॥॥॥अर्थ॥नंदीश्वरदीपउत्तरदिशा॥छितीयदधिसुखपर्वतपरसिद्धकू
टजिनमंदिरैभ्योनमः॥अपूजा॥अन्न॥पुष्पमंदीयाइइ॥मग्नद्रहजलउजाललीजेजिनचरणा
बुजधारसुदीजेजन्मजरगदुखदाहनिचारै॥भयजीवसमकितउरयारै॥नंदीश्वरउत्तरदिशजानौ॥अंजन
गिरकीपूखमानौ॥दधिसुखगुरुपरजिनगरहसोहो॥सुलएपूजितसचमनमोहो॥॥॥॥नंदीश्वरदीप
उत्तरदिशप्रथमदधिसुखजिनालयेभ्योनमः॥अर्च॥॥॥॥केशरअरुकरपूरामिलाय॥वाचनचंदन

गद्यसाय॥ जिन पद पूजित भक्तिप्रचारी॥ भव अताप मिटावत भारी॥ नंदी बानी उद्दिनि वंदी॥ उजाल अम्र
तधोय धरी जे॥ उजाल सुवर नणाल भरी जे॥ उजाल जिन पद पूज रचावो॥ उजाल भाव भविक फल
अ॥ उद्दिनी अमृत न॥ कुसुम अनेक प्रकार मगावो॥ कुसुमायुध विजयी गुण गावो॥ कुसुम जिने श्वर
चढावो॥ कुसुम वाणवाधा विनशावो॥ नंदी बानी उद्दिनी पुष्प॥ उत्तम नेव ज विविध वना बोधत मभाज
मै धरिल वोष्ठत मभाव भविक उर लावोष्ठत मदेव पूजि सुख पावो॥ नंदी बानी उद्दिनी चह॥ जो
तदीप कशुचिली जे॥ जोति वंत जिन पद पूजि जे॥ जोति ज्ञान हरत मकों नाशे॥ जोति वंत निज भाव प्र
शे॥ नंदी बानी उद्दिनी दीप महन कर्म अरि धूप वनवो॥ हरन शुक्ल ध्यानी पद ध्यावो॥ हरन माहि भ
पजर वो॥ हरन कर्म हनि शिव पुरपावो॥ नंदी बानी उद्दिनी धूप॥ सुफल अनेक प्रकार था लभरी जे॥ सु
कामना मन में को जे॥ सुफल दाता जी पद पूजो॥ सुफल पाय मुक्ति पति हूँ जो मंदी बानी उद्दिनी
ठर वमय अर्घ वनावो॥ आपोैं अंग नाय गुण गावो॥ अष्ट महि ति पति पूज रचावो॥ अ
पतिकरुलावो॥ नंदी बानी उद्दिनी अर्थी॥ जय माला॥ दोहा॥ नंदी श्वर जिन धामा उत्तम दधि सुख प्र
पुनि पुनिकरूप एण मगाऊ गुण माला अर्घो॥ एण फडो छुड़ा जय नंदी श्वर वर दीप जाना॥
जय ताकी उत्तर दिश महान॥ जय अंजन गिर सो छै उत्तंग॥ जय गोल डोल स मस्या मंग॥

गसीसहससारां कुंचोति हि ऊपर जिनागारा जयता की प्रवदिशमगार नयसजलवापिका भरी सा
रा ॥ तिहि वीच जानि दधिमुखमहारा ॥ उन्नत हे यो जन दशहजारा ॥ प्रतिस्वेत वरन दधिसम अ नूयन
हुं ॥ और दोलसमगोलरूपा ॥ तिहि ऊपर श्री जिन भवन सारा ॥ सवसमवशा एण शोभा अप्यारा ॥ जिन अंत
री सुराजै सदीवा ॥ नित पूज करत तहो भव्य जीवा ॥ एत पचधनुष जिन तन प्रमाना ॥ यथासन सो हे दो
सिवा न भव मुद्रा तिहार्यमंगल सुदक ॥ इत्यादि ॥ और महिमा जु सर्वा ॥ जिन छु विनिरखत मन मुदि
न होय ॥ चिरकाल पापमल पुंज धोय ॥ कोई प्रापति सम कि वरतन सारा ॥ संसार खार तै करो पारा ॥ छ
अति तेजवंत जिन दिव्य रूप जे परसवीत गी सरूपा ॥ मनु सुवरन माहि सुगंध सारा ॥ अरु शशिक
मिलि प्रगटी अयारा ॥ जग करम दाह करि दुखित जीवा ॥ तिन की सुखदायक सकुसुदी वसु अमुस
वेनहु भक्ति लाय ॥ तुम चरन कमल सैव वनाय ॥ पुरुषि मुनि महत तुम ध्यान धारा संसार उदयिते हो
यपारा ॥ मेशरणागत आयो अपवार ह्ने करुणा निधि भव उदयिता ॥ जग जीति कर्म अस्मिक रोच
रावहु जीवन को दुख करो दूर ॥ मुनि अर्ज जिनेश्वर की हजूर ॥ निज सुख संयति दीजि जरू ॥ दोहा
करुना निधि जिन राज तुम तारा एत एण महेश तुम पदयक ज कौन मो ॥ सकल सुरा सुर शोभा ॥ रा
र्ध ॥ सो रहा ॥ नमो अगव सुआरा भक्ति भावो हि देधरू ॥ भव भव भ्रम एत न शाय ॥ अज सुनौ प्रभु दीन की

वैव नयू
॥६२॥

२॥ पुष्पं ॥ ॥६१॥ ॥ अथ श्रीनंदीश्वरदीपदक्षिणादिशास्त्रितीयदधिसुखपर्वतपरसिद्धकूट
जिनमंदिरपूजा मारु ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नंदीश्वर उत्तर दिशा ॥ अंजन गिरव जो राभा की दक्षिणा
यिका शोभनी के जल धारा ॥ ॥ उद्ग्री नंदीश्वर दीपदक्षिणादिशास्त्रितीयदधिसुखपर्वतपरसिद्धकूट जि
द्विरेभ्यो नमः ॥ अन्नं अन्नं ॥ पुष्पं भक्तु सुमलता घंटा ॥ पुंडरी कद्रु सम उज्जल जल जलेज
धमि श्रित सुख कारा धार देत श्री जिनवर आगे जन्म जरा दुख नाशन हारा ॥ नंदीश्वर दक्षिणा अंजन
रता की दक्षिणा वापी सारा ॥ ताके बीच विराजे दधिसुख तापवंदौ जिन आगारा ॥ ॥ उद्ग्री नंदीश्वर दीप
दक्षिणादिशास्त्रितीयदधिसुखपर्वतपरसिद्धकूट जिनमंदिरेश्या नमः ॥ अन्नं ॥ ध्वजं अन्नं ॥ पुष्पं ॥

॥ पुंडरीकद्रु वावन चंदन कदली नंदन सारु नि कद नहे सुख दाया ॥ पूजत श्री

लभ विभवा ताप दुख वेत नरा ॥ अमंदी ॥ उद्ग्री गंध ॥ श्री सुख दासक मोद वासम तिसर लश ॥
विविध प्रकारा ॥ अर्चत पुज जिनेश्वर आगे करत भव्य पावे भव पाश ॥ नंदीश्वर ज्ञाने श्री गु
द केतकी ॥ बेला कमल चमेली लाया काम सारु निरवार नकार ॥ अजिन चरण ॥ पुज देत चढाया
पुष्प ॥ लाड ध्वज मोद कैनी ॥ घट सरस्यं जन्तुर तव नाथ ॥ सुधारोग के दूर करन को जिन वर पद
भवि आया मंदी ॥ उद्ग्री चंद्र ॥ वीपर तन मय सुगय तिला ॥ वैभक्ति भाव हिर देउ मगाया ॥ केवल ज्ञा

॥६३॥

निधानमासिकेहेतुजिनेश्वरपूजेआयानंदी॥६॥ईहीपं॥चंदनअगतगरुडसागरधूपसुगंध
मईवनवाय॥भविजनकर्मदहनकेकाजेजिनपदकमलजजैमनलायानंदी॥७॥ईहीधूपं॥लोगलाय
चीपिस्ताकिसमिसएलाकेलादाखमगाथा॥प्रीफलआहिमुक्तिफलकारणभविजनपूजतजिनवर
पायानंदी॥८॥ईहीफलं॥जलफलइव्यमिलायगायगुणार्घवनायभक्तिउरलाय॥असुमसिति
पतिपदपावनकौसुरपतिजिनपतिपूजनआयानंदी॥९॥ईहीअर्घं॥अजयमाल॥गीता॥इदं॥समा
रकाननअतिभयानकविषयविषयजोरहौ॥अतिप्रवलचारकषायतत्कारनासतिनकीघोरहौज
गजीवपणिकभ्रमेंनिरंतरदुःखबहुविधिपावही॥मैचरणपूजेंदेवजिनकेसुमगजोदरशावही॥पद्म
दीपद॥जयजयजिनराजस्थानिधान॥दरशायोगमैमगमहान॥जयसमवशाएकमध्यसार॥उप
देशदियोआनंदकार॥सवतत्वप्रकाशकियोअशेष॥आश्रवकोवर्णनयहविशेष॥आश्रवसत्ता
वननैदसारतिनमूलभेदजानौनुचा॥मिथ्याअप्रव्रतनुकषाययोग॥इनहीवससुखदुखसर्वभोग
मिथ्यातभेदहैपंचजानाअचिरतकेवाहभेदमाना॥पञ्चीसकषायकहीजिनेश॥अरुजोगजानप
दहविशेष॥इनसर्वकौजोडेंहोयसर्वसत्तावनआश्रवभेदपर्व॥मिथ्यातविवैषयचपनवलाना
हारादिकविनसर्वमाना॥यसूसदूसरेयानजान॥मिथ्यातपाचविनयरुप्रमाण॥अरुतीजेचौथेकेमगर

बौवनम्
॥८२॥

त्यालीस औ रष्पा ली स धार गुण पंचम मे से वी स भेद चौ वी सक हे वष्टम अखेद द्वा जय सप्तम अ
गुण मन्तार वा वी स भेद आश्रव उदार जय नव मद्यान के सा त भाग प्रति भाग एक द्वा क हानि ला भ ॥ अ
त हा प्रथम भाग सो ल ह प्रमाण ॥ अत्र रु अत भाग दश भेद जान स द्रह से एका दश प्रज त जय मध्य भा
ग यौ चो ल संत ॥ जय दश भेद श गुण भेद जान पार म नो नो प्रमाण ॥ जय तेर म गुण भेद सा
ग चौ द स स्वामी जिन है प्रजोग ॥ धम ह आश्रव भेद क द्यो जिन श सो ही सिद्धांत चक्रो विशेष गो म द
सार में क हो देवा ॥ आश्रव अधिकार विषे जु भेवा ॥ ब्रह्म व तत्व भेद दर्श जिन श स त ज्ञान दान दाय क
ह मे श हें क पा सिंधु कर ह पा सार सार खारै करे पार ॥ १ ॥ देहा ॥ तुम पद तर निज शी प्राधर कर
विनय सुरगय ॥ सो जग पति पा जग त मे भव भव ले हु सहाया ॥ २ ॥ अर्ध ॥ सो रग ॥ तुम देवन के देव
राध रादि से वै चरन ॥ छिपो न के ई भेवा ॥ मम मन सा पूरी करो ॥ ३ ॥ इति ॥ ॥ अथ उत्त
दिश त्ती य दधि सुख पूजा ॥ अद्वि त्त्व द्वा नं दी श्वर व र्दी प आठ मों जा नियो ता की दिश गिर उत्तर अं
जन मा नियो ता के पश्चिम वापी मध्य विराज ही ॥ दधि सुख गिर जिन भवन मग ष्ष विष्ण ज
हो नं दी श्वर दी प उत्तर दिश त्ती य दधि सुख पर्वत पर सिद्ध कृत् जिन मं दिरे भ्यो नमः ॥ अंब ॥ अंब ॥
नमः ॥ पुष्प ॥ जिगी रासा ॥ चारों गतिके जी व जगत में जन्म मरण दुख पावै ॥ तिहि दुख दूर करण के ज

ले श्री जिन चरन चढावै नंदी श्वर उत्तर अंजन गिरा की पश्चिम सो हो ॥ दधि मुख गिर पश्य श्री जिन
 सुर सुर पति मन मोहो ॥ ॐ ह्रीं नंदी श्वर उत्तर दिश तृतीय दधि सुर पति गिर सिद्ध कहे भोज भोग ॥ जल ॥ च
 हस हस हे जीवन कै विधिवश मिलत नचायो ॥ तिहि दुख दूर कर एको जिन पति च
 नंदी बभ ॥ ॐ ह्रीं चंदन ॥ सुर पति नयति खंग पति च की सव पद अथि रक्तायो ॥ अतः पद पाव
 जन भक्त तवल चढायो नंदी बभ ॥ ॐ ह्रीं अतः ॥ ब्रह्मा हरि हर शक्र चक्र पति जीते काम सवी नें पुष्प च
 य जिन श्वर आगे भव्य मदन शर जीते नंदी बभ ॥ ॐ ह्रीं पुष्प ॥ हानव देव मनुष्य विद्या धार श्वर सवी वश जाको
 ता दुख दोष सुधा हर भुके चरन जन तच रुला को नंदी बभ ॥ ॐ ह्रीं चंदन ॥ शंकर श्वर शशी हर
 जाल में आये ता अरि मोह महात मनाशन जिन पद दीप चढाये नंदी बभ ॥ ॐ ह्रीं दीप ॥ ज्ञान दर्श आव
 राम हा अरि दन के दहाहन का जै भविजन धूप दहन तै खै स मुख श्री महा राज जे नंदी बभ ॥ ॐ ह्रीं धूप ॥
 त राय दुख दाय जगत मै यास मट्ट जो नाली ॥ ताहि निवारण काज सुफल ले भविजन भेट कर
 नंदी बभ ॥ ॐ ह्रीं फल ॥ जल फल अर्घ्य चनाय मनोहर सुर पति भक्ति चढाके सुर पद सुफल
 सुर नायक जिन पद अर्घ्य चढाके नंदी बभ ॥ ॐ ह्रीं अर्घ्य ॥ जय मातु ॥ देह ॥ सुरा पशु नारक विषे
 न धारै यह जीव ॥ देह रहित सिद्ध नि को ॥ तिन पदन मंस दीव ॥ पद ही छंद ॥ जय श्री पति श्री अ

॥ जगत्प्रखतचराचरवस्तुभेदः जगत्प्रचाराया तिया कर्मलानि जैकेवलज्ञानलयो महानः ॥ सर्ववस्तुसर्वद
 श्रीजिनेश जगत्प्रखतविस्तुतुम्ही मरुशः ॥ नि समवशरण के मध्य सारा चतुराननराजै निगारा ॥ ॥ जै स
 तत्वषट्द्रव्य सारा ॥ सववर्णन की नौ सवप्रकार ॥ तलौ जीवदेह के भेद माहि ॥ तनभेद कह्यो मै कहुं
 हि ॥ ॥ ॥ औदारिक वैक्रिय देह धारा ॥ आहार कै तै जस कर्म धारा ॥ मह पांच प्रकार शरीर ज्ञान नर
 पशु कौ ॥ औदारिक प्रमाण ॥ वैक्रियिक देह ना एक शरीर ॥ प्रव ॥ आहार क विधिसु नौ वीर ॥ मुनि दशम
 रसै प्रगट होय ॥ आहार शरीर कह्यो जु सोय ॥ आगम प्रमाण मय ॥ अर्थ को या कहा मुनि के संदेह
 या ॥ ॥ सित फटिक वरण ॥ इकरु स्तमो नालि चतुर्गम्य न हि धातु जानि ॥ केवल निकट आप फि
 अप्य सुगुरु तन मै समाया ॥ केवल जिनि को हेत न ॥ अनूप सो परम उदारिक दिव्य रूप ॥ न हिरदै
 तुंड पधातु कोया ॥ दधि फटिक समान शरीर होय ॥ ॥ जै तै जस दोय प्रकार ज्ञान ॥ सुम ॥ अमु भ भेद सु
 न ॥ कामी ए वर्गणाबंध रूप ॥ कामी ए देह का पोत स्व रूप ॥ ॥ तै जस कामी ए अनादिसंग इक
 मय होय जिनि चार अंग ॥ जगत्प्रखत विग्रह गति विन सर्व काल ॥ तन ती नतया चारौ विशाल ॥ ॥ इक वि
 हगति मै दोय देह ॥ तै जस कामी ए कही मुगे स्त ॥ जै वै क्रियिक आहार ॥ एकवताया ॥ मह पंच वै द्रिय के तो
 काया ॥ ॥ औदारिक ॥ एकें द्रिय लगाया ॥ पंच वै द्रिय त क जानू सुभाया ॥ इत्यादि अनेक शरीर भेद वर्ण

की नों जिनवर अखे ॥ १ ॥ सो जगदीश्वर मम उर मकार ॥ एक खारवार संसार पा राख ॥ अजर जिनेश्व
 देव सारा ॥ सुनिलेहु जिनेश्वर की मुकारा ॥ २ ॥ दोहा ॥ जगता री जगदीश जिना जेवं तो नय काला जे
 दमी ममदी जियो अपरि समूह मै हाला ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ सो रहा ॥ सुनौ स्वपरहित कारण बचवा दी प्रतिवं
 सम ॥ बचन सुधा उनहार मम उर वास करो प्रभू ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ अथ उत्तर दि

बधी न तु र्धदधि मुख पूजा माह ॥ चालजे गी रासा ॥ नंदीश्वर वर दी पदिशा उत्तर कही ॥ चौथे दधि
 खगिर पर जिन गहमणि मई ॥ सकल सुरा सुर आय भक्ति मन लाय कै ॥ पूजत जिन वर चरण
 ईशिर नाय कै ॥ १ ॥ उई ही नंदीश्वर दी पउत्तर दिश चतुर्थ दधि मुख जिना लये भ्यो नमः ॥ अन्न न अन्न
 प्रन्न ॥ पुष्प ॥ गी वा अन्न ॥ सुर नदी को जल ॥ अन्नूप म मिष्ट शीत ली जिये ॥ भवत्पा दोष निकं दकार न
 र जिन पद ही जिये ॥ वर दी पनंदीश्वर मनोहर ता स उत्तर सज होइ दधि मुख चतुर्थ महान ता यर
 न भवन सुरज जत हो ॥ २ ॥ उई ही नंदीश्वर दी पउत्तर दिश चतुर्थ दधि मुख जिना लये भ्यो नमः ॥ जल
 सीर ॥ और क पूर केशर गंध द्रव्य सुहावनी ॥ भवता पनाशन हेत भवि जिन राज चरण चढावनी
 र ॥ ३ ॥ उई ही चंदन ॥ सुख दास और क मोद तंदुला खेत वर्ण सुहावने ॥ जिन राज चरण ॥ अगार भविजन
 जधार तपावने ॥ वर ॥ ३ ॥ उई ही अन्न तं ॥ मदार सुरा पा ॥ स्त्रिावन मेरु कुसुम समूह ॥ जिन राज अग्र च

ढायभविजनमीनकेतमसादलै॥वर॥ॐ॥पुण्य॥मनमोदकारनमोदकादिकविविधनेवज
जही॥जिनपदचढावतभयजनकेसुधादुखसबभाजही॥वर॥ॐ॥उद्दिनेवेव॥दुतिवंतरत्नअ
मलेकरदेवनंदीश्वरविक्रै॥जिनराजचरणचढायदीपकलहतनिजसंपतिअवैवर॥ॐ॥उद्दि
दीयं॥घनसारकृष्णगरसुगधितद्रव्यउत्तमलाईये॥वसुविधिरुवनजिन्नचरनअगै॥भक्तिसहि
ईयेवर॥ॐ॥उद्दिधूय॥फकललितमिष्टमहत्तमनहरकनकयालभरायकौचरसुकिफलभ
जनलहेजिनराजचरनचढायकैश्वर॥ॐ॥फल॥जलगंधअत्ततपुष्पचरुवरदीपधूपफला
ली॥महअर्घलायचढायजिनपदसुखलहेविवुधावलीवर॥ॐ॥उद्दिअर्घ॥जयमाला॥दोहा॥दश
विधिधर्मसम्हारिकिदशविधिवंधविदागभसेजायशिवमहलमेंसोप्रभुहमकौतारा॥पड्डीबृह
जयश्रीसर्वज्ञमहंतदेवभयचतुरनिकाईकरतसेवा॥जिनससतत्वकीभैप्रकाश॥दशगोशिवपद
खासा॥ससारतत्वमेवंधभेदादशगोश्रीजिनवहुअखेद॥जहांवंधचारपरकारजाना॥यिति
तिप्रदेशनुभागमानि॥अहाप्रहतिकर्मकोनामजाना॥यो॥ज्ञानावरणादिकपिछाना॥पुन्रलगि
जानौप्रदेश॥यहूदोयवंधहेजोगलेश॥जवतकविधिसंगरहेजुसोय॥यितिवंधतासकोनामहाय
जैसेसुखदुखमैफलविशाला॥अनुभागवंधवहकह्योहाला॥चारोकैचउचउभेदमानि॥उल्लसअ

शीपिष्ठान॥ अवधन्यजघन्यचतुर्थभेद॥ इमसोलहभेदगिनौ॥ अवेदाप्रयहसोलहभीचउचउप्रमा
 ए॥ सादिअनादिध्रुवअध्रुवजानि॥ इतसर्वकैगुणलक्षणमहानगोमहसारतैलेहुजान॥ अधप्रवबंध
 तत्वफिरदशप्रकार॥ तिनकोवर्णनजानौ॥ अपारासंक्षेपनामकछुकहुंसोयशुरुपरमदिगंवरकक्षोजो
 या॥ अजयबंधउदयअरुउदीरणाया॥ अरुसताउत्कर्षणकहाया॥ अपकर्षणसंजमउपशमेयसतवनि
 धितहोछेमहिनासुनेया॥ अविधिजीवमिलेवल्वबंधजानिताकोफलउदयकियोपुरान॥ विनकालउ
 दय॥ आर्कैनुसोय॥ उदीरनजानैभव्यलोया॥ विधिद्वयरहसोसत्वसार॥ उत्कर्षणतिथिवदनीविचार॥ थि
 तिवदनेकोअपकर्षनाम॥ जोअणिकभीनर्कायुधाम॥ पररूपसंक्रमणनानसार॥ उपशमजिनकालउ
 दयप्रचार॥ संक्रमउदयाविननिधितजान॥ चउविननिकाछितबंधमान॥ ए॥ संक्रमणविनानवकरणध
 रा॥ अर्क॥ आयुर्कर्मकेहोयसार॥ वाकीसातोंविधिकेममारा॥ दशकरणहोययहउदयसार॥ ए॥ इतअदि
 अनेकविधानजान॥ सवबंधभेदवरनौपुरान॥ सोदेवजिनेश्वरजगममारा॥ इ॥ इतअदि
 श॥ दोहा॥ दशविधिबंधविदारिकैचसेमुक्तिमेंजायसो॥ सिद्धेशहमेशमम॥ हूजीशरन्सहाय॥ अ
 र्ध॥ दोहा॥ कर्मपरिहाराधारिस्वगुणममउरविषे॥ हेप्रभुजगतेतारा॥ सुमस्वामीत्रैलोक्यके॥ ए॥ इति
 ॥

॥ अथनदीधरदीपउत्तरदिशमध्यगरतिकरपर्वतदूजभावा॥ गीताधर॥ शुभदीपनदीश्वरमनो

जैवंतरहोकीरतिअपार॥

करो

हरतासउत्तरमेंसही।प्रतिस्यामंजननामपर्वतखासधूरवदिशकही॥जलसहितवापीजासपहिली
 मेरतिकरकहा।तापरजिनेश्वरभवतजिसकोंसुरअसुरधूजैमहा॥उँहीनंदीधूरदीपप्रथमरतिकर
 जिनेंद्रभ्योनमः॥अत्रबाध्यत्रबाधुष्यादोहा॥जलउत्तमभंगाभरिकरउज्जलनिजभाव।जोभवि
 नवरपदजै।सोनिजरूपलखावा।नंदीधूरउत्तरदिशा॥पहिलेरतिकरएवा।तापरजिनरहजतसेसु
 पतिवसुमेका॥उँहीनंदीधूरदीपउत्तरदिशाप्रथमरतिकरजिनाखयेभ्योनमः॥जल॥एचंदनचंदमरी
 समसीतलगुणकरता॥जिनवरपदभविपूजिकै।सावतहेभवपासा।नंदी॥उँहीचंदन॥हीरनीरनी
 जशशी।तासमअक्षतखेता।मुंजदेयजिनअग्रभवि।प्रजरअमरपद॥ता।नंदी॥बाधा।उँहीअक्षत॥दृगमन
 कौंकरो।मोहितसुमनअनूपा॥जिनवरचरनचढायभवि।होतब्रह्मपदभूषा।नंदी॥बाधा।उँहीयुष्य॥नेमज
 धप्रकारकोकमधालभराया।हुधादोषनिरवारहो।भविजिनचलचढाया।नंदी॥बाधा।उँहीचक्र॥तमहरजो
 जगायकोहर्षहृदयमैधारा।सुरसुरयतिजिनचलकोंपूजतखहितविचार।नंदी॥बाधा।उँहीदीप॥दशवि
 मिलायकोधूपवनावैलेया।क्रमदहनकेकारो।मूर्जोश्रीजिनदेवानंदी॥उँहीधूप॥उत्तमफलसुचि
 मूर्जोश्रीजिनराया।भक्तिभावउरमैधरो।मावो।निजपदराजमंदी॥बाधा।उँहीफल॥जलफलद्रव्यमि
 यको।प्रवर्धवनावो।एवा।शिवसंपतिकेलाभकोमूर्जोश्रीजिनदेवानंदी॥बाधा।उँहीअर्घी।जयमाल॥अडिला

सकलसुगसुरभूजितजिनवरचरनको॥रुषिसुनिनितप्रतिध्यानेभवदधितलनको॥चक्रपतीमहारज
जजेअघलनको॥जिनकोमेंनितजजौसुमंगलकरनको॥॥सुलगमयातछ्द॥जयोदेवदेवेइदुमचरन
ध्यावेजयोदेवनागेइनितशीशनावे॥जयोदेवइंद्रादिसेवकरहावै॥जयोदेवतारेइद्रुजारचावै॥जयोदे
वनागेइचक्कीरवगेशा॥जयोदेवतुमचरणपूजेमहेशा॥जयोदेवतुमचरणपूजेमगेइ॥जयोदेवतुमशरणअवे
सुगेइ॥जयोदेवजगमेंतुम्हीसुकलकारी॥जयोदेवतुमहीसुधर्माधिकारी॥जयोदेवतुमसर्वआनंदकर्ता
जयोदेवतुमहीमहामोहहर्ता॥जयोदेवतुमएकविद्रूपधारी॥जयोदेवदृगज्ञानगुणेश्यभारी॥जयोदे
वत्रयलकेआपस्वामी॥जयोदेवतुमनंतगुणचारयामी॥४॥जयोदेवतुमपंचकल्याणइशा॥जयोदेव
बटुखंडचक्कीमहीशा॥जयोदेवतुमसतत्वप्रकाशी॥जयोदेवतुमअष्टमीहितिनिवासी॥जयोदेवतु
महीवसुकर्मनाशी॥जयोदेवतुमअष्टरूढिप्रकाशी॥जयोदेवनवलद्विकेआपस्वामी॥जयोदेवदशधर्म
धारेअप्रकामी॥५॥जयोदेवमहिमातुमारीअनंतामहीचारज्ञानीलहेनहीतासअंता॥जयोदेवजगमेंदु
म्हीहोसहाईप्रभूसत्यमेंनेयहीजानियाई॥६॥अनेकोसतीकातुमसतवचाया॥अनेकांदुखीकोंदिया
चित्तचाया॥अनेकोअधमजीवतुमनेउवाएकरेकोनशंकागणीआपहारेअप्रभूसमेंतुमारेचणकोसुचरे
महामोहनेकर्मचिरकालधेरे॥सुदृढचित्तहमनेलखोशनतिरे॥तुम्हीदेवन्यायीकरौन्यावमेगो॥अममेने

कछूकाजविधिकोविगारो॥नमैनेँकधूरजइनकोविगारो॥विनाकाजमोकौदियेदुःखभारी॥रूपासिंधु
मेरीसुनोयहपुकारी॥६०॥जिसेंजासकोदोषसोताहिदीजे॥तुम्हीन्यायस्वामीतुम्हीन्यायकीजे॥इमेतो
प्रभू॥एकआसानुम्हारी॥सुनोदेवयहएकअर्जहमारी॥६१॥दोहा॥निधियतिनिजनिधिदीजिगालीजे
विरदनिवाह॥आसजिनेश्वरकोभरो॥तुमहोविभुवनराया॥६२॥अर्थ॥सोखा॥करोरूपाजिनराज॥आ
जकाजयहकीजियोदीजेमुक्तिसमाज॥आयेकोयशलीजियो॥६३॥इत्यादीवर्षदा॥६४॥अर्थ॥नंदीसुर
क्षीपउत्तरदिशा॥छितीयरतिकरजिनपूजा॥माह॥जोगीराया॥नंदीश्वरवरक्षीय॥आठमोंताकीउत्तरजानों
अंजनगिरताकीपूर्वदिशवापीकोंनमैमानों॥तामेंदुर्जोरतिकरपर्वततापरजिनगृहमानों॥सकलसु
रासुरताहिजजतहेनक्तिमांवाधिकानों॥६५॥इंद्रीनंदीश्वरक्षीपउत्तरदिशा॥छितीयरतिकरपर्वततैयोन
मः॥अन्न॥अन्न॥अन्न॥सोरा॥उजलनीरअनूपकंचनमारीमैभरो॥पूजैश्रीजिनभूपजन्म
जगदुखकोंहरो॥नंदीश्वरजिनधामभरअंजनपूर्वदिशा॥हजोरतिकरनामासुरसुरेशपूजैसदा॥६६॥
इंद्रीनंदीश्वरउत्तरपूर्वदिशा॥छितीयरतिकरजिनालयेभोनमः॥जल॥६७॥वावनचंदनसारा॥केशरांघमि
लायको॥जजिनपदहितकारुण्यविनाशीपरपाई॥मंदीव॥इंद्रीचंदन॥स्वत्तसुगंधितस्वताम्र
स्तकंचनयालभरिपूजों॥जिननिजेताभविजनअक्षयपदमिलै॥मदी॥६८॥इंद्रीअक्षय॥सुवरनवर

[illegible]

अशरनशरनांगुल निराधारैर्नैलोक्यशिखरके अंतमाहितलवातवलयमैशिररहा हि ॥ अजैसम्प
कृदर्शनज्ञानसारवलीरजसुक्त्वग्रनंतधारैर्जैनममरणकारिरहितदेवजैसर्वगुणाकरसहित
देवाद्यजैकायविवर्जितनिष्कषायजैक्रोधमानविनलोभमायनिर्विषयसर्वज्ञायकमहेश्वरुषि
मुनिजमध्यानधरैर्हमेश्वरभुमचरणकमलकौंशीशनायसुरअसुरध्यानधारैवनायाजैनरपति
खगपतिनागईश्वरपदभक्तिकरतनितनायशीश्वरजैजैत्रिकालत्रैलोक्यमाहिजोवसुचराचरलवे
तासिप्रभुपूरावस्यसूरूपदेवाहमशीशनायनितकरतसेवाहेसर्वशिंगेमणि सिद्धदेवसुमतकनहि
पहुंचे शब्दभेवातदिभक्तिभावफलदायसोयभवभवकेमाहिसहायहोयारवायैमैअर्जकंरूपका
शहिरुयासिंधुसंसारतारह्रमअर्जजिनेश्वरकरैदेवजैशिवफलदेकरसुयशलेव ॥ दोहा ॥ नदीश्च
रउत्तरदिशाजिनगरहरतिकंरमालभनवकायलगायकैश्वरनीयरुजयमाला ॥ २ ॥ अर्ध ॥ साखा ॥ म
चकायलगायासंदौसिद्धमहेशकौंजिनपदहरदेध्यायावाहेसिद्धशिवथानको ॥ ३ ॥ इति ॥ ४६ ॥
अथनदीश्वरदीपउत्तरदिशत्तरीयरतिकरपूजामाह ॥ गीताछंद ॥ वरदीपअष्टमदिशाउत्तरस्ति
रतिकरराजनीतिहिशीशजिनवरभवनसोस्तेवदुरतनमयच्छाजहीजिनगजविंवअकृत्यसोहैको
विशशिलाजहीछकवरसमैत्रयवारसुरप्रवितहंपूजराचवहं ॥ १ ॥ उद्गीर्णनदीश्वरदीपउत्तरदिशा

ततो यरतिकरेभ्यो नमः॥ अन्नं अन्नं अन्नं॥ सुनिराजमनसमनीरनिर्मलरतनभंगम
राईए॥ जिनराजचरणसरोज आगे भविकनीरचटाईए॥ वरदीप अष्टमंडं दिशमैं तत्तिरतिकरागिरक
ह्यो॥ तापरजिनेश्वर भवनसुपतिजजतु भविजन शिरदह्यो॥ ऐं ह्रीं नंदी अरदी पञ्चनर दिशत तत्तिरपति
करजिनानुभेभ्यो नमः॥ जल॥ गोशीरपावगंधपावनमरु कदशा दिशमैं भरी॥ जिनराजयदतराधारदेक
रउसता विधिरुतहरी वरकर॥ ऐं ह्रीं चंदन॥ अतिसलशितसुचिसार अक्षतवालयभरकलीजिये॥ जिन
राजचरणचटापु भविजन अखयपदकौंली जिये वरबा॥ ऐं ह्रीं अक्षत॥ वंदुवरनसुवरनगधप्रित्तकुसुम
वरकरलेयको भविअतनशरकी विपतिनाशे पुंज जिनप्रदेयको वरबा॥ ऐं ह्रीं पुष्प॥ पकवानना
विधिवनाकरकनकचालसजाईये॥ जिनराजचरणचटापु भविजन चुधारेगनशई एवरबा॥ ऐं ह्रीं चक्र
वरदीप जोतिप्रकाशतमहरतनसुवरनकेकरो॥ भविजीवभ्रमतमहानकारण॥ जिनचरण आगे धरो
रबा॥ ऐं ह्रीं दीप॥ दशांगधप्रसारितदशा दिशमैं धूपउत्तमलीजिये॥ जिनराजचरणचटापु भविजन विघ
नकर्मदह्यो जिये वरबा॥ ऐं ह्रीं धूप॥ श्रीफलसुपारी लोंग पिस्ता दाखवारिकलीजिये॥ भविजन महाफ
लमुक्तिकारतभेट जिनवरकी जिये वरबा॥ ऐं ह्रीं फल॥ जल आदिफलपर्यंत वसुविधिद्रव्य अर्घवनई
ये वसुकर्मनाशक शिवनिवाशिकदेवचरणचटाई एवरबा॥ ऐं ह्रीं अर्घ्य॥ जयमाला देहो॥ श्री अग्रहंतजि

वौवनपू.
॥६८॥

नेशकोभरननशीशनवाय॥जिनजयमालावरनहैहूजोशस्नसहाय॥यहूडोखद॥जेवीतराग
ज्ञानईशाजेनिजलह्मीनिधिदानईशाजेप्रनुपमंउजलध्यानईशाजेतुमजगमाहिमहानईशावि
कोधलोभप्ररिलयोमाराविनमानप्रजाचिकवृत्तिधाराविनमायामायासर्वदाराविनलोभगही
मतिप्रपाराविननेषदुष्टकोदुखप्रपाराविनरागसंतजनदियेनारसहृतिअलौकिकदेखिदेवापुर
सुरकैरेतुमचरणसेवाअजयनिजसंपत्तिनस्तिकरेंदानअजयपरसंपतिकेनहीध्यानअंतोभीसबकौ
वसमाअजेदेहुधन्यदानारराज॥अजेजाचकतुमद्वारआयामहिलेयकष्टइच्छापलायज
तुम्हीदातारदेकाशिरनायजिनेश्वरकरतसेवा॥अजेजाचकआवेतुमप्रगारासंवयुगफलमार्गे
गातारासवइच्छतफलपावैप्रनूपाधनिनुमलह्मीअक्षयस्वरूपाद्येइंद्रजाचनाकरैसोयमु
रुषिभीजाचकरूपहोयासुमचरणकमलकीभक्तिसाराभागोअद्भुतमहिमाअपाराअजयवाहिजल
अतिअघायाजोअंतरागकोकरैसायाजैनोमिलेतरसनापवित्रासुरध्यावतैहेप्रभुएककिता
शरनशरनसहायदेवसुमविनकालसुखदयदेवसुमभक्सागंखेंपारदेवाहमकरतसदतुमचरनसे
अजेजवतकमेरेजगतवासजेजवतकदैवैकर्मनावाजेजवतकतुमप्रदकमलआसामहदय
आयवासा॥६८॥भवनाशनभगवानेकेचरणनशीशनवायाअरजकरतहैएकमेभभवभवहोहु

या ॥ १ ॥ अर्घ्य ॥ सोरठा ॥ तारण ॥ तं रण ॥ जिनेश ॥ अरु ॥ अजी ॥ सुनिनी ॥ जिने ॥ का दो सर्व कलेश ॥ मम इच्छा पूरी
 करो ॥ २ ॥ इति ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ अथ नंदीश्वर दीप उत्तर दिश चतुर्थ रतिकर जिना लये भ्यानमः पूजा माह
 चोपाई ॥ नंदीश्वर उत्तर दिश जानै ॥ चोथो रतिकर जिन रहमानौ ॥ सुरपति मित प्रति पूजा चो वै ॥ जिन पर को हस
 पुष्प चढावौ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ नंदीश्वर दीप उत्तर दिश चतुर्थ रतिकर जिना लये भ्यानमः ॥ अंगना ॥ अंगना ॥ पुष्प ॥
 यम द्रुज लुज ललाये ॥ सुरपति जिन पद अग्र चढाये ॥ भक्ति सहित प्रभु के गुण गावै ॥ जन्म मरण दु
 ख मूल नश को नंदीश्वर उत्तर दिश जानौ ॥ चौथो रतिकर गोरत हा मानौ ॥ ता पर जिन मादिर सुख दाई
 पूजत सुर नेन हर प्राई ॥ ॥ ॥ ॥ नंदीश्वर दीप उत्तर दिश चतुर्थ रतिकर जिना लये भ्यानमः ॥ अंगना ॥ अंगना ॥ मलियाग
 र चंदन घासिली ॥ जामा धिके शरण धारी ॥ जै शक्ति सहित ॥ जिन वर पद पूजा ॥ भव आवा परहित भविहू
 नंदी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ चंदन ॥ ॥ अस्त त कचन थाल भरावौ ॥ जिन वर चरण मपुंज चढावौ ॥ मोद सहित जिन के गुण
 गावौ ॥ छल विधि ॥ अस्त य पद को पावो नंदी ॥ बड़ा ॥ बड़ी ॥ अस्त ॥ दश दिश गंधरही मरु काय ॥ असे फल सुगंधि
 त लाय ॥ मकर ध्वज भजन के काज ॥ भव्य जीव पूजे जिन रजसंदी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ फेनी गो ॥ जामोद कवा
 जै ॥ शुद्ध सरस वन वावत ताजे ॥ दोष क्षुधा निरवार मका जै ॥ वरन जजत भवि श्री जिन राजे नंदी ॥ बड़ा ॥ बड़ी ॥
 इत मदी पवन करली ॥ जिन पद को भवि पूजन की ॥ जियातै मोह महत भगौ ॥ ज्ञान प्रकाश ॥ अनापम जोग

बौवनम्
॥ ६८ ॥

दीर्घद॥ उँहीदीयं॥ गंधअनूपदशोदिशसोहोभविजीवनकेमनकोमोहोअसाधूपधनंजयखे
दीन॥ उँहीधूपं॥ श्रीफललौंगविदामघुहारे॥ नारियेलपिस्ताअधिकारे॥ श्रीजिनवरकेभेट
॥ भयजीवशिंवफलकौमावै॥ नंदी॥ उँहीफल॥ जलफलअर्घवनायचढावो॥ जिनयदम
केहदेंमैंलावै॥ सोनिअैनिजपुएयवढावै॥ कंमकमसोंशिवमंदिरजाकै॥ नंदी॥ ॥ अर्घ्य॥ जयमार
हा॥ श्रीजिनचरणप्रणामकराधरिसिद्धनकोध्यान॥ जयमालावर्णनकंस्सजिनआज्ञापर
॥ १॥ छंद॥ जयदीनबंधुकुरुणा॥ निधानजयअशरनशरनसहायमान॥ जयभक्तलकारनतर
वाभयजयकसुरपतिकरतसेका॥ जयप्रथमदिगंवरधर्मधार॥ जयजीतेदजेघातिचार॥ जय
यधर्मउपदेशदेन॥ जयजयविधिश्मभनेय॥ जयपरपदार्थसवत्यागदीन॥ जयआत्मस्वार्थ
रितमनकीन॥ जयपुरुषारथकरिसिद्धचार॥ जयजयजयत्रयविधिश्मउचार॥ जय
प्रथमधार॥ जयफिरलीनों॥ चारित्रसार॥ जयप्रगंदेकेवलज्ञानभान॥ जयअन्यविधिश्ममहान॥ ॥

किजीवसुखलहैसार॥ जयदुष्टअविनयीदुखपसार॥ जयपरमवीतरागी॥ अनूपजयश्म
यजगतभूपा॥ जयनामजपेसोसुखलहंत॥ जयध्यानधरेसो॥ दिववसंत॥ जयनिस्यहीनिर्वाण
यश्मनत्रयविधिमहान॥ जयऊँमध्यपातालवास॥ जयतुमचरणवुजजपेखासा॥ जैलोक्य

॥ ६९ ॥

तुमहीजिनेश॥ ह्रमजयजयजयत्रयवारवेश॥ ७ ॥ जयतिहुं कालमें एक रूप जयशुद्धनयार्मितवचसरूप
जयउत्पन्नजयउत्पातव्ययधौ व्यरूप असेभी जयजयत्रय अतृपा ॥ ८ ॥ जयतुमजिनेश निमेलमहान
जोसमलरहेसो कूरजानो जोहगरोगी लखिशंखलेत पीतादिकहे सोनर अचेत ॥ ९ ॥ मभुतुमशरीर
ज्योतिपाय प्राकार त्वमय भयो आया प्रभुतुमस्वभाव अतिस्वत्तजान प्राकार भयो स्फाटिक समा
न ॥ १० ॥ जय २ तुम महिमा अंगमसार गुणपति नहि पावै कहत पार ॥ जयतुम प्रभावसेमान भूजगमा
नरुहै प्रभुत अचंभा ॥ ११ ॥ जयजयजिन एजदया निधान करदया जिनेश एये महान संसार खरतें करो पार
जगबंधवयेसु नियेयुका ॥ १२ ॥ दोहा ॥ दयाधुरंधर देवतुम गुणसागर भरपूर ॥ करो जिनेश्वर पै छपा हिर
देव सो हजूर ॥ १३ ॥ अर्ध ॥ दोहा ॥ याजग विपत मगर विन हित बंधवतुम मुने मेरी सुनो पुकार तारतार
जीकरूं ॥ १४ ॥ इति ॥ ॥ अर्ध ॥ नंदी श्वर दीप उत्तर दिश पंचमरति कर पूजा माह ॥
भीता छह ॥ वदीप अष्टमंडल दिश में यों चमोरति कर कहे ॥ तापर अकृति मश्री जिनालय सुर अमुर दर्श
न लख्यो तहौ विवजिन वर के अक्षुपम सुरा सुरमन मोहिया ॥ इंदेव सम सर्वज्ञ जिन कौल मय छवि सोहि
या ॥ १५ ॥ इंद्रे नंदी श्वर दीप उत्तर दिश में पंचमरति कर जिनालय यो नमः ॥ अर्ध ॥ अर्ध ॥ पुष्प ॥ जोनी
रासा ॥ अंतरा हर है जग प्राणी गति गति में दुख पावै ॥ ता दुख दूकाए कौं कर एणु जल जिन चरण चढावै

नंदीध्वरकीउत्तरदिशमेंपंचमरतिकरसोहेतापरश्रीजिनभवनअकृत्तिमसकलसुरासुरमोक्षो॥
 नंदीध्वरदीपउत्तरदिशपंचमरतिकरजिनालयेयोगम॥जल॥॥जन्ममरणदुखतापतपैतनभवनमेंदु
 केशांतमुधासुखपावनभविजनचंदनचलनचढावै नंदीगर॥उद्दीध्वर॥तनतनधरतभरतविपताअतिज
 गमैयितरहावो॥अस्यपदकेकाजचतुरनभस्ततचरनचढावोनंदीभ॥उद्दीध्वर॥अस्तंत॥नरनारी
 डवेदकेखेदसहेकहुतेरोभादुखहरनचलजिनपतिकेपुष्पचढावतनेयेसंदीध्वर॥उद्दीध्वर॥जगतजीवकुल
 सलजावतएकलुधाकेप्रेरोताअजीतनउत्तमचरुलैपूजतजिनपदतेरोनंदीभ॥उद्दीध्वर॥ज्ञानप्र
 काशविनाजगमाहीजीवसंसादुखभारी॥ताकीप्रापतिकजजिनेश्वरपदतरदीपकधारै नंदीध्वर॥उद्दीध्वर
 प॥याविधिवसनरपतिपशुहोवैथावरमैसुर॥कैसाविधिरहनशूपायनश्रीजिनचरनचढावैसंदीध्वर॥उद्दीध्वर
 नंदीक॥सर्वोत्तमअविनाशीसुखकरमुक्तिमहाफलजानै॥ताकेकाजभव्यजिनवरकेपदतरसुफलच
 नराईसंदी॥६॥उद्दीध्वर॥जलफलआठौद्रयमिलाकरअर्घवनावोभाईअष्टकर्मकेनाशनकारनपूजेंश्रीजि
 निजमस्तकधैरिणी॥पद्मीध्वर॥जयजयजिनरणदयानिधानभवकांननहाननद्वमहान॥ज
 यकमलगणअमलभानमयसंतचकोलचंद्रजान॥अयदुखदवागिर्कोमेघरूपात्रयखियतिमेघ

कौपवनरूपं जय अघपर्वतकौवज्ज्वाला जय भ्रमतमकौरविकिरणसारं जय कामसर्पकौंगरुडरूपा जय
 क्रोधजहरकौ अमृतकृपा जय मानमहागजकौ स्रगेन्द्र जय चरणकमलपूजे सुरेंद्र जय मायातरवरकौ
 कुण्डलजय लोभजहरकौ सुधाधारं जय मिथ्यामदगदमेघराज जय भवजलतारनकौ जहाज ॥ जय भ
 विजनकौ सुरतरु समान जय चिंतामणि तुमही पुमान जय कालचक्रकौ कालरूपा जय देवनकौ शिरे देव
 मूपा ॥ जय चारद्या तिया कर्मनाशि जय केवलज्ञान भयो प्रकाश जय भविजीवन हितकाज सारं जय
 आरजमें कीनों विहाय जय दियो धर्म उपदेश देवा जय मुनि आवक दो भाँति भेवा जय सकल रती मुनि
 राजधर्म जय देशव्रती हे गृही पर्म अजय परिग्रह त्यागी नगन काय जय निस्त्रही गुरु कहें भायव सुवी
 समूल गुणधार सोय जय धर्म गुरु जानौ सुलोया जय गृही धर्म गयार ह्मकारं समक सुविनास व विफ
 ल सार जय समकित दरजा प्रथम जाना हस विना कियें सब व्यर्थ माना ॥ इत्यादि बहुत उपदेश देय शिव
 धाम विषैं प्रभुवास लेया प्रसन्न य अनंत थिर है सार सो सिद्ध करो भव सिंधु पार ॥ जय वत कजग मै मम रहे
 सा जय वत क अप्रिकर्म करै प्रकाश जय वत क तुम हो सुसहाय देवा क्रजोरि जिने प्रकरत सेव ॥ दोहा जय व
 क रविशशिगगन में मेरु रहे भूमाहि तव त कवतौ धर्म जिन जय वंतो जग माहि ॥ रई दी अर्थ ॥ सार सा देह
 बिरुस मजानि नेह तजो यातै सुधी ॥ हित अपनौ पहिवान सेवौ जिन वर धर्म कौ ॥ ३ ॥ इत्या श्री वादा प्रति ॥

नंदीश्वरहीपउतरदिशषष्टमरतिकरपूजामाह॥ चालजोगीरसा॥ नंदीश्वरकीउतरदिशमें
 रसोहीतापरश्रीजिनभवनअरुचिमसुरसुरपविमनमोहे॥ भावभक्तिकरिशक्तिहीनमेंसुमप
 ॥ याहीभक्तिभावसोंनिश्चैमनवांछितफलपाऊ॥ उँहीनंदीश्वरदीपमष्टमरतिकरजिनमें
 ॥ अन्ननाभननापुष्प॥ अद्याष्टक॥ दीनाछंद॥ चहुंगतिभ्रमतदुखवहुतपायो॥ कहेथिरनराईयो
 दुखदवागिसमूलकारण॥ जिनचरणललचाईयो॥ सुभदीपअष्टमइंदिरशमेंषष्टमौरतिकरजहो
 भवनसुरपतिनिमज्जेअतिहर्षउरधारैजहो॥ उँहीनंदीश्वरदीपमष्टमरतिकरजिनासुयेभ्योनमज
 ॥ जगमाहिबहुतशरीरधारैभवातापसह्योघनो॥ तिहिशमनकारनपरमचंदनजिनचरनपूजाभनो
 ॥ प॥ २॥ उँहीचंदन॥ तिहुकालविननिजरूपजानै॥ जगतमेंविपताभरी॥ तिहिभ्रमनिवारन
 तलायजिनपूजाकरी॥ सुभदीप॥ उँहीअनंत॥ मनकल्पनाकेजालमाहीफसवहुविधिदु
 चारुदारुविनाशकारनपुष्पपूजनजिनकह्योसुभदी॥ उँहीपुष्प॥ सुरअसुअलाह
 याकैवशपरेजिरुचुधानाशनहेतचरुलेजिनचरनआगेंधरेसुभदी॥ उँहीनैवेद्य॥ जिहतमविषै
 शिसूरभमेंजीवनिजनलखावही॥ तिहभ्रममहातमनाशकारनदीपपूजनलावही॥ सुभदी
 दीप॥ दशगंधमिश्रितधूपकीजैभयभक्तिवढायकै॥ वसुविधिजलावनहेतजिनपूजेसु

यके। शुभभाष। उँही धूँ। जग सुफल फलदायक। अतः मधमं जिनवरं को कह्यो। तसु मायिकारण
 भव्य उतम सुफल जिनवर पदज्यौ। शुभभाष। उँही कल। जलगंध। अतः तसु व्यचरुवर दीपधूपवना
 ई। फललाय। अर्धवनाय जिनवर चरन माहि चढाई। शुभभाष। उँही अर्ध। जयमाल। बल। तिसु
 जग चंर जिनेश केच। ननशीशन वाय। ग। ऊं जिन माला सही सुनौ सुधी चित लाय। यछड़ी छर। र
 जगवीतराग सर्वज्ञ देव। शत इंद्र। आपका करत सेव। जयतु मसर्वज्ञ कहें पुरान। जिन के प्रगढ्यो के
 बल सुज्ञान। जय सकल वसुज्ञायक सस्रूप। जय लोकवर्तित्रय काल रूप। जय सव कौं जानै एक
 भाव। जय ज्ञान शक्ति। ऐसी अपार। जय सुख अनंत तत्तायक सस्रूप। जय तै सोही बल है। अनूपा।
 तव दर्श। अनंतानंत धार। जय जातिनंतरं जंत सार। जय स्तायक लब्धि। अनंत तस्पा। गुण। अक्षय धा
 रे निज। अनूप। जय निराहार तन जोतिवंत। जिह। प्रागै बहु रविशशिल जंत। जय प्रभा चक्र अतिज
 गमगात। भवि देव तभ बभवा तसात। जय तीन छत्र शिर पर सुहात। तिन की मुकटा मणिल जल
 जात। मनु तीन रूप धरिक। अनूपा। पद जजत नख तनु तनख तस्पा। जय चौस ठिचामर डरत सोय
 दुंदुभीश ब। अति मधुर होय। जय तरु अशोक सव हरें शोक। जिह देखत भागै पाप थोका। जय न
 भ सेवर से फल सार मनु अतनु भजो हथिया। लार। जय जिन धुनिवर से सुधाधार। भवि चातक वा

हृतैः अपाराजयधर्मनोऽपदेशसाराहितस्त्वसराभानंदकाख्यजयसिंहासनपैत्रं तरेक्ष्मत्तुराननयद्रा
सनप्रतप्तजिनवररविराजैः प्रतुलजोतिजिनकेप्रतापनिशिनाहिहोतकभक्त्यादिप्रतुललक्ष्मीनिवास
जिनराजविराजितसुरभिखासजयशतयोजनचउदिशमेंडाराप्रहिपडहिकालश्चिजअपाराख्यनहि
होयजीवबंधजिनप्रभावजयजातिविरोधीमित्रभाक्जयजयजिनराजदयानिधानभविजीवनकौहि
तकरमहानाख्यजयममउरमाहिबसोजिनेशजयज्ञानजोतिविकसोअशेषाजयभवभामरिनिखादेव
करजोरिजिनेश्वरकरतसेवा॥१॥ दोहा॥ अकृत्तिमजिनचेत्यगृहवन्दोमनवचकायबुधिवारिधिवर्द्धितकरोमे
रीकरोसहाय॥३॥ उद्गीर्णार्थं सोढा॥ करोहृपामहाराजनिजविद्यावलदीजियोषडगरीवनिवाजइतनोय
राप्रभुलीजियो॥४॥ इत्याशीर्वाद॥ ॥५॥ अथनंदीश्वरदीपउत्तरदिशसप्तमरत्तिकरपूजामाहाचालअडिल॥
नंदीश्वरदीपआठमोजानियेइंदुदिशामेंसप्तमरत्तिकरसानिये॥ आपरश्रीजिनभवनजैसुरआयकौहम
जिनकौशिरनायनमैनलयायकौ॥ उद्गीर्णंदीश्वरदीपसप्तमरत्तिकरजिनालयेभ्योनमः॥ अत्रअत्रअत्रअत्रअत्र
व्या॥ जोगीरासाल्लेमे॥ भविश्रीजिनवरकेपायसुकारनपूजतहेभाई॥ टेक॥ पद्मइहकोउज्जलजललेरत्नक
दोरीधारोभारदेतश्रीजिनवरआगेजन्मजगनिरवारोभंदीश्वरसंसमउत्तरगिरितिकरजिनगृहजनोषर्वसु
रासुरपूजराचोवेसफलदेवपरमानोसुगार॥ उद्गीर्णंदीश्वरदीपसप्तमरत्तिकरजिनालयेभ्योनमः॥ जलेशभावन

चंदनदाहनिकंदनकेशरसंगधसावैलक्ष्मरोगभवरोगनिवारनजिनपदप्रग्रचढावै सुबभंशे ॥ उद्दीचरं
तंदुलसुत्तसरलसितशुचिप्रतिकंचनयालभरायेप्रतयपदपावनजिनपदमेप्रततवरनचढावै सुबभंशे ॥
उद्दीअत्तं ॥ हेमरतनकरंगविंगेयुष्यसुरसुरलवैकामप्रगनिकेशमनकरनैकौ श्रीजिनवरनचढावै सुबभंशे ॥
उद्दीपुष्पं ॥ सूपकारकृतव्यजनताजे शुद्धयालभरावै सुधारोगदुखदूरकरनैकौ जिनवरनचढावै सुबभंशे ॥
उद्दीचरं ॥ नानाविधिकेदीपमनोहरशक्तिसमानवनावो ॥ प्रसतमहलकरनप्रतमहितश्रीजिनवरनचढावै
सुबभंशे ॥ उद्दीदीपं ॥ धूपसुगंधदेशैकै श्रीप्रलिसमूर्चलिवैकौ दुष्टकर्मजारनकेकारनश्रीजिनभयच
ढावै सुबभंशे ॥ उद्दीधूपं ॥ बहुविधमिष्टसिष्टफललेकर सुवरनयालभरावै मुक्तिमहाफलकाजशचीयतिनि
नपदप्रग्रचढावै सुबभंशे ॥ उद्दीफलं ॥ जलफलप्रधवनायगायणसुरसमूर्चलिवैकौ तीर्थेश्वरकेवलनश्री
गौरपतिप्रग्रचढावै सुबभंशे ॥ उद्दीअर्घ्यं ॥ जयमालादोहात्रै सठिप्रकृतिविपायकैपायोकेवलज्ञान
जिनपदचरनसरोजकीनमो सदहितदाना ॥ पछ्हीधूपं ॥ जयकेवलज्ञानधनीजिनेशजयचारणरूपिमुनिज
पतशेषजयनेसठिप्रकृतिदंष्ट्रिपायजयतिनके नामकहौ सुभाय ॥ जयज्ञानावरणीपंचभेसजवभेददशी
नावरणखेखवसुवीशमोहनीप्रकृतिचूषमाणप्रतरायकेकरेदूर ॥ अजयसोलहप्रकृतिप्रघातिहाविमायो
जिनराजमहानज्ञानशतदंडचरणकौंशी शनाथमुमकौ नवकारकरैजिनाय ॥ अजयभुवनपतीदशभेददेव

प्रतिभेदपुरंदरचारएव॥ इसभौतिभुवनचालीसइंद्रवत्तीसइसीविधिव्यंतरेंद्र॥ भौवीसकल्पवासीसु
 प्राशिसूरदोयहुतिवरमहेशचक्रीनरेशपशुसिंहजानशतइंद्रसीविधिभयमान॥ इक्ष्मसुरप
 विभवसार॥ भविजानौजिनआगमदुवारसवकीसेनाहेसातभौतिबहुभौतिविक्रियाधरेभ्रंति॥ घ
 राजपंचकल्याणसार॥ पूजनकौं आवैसुरअपा॥ लोकांतिकतपकल्याणएवा॥ पूजनकौं आवैयहीटे
 आग्रहमिंद्रघोडेनिजसुथान॥ जयअैसीवलुखभावजान॥ निजथलसैंविनयकरैसुरेश॥ अतिमंद

॥ जिनराजदियोउपदेशएव॥ हमकरतसदाजिनचरतसेवा॥ जयभवतारकतुमजिनेशा॥ जग
 हिंयापतुमहीअशेष॥ जयतुमपदरजममशिरसगा॥ अनिवारहोयहअरजसारसुनिखेहुजि
 श्वरदेवएव॥ कररूपायहीजगतारदेव॥ २०॥ दोहा॥ नंदीश्वरुत्तरदिशासमरतिकरभाला॥ जिनमंदिर
 ॥ मईपूरनयरुजयमाला॥ २१॥ अर्घ्य॥ सोरठा॥ दीनबंधुमहाएज॥ प्रजसुनौममदीनकी॥ तारनतरनजि
 नभवजलपासुतांरिये॥ इत्याशीर्वाद॥ २२॥

॥ अयंमंदीश्वरदीपिअसमरतिकरमाह॥ कुसुमलताहुं
 नंदीश्वरुत्तरअंजनगिरताकीउत्तरवापीजानादूजैकौंनआरमौरतिकरजिनमंदिरसोहेशिगथाना॥ चित्र
 चित्रालमयप्रतिमाइकशतआठशास्वतीजानसुरपुरपतिपूजननितआवैमैदिनकौं॥ धरि
 न॥ २३॥ नंदीश्वरदीपउत्तरदिशाअसमरनिंदरगिराएजिनमंदिरमेनमः॥ अन्न॥ अन्न॥ अन्न॥ पुथ्य॥

जोगीरासा॥ ज्ञानावरणीकर्मउदयसेंज्ञाननशक्तीपावैताअरिनाशकरनकोभविजनजिनपदनीरचढावे
नंदीश्वरउतररतिकरगिरअष्टमजिनगृहजानेसुखसुखपतिनितपूजराचोपावेसुखअधिकाने॥३॥
दीश्वरदीपअष्टमरतिकरगिरपरजिनमंदिरभ्यानमः॥जळ॥२॥ दूजो कर्मदर्शनाचणीदर्शनगुणकौरोकेजिन
वरपदपूजेचंदनसोंयातेविधिअसोखेमंदी॥३॥ उद्दीचंदन॥ तीजो कर्मवेदनीजगमोनिजकारजकोयाती
जजतजिनेश्वरपदअक्षतसोंयातेनिजनिधिपाती॥३॥ उद्दीअक्षत॥ मोहकर्मवलवानजगतमेंइंद्रादि
कवशकीनेफूलचढायजिनेश्वरागेंमोहकामकसिलीजिनंदी॥३॥ उद्दीचुण॥ आयुकर्मकोबंधनभा
रीजीवजगतकसिराखेनेवजसोंजिनपूजजगतजननिजअनुभोरसचाखेनंदी॥३॥ उद्दीनिवेद्य॥ नामकर्म
चशजोवजगतमेंनानादेहधैसोहीपक्सोंजिनपदपूजोभविजनअविचलकरैखेनंदी॥३॥ उद्दीदोष॥ गोत्रक
र्मकेउदयजीवयह्नुंचनीकुलपावैधूपदहनखेवतजिनआगेजिनपदकौभविपावेन॥३॥ उद्दीधूपा॥ अंत
रायदुखदायवडेजगमातेंभयहरिमनमोंश्रीजिनचरनचढायमहाफलभविपाविधिकोंमानेंन॥३॥ उद्दी
फल॥ जलफलद्रव्यमिलायमनोहराअर्घकरेभरथारीश्रीजिनसन्मुखपुंजकरतभविसर्ववियतिपरिहा
रीनंदी॥३॥ उद्दीनंदी॥ शरदीपअर्घीअयमाला॥ दोहा॥ अष्टमदीपमुहावनोहाकीउतरवोराअष्टमरतिकर
जिनभवनामोंसदाकरजोरायपदडीछंहा॥ जयनंदीश्वरहीपजानजयताकीउतररशिमलानअयअ

जनपर्वतस्यामरं गजयता कीउतर दिशः प्रभंगः ॥ प्रपरा जितवापी शोभमानः तिहृदितिय कोन कौमध्यमान
 यरतिकरपर्वत के मरुपः सा ऊपर जिन गरुह छवि अनूपा गजयशत योजन आया मजान लवे
 नाम च हृतर योजन है उतंगा वाचन जिन मं दिर इसी टंग छ मवस मवशर नरचना महान जिहृदेय तभ विजनपा
 न जय जय जिन विवे विराजमान शत आरु अधिक शोभा समान धाजय उच्च धनुष शत पंच रेखाम द्यासन
 राजैगत सनेह जय दी सिवंत अति रूपवंत जय वोलत हेमानू है संतभा जय जिन सरूप लखि देवराज अथ
 हार्षित उर पूजा समाज जिन शरी साय कहु भक्ति भाव जिन वर पद पूजै स हित चावा द्य अप्रति उज्जल जल
 मगार प्ररुगध स हित चंदन अपारा जिन चरन कमल तल धार देत भा नौ बौधै भव सिंधु सेत ॥ जय मुक्ता
 अक्षत अनूपा जिन पति पूजै सुरा भूपा जय कल्प वृत्त के फूल सारा जय शक्र धरै जिन पद अगार ॥ अजय
 बहु विधि स्वाद रूप सुपति जिन चरन जै अनूपा जय रतन अमोलिक दीप सारा आखंड लय जै जिना गारा
 जय स्वर्ग धूप अति गंध सारा प्रमरै राचढा वै जिन गारा जय उत्तम फल जिन पद मगार जय शक्र चढा वै हर्ष धारा
 करिणु तिनु तिहरि जिन वर अपगार सुदुंदित चढा वै अर्घ धारा जय करुना निधि जिन देव देव ह मशर नागत
 ये सुखार शिवेश महित तुम हे जिन आया भव भव मो कूहू जै सलया करु पाय ही जगवार देव कर जो रिजि
 त सेवा ॥ १२॥ दिहा ॥ नंदी अरु उतर दिशा जग होय जिन भूतिन सब कै पूजौ सदा अर्घ चढाय अनूपा ॥ १३॥ नंदी

रवरदीपकेचौवनजिनप्रागारावंदौमनवचकायकेवांछितार्थदातार॥५॥ अर्घी॥ सोरठा॥ तुमप्रभुदीनदया
 लामैंप्रतिदीन-- सुनौ॥ मेरी॥ अरजहृपाल॥ फ़रोपारसंसारसैं॥ कुसुमलताछंद॥ दाईदीपएकसोसत्तर
 द्वेत्रमध्यवती॥ जिनराया॥ अथवासर्वसिद्धपरमेश्वर॥ आचारजपाठकमुनिराय॥ भूतभविष्यतवर्तमानकेपाँच
 परमेष्टी॥ हितसाज॥ जन्मजन्ममरणसहायक॥ अर्जजिनेश्वरकीसुखसाज॥ ॥ उँहानंदी॥ अरुदी॥ पुत्रिकालवती
 ॥ चंपपरमेष्टी॥ जेनम॥ अर्घी॥ इतिसंपूर्णम॥ ॥२॥ ॥ छपय॥ श्रीमन्माधवसिंहसर्गईजैपुरस्वामी॥ प्र
 देवीकोजन्मकह्योउमंगरगढ़नामी॥ सहोवासममखासजिनेश्वर॥ नामकहायो॥ भक्तिभावउरलायजिनेश्वर
 कोगुणगायो॥ ॥ छंद॥ आवकउत्तमजातहो॥ प्रज्ञावतपुरवार॥ निजपरहितकेहितयत्ना॥ कियोपाठसुखकार
 शब्देशहंठारमनारग्रामराणोली॥ जानौ॥ अनोदिककेजोगकछूकदिनतहो॥ एनौ॥ सतसंगतपरभावदाव
 यहउतैंआयो॥ रचिनंदीश्वरपाठसकलनरभवकरपायो॥ छंद॥ शब्दरुअर्थअनादिहै॥ भमकर्तोमति
 जानियो॥ करजोरिजिनेश्वरइसकहै॥ पहीसुबुधिराया॥ नियो॥ ॥ दोहा॥ चित्रसालसिंहदेवजूमजापा
 लमहार॥ जजिनकीछायामेंप्रजासुखी॥ रहैहितसाज॥ अथप्रपने॥ धर्मकोंपाले॥ इष्टमहान॥ दुर्जनदुष्टन
 करिसकौ॥ कभी॥ किसीकीहान॥ शतउनीश॥ अरुसाठभितसंवतमहिनामाहा॥ सुदियाएससध्यासमें
 पूरण॥ कियोनिवाह॥ सुखी॥ होराजाप्रजा॥ सुखी॥ होसवजीव॥ सुखदायक॥ जिनधर्मयत्ना॥ जगभैरहो

सदीवध॥ अंबुमंगल॥ रत्नज्यानकी॥ श्रीजगतपतीमहारज अरजसुएलीजो मभुभवसागरसोंपासा
हिकरहीज्यो॥ महाराजयहीमें आसलगाईजी॥ करुणा निधिजगताएकहावो शरणसहाईजी॥ देर॥
याभवसागरकेमाहिवहुतदुखपायो॥ तियाचौरासीलाखजो निफिराया॥ महाराजकंहीथि
रनाहिरहायोजी॥ हुखहीदुखभरपूरसुकवकोअंशनपायोजी॥ चिरकालनर्कपश्रुजो निवियति
बहुभोगी॥ अरुमानुषगतिकेमाहिभयोतनरेगी॥ महाराजकंभीसुएदपायोजी॥ तहोंदेखकरविभ
वपराईदुखअधिकाईजी॥ देरासेरा॥ याकर्मअरिकेवशयेमैंनेसहेदुखघोरहोसोनाहितुमसेछि
येप्रभुजीकरैअजहूजोरहे॥ तुमकेअधमउधारस्वामीछयोजसबहुओरहैहेदेवकर्मविजयीपर
बहूदिशसोरहे॥ त्वोपाईरूपक॥ सवजगकेप्रतिपालकेहावो॥ विनहितपरमक्यालकहावो॥ ऐसोविर
जगतमेंछाया॥ सुनकरकैशरनैअवआयो॥ जयवंतजिनेश्वरविरदआपलखलीज्यो॥ निजअनय
निधिभंडासारमोहिदीज्यो॥ महाराजतुम्हीपतिवंधुभाईजी॥ करुणानिधिजगताएकहावोशरणसहा
ईजी॥ ६॥ इतिश्रीनंदीश्वरदीपवैवतपूजासमाप्त॥ श्रीसंवत् १८८६ कार्तिकसुक्ल ११ भौमवासरे॥ लिखि
तमिदंभजनमनालालशर्मण॥ लेखक पारकाचिरंजीयाता॥ श्रीशुभम॥ श्रीरत्न॥ कल्याणमस्तु॥ श्री

श्रीशोकनंदी७५

रीविविधिसुरसुक्तिमगके॥ उँहीं नंदी चारीषद दैपदि सिरतीचदधिमुखजिनलयेयेनमः॥ २
लं॥ असासायाजममाहीरवानलसेअधिकतपीसुसुखशकीनेनतोभीयोंरुदयधापीइसके
रवारनचरनकेजिनकेस्वहितपूजोमहाचंदनलेकैस्वहितकरपूरुघसिंदूजे॥ २॥ उँहीचंदनभ्रमों
मेंभारीचतुरगतिमेंनसुखपायो॥ महासहितकारीकुबुधिवसतेनकरआयो॥ शुभोदयसेभा
अंतिरुचिआर्द्र॥ जजौजिनराजअस्तसोंइसीविधिसंस्वनिधिपाई॥ ३॥ उँहीअस्तं॥ सुरासुरस
जीतेप्रवलअशरीरविधिबैरहरैनाइसआगेप्रवलनरकरपुजहरी॥ करोवशमेंयाकोंकुसुम॥

एजिनकेजौनिजहितकाजेंस्वनिधिआवैसहीतिनिके॥ उँहीपुष्प॥ सुनौस्वामीमेरी
दाताजगतमाहीइसीसेदुखपावैजगतकेजीवसुखनारी॥ महाचरुविधारीसुजिनआ
बुधाकेदुखभारीइसीविधिसंस्वनिधिआवैसहीतिनिके॥ उँहीचंदन॥ महाभ्रमतमथायोकुबुधिमिथ्या
सेती॥ नहीसतमगसंस्वपस्वसुरास्वविधजती॥ स्वपरीपकैलेकैचरणजिनराज जौ॥

होकेसुखीभविजौवनितहूजे॥ उँहीदीप॥ सुगंधीवनिवाजेरुचिरदशधाधूपअ
रेभक्तीभरिकेजिनपूजविधिअधिकी॥ सहीशिवसुखयावैनआवैवोजगतवनमेंयहीअ
खोसहीसुखदासुखीमनमें॥ ७॥ उँहीपुष्प॥ सफलदगमसाणेइस

नपतिपद॥ आगे सुबुधिधारी भेर शिववरालो॥ पहीवसुविधिपूजाजिनागममें वताई हो॥ कह श्री
जिनवरनें परमगुरु सो सुनाई हो॥ उद्दीकलं॥ जलारिकसवले वैदेरववसुधामिलाकर कोम
रघयहभरियाशी चढावै चरणजिनवरके॥ सही शिवसुखपावै न फिर॥ आवै वही जगमें॥ कही यह
जिनवरनें गही भविजी शिवमगमें॥ उद्दी॥ अर्थ॥ जयमाल॥ होला॥ कल्याणकनायकनमस्सर्व
सिद्धिदातार॥ मम॥ अरजी सुनिलो॥ जिये हेतु कृष्णि प्रनिवार॥ ॥ पच्छी छंद॥ जै जैनराजदया
निधान॥ भवसागरतारणपोतजान॥ जै जै करुणा निधि देव ईश॥ सयवारनमोमें नारायणी शार
अयधन्य देव॥ प्रवतासार॥ भवपारकरे भविजन॥ अपार॥ जै दियोधर्म उष्य देश सोय॥ जिह्वात
भविभवपार होय॥ सह्यर्म सदावर्ती॥ मध्यनजय दिशिवसुखदायक॥ प्रमान॥ जै सम्यक् दर्शनम
लसार॥ डाहलाज्ञानजानौ॥ अधारा॥ अश्वधुविधिचारिततरुपातफूल॥ दिवशिवसुखजिहिकेरह
कूल॥ जो भविजनसर्वै मन लगाय॥ जिह्वै तिहिके सब दुख पलाय॥ दो भेदधर्म के जगप्रसिद्ध
मुनिवर॥ अरु आवक स्वयं सिद्धाश्रावक के ग्यारह भेद जान॥ दर्शन प्रतिमा पल्लि प्रमाण॥ भजव
दूजी व्रत प्रतिमा॥ अनूप॥ वारहव्रतधारण तिहस रूप॥ जय सामायक तीजी महान॥ प्रोषधचतुर्थ
गुणखानजान॥ हजय सचित त्याग प्रचम सुजान॥ दिन ब्रह्मचर्य बलम मस्तन॥ सप्तम हेतु पूरण

बौवनपू.
॥२७॥

चर्यो॥ आरंभत्याग॥ अष्टमसुवर्गः॥ जयपरिग्रहत्यागीनवमजान॥ अनुमतत्यागीदशमै
नोउद्दिष्ट्यागयारमपवित्र॥ यहउत्तमश्चावकजातिमित्र॥ अजबपहिलीप्रतिमापूर्णहोय
दूजीकोतवआरंभहोय॥ जवदूजीपूरणसधैसोय॥ सवतीजीकोआरंभहोय॥ दे॥
तिमाभैदजान॥ पूखसाधैउत्तरप्रमाण॥ पहलीप्रतिमाविननाहिकोय॥ बहत्तपसीमुनिकों
नहोय॥ २८॥ यहजानिसुधीहिरैदेविचारि॥ महलेसमकितकोहृदयधार॥ समकितविनको
हि॥ समकितविनअभगतिपर्मनाहि॥ २९॥ यहजिनवरआज्ञामानवी॥ हिरैदेविचारवधारि २
कदेखकरउरविचार॥ जिनवरकीआज्ञाहृदयधार॥ ३०॥ जगधन्यदेवअग्रहंतसेवजिहिसैंभ
वैसर्वभेचा॥ ममउरमैनिष्टोदेवसार॥ धौखवलबुद्धिअग्रहमेवसार॥ ३१॥ हेदेवअग्रजममवारवार
रुनाकरसुवदधितारता॥ अवविघ्नभयकरआज्ञार॥ निजस्वहितकरुछिक्करलारलार॥ ३२॥ दोह
र्थकरत्रिभुवनधनी॥ सुमगुणअग्रमअपार॥ रुपाकरोमुजदीनयैकरोभवोदधिपार॥ ३३॥ अ
रु॥ सिद्धशिरोमणिसार॥ सिद्धकरोपुरुषार्थकी॥ मेरीबुद्धिविस्तार॥ सिद्धकरोसतस्वारथी॥ २
त्याशीर्वाद॥ ॥३७॥ ॥अणनंदीश्वरदोषदक्षिणदिशउत्तरदधिसुखजिनालय
ह॥ बालजोगीरासा॥ नंदीश्वरदक्षिणदिशमाहीअग्रनपर्वतसेहोवापीवीचशोकावापीभैंद

गिरमनमोहेतापरश्रीजिनभवन अरुतिमसुरपपूजनआवे॥शक्तिहीनहमनिजगृहमाहीजि
 नपदकौशिरनावे॥२॥उद्दीनंदीश्वरधीपदक्षिणादिशचतुर्थदधिसुखजिनालयेभ्योनमः॥अत्र॥
 अत्र॥अत्र॥पुष्या॥सौरा॥पद्मद्रुजलसाराकचनभाजनमैभरो॥जिनपदतरत्रयवाराधा
 रदेयसवदुखहो॥३॥उद्दीनंदीश्वरधीपदक्षिणादिशचतुर्थदधिसुखजिनालयेभ्योनमः॥जल॥२
 केशरचंदनसारकर्पूरादिमिलाईएजिनवरपदसुखकारपूजतभविसातालहो॥२॥उद्दीनंदन
 देवजीरसुखदास॥अक्षतस्वस्तसुहावने॥पूजनशिवपदखासमुक्तिवासनिश्चलहो॥३॥उद्दीन
 तं॥पारिजातमंदारसुंदरकुसुमअनूपले॥भक्तिभाकउरधारजिनपदपूजताशिवलहो॥४॥उद्दी
 पुष्या॥नानाविधपकवान॥ताजेशुद्धसुहावने॥जोपूजतभगवान॥सुधादोषसोसचहो॥भउद्दी
 चरु॥रीपकजोतिप्रकाशशुद्धवस्तुसंजोगसो॥पूजैजिनसुखराशिज्ञानजोतिप्रगटसही॥छ
 उद्दीदीपं॥रुक्षागारकरपूरचंदनधूपवनाईये॥भक्तिभावभरपूर॥जिनवरचरनयदाईये॥उ
 दीधूपं॥एलाकेलाआदिफलउत्तमवहुरसभरो॥कारकेमनअहलाह॥जिनवरकीपूजाकरो॥पउद्दीफ
 जलफलवस्तुमिलायअर्घवनावे॥भयजन॥पूजौंश्रीजिनपांय॥मुक्तिमहलनिश्चमिलो॥६॥उद्दीन
 द्यं॥जयंमाल॥दोहा॥तुमस्वामीत्रैलोक्यकोअशरलशरनअधारा॥इसअसारसंसारसोमैरीसुनोपुकार

था॥ यच्छडीच्छद॥ जैजैजिनराजदयानिधानभवदुवमेतनसमरपमहानजैजैमैयासंसारसा
 दुखसहेवहुतसोधिपेनाहि॥ तहुकालनिगोदकुवासकीन॥ दशआठजन्मइकसासली
 जीवअहारसुसाससार॥ प्ररुजन्ममर॥ एइकसातधारा॥ क्रमक्रमसेतासैनिकसदेवयावरग
 तिपाईपंचभवातहोकालअसंख्यविनाशहोय॥ बहुवारजन्ममरणदिहोय॥ छयइंद्रिय
 कविकलेदेह॥ धरिसहेदुक्खताकोनछेह॥ यहातकसन्मूर्छतलहीदेह॥ मनविनातदयितनसे
 था॥ पंचइंद्रीतनदोभेदसारमनरहितजीवनहिंगर्भधारमनसस्तिगर्भमैवसेआय॥ नाहरनि
 कत्वपाया॥ भयोजतीतारकरैसुनाए॥ त्योजीवगर्भसैंहोयपार॥ जन्मसमयअतिदुख
 नवरजानैकैसहेसोय॥ धमश्रुजोनिमहादुखवातिजानि॥ हिमउसचुधाअरुतबावान॥
 रधारफिरपेरैमारा॥ पश्रुगतिकेदुखकीकहासम्हार॥ संलेशभावसेनर्कजायतहोती
 एदुखपावैअघाय॥ फिरनिकसितहोतैबहुभ्रमता॥ कोनहिपावैकहीअत॥ ७॥ कोईमुएउ
 रदेहपाय॥ तहोविषयलो लपीहुएजाय॥ विनधर्मध्यानआपूगमाय॥ ८॥ रथावत

चितमणिसममनुप्रदेहसतवुफिरुचकुलधर्मनेह॥ अतिदुर्लभपावैजगवचीका॥ तएत
 ऊपररहैमीवा॥ हेदेवजागयहमिलोसार॥ यातेप्रभुनुनियेभमपुकार॥ प्रभुदेहुहमैनिजरु

नाप्ररुप्रगटकरोउरसत्यज्ञान॥ममद्रव्यक्षेत्रप्ररुकालभावानासमदीजिचारित्रभाव॥यहरत्नत्रय
शिवमगउपावधाकेसाधकगुरुदेवभाव॥भवभवमैमिलियोजोगएव॥भवभवमैमिलियोतुम
चरणसेवाभवभवगुरुमिलियोअनागाएभवभवसतधर्मरहोप्रचार॥अयहअरजरुमारीसुनो
देवाहृतनौवरदेप्रभुसुयशलेवप्रभुतुमसवल्लायककहेदेवकरजोगिजिनेश्वरकरतसेव॥हो
हा॥जवतकरविशशिगगनमैसवतकथिरभिरगिराजमवतकयासंसारमैधर्मरहोतिनराज
२५॥अर्धेदोह॥शिववासीप्रभुशिवसुखी॥सुखल्लयकभरपूर॥मेरेहिरदेमैवसो॥तुमजयवंतह
ज॥२६॥इत्यामीर्वादा॥ ॥२६॥ ॥अष्टभूमिनिंदीश्वरदीपदक्षिणदिशप्रभुमरविकरजिनलि
यपूजाभाह॥जोगीराया॥नंदीश्वरदक्षिणअंजनंनिरअरजापूर्ववापी॥ताकेवाहिरकौनप्रथममै
रतिकरगिरआलापी॥एकसहस्रयोजनकोऊचौगोलदोलसमसोहो॥तापरश्रीजिनगेरुअरुतिम
सुरनरकेमनमोहे॥ईद्वीनंदीश्वरदीपदक्षिणदिशप्रभुमरतिकरजिनल्लयच्योनमः॥अबने॥अबनेनने
पुष्पाचोपाई॥रूपकैदेवदोर्घकेउजलनीजिमीतरागकीपूजनर्कजियातैजन्मजरानशिजावेक
मक्रमसोशिवमंदिरयावे॥मंदीश्वरदक्षिणदिशजानो॥अरजावापीकेपरमानो॥एतिकरणिरजिनगरु
सुखराईसर्वसुरासुरपूजनआशय॥ईद्वीनंदीश्वरदीपदक्षिणदिशप्रभुमरतिकरजिनल्लयच्योनमः॥

वौवनपू॥
॥२६॥

जले॥ शशि समसीत सुगंध अपारा वावन चंदन अरु धन साग जि न व र च र ण ज ज न त हित का रा शा
ति सु धा प्र गे ती हि वा रा नं दी बा॥ उँही चंदन॥ अत्त त स्वत्त सर ल सु चि सा रा॥ भ र्ति कर ले सु व ण के
या रा॥ पू ज त जि न व र भ क्ति सु धा रा सो पा व त अत्त य प द सा रा नं दी बा॥ उँही अत्त॥ पा व न फल सु गं
ध अ नू पा॥ अ ष वा सु व र ण के सु चि रू पा ति न सो जि न व र प द भ वि पू जे काम दा ह द हि शी त ल हू जे
नं दी बा॥ धा उँही पुष्प॥ ब ट र स म य च रु स घ व ना ई॥ घा ण ने न म न कै सु ख दा ई॥ ले क र स्त्री जि न मं दि र
जा वै जि न प द च र न न भे ट च टा वै नं दी बा॥ उँही नै वे द्य॥ क न क र त न म य जो ति सु त नी॥ शु चि क र पू सु
र भि घ ट वा ती दी य क क र जि न व र प द पू जे के व ल पा य अ म र प द हू जे मं दी बा॥ उँही दी प॥ क र्पू रा ई
सु गं ध अ पा रा द्र व्य मि ला य धू प शु चि सा रा जि न व र च र ण जै म न ला ई ति न नै नि त शि व संप ति पा ई न
दी बा॥ उँही धूप॥ फल उलूख अ ने क प्र का रा स्ना व त भ वि ज न ह र्क अ पा रा जि न व र च र ण ज ज त भ वि
प्रा णी ति पा वै दि व शि व सु ख दा नी नं दी बा॥ उँही फल॥ जल फल द्रव्य मि ला य व ना कै अर्घ क न क म य
या र भ र वै जो भ वि श्री जि न व र ण च टा वै सो नि अत्त न म ग ति पा वै नं दी बा॥ उँही अर्घ्य॥ जय माला॥ हो
हा॥ दे व रू षी सु र प ति स वै जि सै न वा वै शी शा जि न के च र ण स रे ज र ज र हो स दाम म शी शा॥ प छ्ठी
छंद॥ जय श्री धर श्री कर श्री जि ने शा जय व्र ता शि व शं क र म हेश जय च तु रा न न स र्व न्न दे व तु म ब्र ह्म

सुरासुरकरतसेवा॥ ह्ययमुनिमहंततुमध्यानधार॥ तेहोयअगमभवसिंधुपार॥ प्रभुतुमगुणमहिमा
अतिअपार॥ गणधरसुरेशनहिलहेपार॥ अतोअल्पमतीनर॥ औरकौनप्रभुवणैसकैगुणरतनभोन
प्रभुतुमगुणनिर्मलगगनमाहि॥ सुनिविद्यानिधिनहिपारजाहि॥ अतोहमसमाननरकीटसोय
किहिविधिगुणअंवरपारहोय॥ पैभक्तिभावहमशक्तिहीनतुमगुणवर्णनआरंभकीन॥ ४॥ ज्योंनिजसु
तपालनहिरणआप॥ हरिसन्मुखजायकैरेकलाप॥ ज्योंवालकशशिप्रतिविंवदेखि॥ तिहिग्रहणकरे
योरुषविशेष॥ अत्योंतुमगुणकथनमगरसार॥ मुनिईशकहतयाहीप्रकार॥ प्रभुहमकछुजानत
नाहिदेव॥ क्याकहिकैप्रभुपदकरैसेव॥ ह्यप्रभुतुमसवकैरत्तपालसोय॥ जगमाहि॥ सुनेवहुवारसोय
तातैयहनिअपुनरमधार॥ हमरोभीवेडाकरोपार॥ ७॥ ज्योंत्यायवंतभूपतिमहान॥ इकग्रामतणो
शिरदारजानबहुनीनिर्वलकौंदया॥ आनिप्रतिपालकरैसुनियेसुजान॥ जतोआपदेवत्रैलोक्यनाथ
सुरईशनवावैतुमैमाथ॥ रुखिसुनिमहंतसवकरैआश॥ प्रभुदेहुतिहेनिजकरुछिवासा॥ ८॥ क्योमेरीवा
रअप्रवारकीनमोकूँजानूअत्यतहीन॥ तुमयदतरमेरोसदावासा॥ यहमेरीपूरणकरो॥ आस॥ ९॥ बहुक
रकरूपअनेका॥ तिनकोगखीप्रभुतुमहिटेकनरअधमवहुतनिस्तारदीन॥ अदृश्यसुबुधि
विस्तारकीन॥ १॥ ज्योंखड्गकुसुमकीकरीमाल॥ ज्योंवालभुजंगिनफूलमाल॥ ज्योंसेयविपातिसव

करीदू॥ ज्योमैरोसंकटकरेदू॥ १२॥ ज्योविकटअग्रिथलभयोनी॥ असमानवदो॥ ज्योसतीचीरा॥
ज्योजहरसुधासमकियोदेव॥ ज्योमैरोसंकटहरोदेव॥ १३॥ काहूकोखर्गविमानदेहाकाहूकोरुफि
निधानदेवकाहूकोछत्रपतीकरेसुभमपासवासद्योसुयशलेखु॥ १४॥ तिजसुतकेतुतलेवचनपे
उरहर्षकरेसाताविशेषकुमुमतातमातसेअधिकदेवमेरेसुनिवचनकपाकरेवो॥ १५॥ जय
तोअगमेंतुमदयालुजयवंतोतुमनामीविशालजैवंतोतुममगचलनहारुमभुमीहिकरे
सारपार॥ १६॥ दोहा॥ तुमस्वामीशिवमहलकेषासीसुखीअनूपकरेजिनेश्वरकेप्रभूउसी
पनैस्तूपा॥ १७॥ अर्थ॥ सोरठा॥ दुस्तरपारवारखानीरससारहेप्रभुतुमअधमउधारामोदूपा
रियो॥ १८॥ इत्याशीर्वाद॥ ॥१९॥

सा॥ नदीश्वरकीदक्षिणदिशमेंअंजनगिरहेभाशेताकेपूरवअरजावापीताकेकोन
झेदूजोरतिकरपर्वतसोहकंचनवर्णकियालासापरजिनगरहूकौनितपूजौमनवचका
कोला॥ १॥ उँहीनंदीश्वरदीपदक्षिणदिशद्वितीयरतिकरेभ्योनमः॥ २॥ अत्र॥ अत्र॥ अत्र॥ अत्र॥
लचोपाईरूपक॥ निर्मलगुणधारकजगनामी॥ परमपूज्यनीर्धंकरस्वामी॥ तिरुगुणमा
रणसेथ॥ जिनपदजलसैंजिभवि लोयाअष्टमदीपदिशादिखणाईअंजनगिरकेपूर

भाईप्रतिकरदितियजिनालयसोहे॥सकलसुरासुरकेमनमोहे॥३॥उद्दीनंदीश्वरदीपदक्षिणा
 दिक्षाद्वितीयरतिकरजिनालयेभ्योनमः॥जल॥१॥दुष्टकषायतापदुखकारीसातेरहितसर्वहि
 तकारी॥श्री॥अर्हतपरमपद्मकाजै॥बंदनसोपूजौजिनराजै॥अष्टम॥२॥उद्दीचंदन॥अक्षयपदमे
 आपविराजै॥स्निहसस्त्रूप॥अनूपमछाजै॥तिहिपदजापविकाजसुरेशा॥अक्षतसोंजिनजतल
 गशा॥अष्टमरति॥३॥उद्दीअसक॥कामदाहजगमैदुखकारी॥जिनजीतौतिनकीबलिहारी॥ब्रह्म
 स्वभावज्ञानवलधारी॥मुख्यचढायकस्तनवकारी॥अष्टम॥४॥उद्दीगुण॥भूखप्यासआदिकदुख
 कारी॥दोषअंगारहेजिनपरिहारी॥जिनपदमैनेवैद्यचढाअं॥भक्तिभावसैजिनगुणाऊअष्ट
 प॥उद्दीचक्र॥अभुअनंतगुणाधामविकामी॥ज्ञानजोतिअनुपमपरकाशी॥तिनकेचरणकम
 लनितध्याअं॥भक्तिसहितनितदीपचढाअं॥अष्टम॥५॥उद्दीदीप॥कर्मरहितभगवंतरूपाखा
 अनुपमज्ञानदर्शगुणामाला॥अक्षयज्ञानदर्शवलकाजै॥अजतधूपसोंश्री॥जिनराजै॥अष्टम
 ॥६॥उद्दीधूप॥परमसुगुनफलसंपतिभारी॥जोभविजनताकेअधिकारी॥सो जिनवरपदको
 चितल्यावै॥येउत्तमफलले पूजराचावै॥अष्टम॥७॥उद्दीफल॥जलफल॥आठौदलमिलावै
 भक्तिसहितजिनमंदिरजावै॥श्री॥जिनवरको पूजाचावै॥सोदिवलोकसंपदापावै॥अष्टम॥८

॥ उँही अर्धी जयमाल ॥ दोहा ॥ दूजोरतिकरजिनभवना ॥ पूजासुखदातार ॥ भक्तिसहितजीनरक
 शेतेपावैभवपाश ॥ पछडीछंद ॥ जे दीप आठमो हेमंधान ॥ मंदीश्वरताकोनामजान ॥ येसस
 समुद्रके औरपासगोलारुतिसोहे ॥ अतिउजास ॥ छकशतकतरेसठिकोरिजान ॥ अरुला
 खचौरासी अधिकमान ॥ इतनेयोजनसरस्वेतजान ॥ प्रतिदिशमैंचोडाईप्रमान ॥ रत्ताकीद
 एदिशकहीसार ॥ अजनगिरि ॥ अजनवर्णधार ॥ अराजावापीतिरुपूर्वजान ॥ तसुकोनवीचर
 करसहान ॥ अतिहियरजिनमेंदिरशे ॥ भमान ॥ अंत आठ अधिकप्रतिमाप्रमाण ॥ सवधनुषमा
 सेतुगजान ॥ पद्मासनछविवरणीपुरा ॥ ए ॥ जिनदंतवज्रसणिमयमहार ॥ अर ॥ अधरपद्म
 एलालयार ॥ दृगकंज अरु ए ॥ सितस्यामसार ॥ सुरसुरीयकितजिनष्विनिहार ॥ भूलता
 रशिरकेशस्यामपर ॥ ए ॥ स्वरत्नमुजुलसुधामा ॥ मखलालमने ॥ उत्तमप्रवालसुनिपद्मकमलेकी
 कलीवाल ॥ धमाकीशरीरकी ॥ इति ॥ अपार ॥ मायेसुवर ॥ ए ॥ समष्टविनिहार ॥ हुलसायमान ॥ अ
 जवता ॥ खिसुरसुरेश ॥ अतिरुषवंता ॥ अविगयभावफलकै ॥ अपार ॥ निरखतविभावसवनशेसार
 मुरसम्यकदशगिलहै ॥ सो ॥ ग्रामनिजन्मतिन्है ॥ तुमदर्शहोय ॥ जहमपुएयहीनपहुंचौ ॥ नजायाचसभा
 कियहोवसुमोदलाय ॥ मुमव ॥ ए ॥ कमलकौशीशनाय ॥ अर ॥ ध्यानधरै ॥ शिवसुखउपाय ॥

तनी बहुद्रव्य लाया सुख पूजत हेतु मचर्ण जाया ॥ हम शक्ति ही न उर भक्ति लाय सुमचरण जैजिन
भव न जाया ॥ अथ ह भक्ति हमें भव असाहाय ॥ ह जो यह अर्ज सुनौ जिन अय संसार खार दुख कार सोय
या में दूजोनहि शरण कोया ॥ यथा तै यह अजीवार वार ॥ हम करत सुनौ जग पति उरार ॥ नुम दर्श
आज पायो ॥ अनूप ॥ सब अश्रेय आज आयो ॥ अनूप ॥ अथ मम विघ्न मूल निरवार देव निधि दुहु महि
तकार देव ॥ यह अर्ज हमारी सुनौ देव ॥ कर जो रिति ने चरकरत सेव ॥ १३ ॥ दोहा ॥ रतिक गिरा जिन भ
वन की पूरा यह जय माला ॥ जो वौ चै सत भाव सौ ताकि भाग विशाल ॥ १४ ॥ अर्थ ॥ सोरठा ॥ दीन वधु म
हार ॥ राज दीन जान करुणा करो ॥ योगी वन वाज ॥ नुम्ही सुने संसार मो ॥ १५ ॥ ॥ इत्याशी वीर ॥ २० ॥
अथ श्री नंदी श्रवणी यदक्षिणा दिशत तीय शक्ति रक्षिना लय पूजा माला ॥ ॥ जोगी यथा ॥ ॥ अष्टमही
पदिशा दक्षिण में ॥ अथ राजा वापी सो हो ता के वीच कौन रतिक गिर कनक वणि मन मो हो ॥ ता पर श्री जिन
भवन अरु कृति मसुर पति पूजन आवौ ॥ हम तिन की आह्वान न कर के ॥ अपने घर गुण गावौ ॥ ॥ उद्देश्य दक्षिण
दिशत तीय शक्ति रक्षिना लये ॥ अथ नमः ॥ ॥ अथ नमः ॥ अथ नमः ॥ पुण्या दोहा ॥ जन्म मरण के दुख सहै ॥ रजि
नेश जंगमां ॥ हिम कर संमजल लया य कै रचूं पूज जिन पाणि नंदी श्रवण क्षिणा दिशार ति करत तिय
महान ॥ जिन गरुड सुर पति जत सैन मूति के धारि ध्यान ॥ १६ ॥ उद्देश्य नंदी श्रवणी पदक्षिणा दिशार

बौध्दमतपुं



करजिनालयेओनमः॥ जल॥ १॥ कर्मतापतापितकैमाहिशीतलजिनपद
शीतलचंदनलाक्षनंदीकर॥ उद्दीचंद्र॥ विनाशीकजगसंयसामिलीअनेकनवार॥ अक्ष
दातारपदापूजोअक्षतथाबनंदी॥ उद्दीचंद्र॥ मीनकेतुदुखदेतहोताकैनाशनहेतुमभुम
नविजयीजजोलेअसत्करसेतामंदी॥ उद्दीचंद्र॥ दुधाहरणनिजवलकरणचरुवणा
ति॥ नक्तिभावउरलायकैअजोचुधाहरदेकानंदी॥ उद्दीचंद्र॥ कनकरतरनमयदी
नवरपरदुखदायापूजोभविजनभावसोअजोनिजनिधियातारामंदी॥ उद्दीचंद्र॥ कर्म
केकारणो॥ कर्मदहनपतिदेव॥ भूपअनूपवणायकैपूजोअजिनअरुमेवानंदी॥ उद्दीचंद्र॥
नेकपरकारेकोपकसरसश्रुचिरूपदिवशिनफलकेकारेअजोअजिनअरुभूषानंदी॥ उद्दीचंद्र॥
॥ जलफलआठोद्वयलोअर्घवनोवैसार॥ सुक्तिरमाकेकारेअपूजोअजिनअविकार॥ नदी॥ ६
अर्घ॥ जयबाल॥ दत्ता॥ जयजयहितकारीसंपतिसारी॥ जोकोतरतुमपाईहैसवकोसुख
गिरातुमारीरुषिमुनिवरसवगाईहै॥ फछ्छोछ्छदा॥ जैजैअसहायमहानवीरोपुरुषा
गुणगहीरो॥ जैमोहवलीजगमेंविव्याताताकोतुमकीनौप्रथमघात॥ दर्शनत्रयप्रह
मिध्यातमिअसम्यकसुजान॥ नकोतुमकीनौमूलनाश॥ क्षायकसम्यक्तकियोप्रकाश॥ ७

[illegible]

बौवनपू-
॥३३॥

अनिधिहितकारी संपतिसारी धर्मप्रचारी प्रभुदीजि ॥३॥ अर्घ्य ॥ सौरा ॥ दानेश्वर महाराज ज्ञानदा
नममदीजिये ॥ निजपरहितव्रतसाज शिवमगदेषश्रीजिये ॥२४॥ इत्याशीर्वाद ॥ ॥२५॥
अथ श्रीनंदीश्वरदीपदक्षिणदिशचतुर्थरतिकर पूजा माह ॥ जी गौरासा ॥ नंदीश्वर के दक्षिण
अंजन पर्वत सोही ताके दक्षिण विराजावापी सुरपतिके मनमोही ताके को न विषें भुभरा जे चो चोर नि
कर भाई तापर श्रीजिन मंदिर जानौ सुरपति पूज स्वाई ॥२५॥ ईं श्री श्री चंदीश्वर दीपदक्षिण दिश चतुर्थरति
कर जिना लये भयो नमः ॥ अन्न ॥ अन्न ॥ अन्न ॥ सोरठा ॥ हिमशितसमश्रुचिसारा ॥ हेमाच-

रले ॥ जन्म त्रिदोष निवार ॥ जिन पद की पूजा करे ॥ दक्षिण दिश सुख कारणं दीश्वर की जानिये ॥
ग्रह सार ॥ सुरपति जिन पूजा करे ॥ ईं श्री नंदीश्वर दीपदक्षिण दिश सुख कारणं दीश्वर की जानिये ॥
तिकर जिना लये भयो नमः ॥ जल ॥ चंदन गंध मिलाय होत सुवास दर्शों दिशा मूर्जों जिन
भवाताप या सों मिठे दक्षिण ॥ ईं श्री चंदन ॥ निर्मल शरत् प्रनूप ॥ शिकर स म अक्षत महा पूजों
जगभूप अक्षय पदया सों मिले ॥ दक्षिण ॥ ईं श्री अक्षत ॥ कुसुम सुगंधित सा सुवराणाल विवैभ
मूर्जों भवदधिता सभव वाधा या तें मिठे दक्षिण ॥ ईं श्री सुधूप ॥ नेवज जाति अनूप सुचिसुगंध
॥ पूजों अक्षय पति भूप या तें शिव सुख पाईये ॥ दक्षिण ॥ ईं श्री नैवेद्य ॥ दीपक विविधि प्रकार ॥

या योगशुचिलीजिये भाव भक्ति उर धारण जिन वर की पूजा करे दक्षिण ॥ ६ ॥ ईश्वरी ॥ कृष्णागर कर प
र और सुगंधित द्रव्य लो सुचिंद्रन के चूला धूप खेय जिन पद जों दक्षिण ॥ ७ ॥ ईश्वरी ॥ यिस्ता और
विदामालों गछु हारे आदिले स्वहित जिनै श्वर धाम जिन वर की पूजा करे दक्षिण ॥ ८ ॥ ईश्वरी फल ॥ ज
स फल द्रव्य मिलाया प्रार्थ करे अति चाव सो भूजौ श्री जिन राय विनय सहित बहु भाव सो दक्षिण ॥ ९ ॥
ईश्वरी अर्घी ॥ जय माल ॥ दोहा ॥ तीन लोक पति तु मधनी पूरण ब्रह्म पुराण ॥ परम ब्रह्म पदकार एते धरै स ह
मुनि ध्यान ॥ सुर पति नित प्रतिष्ठु तिकरै धरै दृश्य में ध्यान ॥ भैसे श्री ब्रह्म पद जों सदा गुण खान
आप दही छुंद ॥ जय द्दीप आठ मै मध्य जान दक्षिण दिश अंजन गिर महान ॥ तिह गिर की दक्षिण दि
शि विचार ॥ विरजा वापी गंभीर सार ॥ श्रयो जन इक लखत नो प्रमाण ॥ चौड़ी लांवी इक सार जान म
णिर लज्जित जानौ सिवान जल सहस एक योजन प्रमान ॥ भवहुं औ वेदिका द्वार सोय ॥ आगे वन
बारौ दिश जोय ॥ योजन पचास सार ॥ बहुवन की चौडार्ध निहार ॥ ३ ॥ लंबे वापी सम जान वीर ॥ मणि मई को
दिगो पुरग हीर ॥ तिस माहि महल बहु शोभमान ॥ मुख्यंतर भवन रहै सुजान ॥ ४ ॥ तिहि वापी वीच क ह्यो
जिन श्रद्धा मुख गिर जानौ ॥ स्वतभे वक्र चोहै योजन दश हजार ॥ बहुं फेर दोल सम गोल सार ॥ ५ ॥ तावा
पी के वाहिरी को न ॥ रत्निक रगि एताप ॥ जैन भो न ॥ सव सम व शरण ॥ चना महान ॥ जाके देखत सब पाप ह

नक्षत्रं शक्रशचीमिति भक्तिभावः ॥ नहुन्त्यकरैः आनंदचावः ॥ सवसाजवाजः प्रभुतः प्रपारः ॥ कवि
नलहैताकौजुपाः ॥ अरुहंतं विजसंतं सर्वार्थशः ॥ अरुन्त्यकरैः सुरनायश्रीशः ॥ जलदेवनरुतः शुभगा
होयः ॥ अरुहदेवदुंदुभीकजैसोयः ॥ सवन्त्यभेदनवरसप्रचारः ॥ सुरसुरीदित्वावेभक्तिपारयः ॥ हवर्ण
नकिं हिमुखकरैः कोयजोलखैति सैधनजन्महोयः ॥ जैजैजिनराजदया ॥ निधानमभुमुण्यरूप
जगमैप्रधानमयतीर्थकरपदपायदेवत्वपधरौ स्वपरमुखदायदेवः ॥ लहिकेवललवषउप
सागदीनोभवसागरकरनपाएजवअलुकीर्तिजगरहीछाया ॥ नहिगणधरपावैकहृतपाए
तुमअशरनशलसहायदेव ॥ तुमसवजगकौमुखदायदेवः ॥ निजरुद्धिदेवुरदायदेवः ॥ करजीरि
जिनेभरकरतसेवारः ॥ दोहा ॥ वारनतरनजिहजहैयाभवसागरमासिमोकौषारकरोसही
सशयनासिः ॥ अर्थः ॥ सौरः ॥ कर्मकलंकनिवारणभयेषु छपरमावमासोप्रभुमकौतारयांस
रअसारसेः ॥ ॥ इत्याशीर्वादः ॥ ॥ अथ श्रीनंदीश्वरदीपदत्तिलादिस
रयूजामाहः ॥ जोभीरासा ॥ नंदीश्वरकेदत्तिलादिशमें अंजनगिरहैमहात्माकेयश्विमनामअशोका
चापीनीरसुहाई ॥ ताकेप्रथमकौनमें सोहें मंचमगतिकर्जानौ ॥ ताकेऊपरस्त्रीजिनमेंदिरतम
खदानौ ॥ उद्दीनंदीश्वरदीपदत्तिलादिरपंचमरतिकर्जिनावयेचोनमः ॥ अत्र नमः ॥ अत्र नमः ॥

यं॥ गीता छंद॥ पंचमपयो निधिनीरता समरतनभाजनमें भएँ॥ जलसों जिनेश्वर पदकमलकी भ
क्तियुत मूजा करों॥ वरदीप अष्टमदिशा दक्षिणपंचभोर तिकर जहाँ जिनराज गरुसुर अमुर मि
लिके जिनचरण मूजतत हो॥ २॥ ईही नदी श्वर दीप दक्षिण दिश पंचमर तिकर जिनालये योनमभाज
ल॥ १॥ शुचि गंधकदली करमलिया गिरि सुचंदन लाईये॥ भवदाह राहन काज श्री जिनचरण अ
ग्रचटाईये॥ २॥ ईही चंदन॥ चोखे अनोरख सरलधोखे स्वत्त अत्ततली जिये॥ अत्तयमहा निधि
पति जिनेश्वर अग्र पुंज सुदी जिये॥ वर ३॥ ईही अत्तको॥ वर कुसुम शुद्ध सुगंध रंगित अत्तन नंदन
रनकों॥ मनलाय भक्ति चढाय भक्तिजन जौ जिनवर चरण कौ॥ वर ४॥ ईही पुष्प॥ शुचि शायदाय सु
गंधत जे सुरभि घटक सोहनै॥ अति मिरसने वेद्य ले कर एद जौ जिनवर तने नर ॥ ५॥ ईही चंद
वानी कपूर सुधार उज्जल जौ तिज गमग होत है॥ तसु दीप सों जिनचरण पूजौ ज्ञान जौ तिउद्योत है
वर ६॥ ईही दीप॥ घनसार कृष्णगर तरंग चंदन सुगंध अंपार है॥ तिरुधूप सै जिनचरण पूजौ यसी
मुए पप्रचार हो॥ वर ७॥ १॥ ईही धूप॥ फलसार खदु विधिया लभ कर ॥ भक्तिभाव वढाय को मूजा करों
जिनराज पदकी भवि जिनालय जाय को॥ वर ८॥ ईही फल॥ जल गंध अत्तत पुष्प चरु वर दीप धूप
फल वली करि अर्घ जिनवर चरण पूजौ पार हो उभवावली॥ वर ९॥ ईही अर्घ॥ जयमाला दिहो

वैवर्तम्

॥३५॥

हिमकरमुक्ताहातुप्ररुचंद्रक्रांतिवलधारइतसवसेंशीतलप्रभूतुमवचनामतसार॥
दाहदुखहरनकौं॥अरकोनहेउपाया॥सुधाधारतुमवचहिये॥सत्सातुषानशया॥२॥भुजगप्र
प्रातछट॥जयौदेवजगमेंतुम्हीहोविधाता॥जयौदेवजगमेंतुम्हीहोविख्याता॥वताईतु
सवधर्मनीती॥जताईतुम्हीनेशुभाशुभप्रतीती॥५॥महापापकेभेदजगत्यागरूपा॥तुम्ही
तायेजिन्होंकेसरूपा॥पथमपापहिंसा॥महापापघात॥इसेंजोगिनेजोपुण्यसोपहृपा
चनमूढबोलैयहीपापदूजो॥मगूटेमनुष्यकूकनीपापसूको॥महापापचोरी॥गिनोतीस
॥इसीकीवजैसेजीवनकेपरीहो॥अमहापापचोथोपरदारसवा॥लहेदुक्खभारी॥करेजोपरवा
सीजन्ममेंराजकोढपावो॥कुधीआपअरवापकोकुललजावो॥अमहाव्याधितन्नापरि
धावो॥यहीयंचमोपापश्री॥गुरुवतावो॥महालोभकेजोमेघो॥रधूमे॥हाहोयगाफिलदिनरा
॥५॥महादुष्टइशिविषयमोगभारो॥मडेदुक्खदाता॥मनोंनागकोरो॥इन्हीकीवजे
सारे॥वोपुरुषनामीनकेमेंसिधारो॥छांडीपापकोतजेसत्यज्ञानी॥ब्रतीवोकरावैकही
नी॥अजैपापकिंचित्अणुब्रतकरावो॥सर्वीपापत्यागोमहाब्रतलहावो॥अप्रहिंसाविषे
तंगनामी॥ब्रतीसत्यधनदेवनामी॥अकामी॥अचौर्यवती॥मैंकुमवारिसेणा॥महाशीलमेनी

लीप्रवीणा॥ चपुसिग्रहप्रमाणी बडोनामधारी॥ भयोहेजगतमाहिजप्रभूपभारी॥ ईकीप्रशंसागु
रुदेवकीनीकहीप्रावकाचारमेंदेखलीनी॥ भोव्रतोंकीवजहसंगहीको॥ प्रागरीनमेंदेव॥ आके
करैभेटभारी॥ महाघोरउपसर्गमेंसेवचावै॥ धनीजीवकेचरणकोशीशनावै॥ १०॥ महास्वर्ग॥ अप
वर्गकेसुकुलसारेसवीजीवपावै॥ व्रतोंकेसहारे॥ प्रहोवीरस्वामीतुम्हीसुकुलदाता॥ सुधर्मोपदे
शीतुम्हीहोविख्याता॥ ११॥ प्रभूजीतुम्हारेचरणहैंचंद्ररेखा॥ वसेउरसीनैस्वपरभेददेखा॥ प्रभू
कमेरीयही॥ अर्जमानों॥ स्वपरभेदविज्ञानदीजोप्रमाणों॥ १२॥ दोहा॥ निजपरज्ञायकभावनाज
यवंतोत्रयकाल॥ याप्रशादससारमें॥ भविष्यवैशिवचाल॥ १३॥ अर्ध॥ सोरठा॥ सत्प्रतीति॥ अरुज्ञा
ना॥ सत्प्रवृत्तियलैलत्रय॥ दीजेश्रीभगवान॥ तुमदानीजगमेंवडो॥ १४॥ इत्याशीर्वाद॥ ॥ १२३॥
अथषष्ठमरतिकरजिनालययूजामाह॥ जोगीरासा॥ नदीश्वरवर्दीप॥ आठमौताकेदक्षिणभागे
षष्ठमरतिकरपर्यंतसोहेजिनमंदिरतिहिंजागे॥ शक्रशचीमलिसूजरचावै॥ हिरदेहवर्क॥ प्रपार
अकृत्यमजिनविंवजिन्होंकोवाप्तवाएनवकार॥ १५॥ ईश्वरनदीश्वरदीपदक्षिणदिशेबहुदूर॥ दिक्कानि
नालयेन्योनमः॥ १॥ अन्नबन्धन॥ अन्न॥ पुष्प॥ सुदरीचंद्र॥ सुरतरीजलउजललाईये॥ जिनपदोंबु
जमाहिवलाईये॥ असतकर्मउहेदुखनाशिये॥ सलजशातस्वरूपप्रकाशिये॥ दीपनदीश्वरदक्षि

बौवनम्
॥३६॥

एदिशगगिरिसुषष्टमरतिंकरतहोलसा॥तासपरजिनभवनसुहावनौ॥करतपूजासुरा

॥३॥उद्दीनंदीधरदीपबध्ममरतिंकरजिनालये॥योनयः॥जल॥॥मलयचंदनकुंडु

अंतोघसिकमूर्कदलीदलआश्रितो॥जिनपदांबुजपूजनकी॥जिये मनुष्यजनमतनौफलली
दीपबा॥३॥उद्दीनंदन॥सीरहीरजतसमजानिये॥सितसरलअलतशुबिआनिये॥

चंद्रजिनेशको॥सजतभविमुखलहतसुरेशको॥दीपबा॥३॥उद्दीनंदन॥कमलआदिअनूपम
कुसुमचारुवणचितदीजिये॥जिनपदांबुजपूजराईये॥अलनमारिअभयपदयाईये
पु॥३॥उद्दीनंदीपुष्प॥सरसषट्समिप्रितव्यजनो॥मरुवनायसुधीमनंजनंचरणश्री

मुक्तिसारागसंमलकौंफजो॥दीपबा॥३॥उद्दीनंदन॥तमनिवारकदीपमहानहोजग
तिवानहो॥जिनपदांबुजअग्रचढाईये॥परमज्ञानमहानिधिपाईये॥दीपबा॥३॥उद्दीनंदीप॥

कारसुगंधअनूपहो॥मलयचंदनकीवहुधूपहो॥करतपूजनश्रीजिनराजकी॥हरतम
वसाजकी॥दीपबा॥३॥उद्दीनंदन॥बहुफलावलिपावनलाईये॥वरनश्रीजिनराजचढाईये

रमापतिसपतिलहनको॥यहउपावसुधीभविगहनको॥दीपबा॥३॥उद्दीनंदन॥जलफला
द्रव्यमिलाईये॥अग्रघलेजिनमंदिरजाईये॥करतपूजनभक्तिवढायको॥लहतसुकवशिवा

जायको दीयन ॥ ६ ॥ ईष्टीं अर्च्य ॥ जयमाल ॥ दोहा ॥ करुना निधि त्रिभुवनधनी ॥ अशरनशरन अथा
रकरुना विधि कर मुरु दीन पै दीन वंधुगु ए धारा ॥ तोटक छंद ॥ जय श्री धर श्री कर श्री पतिने
अघ घायक दायक संपति हो ॥ वर केवल ज्ञान प्रकाश कि यो ॥ भविजीवन को भ्रम मे रहियो ॥ स
वजीव ॥ अजीव ॥ प्रभावत जो ॥ गुण पर्ययरूप भेद मनो ॥ जहा जीव सुतल सुभाव महा ॥ ए भेद
सुजीव प्रभाव कहा ॥ महलो उपशम कित भाव कह्यो ॥ द्रगचारित स्तु भेद मन्यो ॥ पुनि सायक भा
व दुतीय गिनो ॥ तिहि केन वने दसु पेस मनो ॥ उचि सम्यक चारित ज्ञान महा ॥ अरकेवल दर्शन बा
न कहा ॥ उपमोरा शुभोग ॥ अनेक वली ॥ प्रह्ला भनवौ ॥ इम लब्धि वली ॥ ततियो ग निभाव क्षयाप
शम ॥ तिहि भेद ॥ अहार हजा निगम ॥ वउ ज्ञान कु दर्शत्रय ॥ मणि लब्धि सुपंद्रह भेद ॥ अय ॥ ५ ॥
अरु सम्यक् चारित भाव युग ॥ एक संयमा संयम भाव भं ॥ इम भेद ॥ अहार हजा निसे वै ॥ उदईक ॥ अकी
ससु नों जो अवै ॥ हागति चार कबाय जु चार कही ॥ त्रय लिंग छलेस्य विभाव यही ॥ कुदृष्टि ॥ अज्ञान ॥
संजमहे ॥ प्रसिद्ध मिले इक ईश यहै ॥ अपरिनामक पंचम भाव कह्यो ॥ भविजीव ॥ अमय त्रिभेद ल
ह्यो ॥ मण भावतरे पुन भेद भयो ॥ सव श्री जिन ॥ आगम माहिक ह्यो ॥ अर्चन मै को ईत्या गन जाग गिने
के ई ॥ आदर योग जिन शभने ॥ को ई श्री अर्चन भये प्रगटे ॥ तिहि माय वि को गण राज रटै ॥ ६ ॥ वही श्री गु

दक्षिणदिशसमरतिकरजिनालयेभ्योनमः॥ जलं॥ १॥ चंदनकेसरगंधः॥ अनूप॥ शीतलसुखका
 रणशुचिस्त्यदया॥ पूजौ जिनवरचरणविशालभवात्पातापमितेततकालदया॥ २॥ ईश्वरीचंदनं॥
 अमलप्रखंडिततंदुलसारादेवआदिकजीरहितकारदया॥ शुचिअक्षतलेजिनगरहजायपूजौ
 जिनवरयदहरखायादया॥ ३॥ ईश्वरीअक्षत॥ पावनपुष्पसुगंधअपारा॥ कंचनयालभरोहितका
 रदया॥ कुसुमायुधअरिजीतनकाजपूजौ चरणकमलजिनराजदया॥ नंदी॥ ४॥ ईश्वरीदुष्यानि
 वजसद्यपवित्रअनूप॥ घ्राणनेनमनमोहनरूपदया॥ पूजौ श्रीजिनचरणमहान॥ परमशान्तिदायक
 कल्याणदया॥ नंदी॥ ५॥ ईश्वरीचंद्रं॥ उज्जलदीपकस्वत्तवनायमोहमहातमहरजपाय॥ दया॥ ६॥ शा
 नजोतिपरकाशनकाजपूजौ चरणजगत्शिरवाजदया॥ नंदी॥ ७॥ ईश्वरीद्वयं॥ कृष्णागरचंदनकर्पूर
 धूपसुगंधीकरवरचूरादया॥ आरोकेरमजलावनकाजपूजौ श्रीजिनवरहितसाजदया॥ नंदी॥ ८॥ ई
 श्वरीधूपं॥ लोंगलाइवीओरवदामपिस्ताओरसफलअभिरामदया॥ नंदी॥ मुक्तिमहाफलदायकदेव
 पूजौ श्रीजिनवरकरसेवादया॥ ९॥ ईश्वरीफलमूलफलअथौठोंइव्यमिलाय॥ उत्तमआठोंइव्यमि
 लायदया॥ श्रीजिनरायचरणसुखदायपूजतजन्मजरावरजायदया॥ नंदी॥ ईश्वरीअर्थ॥ १०॥
 जयमाल॥ दोहा॥ भवभंजनभगवानमजिसजिसाहसशिवरूप॥ करहया॥ एगहिध्यानकीमारिमा

हृदय रूप ॥ १ ॥ अथ गंगया तच्छृणु ॥ जयो देवं द्रुपदी देव स्वामी ॥ महा मोह जीने वडे वीरनामी ॥ वनायी विजे
बोने अंक पा ॥ तिसें देख कै मोह चहुं ओर कं पा ॥ चली वीर गज राज तप की सवारी ॥ धरौं शीश ये संज
पभारी ॥ महा वीर रागी कवच देह धारी ॥ प्रभू आपनो आप योरोष सम्हारो ॥ सुचारि वनामी
क्ति पुर की ॥ वही भूमि जा नों प्रभू के समर की ॥ नही ध्यान तल चार तीनु एण ग्रहारी ॥ दयी मोह के शीश
दभारी ॥ अगिरो मोह वैरी तबै कर्म घाती ॥ हुने शेष तीनों फिर पक्षपाती ॥ न जे जीव के देव वाजा
अयो सोर वै लोका में धोर रूप्या ॥ सभी देव आय महा भक्ति धामो ॥ चहुं ओर न भैं जे जे पुकारे ॥
थ माये वहुनं प्ररूप्य करै देव की वंदना ॥ विश्व भूपा ॥ महा भक्ति सैं मिष्ट वाय क उचारे ॥

ही सहाय कहमारो ॥ जयो देव तुम एक त्रै लोक स्वामी ॥ निशानी महाशीश त्रय घत्रना
॥ सुलक्ष्मी पति हो तुमी एक देवा ॥ प्रली की कलक्ष्मी करै आपसे वा ॥ वली वीर जग में तु
प्रधानी ॥ विनाश स्वधारे हल्यो मोहनामी ॥ अमुमी हो सुखी एक स्वाधीन स्वामी ॥ हल्यो दुःख को
हे प्रकामी ॥ तुम्ही श्रेष्ठ स्वामी जग में वतायो ॥ सुध्यावै तुम्हें श्रेष्ठ वह भी कहाये ॥ ८ ॥ तुमी इष्ट दा
प्रभू इष्ट रूप्या ॥ महा इष्ट कल्यान के आप भूया ॥ तुम्हें जो हरे माहिनि श्रित्य ध्यावै ॥ वही स्वर्ग
के सुकल पावै ॥ सभी देव इंद्रावर्गें द्रामुनी शशां मुहारे चरण कौं जे न आयशी शान करै आप्र

महच्छिधारी॥इसीसेंप्रभू एक अरजी हमारी॥२॥ महात्रास संसार के वासमाही॥यहाँ तो कि सीकौक
भी सुकवनाही॥है मुके प्राप के वास कीजे प्रभूजी मुजसे यह एक लीजे॥ए॥ नही ओर चिता
हृदयमाहि मेरे नही ओर ईस्ता सुनो देव मेरे॥यही एक चिता सु इत्ता यही है॥जिने श्वर कृपा आज
कीजे सही है॥२॥ दोहा॥ जिनवर दीन दयाल तुम शरणागत प्रतिया ल॥दीन वंधु मो पर प्रभू कीजे
रूपा लुपाल॥३॥ अर्ध॥ यो रसा॥ या भव के वनमाहि॥इक लोजिय भरमत फिरो यहनिये मन

॥२५॥

माहि॥प्रन्य शरन कोई नही॥२५॥ इत्याधीर्वादा॥

॥अथ श्री नंदी श्वर दीपद

निरादिश अष्टमर विकर॥जिनालय पूजा माह॥जोगी रासा॥ नंदी श्वर की दक्षिण दिश में॥अंजन गि
रवानी को॥सा की उत्तर दिश में॥ऐ रतिकर एह जिन जी को॥देव वसुज नित पूज रचावो॥गावै जिन गु
ण भारी॥अैसे श्री जिन के चरन न कौनित प्र ति धो कं हू मारी॥३॥ नंदी श्वर दीप दक्षिण दिश अष्टमर ग
कर जिनालय के ये निमः॥अंजुन॥अंजुन॥ पुष्पा॥चाले छुदा॥ इह मझ समान सुजानो॥अति निर्मल
नीर प्रमानो॥जिनवर पद पूजा कीजै॥निज जन्म सफल कर लीजे॥सुभ धीप नंदी श्वर जानो॥इति ए
दिश में पहिचानो॥अष्टमर रतिकर गिर सो है॥जिन मंदिर तहाँ मन मो है॥३॥ नंदी श्वर दीप मरि॥दिश
अष्टमर रतिकर जिनालय के ये निमः॥अंजुन॥॥ चंदन कर पू॥मिलावै तामे केशर घसिलो वै॥भवताप वि

नाशनकाजैपदद्वजैश्रीजिनराजैशुभ॥ उँहीचंदन॥ ३॥ सुखदासकमोदअनूपा॥ शशि
रसमखदसकृपा॥ पावनअततभरथारी॥ जिनचलजजोसुखकारी॥ सुभ॥ ३॥ उँहीअनूपा॥
नाविधिवर्णसकृपा॥ अरुसारसुगंधअनूपा॥ असेवरकुसुममगावै॥ जिनवरसम्भवेमुन
पू॥ जरचोवैशुभ॥ ३॥ उँहीपुष्प॥ नेवजमनमोहनहारा॥ अचिभरकंचनकाथारा॥ जिनवरके
णचदावैसवदोयचुधानशिजावैशुभ॥ ३॥ उँहीचरु॥ तमहरदुतिउजलसोहो॥

जिनवरपदअंगैजोवैनिजज्ञानपतीभविहोवैशुभ॥ ३॥ उँहीदीप॥ दशगंधअनूपा॥ मि
अतिपावनधूपवनावै॥ वसुकर्मजलावनकाजै॥ पूजोपदश्री॥ जिनराजैशुभ॥ ३॥ उँहीधूप
वरुतुकेफलशुचिसारा॥ पिस्तावादामअपारा॥ निजलत्मीपापतिकाजै॥ पूजोपदश्री॥ जिन
शुभ॥ ३॥ उँहीकंठ॥ जलफलवसुद्रव्यमिलावैसुवणकेयालभएवै॥ श्रीजिनवरचर
सोभविशिवलत्मीपावैशुभ॥ ३॥ उँहीअर्घ॥ जयपाल॥ दोहा॥ हेजिनैद्वजयवंतजग॥ जाहर
अपारा॥ सुरपाराजैखिसुरपती॥ लहेनतुमगुणपारा॥ एतौअवकौनरकहिसकैसुमगुणअग
रमैतुमभक्तिप्रभावकरुतलहतभवयास॥ धरदोसियादाम॥ जयो॥ जिनदेवदयागु
जयो॥ तुमसेवकरैसुरआनजयो॥ तुमध्यानधरैरुविराज॥ जयो॥ भवसागरमाहिजिहाज

बलीश्रुतपागइंद्रमहानवलीबुधधारिसुनीघरजानप्रभृतुमरेगुणकौनहिपारलहेकवह्वे
हकालमगरप्रनोपमरूपिपतीमहारजसदासवकौसुखदायकसाजप्रभृहरिआसनये
अनिवारविराजतहेपद्मासनसारधिरेशिरष्टत्रसुतीनअनूपमनोशशिआपभयोत्रयस्त
प्रमहामुक्ताफलफालसारमनोशशिसूजजोतिअपारधमनोहरचौसठिचामरेवसुढा
रतनित्यकरैसुसेवदशोदिशिदुंदुभिकोवहुसोकरैउभक्तिभरेसुरजोरधसदावरसावतहेसु
रसारसुकल्पतरोवरफूलअपारकरैचहुंओरहिसंजयकारधरेवहुभक्तिरुदैअनिवारधकरै
बहुचष्टिसुगंधेतमीरामहासुरमेयकुमारगहीरावलावतगंधसुगंधप्रचारधरेउभक्तिसुवात
कुमारखंडेदिवदंडजहादरवानबलेवलरूपिपतीगुणखानतहोभुवनत्रिककौनमहान
रहेपशुमानुषजोतिहियानप्रभृतनदिव्यप्रभाअनिवारअनोपमचक्रसमाननिहारलखेम
विजीवभवांतरसातप्रभृअतिसेयहजानिविख्याततैतवटवृक्षअशोकदिपंतप्रभाजिहिं
कीशशिसूरष्टिपंतहरेभविजीवनकैसवशोकधरेगुणयेहिबिख्यातअशोकअप्रनंतचतुष्ट
यमंडितदेवप्रभृन्नयलोकापतीस्वयमेवकरोसवकौउपदेशअनूपकरोभविकौसुखअयसस्त
परप्रसिद्धयहीसुनकेतुमनामलयौशरतौसुनियेगुणधामप्रयोहमरेउरसत्यविचारसुख

गमैहितदायकसार॥२॥करोहमरोमन्वांछितकाज्जहरोहमरोदुखसाजसमाजभरोमभुजी
शअनूपाधरोयहअर्जहदेजगभूपा॥३॥दिह॥प्रभूपतितपावननुम्हीमैअतिप्रतितअपा
वलदीजियेसम्यक्ज्ञानमहान॥२॥अंध॥सारठा॥करुनानिधिमहारजससनस
भवजलमाहिजिहाजमोकौपारकरोसही॥२॥इत्यादीवीद॥ ॥२६॥

प्रथम कार्य॥नंदीश्वरदत्तिणवियोजोप्रतिमातिहयानतिनसर्वकैवययोगकशिपूजोनिज
दान॥१॥ ॥इतिने० दत्ति० पूर्णोर्घ॥ ॥इतिदत्तिणविशसंवंधीयूजासंपूर्णम॥
एवंनंदीश्वरदीपयश्रिमदिशअंजनगिरिनालययूजामाह॥गीताध्व॥वरदीपअहमेदिशापश्रि
मष्टविगिरिहोलोतसुनामअंजनतासउपरजिनागारअमोलहोतहोएकशतवसुअ
नविंवमतानहैतितनकेवरनमनलायपूजोदेतशिवकल्यानहो॥इहो॥नंदीश्वरदीपयश्रिम
अंजनगिरिपर्वतपरजिनालयेभ्योनमः॥अन्न॥अन्न॥चालद्यानतरायजीरुतयू
की॥समभावमहाशुचिनीरमानभंगभरो॥अंरहंतवरनधरिधीरपूजनध्यानधरो॥नंदीश्वरदी
दानयश्रिमदिशसोहोसापरजिनमंदिराजसुरपतिमनमोहो॥इहो॥नंदीश्वरदीपय
अंजनगिरिपर्वतपरजिनालयेभ्योनमः॥अल॥ए॥वसुकर्मविनाशनहारपरनतिआतमकी॥म

दनगंधअपार॥ शिवपदपूजनकी॥ नंदीगर॥ उद्धीचंदन॥ अतिनिर्मलशुद्धस्वभावोअतस्वह
कहा॥ श्रीसिखरनचितलाय॥ पूजतंसुक्वलहामंदी॥ उद्धीचतंत॥ शुचिब्रह्मस्वभावसुगंध
कुसुमावलिजानो॥ पूजतजिनचरनअमंद॥ निर्भयपदपानो॥ नंदी॥ उद्धीपुष्प॥ निजज्ञानदेह
बलधार॥ परनतिचरुसोहो॥ शतइंद्रपूज्यपदसार॥ पूजतशिवमोहो॥ नंदी॥ उद्धीचक॥ मतज्ञानजो
तिअविकारहीपकतेजकरो॥ धरिध्यानस्वरूपविवार॥ ममुपदपूजकरो॥ नंदी॥ उद्धीचक॥ उद्धीदीपो॥ सित
ध्यानदहनसहचार॥ आतमभावमहा॥ यल्यूपसुगंधअपार॥ पूजतसुक्वलहामंदी॥ उद्धीचक॥ उद्धी
विधिभंजनभावअनूप॥ उत्तमफलसोहो॥ पूजतभविसितचिद्रूप॥ सोशिवयतिहोवे॥ नंदी॥ उद्धीचक॥ उद्धी
दीफल॥ वसुकर्मविनाशकवीरवसुगुणधारकहोवसुद्रव्यलायभविधीर॥ पूजतसुक्वलहामंदी॥ उद्धीचक॥ उद्धी
दीचर्दी॥ जयमालो॥ दोहा॥ नंदीश्रयश्चिमदिशाअजनगिरिसुविशाला॥ तापरजिनगृहसूजियोअ
ववरनंजयमाला॥ पद्धदीछुद॥ जयनंदीश्रवरहीयजाना॥ ताकीपश्चिमदिशेमेमहानतहाअज
नगिरिवरस्यामंग॥ चौफेरगोलसमढोलरा॥ योजनचौरासीसरसजानउन्नतचौगिरदशशे
भमानचौरेदशवापी॥ चारजानवर्गकृतिलखयोजनप्रमान॥ अजलजोजनगरा॥ इकहजारअ
तिनिर्मलचंदकोएनाम॥ तिहिबीचपगेदधिमुखपहार॥ अतिस्वेतवर्णमहिमा॥ अपाए॥ शुग

वौवनमू

॥४॥

कोनमाहिरतिकरलसंत॥ तिनसवपरजिनगरुहक्षिवंत॥ अवंअंजनगिरकोसु निवखानऊपरजि
नमंदिरेशोभमान॥ सवसमवशरनरचनाअतूपातिहिमध्यविराजेजिनसरूपा॥ यद्यासनछवि
नीनजायसुरसुराधीशनितनमैआया॥ भूप्रतिभक्तिभरीपूजास्वाअबहुनृत्यकरैवाजेवजाय
तहोदेवीदेवनचैजुसंग॥ नवरसपरकाशकरैअभंग॥ अबहुवजैदुंभीगगनजोर॥ दिशछायरह्यो
यशब्दसोएजेजिनसागरजगजिहजजेजिनसुलरायकसमाज॥ आप्रानंदजलधिकोशशि
अ यमविमनकमलनकौरविसरूप॥ जयजन्मरोगकौसुधाधार॥ जयकैशंदहनकौमेघधार॥

सम्यकौवैनतेय॥ जयमोहजहरकौअमीयेय॥ जयअंतककौअंतकसमान॥ जयविषयवनी
दवमहान॥ जयज्ञानसंपदकेअधीशषातइदुनमै नितनाथशीश॥ प्रभुध्यानद्वारममहद्वय
सिकरवासओरकछुचाहनाहि॥ रथारुहकरोरुमासर्वज्ञदेव॥ करतारआपयपुहविरदलेवांनिजनि
त्वत्रयपरमदेवाकरजोरिजिनेश्वरकरतसेवा॥ दोहा॥ तुमसतासाताजगत्तमै सुखसाताकर
आताममऊपरकरोरुपासहितकारा॥ ईहीअर्थ॥ सोरठा॥ केवलज्ञानप्रकाश॥ स्वपरस
ज्ञायकसहा॥ अहतजिनेश्वरदासा॥ प्रासभरोसेवकतनी॥ ३॥ इत्याशीर्वाद॥

॥३॥

प्रथमीनंदीश्वरपीपपश्विमदिशप्रथमदधिसुखपूजामाहा॥ कुसुमलताछंद॥ नंदीश्वरकीपश्विम

दिशमेंस्यामवरनअंजनगिरजानाताकेपूरववीचवायिकास्वेतवरनदधिमुखगिरमानदशहज
 र्योजनउन्नतप्ररुढोलसमानगोलअभिरामताकेरुपरजिनगरहमतिमाअरुक्तिमसोहेगुणधाम
 राईद्वीनंदीधरदीपपश्चिमदिशप्रथमदधिमुखपर्वतपरजिनालयेभ्योनमभाअनभअनभपुष्प॥
 चालहिलीकी॥जजो जिनवरसुखदाईसुनिहोभविभाईजजो॥दिर॥पद्मद्रुकोउज्जलनललेकं
 वनभंगभराईमनवचकायलगायविनयसंयुजौ श्रीजिनराईअनमत्रिदोषनशाईसुनियोभविभाई
 जजो जिनपदसुखदाईनंदीधरपश्चिमअंजनगिरताकेपूरवभाईदधिमुखगिरपरजिनगरहसोह
 मूजतसुरपतिआईदेवबहुभक्तिवदाईजजो॥राईद्वीनंदीधरदीपपश्चिमदिशप्रथमदधिमुखजि
 नालयेभ्योनमः॥जल॥केशरअगरकपूरसंगमैबंदनगंधमिलाईत्रिभुवनपतिपदपूजरचायोभव
 आतापनशाईलहोनिजशीतलतार्जुनजो॥राईद्वीबंदन॥मुक्ताफलकेसुंजमनोहरसुरपतिचरण
 बढावै॥हमनिजशक्तिसमानशालिले॥जिनजजिपुएयवढावैसहीमनवांछितपावो॥नंदी० ज
 जो॥३॥ईद्वीअक्षत॥वरनवरनकेमुखसुगंधितकंचनशालभराईकामकरूरगरुननकौचर
 णजजो जिनराईसहीअयसंयतिपाईसुनिहो॥नंदी॥अजजो॥३॥ईद्वीपुष्प॥कैनीगोंजामोदकख
 जेतातेतुरतचनाईदोषसुधादुखदूरकरनकौवरननरेतचढाईजिनेश्वरभक्तिवढाईसुनिहो०

नंदी॥जजों॥॥॥उईं॥चक्र॥परमागमअनुकूलदीपले श्रीजिनमंदिरजादीचरणजत
 कोमोहतिमरविनशाईलई॥त्रिभुवनप्रभुताईसुनिहो॥नंदी॥जजों॥॥॥॥उईं॥दीपं॥दशवि
 द्यशुचिलेको॥उतमधूपवनाई॥पूजतश्रीअरुंतचरणको॥षसुविधिकर्मनशाई॥वरोशिवनारिसु
 हाई॥सुनिहो॥नंदी॥जजों॥॥॥॥उईं॥धूपं॥एला लोंगवदमधुहारे॥पिस्ताआदिमिलाई॥शिवक
 दायकदेवजिनेश्वर॥पूजतसुकवलहाई॥यहीउरनिश्वलताई॥सुनिहो॥नंदी॥जजों॥॥॥॥उईं॥फू
 जलचंदने॥प्रसूतलेनिवजसद्यवनाई॥दीपधूपफलद्रव्यमिलाकर॥अर्घवनावेभाई॥
 श्वरचरनचढाई॥सुनिहो॥नंदी॥जजों॥॥॥॥उईं॥अर्घी॥जयमाला॥देहा॥शतमुखशतसैन
 शारदशीशनवाया॥शारदजनकजिनेशपदबंधेंमनवचकाया॥॥पछडी॥बंद॥जयदीपअ

नोताकीपश्चिमदिशशोभमान॥तहेंअंजनगिरिपर्वतउतंग॥अतिगोलढोलस
 रताकीपूरुवदिशमेंसुजानदधिसुखगिरवापीवीचजाना॥योजनहुजारदशहैउतंगा॥अ
 लगोलदाधंग॥जंगलसाऊपरजिनवगेहुजानसोयेजनामौलवंमान

कुंचोपचहत्तरउरविचार॥तिहिवीचनीरचनाअनूपसवसमवशराशोभासल्ल्या
 आदविंवअतिशोभमानवसुप्राविहार्यशोभासमान॥पद्मासनछविवरणीनजाया

करेसुरशीशनाय॥ हरिशचीसहितपूजारचाय॥ बहुभक्तिसहितजिनगुणसुगाय॥ ५॥ निजज
 न्मसफलसुरकरेसोय॥ तुमचरेण॥ जजत॥ प्रतिमुदितहोय॥ धनिजीवनजिनकोजगमहार
 जोप्रभुकोदेखतनयनद्वार॥ दुमुमधन्यदेवअद्भुतसरूप॥ छविनिरखततस्मिनत्रिदशभू
 तवहृत्तिनेकीनीसहस्रआख्यकरजीभसहस्रवचविनयभाख्य॥ अवहुस्तुतीकरी॥ निजशीशना
 य॥ जानौनिजकौंधनिदेवराय॥ निजभक्तिसहितजिनजपेनामसोनिश्चयेपावैशुकलधाम॥ नम
 भुवीतरागछविनिरविकार॥ अटप्रागटअचेतनअंगसार॥ तोभीभक्तिजनकोसहजरूपदाय
 कदिवशिवसंपतिअनूप॥ जिमचिंतामणिनररतनपायसार॥ निजीववस्तुजगकेमहार॥ म
 नकल्मितसुखदातारसोय॥ त्योंसुखदायकजिनविवहोय॥ १॥ यहरागभवचनप्रमालाजान॥ भ
 विजीवलख्योपारसपुराण॥ सहनियतहोकीनोसुनीश॥ हसतिनकोनमनमतनमायशीश॥ २॥
 बहसुगुरुवचनजिनछविअनूप॥ वरदातासाधकतानरूप॥ भवभवंमेशकीज्योसहाय॥ ज्योसु
 खीजिनेअनितरहाय॥ ३॥ दोहा॥ दधिसुखजिनमंदिरतनी॥ पूरतग्रहजयमाल॥ जोवाचैमन
 लायकैसाकेभागविशाल॥ ३॥ उँद्रीअर्च॥ सोरठा॥ जन्मरोगअनिवारताकोदूरकरोप्रभू॥ आ
 योलुमदरवारंतुमसहायसबजगविवो॥ ४॥ इत्याशीर्वाद॥

नौवनपू
॥ ४३ ॥

श्रद्धीपयश्चिन्मदिशद्वितीपरतिकरधूजाभाह॥ दुरमुमलता छंद॥ नंदीश्वरपश्चिमअंजनगिरताकी
दिशमैजानावापीवीचविराजैदधिसुखमैदधिसुखगिरमुभगोलमस्तनताकेऊपरश्री
मंदिररत्नमईअरुतिमथानश्रीजिनविंवप्रठोतरइकसोमनवचक्रमवंदीसुखदान॥ छंद
श्रद्धीपयश्चिन्मदिशद्वितीपरतिकरदधिसुखजिनालयेभ्योनमः॥ अन्न॥ अन्न॥ अन्न॥
निभंगीछंद॥ शुचिसागरक्षीत्सीतगहरीनिर्मलनीरंसुरलोकैभरिकंचनकारीलषानिवारी

रत्नोकैमंदीश्वरपश्चिमअंजनगिरकेदक्षिणादधिसुखगिरसोहो॥ नापरजिनमंदिर
मंतपुरंदरजिनप्रतिमाअतिमनमोहो॥ उद्ग्रीनंदीश्वरद्वितीयश्चिन्मदिशद्वितीयदधिसुख
जिनालयेभ्योनमः॥ जल॥ एमलियागिरखंदनदाह्निकंदनकदलीनंदनसहितवसो॥ भवताप
वारनशिवसुखकारनजिनपद्मजिजिनपासवसोमंदीभार॥ उद्ग्रीचंदन॥ शशिकिरणसमा
तमहानामुक्ताफलसुरलावतहो॥ ह्मशक्तिसमानाशालिप्रधानाअत्ततपुनचदाव
अत्तत॥ दगमनैकौप्यारेगंधप्रचारसुवनवारयुष्ममहाजिनचरनचढावैभक्तिवदा
चावैसुकवगहामंदीअध॥ उद्ग्रीपुष्पा॥ कंचनकीथारीभरिसुखकारीविविधप्रकारीचरुलावो
एनचढावैभक्तिवदावैमभुगुणगावैशिवपाकैमंदीअध॥ उद्ग्रीचरु॥ चहुउज्जलजोतंतमघ

नंदीपकसों जिन पद पूजै ॥ अरि मोहन शवै जिन दरसावै केवल ज्ञान यती हूँ जैनंदी ॥ द्वावै दूरी दोष
कृष्णागार धूपंगंध अनूपंति हुं जगभूपं पूज करौ बसुकर्म जलावै जिन पद पावै ज्ञान जोति शिवना
रिवरो मंदी ॥ ७ ॥ उई धूप ॥ फल सरसनवीने पावन लीने त्रिभुवन पति पद भेट करौ उत्कृति नशि
जावै पुण्य वढावै कर्म कमसों शिवनारिवरो नंदी ॥ ८ ॥ उई फल ॥ वसुद्रव्य मिलावै जिन गुण गावै
अर्घवनावै भरि थारी ॥ जिन चरण चढावै भक्ति वढावै दिव सुख पावै भविभारी नंदी ॥ ९ ॥ उई अर्घी ॥
जय माला ॥ दोहा ॥ मुनि महंत कृषि राज सवै ध्यान धरै मन लाय ॥ सुर पति नर पति नाग पति चरण
ज जो मन लाय ॥ सर्व आस पूर ए करौ भरो सर्व हित साज ॥ हरो हमारी वेदना वीतराग महाराज
२ ॥ नोटक छंद ॥ जयवंत तुम्ही शिव लाय कहे ॥ सत संत न कौ शिव दाय कहे ॥ अघ कर्म अरी गणघाय
कहे ॥ निज संपत्ति लाय कदाय कहे ॥ विषयादिकें न हिराग भयो ॥ भर जोवन मां हिराग लयो ॥ प्रभु
अंतर जोति प्रकाश रही ॥ तजिने हृदि गंवर वृत्ति गही ॥ बल खंडर सा छुए मै तजि कै निग्रंथ दशावन मै
सजि कै ॥ निजरूप सुधी मन मै नजि कै ॥ अरि मोहन नौरन मै पजि कै ॥ शत्रिक घाति मरे छन मै लजि
कै ॥ प्रभु जी तलही तव ही सजि कै ॥ नभ मै सुरवाहन ॥ प्रावत है ॥ बहु दुंदुभिघोए खावत है ॥ धाज य
कारन की धुनि घाय रही ॥ रमजी तधुजा फहराय रही ॥ दश हंदि शसै सुर आवत है ॥ बहु दूर हितै

बौवनपू.

॥४४॥

रतावत है ॥ अउर हर्ष भरे गुणा गावत है ॥ सुर कामि निवीन वजावत है ॥ न च हूर सभा बरिखा
भुनि भक्ति प्रचारि सिखावत है ॥ सुश कशची मिलन त्य करै ॥ सब साज सजावत भृत्य भरे
मानहि जात कही तिन की ॥ अनि मेखल खेष्ट विअी जिन की ॥ फिर की जव लेत मलाघ्य वि
पमानहि जाय कही कवि सौ बल या कवि की दुम भादरौ ॥ मनु दामि निगोल मलापरौ ॥
ए सत्स रूप महान धरौ ॥ त ए थूल शरीर अकाश भरे ॥ त ए भै गति मंद प्रकाश करै ॥ त
ल प्रकाश करै ॥ हरि अद्भुत नाटक आप करै ॥ जिन की महिमा कहि नाहि परै ॥ यवन्त
रेव सही ॥ जिन की महिमानहि जाय कहै ॥ प्रभु मोउर साहिब सो नित ही ॥
सो नित ही ॥ मम विघ्न समूह नशो नित ही ॥ परसम्यक ज्ञान लसो नित ही ॥ १॥ सव सें निस्त्रह
त हो ॥ सच राग विरोध न लावत हो ॥ सव की सुनि मोन राखत हो ॥ तदि दीन दया ल कहावत हो ॥ २॥
यह अद्भुत वात वरी प्रभुजी ॥ जस वैल त्रिलोक वड़ी प्रभुजी ॥ भविके उर भक्ति वड़ी प्रभुजी ॥ सुख
कज डी प्रभुजी ॥ ३॥ य ह भक्ति महानिधि देहु हमै ॥ सत ज्ञान दया निधि देहु हमै ॥ जग
देव तुम्ही ॥ भव पाखतार सुटे वतुम्ही ॥ ४॥ दोहा ॥ करुना कर जिन राजजी ॥ अशरम
सहाया ॥ प्रज जिनेश्वर की सुनी ॥ सुम त्रिभुवन के साया ॥ ५॥ अर्थ ॥ सो रहा ॥ देहु स्वर्ग

नूपायहीरुपाप्रभु कीजिये। फिरनपसुंनवकृपासाआज्यअवदीजिये॥६॥ उँहीअर्थ॥ इत्य
शीर्वाद॥ ॥२८॥

॥अथश्रीनंदीश्वरदीपयश्विमदियास्तरीयदधिसुखपूजामाहा॥
कुसुमलताछंद॥ नंदीश्वरपश्विमदिशरजेस्यामवनअंजनगिरलाम॥ ताकेपश्विमदधिसुखसा
सेवापीवीचखेतप्रभिरामताकेकपश्वीजिनमंदिरप्रतिमाइकशतआठललाम॥ जिनकेचरण
कमलसुरपूजे॥ हसपूजतनिजघरवसनाम॥ उँहीनंदीश्वरदीपयश्विमदियास्तरीयदधिसुख
पर्वतपरजिनालयेभ्योनमः॥ अन्न० अन्न० पुष्प॥ चालहोलीकी॥ सुधीजिनपूजरखावे
यातेनिजसंपतिपावे॥ देह॥ कंचनकारीसेजलउत्तमभरिजिनमंदिरजावे॥ जन्मजरगदुखदूरक
रतकोंश्रीजिनचरनचढावे॥ हर्षअतिहिरदेलावे॥ याते० नंदीश्वरकीपश्विमदिशमेंअंजनग
रसुभरजेताकेपश्विमदधिसुखगिरपरजिनमंदिरछविछाजे॥ तहोन्निजभावलखावे॥ याते
उँहीनंदीश्वरदीपयश्विमदियास्तरीयदधिसुखजिनालयेभ्योनमः॥ जला॥ चंदनअरुकरपूर
मिलाकेकेशरसंगघसावे॥ जिनवरचरनजतभविजनजोभवआतापनशावे॥ यहीनिश्च
यउरल्यावो॥ याते० नंदीश्वर॥ उँहीचंदन॥ देवजीरसुखदासकमोदकाप्रसन्नतथोयवनाव
त्रिसुवनतिलकदिगंबरप्रभुकेचरनपूजचढावे॥ हृदयमेंजिनगुणगावे॥ याते० नंदीश्वर॥

उं ह्रीं अस्तं ॥ वरनवरनकैषु ष्यमनोहरं शुद्धसुगंधसुहृवैकामदाहनिरवारनकारन श्रीजि
राचढावैभक्तिमयत्तत्पकरावैपातैः अनंदी ॥ ॥ उं ह्रीं पुष्पं ॥ फेनी गुं जामोदक खाजे ताजितुर
वै ॥ दुधारोगनिरवारनकारन श्रीजिनचरनचढावो सही निश्चयपदयावो यातैः नंदी ॥

॥ कंचनमणिमयदोषश्च नोपमासुरसुरपतिवदुलावैरुमनिजशक्तिः समानदीप
जिनपूजरचावैस्वहितकरगुणागावैपातैः अनंदी ॥ ॥ उं ह्रीं दीपं ॥ दशविधिधूपसुगंधवना
महुवादित्रवजावैः कर्मदहनकैकाजरुनमोजिनपदधूपचढावो ॥ आठविधिकर्मनशावै
या अनंदी ॥ ॥ उं ह्रीं धूपं ॥ लोगवदामछुहरापिस्ता ॥ एला ॥ अदिमगावो ॥ शिवफलका
क्तिभावसौ ॥ फलजिनचरनचढावो ॥ मुक्तिफलक्रमसैपावैपातैः अनंदी ॥ ॥ उं ह्रीं फलं ॥

द्रव्यमिलयगायगुणाष्टतमार्घवनावो ॥ मुक्तिमहाअभिरामधामकोकारणत्वरण
सदाखिररूपरहावोपातैः अनंदी ॥ ॥ उं ह्रीं अर्घं ॥ जयमाला ॥ दोहा ॥ घातिकर्मघाताप्रभृष्यायो
लज्जाना ॥ जिनकैचरणसरोजरजहृदयवसो हितदाना ॥ पूजनकरजिनराजर्की ॥ उरसैभक्ति
विशालाभारहृनिकसेसिद्धमिसाबहसुनियेजयमाला ॥ तोटकछंद ॥ जयश्रीजिनराजविरा
जितहोसमवश्रुतमैष्टविष्टजतैस्तेष्टविष्टरत्नजडावमहासुरपूजतश्रीजिनराजकहा ॥

सुखपरश्रीजिनपग्रधरेषुभुराजतचोसठचमरदरेषिरघ्नफिरैत्रयजोतिमहाशशिस्लज्जो
तिष्ठिपावलहा॥ यमभमेंसुरहुंदुभिघोरवजैवरसैवहुपुष्पसुगंधफवैधुनिदिव्यअनहराअर
ही॥ जिहि कीउपमानहिजायकही॥ सवजीवअजीवअभेदगनौअप्ररुधर्मअधर्मसरूपभनो
सवकालअकालप्रकाशकियोषटद्रव्यद्रहोभविजानिलियोधजीवअकाशमिलोकतनौअ
रुधर्मअधर्मजुद्धव्यगनौ॥ इनिचारिनिकेपरदेशसही॥ सममध्यअसंखप्रदेशसही॥ भनभसव
अनंतपरदेशकियो॥ अरुपुजलद्रव्यत्रिभेदभयो॥ महसंखअसंखअनंतकहा॥ भविजीवन
भैसतभावगहा॥ दुपुनिकालअणसवभिन्नकही॥ तिसतेदसकौनहिकायकही॥ सवजानिअ
संख्यप्रमाणअणुपलनिअयकालजिनंदभनौ॥ अवतारत्रिकालअनंतप्रभावरतावभवि
व्यतअोरगना॥ षटद्रव्यपसारनिलोकविवैषरुवरणानआपजिनंदअखै॥ दशहृदिशओर
अलोकसही॥ महिदूसरिद्रव्यजिनेशकही॥ इनकीसरथाभविजीवकैरै॥ दृढसम्यकसौउरमा
हृधरेधे॥ जिनराजहृपालहृपाकरिखे॥ दुखजनमजरामरणोहरिये॥ जयवंतजिनेअधर्मसदा
उरमाहिरैसतमर्मसदा॥ दोहा॥ अशरत्नशरत्नसहायतुमशरत्नागतसुखदायहीनजानि
कीजेदया॥ तुमदयालजिनराय॥ १॥ अर्च॥ दोहा॥ हरोसर्वअघसाजकरोराखनिजभावकी

बौवनपू-
॥ ४६ ॥

मरोहमारोकाज॥ यह विनती सुनि लीजिये ॥ २ ॥ इत्यश्रीर्वादः ॥ ३७ ॥ ॥ अथ नंदी प्रवृत्तिः ॥
यमश्चिद्विद्वत्तुल्यदधिमुखपर्वतपरजिनालयपूजाग्रहः ॥ कुसुमलतावृद्धः ॥ नंदीमुखीपद्मि-
दिशमें अंजनगिर्यतिस्वामसरूपताकी उत्तरदिशमें गजेदधिसुखदधिसमस्वेतसरूपदशह-
रयोजनको अंचोगोलबोलसमशोभ अतृप्ताप अरुतिमजिनमंदिरजजतसुरासुरतिहुंज-
॥ २ ॥ उद्दीनंदीभ्रूदोपपद्मिदशचतुर्गतिकरजिनालये नमः ॥ अथ ॥ अथ ॥ पुष्प-
बालछंदाजलउजालशीतललीजि॥ जिनवरकेचरणजजीजेस्वजन्मजरदुखनाशो॥ निजशांतसु-
नपरकाशो नंदीभ्रूयश्चिमजानो॥ अंजनकी उत्तमांनो॥ दधिसुखपरजिनगरहसो हो॥ सुरअसुर-
बेमनमोहो॥ उद्दीनंदीभ्रूदोपपद्मिदशचतुर्गदधिसुखजिनालये नमः ॥ जल॥ चंदन-
लियागारसारघनसारसुगंधअपारभवातापविनाशनकाजै॥ पूजेभविजनजिनराजे नंदी ॥ २ ॥
उद्दीचंदन॥ सिततंदुलघोयधरीजै॥ अतिउत्तमथालभरीजै॥ अस्ततसो जिनपदपूजो॥ अस्तयपदको-
पतिहूजै नंदी ॥ ३ ॥ उद्दीअचंत॥ अशरीरअरीदुखकारी॥ त्रयलोककियेवशभारी॥ तिहिअरिके-
जीतनकाजै॥ फूलनसौजजो जिनराजे नंदी ॥ उद्दीपुष्प॥ यहकर्मअसाताभारी॥ सवजीवनको-
खकारी॥ ताके निखारनकाजै चरुसौजजिहो जिनराजे नंदी ॥ उद्दीचंत॥ यहमोहमहातमभारी॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

जगमाहिष्ठयोऽनिवारी॥ तिहिदूकरणकैकाजै॥ दीपकसोंजजिजिनराजै॥ नंदी॥ ७८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
कर्मवडेदुखकारी॥ सकजीवकरैभयनारी॥ विधिगर्वजलावनकाजै॥ धरिधूपजजै॥ जिनराजै॥ नंदी॥ ७९॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
फलउत्तमजेजगसारी॥ भरिसुवरणभाजनमाही॥ जिनवरैकेचरणचढावै॥ सोभयमहा
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
फलपाकै॥ नंदी॥ ८०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
पूजरचावो॥ यातैपंचमगतिपावो॥ नंदी॥ ८१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
भोदारिकदेहा॥ जिनकेपदपंकजजै॥ उरमेंधारिसनेहा॥ दोहा॥ नंदी॥ ८२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
रकेभाला॥ जिनमंदिरपूजाभई॥ ब्रवसुनियेजयमाला॥ जयोजगमेंजिनराजमत्तानजयोप्रगत्यो
जवकेवलज्ञाना॥ जयोसवइंद्रसुरासुरसंग॥ जयोजयकारकरंतंभंग॥ वजैवहुहुंदुहुं॥ भिजोरअका
श॥ दशोंदिशाष्टापरस्यो॥ बहुसोअनेकसुवाचिनको॥ बहुसोरातथाजयकारमहाचंद्र॥ ओराअसु
चारितरूपमही॥ रनरंगप्रभू॥ असस्तायअरी॥ बहुसंगमहा॥ महाअरिच्यारहनेवलजोर॥ इसीजयप्रा
पतिको॥ यरुशोर॥ ३॥ सभादशदोयविषैं॥ जिनराजकरैउपदेशमहाचषकाज॥ सबीजगअतूकेहि
तकाज॥ रिवै॥ जिनकीधुनि॥ दिव्यअवाजा॥ सुनैभविजीवलहैसतज्ञान॥ जगेउरमाहि॥ सुभेदविज्ञान
धरेखभावसुधी॥ लघुमेवा॥ करैखतसंजमद्यतिविशेष॥ ५॥ तजैभविजीवपरिग्रहभार॥ सजैजिनरूप

बौवनपू-

॥ ४७ ॥

करावैमननदी॥७॥ उद्दीधू॥ कल्पवृक्षकेउतमफललेउतमपूजरचावै॥ नवरसभावप्रगट
करैकोसुरपतिचत्यकरावै॥ हदैवहुभक्तिवटावै॥ मननदी॥ ८॥ उद्दीधू॥ जलफलद्रव्यमि
त्रायभावसौ॥ पूजनमैमनलावै॥ सुरसुरपतिजिनपतिपदपूजेहुहुभिदेववजावै॥ कुसुमवरवा
रवावै॥ मननदी॥ ९॥ उद्दीधू॥ अर्घा॥ जयपाल॥ दोहा॥ सुएतिनरपसिनागयति॥ खगपतिपुरुषप्र
ण॥ पूजेजिनवरचरणकौ॥ निजहितआनंदमान॥ १०॥ पृच्छीछुद॥ जयजयजिनराजदयानिधा
॥ भवसागरसारणपोतजान॥ जयआपतरे॥ भविजीवतार॥ द्योतार॥ एतार॥ एजिनेशसार॥ ११॥
जीवनकौ॥ कल्याणरूप॥ शिवमगकौ॥ वतलायो॥ अनूपयाही॥ सेंकरुना॥ निधिजिनेश॥ जिनकेपद
तसुरसुरेश॥ भवकूपपडे॥ जेजगतजीवदुखसहितकालवी॥ त्योअतीवतिनकोसु
शेषाथोपतितउधारकसौ॥ जिनेश॥ १२॥ ॥ १३॥ ॥ १४॥ ॥ १५॥ ॥ १६॥ ॥ १७॥ ॥ १८॥ ॥ १९॥ ॥ २०॥
सेअशरनकोशरनरूप॥ तुमहीसहायसोजगतभूसा॥ २१॥ ॥ २२॥ ॥ २३॥ ॥ २४॥ ॥ २५॥ ॥ २६॥ ॥ २७॥ ॥ २८॥ ॥ २९॥ ॥ ३०॥
नकोकोईशरननाहि॥ तिनकोविनकारतसुखदनाता॥ भुदीनबंधुदमही॥ विख्याता॥ ३१॥
प्ररिकर्मबेशकपै॥ तिलिमेंसुरअसुरशेषासो॥ तुमनेजीत्योहजिनेश॥ यातेंहोअतुलवली
॥ ३२॥ ॥ ३३॥ ॥ ३४॥ ॥ ३५॥ ॥ ३६॥ ॥ ३७॥ ॥ ३८॥ ॥ ३९॥ ॥ ४०॥ ॥ ४१॥ ॥ ४२॥ ॥ ४३॥ ॥ ४४॥ ॥ ४५॥ ॥ ४६॥ ॥ ४७॥ ॥ ४८॥ ॥ ४९॥ ॥ ५०॥

ख अनंत भोग्यो विशाला ॥ सव इयन की परजाय सारा ॥ हो गई तया जो हो न हारा ॥ तिन सव कौं जानो
 समय माहि ॥ यौ ज्ञान अनंत तो तुम्ही माहि ॥ पात्रय काल तेने सव इय रूप ॥ इक समय माहि देखे ॥ अनंत
 पा ॥ यौ दर्शन देव अनंत था ॥ जिन के पर देव दौ बार बार ॥ सव जीवन के गुण दर्श जान ॥ कमवती प्रगट
 सत्य ज्ञान ॥ तुम युग पत जानौ लखो सारा ॥ यहु लोको तर माहि मा अपारा ॥ प्रभु तुम गुण मरि मा अप
 गम सोय ॥ रुम पर कै सैं निरवाह होय ॥ यौ कहत वडैरु ॥ पिरा जे देव ॥ भविजन कौं सुख देवै स्वमेव ॥ १ ॥ जो
 वडे वीर नहि लहे पा ॥ तो रंक जीव की ब्यास म्हा ॥ पै तुम समर थदा ता दयाला ॥ सव को फल द्यौ तिहि
 योग लाल ॥ २ ॥ तुम पद सरोज की सेव देव ॥ भविजन कौं सुख देवै स्वमेव ॥ यहु प्रभु त शक्ति ॥ अनंत रूप ॥
 तुम विन नहि ॥ अत लहै ॥ अनूप ॥ ३ ॥ तुम पद कौं वै दौ बार बार ॥ ससार जलधि से करो पार ॥ तुम सव दे
 वन के देव देव ॥ कर जो रिति नै श्वर ॥ कत सेव ॥ ४ ॥ दोहा ॥ सुपति नयति नाग पति ॥ तुम सव के पति
 देव ॥ अरज जिने श्वर की सुनौ ॥ देहु सुगुन सव भेव ॥ ५ ॥ अर्थ ॥ सोरठा ॥ तुम भव जलधि जहा जो तारन त
 रन सही प्रभु ॥ अरज सुनौ महारज ॥ माकू भव दधिता रिये ॥ ६ ॥ इत्यादी वीदा ॥ ॥ २२ ॥ ॥ अरु
 श्री नंदी प्रदीप ॥ यंत्र दिव्य द्वितीय नवैकर ॥ पञ्चमाला ॥ ॥ तुलसीदास ॥ अष्टम दीप दिशा पश्चि
 म भें ॥ अंजन गिर के पूरव सारा ॥ दूजे कौन वापि का माही ॥ रतिकर परवत न आका ॥ ढोल समान गोल

बौवनपू
॥ ४८ ॥

तरफां जो जनम सहस ऊर्धता सार ता पर श्री जिन मंदिर सोही जजत सुरा सुर अष्ट प्रकार ॥ उही न
मय ध्वि म दिश द्विती चरित कर लक्ष्मि न लये भो नमः ॥ अत्र न अत्र न ॥ पुष्प ॥ गीता
॥ शुचि गंध मिष्ट महान उजाल नीर म निका री भरो सुर लोक पति अरु असुर पति जिन राज क
यन पौरो वर ही प अष्ट म दिशा पश्चिम द्वितीय रतिकरा जही ॥ जिन भवन ता पर देव पूजे
मही ॥ २ ॥ उही नंदी श्वर ही पयश्चिम दिश द्विती पुर तिकरा जिना लये भो नमः ॥ जल ॥ १ ॥ घन शाल क
ली शाल मिश्रित दशो दिश म ह का बही भव ता पनाशन हेत सुर मति जजत जिन सुख पावही ॥ २ ॥
॥ उही चंदन ॥ सुख दास अरु क मो द त दुख सर स उजाल धो इयो ॥ जिन चरन पूजन काज अक्षत

लस जो ईयो वर ॥ ३ ॥ उही अक्षत ॥ सुर लोक केशु चिंगंध पूरित कुसुम सुर पति लावही ॥ त्रैलो
विजयी पंच सर संकर त पूज स्वावही ॥ ४ ॥ उही पुष्प ॥ पकवान नाना भाति ताजे मो द का दिव
ईयो दुख तु धाना शक सुर अ सुर नित चरन मा ल्विटा ईयो वर ॥ ५ ॥ उही चक्र ॥ वर ही पमणि मय
विनाश क सुर अ सुर नित लावही ॥ त्रैलोक्य पै नेशी अरु त प्रभु के चरन मा हि चटावही ॥ ६ ॥ उ
प ॥ ६ ॥ दश गंध सार सुगंध दश दिश होय धूप म हान हो ॥ जिन चरन पूजित अ सुर सुर पति
खहित दान हो वर ॥ ७ ॥ उही धूप ॥ फल सार मिष्ट विशाल म्बु चिही स्वादिष्ट मिष्ट सुल्लावही

॥ ४८ ॥

रवानकारणभयजननजिनराजचरणचढ़ावही॥वरदा॥ उही फले॥ जलगंधअक्षतपुष्पनेव
जरीपथूपफलाचली॥ जिनराजचरणचढ़ायपाके॥ भयजिनगुणआवली॥ वर॥ ८॥ उहीबोधज
ममाल॥ दोहा॥ अंतरवाहकेसवैजाहरशत्रुअनेक॥ तिनसवमै॥ जिनराजजी॥ राखोनिजहित
टेक॥ १॥ पासवासकी॥ आसउवासायही॥ अरदासा॥ परमजिनेश्वरदेवतुमा॥ मैहंजिनवरदास
पदहीछिदा॥ जयजयअरहंतमहंतदेव॥ जयचरननकी॥ सुरकारतसेवतुमना॥ मजपतसुलोकया
मानप्रविवेकी॥ पशुभीलहेनामा॥ शैतोभक्तिवतन॥ भव्यजीव॥ क्योंनहीलहे॥ शिवसुखअतीवाअरहं
तनामकोअर्थसारा॥ याकेविवरणसुखदायसार॥ इसअहंघातुको॥ पूज्यअर्थसा॥ याकेअरहंत
पदनही॥ व्यर्थजगपूज्यपुरुषकी॥ विनयसेव॥ सुखदायकसेवकको॥ स्वमेवा॥ अअप्रतर॥ अरिहरि
करिलईरूखिअरहंतनामयातैं॥ असिष्ठ॥ निअयसुदृष्टिकरि॥ कर्मएवा॥ परमागममैयहकि॥ योभेव
॥ ज्योहोअपशिबसुखससुखा॥ औरनकोदिवा॥ शिवसुखअनूप॥ तुमसर्वसुखी॥ सुखदेवदान॥
यातैंतुमसुखदायकममाण॥ भजा॥ आपयाचना॥ करैकोयसो॥ औरनको॥ क्यादेयसोया॥ तुमअप्रजा
वीकपथयति॥ अनूपयाहीतैंतुमदातारूप॥ द्यलोकीकसपदानशेसोया॥ ताकोननिरतरदान
दोया॥ प्रभुतुमसेपति॥ अक्षयअनंत॥ याहीतैंतुमदानीमहंता॥ लोकीकरजसवविनशिजाया

जीवकौंईअघायलुमअलौकीकरजाधिराजजगमाहिधन्यमभुतमसमाज॥वहिरंगर
 कौनहीपार॥तौअंतरंगकोकहेसार॥तिसयरभीतुममभुनिरविकार॥जगधन्यवीतरागीअपार
 ध॥विनक्रीधमोहअरिलयोमार॥विनलोभसयदागहीसार॥विनछेयदुखननकडार॥विनरागसु
 देयतार॥१७॥यहअहुतमहिमाअप्रकथदेव॥काहिकोनसकैजगमाहिमेव॥इत्यादि
 न॥अभुप्रउपगारैवचप्रमाण॥१८॥जिनराजवृत्तिनरसुखदतार॥जिहधारिभव्यजनभयेपार॥
 आगौंभीमविधैरसोय॥सोसवनिश्चैभवपारहोय॥१९॥यातैमैआयोगरजहार॥हेरुपासिंधुस
 रतार॥मनवचनकायसूकंस्सेवभवपारजिनेश्वरदेहुदेव॥२०॥दोहा॥वसुवि
 सुविधिभविजनकाज॥वसुविधिविजयीदेवकोचरतजजृहितसाज॥२१॥अधी॥सोरा॥वीतरा
 गमहार॥जनीतरागताकाजमै॥शिवसुखपावनआज॥पूजपदमनलायकै॥२२॥सुख्य॥॥३३॥
 अथनंदीश्वरदीपपुष्पिनादिशालतीयरतिकरभूजासाह॥सुसुमलताछंद॥नंदीश्वरवरदीपआ
 तांकीपश्चिमदिशमेजान॥अंजननगिरएवतहेताकीदक्षिणचापीकौनप्रमाण॥सुरसुरेशवहा
 चावैरुमनिजरहपूजै॥रितदान॥रतिकरगिरकैऊपरजिनगरुजिनवरविवअरुतिमजान॥
 दूनीनंदीश्वरदीपपुष्पिनादिशालतीयरतिकरगिरएवतपरशिवकूटजिनमंदिर॥अननभः॥अनन॥

नमः ॥ अथ ॥ ध्यायेत् ॥ जिनं देवेरे पूजवा सुरेश आवते ॥ प्रसंख्य देव भक्ति नरे शी शानावते ॥
 ॥ जल ऊजल सुरलो क के काम ए मय भाजन धार ॥ जिन पद आर्गो धार देता पर जिन मंदिर जौ दायक शि
 व कल्याण नंदी श्वर पश्चिम दिश ॥ रतिक रत्न तिय महान ता पर जिन मंदिर जौ दायक शिव कल्याण न
 जिनं देव ॥ ईश नंदी श्वर दीप वस्त्रि मृदित ती यर तिरु लिंग लक्ष्मि नमः ॥ जल ॥ चंदन गंध दशो
 दिश ॥ कैलिर हो भूर पूरा ता सों जिन वर पद जै सुरग एर हृत् जूजी ॥ जिन ॥ ईश नंदी श्वर तया
 ईर लोक को सुर ला वै भरि या ॥ जिन वर पद पूजा करे वदुरि न वा वै बाल जी ॥ जिन ॥ ईश नंदी श्वर तया
 रि जात मंदार के पुष्प सुगंध अ पार ॥ काम दहन के कार ए ॥ पूजौ जिन पद सा र्जौ ॥ जिन ॥ ईश नंदी श्वर
 सुर यादव के चरु महा ॥ षट् स पूरित सारा देव जिन श्वर चरु न को ॥ पूजे हर्ष अपार जी ॥ जिन ॥ ईश नंदी श्वर
 जाति वंत मणि दी पल्लव के अरती देव मोह म हात मदन न को ॥ अजे जिन श्वर देव जी ॥ जिन ॥ ईश नंदी श्वर
 तिसुगंधन भवित्तो र ही दिशा प्रतिष्ठाया ॥ पूजे देव जिन शको ऐसी धूप चढाय जी ॥ जिन ॥ ईश नंदी श्वर
 उक्त मफल सु रत्न के ॥ मिष्ट महार स पूरे देव चढा वै भक्तिसो ॥ जिन वर चरु लज्ज जी ॥ जिन ॥ ईश नंदी श्वर
 ईश नंदी श्वर ॥ जल फल आठों द्रव्य ले प्रार्थव नाय अनूप ॥ बल जिन श्वर के जौ ॥ सवे असुर सुर भूपा जि
 नंदी ॥ ईश नंदी श्वर ॥ विद्या धर ॥ असि चक्र धर ॥ अरु त्रिशूल धर देव ॥ सर्व स्वग ए धर देव

की करै सुरासुरसेवारे ॥ पृथ्वी छंद ॥ जयवीरधीरजयवंत देवा विधिअरि कराल को काल एव जय सं
तम हंत न कौं रूपाल ॥ जय दुष्ट मोह कौं हनन काल ॥ जय चारित की रण धरा वीचिस मनु खदेखा
रि मोहनी चतकाल वीर भेष धारा ॥ जिहि देखत मोह मुक्ति नार ॥ तन धार दिगंबर कच वसार ॥ अ
रु वीतरागता मुकट धारा ॥ सत संजम चाप ॥ अनूप जाना ॥ सवरचित पूरण संवर महान ॥ कर ध्यान रुपा
ए ॥ अरोक धारा ॥ अथ गुप्ति रूपति ॥ रत्न लधार ॥ अरु उपशम रूप ॥ अनी कराला विधि उद
न न भाल ॥ अदश धर्म चक्र की धार ॥ देखा सव क्रमेश ॥ अनु भागे विशेषा ॥ न्यय रत्न शक्ति सह मा ल शोय
रुन पगज परह सवार ॥ होया ॥ अथ सहाय ॥ आप ॥ अरि गण मकारा ॥ अरि मोह वली ॥ नीह कारा महु अ
रि समूह कै मध्य सा ॥ छीनी ॥ तुम नै ॥ अरि मोह मारा ॥ छी ॥ फिर दूजा ॥ सण मै ल गाता ॥ अरि सिशु लक्ष्म्या न को
रि प्रलक्ष्म ॥ अरि तीन घातिया लये ॥ वीन मव ॥ ओर कर्म भागे ॥ अद्री न ॥ अथ पाय ॥ जिनि श्वर देव सोय ॥ त्रि लो
पती न प ॥ ए बहाय ॥ सव चतुर ॥ निकार् ॥ देव आया ॥ तुम पद कौं पूजै ॥ शी ॥ शानाया ॥ अथ प्रभु समो श
सा ॥ अचतुरा न न ॥ आसन मझ धारा ॥ मणि सिंह पीठ पर ॥ अंतरी ॥ नाराज सुर ॥ सुनिकं पति ॥ स ॥ धन्य छ
श ॥ अति तेज वंता ॥ शिर सूर ॥ प्रभा कोटिक लज ॥ व ॥ अरु शोक तना ॥ चारों प्रसंग ॥ सुर ॥ दुभिन भमै ॥ जोर
होया ॥ अरु कुसुम ॥ दृष्टि सुर ॥ करै सोया ॥ अ ॥ जिन की धुनि दिव्य ॥ खिरे ॥ अगाध ॥ सव तत्व प्रकाश

* अरु चौ सद चामर दिव्य सार ॥ सुरा लख र्ष हरे ॥ अपार ॥ जहौ रहस्य अशोक दिपे ॥ उतंग ॥

धाजिनराजशरीरप्रभाअनूपाप्रतिचक्राकारदिव्यैसस्तपाश्चइत्यादिअतुलसंपत्तिमहानजिंहदेख
 तभक्विजनयायनानातुमपदसरोजकोंवारवारवाहमनमतशीशकरधारधारश्चविधिविघ्नमूलतरु
 जारजारान्विरसंचितविधिवलदारदारउरप्रर्जजिनेश्वरधारधारहृदयकारवभोदधितारतारश्च
 हाइसअसारसंसारमोहरनतुमारीदेवासोप्रभुहमकोंदीजियेकरोरूपायहदेवाएडिहोअंध
 सोरठातुमअनाथकेनाथभैअनाथचिरकालतोंस्वहितनमाऊमाथममउरआसभरोप्रभूएहापुष्प
 इति॥ ॥३४॥ ॥अथययम्प्रिमदिशचतुर्थरतिकरपूजामाह॥कुसुमलताधरद॥अष्टमदीपरि
 शापश्विममोअंजननगिरकेदक्षिणभागमापीक्षितियकौनमेंचोथोरतिकरएवर्षतअतुलसुभाग
 सुवरणचर्णसहसयोजनकोंउन्नतगोलढोलसमलागतापरश्रीजिनमंदिरप्रतिमापूजतहु
 रसुरेशवडभाग॥॥३५॥नंदीश्वरदीपपुष्पिमदिसचतुर्थरतिकरएवर्षतपरसिद्धकूटजिनमंदिर
 भ्योनमः॥अन्न॥अन्न॥पुष्पाजोगीरता॥गंगाजलसमनीरअनोपमकंचनकारीभरि
 ये॥जन्मजरदुखरहितजिनेश्वरएदताधारकरियो॥अष्टमदीपदिशायश्विममेचोथोरतिकर
 भार्गवापरश्रीजिनभवनअच्छत्रिमसुरपतिपूजतआई॥३६॥नंदीश्वरदीपपुष्पिमदिसचतुर्थ
 रतिकरएवर्षतपरसिद्धकूटजिनमंदिरभ्योनमः॥जल॥मलियागिरघनसारसुचंदनकेशरंगमि

वैवनपू.
॥५२॥

लोवो॥भवआतापरहितजिनवरकेचरनेनपूजरचावो॥अष्टम॥२॥उद्दीगंधं॥देवजीरसुखदा
कमोदकअक्षतस्वत्तकरीजे॥अक्षयपदकेईशजिनेष्वरचरननपुंजधरीजे॥अ०॥उद्दीअक्षत
रनभूकेफूलमनोहरनिरदोषेसुरलावैकामराहदाहकजिनवरकेचरणपूजगुणगावैअ०
॥उद्दीगुंधं॥फेंनीगोंजामोदकखांजेलाडुआदिवनावैदोषअठारहरहितप्रभूकेभरनन
प्रग्रचढावैअष्टम॥उद्दीचक्रं॥तमहरजोतिप्रकाशीदीपकरत्नमईसुरलावैकेवलज्ञानध
जिनपतिकेचरणपूजहर्षवैअष्टम॥उद्दीदीपं॥दशविधिधूपसुगंधमईकरलेजिनमंदि
आवैअपरमशुक्लध्यानो॥जिनवरकेचरननमाहिचढावैअष्टम॥३॥उद्दीभूयं॥लौंगलायची
स्ताकिसमिसखारिकलावै॥मुक्तिमहाफलदायकप्रभुकेचरणपूजिगुणगावो॥अष्टम॥उद्दी
फलं॥जलचंदनअक्षतकुसुमावल्लिनेवजदीपकसारो॥धूपफलावलिअर्घवनाक॥जिनवरपद
तरधारोअष्टम॥४॥उद्दीअर्घ्यं॥जयमाल॥दोहा॥अरिजरहसिनिवारिकेवहसिलियोनिज
यानममउरवासकरोप्रभूभरदायकभगवाना॥पृच्छीछंद॥जयकेवलज्ञानधनीजिनेशतु
रणकमलसैवेंसुरेश॥जयसमवशरणकेमध्यसारो॥उपदेशदियोदसुधाधारो॥जयजी
प्रजीवसुनित्यभेदाहरसायोचउसवअनुयोगवेदाजयपुरुषशलाकासाठतीन॥तिनकोसवभेद

॥५२॥

द्योप्रवीन ॥ चौबीशी शतीर्थकर प्रथम जान ॥ दशचक्रवती दूजे महान प्रति हरि वलि हरि नव प्रमाण ॥ स
 नत्रै सठ पुरुष कहै पुरान ॥ इक सो उन हत स्त्री व सो ॥ सो मुक्ति पात्र जग माहि होय ॥ जिन मात तात
 प्ररु काम देव ॥ हर कुल कर नारद जी ॥ डिए वधाये सर्व मुक्तिके पात्र जान ॥ कछु तदभव कछु भव धरम
 हान भै मुक्ति रूप वंदौ ॥ त्रिकाल भुमे रोका दो जगत जाल ॥ दिव दसि ए इंद्र शची महान ॥ तिन लो
 कपाल लोकांत जान ॥ अर सारथ सिद्ध देव सा ॥ एक भव तारी उर विचार ॥ जिन मात तात जिन
 राज आया ॥ हलि हरि चक्री पूरन प्रताप ॥ अरु भोग भूमि याजी व जान ॥ इन के मल मूत्र नही प्रमाण ॥ १
 जय शंकर ॥ जिन तप करै साग ॥ दश पूर्व द्वाका दश अंगे ॥ धाग लखि अवलाग ॥ एको भूष होया चिरका
 ल भ्रम ए जग कै ॥ सो या प्रभव नारद ब्रह्मचारी ॥ अया ॥ उर क्रोध मान माया सु साग ॥ शंकर नारद के मा
 त तात ॥ इन की उर धग ॥ तिजग दिखात ॥ बच क्रीनर उर ध ॥ अधौ लोका ॥ निज कृति अनुसार फलेनु
 यो कछु त्या दिव हुत वर्णन ॥ अनूप उपदेश ॥ किं योत्रै लोक भू ॥ १॥ सो मन मै तिखो सदा काल ॥ जव लो
 न ल होत्रै लोक भाल ॥ मन वचन काय कर कंसे वा ॥ य हलाम जिनेश्वर देव देया ॥ २॥ देहा ॥ चौथार
 तिक रगिरतनी ॥ पूरन यह जय माल ॥ जो नर वौ चै भाव सो सा के भाग विशाल ॥ ३॥ अर्थ ॥ सो रा ॥
 जिन वर विं व महान ॥ कृति म ॥ अ कृति म सबै ॥ देहु हमें कल्यान ॥ म दूमन वच काय को ॥ ४॥ इति ॥ ३५

५ न ॥ ३५ ॥ अर्थ ॥ का कहे जात ॥ हरि प्रति हरि नारद महा देव ॥ घर जाय ॥ अधोगति नियम एह ॥ वलि अनन गुल कुल मात तात ॥

अथ नंदी चरदीपयश्चिन्मदिशं चमरति करणं जाभाह ॥ दुसुमलतां द्युद ॥ नंदी चरदीप आठमौ ॥ प
 श्चिमदिशं ज्ञानगिरिजानुसाके पश्चिमवापीराजैताके प्रथमकौ नमैमाना एतिकरगिरिपंचमकंचनम
 यं ऊचो योजन सहस्रमा एतापरजिनमंदिरजिनप्रतिमा अर्घ्यचढाय कस्तं मैध्याना ॥ उद्दीनं दी
 रदीपयश्चिमरतिकरजिनाच्छयेभ्योनमः ॥ अमनः अमनः ॥ सुदशेष्टदः ॥ सुरनदीजलनि
 ललायकौ कनकभृगु अतू पभरायकौ भनमदाह निवाहन हेतुसो धाराजिन पदप्रगु सुदेत सेसरस
 अष्टमदीप सुहावनौ भासपश्चिमदिशमनभावनौ सरसा ॥ गिरिसुमंचम
 रसेहृदी ॥ उद्दीनं दी श्रद्धोपयश्चिमदिशं चमरति करणं चतुर्थमंदिरं भ्योनमः ॥ अलं
 मलयचंदनकेसरडारिकौ भक्तिभावविवियोगसम्हारिकौ कर्मबंधनिवारणकाजजी ॥ भव्यपूजतप
 जिनराजजी ॥ सरसः ॥ उद्दीचंदनं ॥ कठिनशुचिसमस्वेतसुहावनौ ॥ प्रमल अक्षतसत्त्वप्रभावने
 चुरमुण्यवढावन हेतुसो ॥ जिनचरन वसुदेतसो सरसः ॥ उद्दी अक्षतं ॥ सुरमही सुहकी कुसुमाव
 त्तिहिसुगंध अमै प्रमरावली ॥ जिनचरन लखिदृगहरषात सेजतमन्मथजरजजातके ॥ उद्दी
 पुष्प ॥ सरसमोदिक आदिवना ईणस्वरु कनकमयया लभराई ए ॥ जायजिन गरुजिन वरपूजिये
 भगतिवंतमुदित उररुजिने ॥ सरसः ॥ उद्दी चरु ॥ कनकमणिमय सुंदर जोइये ॥ दीप प्रतिदुति

वंतसुजोर्दयोविकटमोहमहातमनाशने॥मूर्जिजिनपदज्ञानप्रकाशने॥सरबाधोर्द्वीदीपं॥अति
सुगंधसुधूपवनाईयोमुदितमनजिनमंदिरजाईयोत्तरणपूजितभविजिनराजके॥हृदयभक्तिभरेसु
रसाजकेसरसका॥उर्द्वीधूपं॥ परमपावनफलभरिथारहो॥अमरपतिसुरसंगअपारलैचरणपूज
तश्च्रीजिनराजकेसरणभवदधिसाजसमाजके॥सरसबाध॥उर्द्वीफल॥जलफलादिकद्रव्यमिलाइ
कीरतनसुवरनथालभरायके॥अतिशचीयतिभक्तिवढायके॥मजतजिनपदअर्घवढायके॥सखे
उर्द्वीअर्घ॥जयमाल॥लेहा॥ विधिअरिभंजनपरमविधिविधप्रकारवताय॥सोजिनराजजयोस
दासममउरवसियोआयार॥छंदमोतिपादम॥ जयोजगमेंजिनदेवमहानजयोजिनकोउपगारम
हानषाचीपतिपायपरोनितआयसदाप्रभुजीममहेहुसहाय॥अह्योसतधर्मदयाउपदेश॥अयोजग
जीवसुथानविशेष॥चतुर्दशभेदकहेजिनभूषाकहोतिनकोस्वभेदअनूपा॥मिथ्यातससादनमिअत
तीय॥सुअप्रतसम्यगदृष्टिरीय॥इकादशचतिकभावकरीति॥सुऊपरहेसुनिधर्मअनीति॥अप्रमत्तछ
कोगुणथानअनूपा॥सुसप्तमहेअप्रमत्तसत्सुअप्रवर्कसुअप्रमजानतथाअनिरुत्तिनवोपहि
चोन॥सुहेदर्शमोगुणसूक्ष्मलोभाइकादशमोउपशांतअष्टोभ॥सुछीनकषायदुवादशभावय
होतकतीछंदमस्यप्रवाह॥सुतेस्मजानसुजोगजिनेश॥यहोतकजोगतयासितलेश॥अजोगचसुदर्शमे

वैव नमः
॥५३॥

गुणयानां मही भवकारण की सवहानां धर्मिण्या त विवैग ति इंद्रिय काया स वै जिन राज दर्श सुवताया स
श्रुति एका मुकाय कही त्र स एक विशेष ॥ प्रसशादन आदि सुजोग प्रजता स वै म न त्र स
त्व तु र्ण क ऊ ग ति मै गुणयान मुपंच म ह्ये शुभा दुष माना धर्म म त हितै स व ही गुणयाना
स्जवानां त्ती य दुवा द श ते र म थाना क्र द्यो म र नौ न हि श्री भगवानां धर्मिण्या त म रे ग ति चार दुजा
न न क वि ना त्र य भा य मु पू व आ यु वं धै जि ह्नि वा म तु र्ण च ऊ ग ति जा य स दी वा ॥ सु पंच म
ता ल्ले ग ति एक मु दे व म ह न्त ॥ प्र जोग जि ने श्व र मु कि ल हा य क्र द्यो य ह व र्ण न श्री जि न रा य ॥ ५३ ॥
जग दी श्वर ज्ञान प्र वा हा च र व सु प्र त्य च ल वा य ॥ त्रि लो क त्रि काल स्त भा व वि भा वा स वै रु
भा क ॥ सु नौ प्र मु जी इ स वा र पु का र करो ह म कौ भ व सा ग र या ए करो य हा एक व दो उ प गा
ई दु ल भा रा ॥ ५३ ॥ दो हा ॥ जि न व र ज्ञा ता ज ग व दो वि प ति नि वा न हा ॥ इ स अ सा र सं सा र सै क रे मो
रा ॥ अ र्ध ॥ सो रा ॥ दी न वं धु भ ग वा ना क्र रौ रु पा मु रु दी न यै क रु णा नि धि गु ण जा न्त् प्रा यो दु म द र वा
॥ इ ति ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ अ थ नं दी श्व र ही प ष ष्ठ म र ति क र जि न पू जा मा ह ॥ कु सु म ल ता छ द ॥ नं दी
ए य श्वि म अं ज न गि रा की प श्वि म दि श मै जा न भा पी कौ न दू से मा ही ए ति क र कं च न व र्ण म हा न ता के
र श्री जि न मं दि ए अ क र्त म सो ह्ये अ म ला न ता मै श्री जि न प्र ति मा र जे ॥ ति न कौ वं दो उ र ध र्मि ण्या ना रा ॥

उँह्रीं नंदीधरदीपबट्टमरतिकरप्रवर्तितपरसिद्धकूटजिनमंदिरैभ्योनमः॥ अन्नं॥ अन्नं॥ अन्नं॥ पुष्पं॥ जिनी
रामा॥ गगाजलसमञ्जलजललेखवरणभृगभगवैभ्रन्मजरादुखदूरकरणकौं श्रीजिनचरणचढ
वोमं दीश्वरपश्विमं अंजनगीरताकेपश्विमसौहृतरतिकरऊपरश्रीजिनमंदिरैभ्योनमः॥ अन्नं॥ अन्नं॥ अन्नं॥ पुष्पं॥ जिनी
मोहो॥ उँह्रीं नंदीधरपश्विमद्विगलसुभरतिकरजिनालयैभ्योनमः॥ जलं॥ ॥ ॥ केशरअरुकरपूरमिल
केचंदनसंगघसीजोपरमपूज्यअरहंतदेवकेचरणपूजकरीजोमंदीवर॥ उँह्रीं चंदनं॥ मुक्ताफल
समउज्जलभ्रतसुंदरधोयवनावो॥ अक्षतप्रपदकेपावनकारणश्रीजिनचरणचढावोमंदीवर॥ उँह्रीं
अक्षतं॥ सुरतरुकेवरफूलमनोहरहर्षसहितसुरलोवोममरशूलनिर्मूलकरनकौं श्रीजिनचरण
चढावोमंदीवर॥ उँह्रीं पुष्पं॥ लाडूघेवरमोदकखाजेसाजेसरसवनावो॥ शोषक्षुधादुखदूरकरण
कौं श्रीजिनचरणचढावो॥ नंदीवर॥ उँह्रीं चंदनं॥ मणिमयदीपप्रजालमनोहरतनरकेवीधारोमोहम
हातमनाशनकारणश्रीजिनपरतरवारोमंदीवर॥ उँह्रीं दीपं॥ दशविधिगंधमनोहरलेकोश्रीजिन
मंदिरावो॥ भव्यजीवभवतापविनाशनश्रीजिनचरणचढावोमंदीवर॥ उँह्रीं धूपं॥ यिस्तालोग
सुपारीएला॥ आदिकफलसुखकारी॥ भव्यजीवशिवफलकेकारणजिनचरणपूजप्रचारोमंदीवर
उँह्रीं फलं॥ जलफलअर्घवनायगायगुणभक्तिसहितशिरनावो॥ सुरेशसवश्रीजिनवरकेभर

कमलकौंध्यावोमंदीना॥६॥उह्रींअर्ध॥जयमाल॥रोहा॥जगदीश्वरमहाराजके॥वरननशीशान
 षरएज्जयमालाअवैषभुजीहोहुसहाया॥७॥छंदमोतियादाम॥जयोजगमेंजिनराजमहा
 ।मुनिराजधरैतुमध्याना॥रदैसुरशेषमहेशअशेषाकटेसवकर्मप्रबंधविशेष॥सुजनमतदेव
 वैभविआपाकरैप्रभुसैवमुमस्तकनायागयंदइरापतपैअसवारासुगोदलियेंहरिऔजगता
 सुरछत्रईशानसुरेश॥सुचामरदारतव्यसुरेश॥करैजयकारसवीसुरशेषासुभक्तिवढा

आशमहागिरिपांडुककाननवीचसनानशिलामनुचंद्रमरीचासहोतरविष्टरत्न
 नरैवे हकोंनरहेउरभूखाधुआसनपद्मविराजितदेवसवैविधिन्होनकरैहरिसेवासुपेद
 हिआठप्रमानाभरैजलसीरहिसागरआनाभप्रभूअसनानकरैहरिआपासुधन्यजिने
 पुण्यप्रतापासुरसर्वकरैजयकाराषजैचंद्रसाजसमाजअयाशघसुरीवदुनृत्यक

किसमेतनवोरसभाकासुआनदनाटकहोतअनूपासुजनमकल्याणकपुण्यसत्पा॥७॥अपरा
 श्वरसाधिनियोगगणयेसुरआपनेथानमनोगाप्रभूरहवासविवैंकराजाधरोफिरनेव
 साजावाहनेचउघातिलयोवरज्ञानचराचरवस्तुप्रकाशकभानाकरैउपदेशमहासुखदान
 दधितारकपोतमहाना॥६॥जयोजगमेंवहदेवअनूपाहनेवसुकर्मभयेशिबभूपासवीसु

पतिरायअनूपकरोहमकौप्रभुआपसरूपा॥ दोहा॥ वषचषकेदाताप्रभूदृषभेश्वप्रभुदेव
 करोरुपासमदीनकैतुमशिवदायकदेवा॥ अर्थ॥ सोरहा॥ भवदधितारनहारकारणालुमया
 जगतमौओरनदूजोसारनिमितवलीइसलोकमै॥ इति॥ ॥ अर्थयप्रियम
 दिशससमरतिकरपूजासाह॥ कुसुमलताछंद॥ अष्टमदीपदिशापश्चिममैअंजननगिरकेउत्त
 रसारवापीप्रथमकोनमैसोक्षैरतिकरपर्वतगोलाकारतापरश्रीजिनमंदिरसोक्षैजाकीमहि
 माअगमअपारासाकीआहाननविधिकरिकैपुष्पचढावतहमत्रयवार॥ २॥ उद्दीनदीश्वरदी
 पपश्चिमदिशससमरतिकरैयेनमः॥ अन्न॥ अन्न॥ पुष्प॥ चालछंद॥ जलसारसुधासम
 लीजैसुवरत्नकेभंगभरीजि॥ जिनअग्रधालत्रयदीजिसहुपुण्यभंडारभरीजिनंदीश्वरपश्चिमदि
 शओराससमरतिकरगिरजोरातापरजिनगरहसुखकारीसुरपूजतभक्तिसुधारी॥ उद्दीनदी
 श्वरदीपपश्चिमदिशससमरतिकरजिनमंदिरैयेनमः॥ जल॥ ॥ वरवावनचंदनलावोकेशरकेस
 गधसावो॥ भवदाहनिवारणाकैभविपूजतश्रीजिनरजैमंदीबां॥ उद्दीनदी॥ सुखदासप्रमोदम
 हानाभंदुलसितउत्तमलाना॥ जिनवरपदअग्रचढाना॥ निश्चयअसुखपदपाना॥ नंदीबा॥ उद्दी
 नचतना॥ मेदारनैरुअनूपा॥ इत्यादिकुसुमवदुसूपा॥ जिनवरपदअग्रचढावै॥ सवकामव्यथानशि

वौवनयूः

॥५८॥

वौनंदीवाध॥ उँहीयुषं॥ षटरसपकवानुनंवीनि॥ नुरतहिकेपावनकीने॥ जिनवरपदमाहिचंडा
दुखदोषदुधानशिजावौनंदीवाध॥ उँहीचंडा॥ दशहंदिशजोतिप्रकाशो॥ एसेंदीपकतमनाशे
जिनवरपदअग्रचढावौ॥ भविकेवललक्ष्मीयावौ॥ नंदीवाद्याँद्वीदीपं॥ वरधूपदशांगवनावो॥ तसु

८ गनआवौसोधूपधनंजयखेवौ॥ विधिनाशिनिजातमवेवौ॥ नंदीवा॥ उँहीघुषु॥ फलउत्तमवहु
धल्यावौ॥ जिनवरकेचरणचढावौ॥ भविविधिअरिवंधनशावौ॥ निश्रयशिवलक्ष्मीपावो॥ नंदीवा
हीफलं॥ वसुदत्तममिलायवनोवौ॥ कनयारविकेभरवावौ॥ जिनवरपदअग्रचढावौ॥ सोभविदिव
मुखपावौ॥ नंदीवा॥ उँहीअर्धं॥ जयमाया॥ देहा॥ अगोइंद्रव्यमिलायकैप्राप्तौ॥ अंगनवाया॥ जिनवर
कंठजयमालासुखदाया॥ ॥ छदसोतियादाम॥ जयोजिनराजभवाएवतारा॥ जयोजिनराजशि
पधारा॥ जयोजिनराजसुधर्मजिहजभंयो॥ जिनराजलियो॥ शिवसाजा॥ सुनौभवकाननमाहिजिनेश
नौ॥ हमनैदुखघोरकलेश॥ अंतलघौअजहूनिदेवकरूतुमरी॥ इहकारणसेकाअहरोर्वि

सवफलभरोसुखसंयति॥ आनंदकंदलहरोहमरोयहकाजजिनंदाकरोकरुनाकरुनाबुधिचंदास
नैदुखघोरकरूणरहेनितही॥ शिवसंयतिदूपा॥ रुअवतौतुमचर्णजरू॥ एवहेसुखघोषभुजीभ
रा॥ धामभूतुमरूपअनूपपारा॥ रत्नीशाशिकोटिलेजंतअगाएविचातही॥ भविकौसु

के सुख कौं कहि कोय ॥ प्रपन्नंतवली अरु वज्रशरीर ॥ मह हाथ विभुं दरगंध समीर ॥ प्रखेद अपखेद नही म
ल कोय ॥ महावच अमृत कोमल होय ॥ धमभूच यज्ञान विराजित एव सुजन्मत ही ॥ अति श्रेष्ठ जिन देवा लखे
जव केवल ज्ञान महान ॥ लहे ॥ अति श्रेष्ठ ॥ और सुजान ॥ अन्नंत चतुष्टय चारि वखानि ॥ धरे गुण ध्यालि
स श्री भगवान ॥ वास मोष्ठ तम ॥ ध्य विराजित देवा सु रा सुर सर्व करे ॥ प्रभु सेवाम हा धुनि दिव्य खिरंत अगाध
अनंतर सर्व प्रकाश ॥ प्रवाध ॥ चतुर्दश मार्ग एगुण ॥ यानि ॥ छेद व्यसने गुण पर्यय वान ॥ सुतत्व कहे मनु
सा त प्रकाश तीति भवार्णव तार गहा ॥ बंध क हो सत ज्ञान प्रमाण स रूपान ॥ यान व भेद ॥ अभेद अनूपा
क हो प्रभु चारित शुद्ध प्रयोग ॥ यही रत्न त्रय जा नि ॥ प्रयोग ॥ सथा दश लक्षण धनूपा ॥ बादश भावन सत्प
स रूप ॥ कहे प्रभु बोडश कारन सारा सुतीर्य पती पद के करता ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ अने कहिये उपदेश ॥ व सोहम
रे ॥ रमा हि समेश ॥ करौ हमरी बुधि च्छि विशाल ॥ भरो प्रभु जी शिव संपति हा ला ॥ ३ ॥ दोहा ॥ जन्म मरण
दुख नाश को ॥ करौ ज्ञान पकाश ॥ अरज जिन श्रव की सुनौ ॥ सुमदा ता गुण राश ॥ ४ ॥ अर्ध ॥ सीरहा ॥ जग
भै शरण सहाय साम ॥ आप को में सुन्यो ॥ करौ कृपा जिन राज ॥ नियत ॥ अधम मम जा नि को ॥ ५ ॥ इति ॥ ३८
अथ नंदीश्वर दीप प्रहम रति कर पूजा माहा ॥ कुसुम लता धंद ॥ नंदीश्वर पश्चिम अष्टम गिरा तिक रंक व
नवर्ण सुहाग ॥ एक सहस्र योजन को ऊंचो ॥ द्वादश दिशा वापी वहि भाग ॥ छितिय को नमें पर्वत राजै ॥ गोलोकार

बौवनपूः

॥५७॥

दोलसमलागताकैफपरश्रीजिनमंदिरपूजतसुरपतिकरअनुराग॥९॥ उईहीनंदीश्वरदीपयश्विमदि
अष्टभरतिकरएवतपरसिद्धकृदजिनमंदिरभो नमः॥ अन्न॥ अन्न॥ चालदोहा॥ पूजनकरले
जिनवरदेवकीजीकोईद्विशिवसुखदातार॥ देरगंगाजलसमनीरलेजीकोई भसुवरणभंगा
जिनवरपदतरभावसौजीकोईकरधारात्रयधारपूज॥ नंदीश्वरपश्विमदिशाजीकोई अष्टम
तिकरसारसुरसुरेणपूजेंसदाजीसापरजिनआगारपूज॥ उईहीनंदीश्वरदीपयश्विमदिशाअष्टम
तिकरजिनमंदिरभो नमः॥ जल॥ १॥ केशरसंगधसायकैजीचंदनगंधअनूप॥ भक्तिभावउरलायकै
जीमूर्त्तजिनवरभूष॥ पूजबानंदीबार॥ उईहीचंदन॥ अत्तनसरससुहावनैजीदेवजीरसुखदासअत्तयपदे
कारणैजीपुंजकरोजिनपासासूजबानंदीभार॥ उईहीअत्तत॥ सुरतरुकेवनुफूललेजीमरुकेगंधअपार
मदहनकेकारणैजीमूर्त्तजिनआगारपूजबानंदीबार॥ उईहीपुष्प॥ मिष्टसरसनेवजमहाजी॥ उरुतहतवे
वाय॥ लुधाहरनकेकारणैजीजिनवरभेदकहायामूबानंदीबार॥ उईचिचं॥ कनकरतनमयदीपलेजग
जोतिप्रकाशमोहतिमरकेनाशनेजीकरहुआरतीपासापूबानंदीबाद॥ उईहीदीप॥ दशविधिगंध
गायकैजीधूपकरोभविजीवाजिनवरपदकूपूजिकैजीप्रावोसौख्यअतीवापूबानंदीबार॥ उईहीधूप॥
तमफलसुरलोककैजीलावतसुरपतिआयकरपूजनजिनराजकीजीभाशतभवसतापापूबानंदीबाद

॥५७॥

दुई फलं॥ जलफल अर्घवनाय के जी॥ प्रर्घक ते गुण गाया॥ अष्टकर म के नाशने जी॥ मज्जो जिन वर पाया हू॥
 नंदी बाटे॥ दुई अर्घी॥ जय माल॥ दोहा॥ त्रिसटि प्रहृति खियाय कै॥ पायो केवल ज्ञान॥ तिन पदवंदो भावसो॥
 राय क शिव क ल्या न॥ १॥ छंद मो तिया दम॥ ज्यो जग में जिन चंद॥ जिन ने च उघाति॥ अशेष
 लहो प हिले विधि मो ह पछार॥ तं द र ती न करै विधि पार॥ हने प हिले॥ अरि सात करू॥ प तु र्थ म थान
 लये गुण भू॥ न में गुण थान॥ अरी छुती सा द शो गुण में॥ अरि लो भ गरी श॥ श्रुवा द श में गुण थान सु अ
 त॥ अशेष अरी क्षण मा हिन शंत॥ त हां गु रु देव दिगं वर रूप॥ क्ता व त सर्व प्र कार॥ अ न्या॥ ३॥ सु केवल ज्ञान
 धनी जिन राज॥ सु ते र म थान स मो श्रु त साज॥ करे उप देश म हा भ विकाज॥ भवो व धिता र न पर म ज ह ज
 धा॥ भ सं ल्य सु रा सु र चार प्र कार॥ स था य भुजा ति॥ भ ने क प्र कार॥ म हा मु नि रा ज त थान रा ग ज॥ भ तु वि धि स
 घ मु ने जिन राज॥ कई भ वि स म्प क वं त सु जी ब॥ ध रै व त स ज म भा व॥ अ ती व॥ करै त देश ध रै दृढ मेय॥ करै
 डर चा ह दिगं व लेष॥ ४॥ कई भ वि स म्प क दर्शन पाया॥ मि थ्या त व में॥ अ ति ही दु ख द या॥ कई जिन पूजन कै
 व्रत धार॥ करै जिन भक्ति॥ अ ने क प्र कार॥ ५॥ कई ब रा न प रौं॥ व्र त ले य॥ कई नि श भा ज न त्या ग करे पा॥ कई व्र त
 व्र त ध रै दृढ स्था॥ स वै दु र्भो व त जै॥ दु ख कू प॥ ६॥ ध रै व्र त भा व सु शक्ति स मा न॥ करै दृष्य में पुरुषा र थ या नि ह
 रै वि धि पू र्व सं चित कू॥ ध रै प ग मु क्ति सु मा रा ग भू॥ ७॥ तु म्ही प्र भु जी भ व ता र न हा र॥ तु म्ही प्र भु जी क र नानि

नौवनपू

॥५८॥

शत्रुन्दीप्रभुजीजगमेंसुखकारजिनेश्वरकौंभवसागरतार॥ दोहा॥ कर्मबंधकौं नाशकर
सेमुक्तिआगागसोप्रभुमेंरेखसो करोभवोदधियाग॥१॥ अर्ध॥ सोरखा॥ अशरुनशरुनसहाय
असारसंसारमोहजोसदासहायतुमदाताजगमेंवडो॥२॥ इति॥ ॥३॥ ॥कुसुमलता
॥ नंदीश्वरपश्विमदिशमाही जिनमंदिरतौमुनौअधिकागजहाजहौजिनप्रतिमागजैअनु
मईसुखकारगतहौतहोवहुभक्तिभावकरपूजोजिनवरविंवविचारसर्वसिद्धिसुखकअघघा
रोसहायअनेकप्रकार॥ उँहीनंदीश्वरहीपपश्विमदिशसंवंधीअथोसर्गतएवनाविशो
जिनविंवेभ्योनसः॥ अर्ध॥ पश्विमदिशवर्तीव्यंतरभवनपतीसुरसागअथवाज्योतिवदेव
जैतिनकेचरणकमलकौंवहुविधिअर्धचढायजपूनवकार॥ इति॥ उँहीश्रीनंदीश्वरही
दिशसंवंधीव्यंतरभवनवासीअतिथीदेवोंकेजिनमंदिरजिनविंवेभ्योअर्ध॥ पश्विमदिशपूरी
थउत्तरदिशसंवंधीपूजामाहा॥ अथनंदीश्वरहीपउत्तरदिशसंवंधीअंजनगिरिजिन
रपूजामाहा॥ जोगीरासा॥ नंदीश्वरकौउत्तरदिशमैअंजनगिरवरसोहो॥ जोजनसहसचो
। ऊँचोस्यामवरनमनमोक्षोदोलसमानगोलतहाऊपरश्रीजिनमंदिरजानौ॥ आठअधिकइक
जिनप्रतिमापूजतसुखअधिकानौ॥१॥ उँहीनंदीश्वरहीपउत्तरदिशअंजनगिरजिनम

॥५८॥

नमः॥ अत्र॥ अत्र॥ अत्र॥ अत्र॥ चालहोली॥ जिनपदकी पूजरावाओ हृदे तिनके गुणगाओ हरे॥ नि
मैलनीरकनककी मारी॥ भरजिनमंदिरजाओ श्री अरुंत चरणके आगे धारदेय शिरनाओ नंदीश्व
र उत्तरदिश सो हो अंजन गिरगृह्याओ मनवचकायल गायगायगुण जिनपदशी शनवाओ॥ हृदे बा
उं ह्रीं नंदीश्वर दीप प्रवृत्तर ह्रीं अंजन गिरगृह्याओ जिनमंदिर सो नमः॥ जल॥ चंदन के शरगंध मिल
कर रतन कटोरी धारो॥ मुरसुर पति जिन गज चरण की पूजा विधि विस्तारो॥ हृदे नंदीश्वर॥ चंदन के रत्न
उज्जल अतत धोय मनोहर॥ कंचन थाल भरावै॥ भव्य जीव वहु भाव भक्ति सो॥ जिनवर चरण चढावै
हृदे नंदीश्वर॥ उं ह्रीं अक्षय॥ पास्त्रा तम दार॥ आदिके सुष्य विविध गुण लावै॥ श्री जिनमंदिर जाय
शची पति॥ जिनपद अग्र चढावै॥ यहा मैशी शनवाओ हृदे॥ धा॥ चंदन पुष्प॥ षट् र समय पकवान व
नाकर रुर्ध्व सहित सुरलावै॥ श्री जिन चरण पूजकर सुरगण सुएय प्रहृति उप जावै॥ यही मै निशदि
नचाओ॥ हृदे नंदीश्वर॥ उं ह्रीं चढावै॥ नवरन के तन मनोहर सुरसुमति मिल लावै॥ श्री अरुंत देवकी
पूजा करत ज्ञान निधि पावै॥ यही मै आस लग जाओ॥ हृदे नंदीश्वर॥ उं ह्रीं शेष॥ कृसागर वर धूप दशा
गी॥ भव्य मनोहर लावै॥ वसु विधिकर्म दर्शन के कारण श्री जिन चरण चढावै॥ षट् ए मै भी पाओ हृदे
नंदीश्वर॥ उं ह्रीं धूप॥ षट् रतु के फल उत्तम लेके श्री जिन पूजरावाओ॥ भव्य जीव अति हर्षित मन मै ज

वौवनमू०
॥५॥

सफलकरयावेयहीमैंमनमेंचाहूं॥हृदे०॥नंदी॥५॥॥हृदी॥फल॥जलफलअर्धवनायगायगु
ए॥जिनचरणान्वितल्यां॥अश्रीसर्वज्ञजिनेश्वर॥आगे॥अर्ध॥अनूपचटाआकर्मविधिवंधमिताऊ
दे॥नंदी॥५॥॥हृदी॥अर्ध॥॥जय॥माल॥॥दीहा॥सुरपतिनरपतिनागपति॥खापति॥पूजतपाय॥मिसे
निर्गंथमुनि॥सेनी॥वदै॥आय॥असाही॥अरुतपक्षमसदिंगं॥दे॥जिनगुणचरणसरोजकीकह
दा॥मेंसेवा॥॥या॥बिदे॥हृजा॥दी॥॥समवशरण॥के॥वी॥च॥में॥जगसार॥हो॥॥जे॥भी॥जिनगज॥सुरतर॥खग
सदा॥जग॥अचर॥न॥में॥शिर॥ना॥या॥॥मिर॥ना॥य॥चतु॥र॥निका॥य॥सुर॥र॥ग॥न॥प॥श॥से॥वा॥क॥री॥मन॥ला॥य॥अ॥व॥न॥न
ने॥ख॥ग॥अ॥ये॥देश॥आ॥न॥ंद॥वि॥स्त॥रो॥म्र॥य॥काल॥जिन॥धुनि॥सदा॥वर॥वै॥त्य॥पति॥भवि॥चा॥त॥क॥भ॥ये॥॥भ॥व॥दा॥ह॥को॥दु॥ख
वि॥न॥श॥यो॥स॥हि॥त॥सु॥ख॥स॥ह॥जै॥ल॥यो॥॥॥श्री॥अ॥रु॥ंत॥प्र॥ता॥प॥से॥जग॥अ॥ज्ञा॥ति॥वि॥रो॥ध॥न॥श॥या॥अ॥प्र॥ति॥श॥य
जि॥न॥र॥ज॥का॥जग॥॥ज॥य॥वं॥तो॥हि॥त॥दा॥य॥॥हि॥त॥ला॥य॥सिं॥ह॥नि॥श्रु॥गु॥चु॥ख॥वै॥णा॥य॥ना॥ह॥र॥वै॥ल॥को॥॥अ॥हि
र॥वा॥ज॥क॥पो॥त॥खै॥लै॥स॥हि॥त॥का॥ग॥म॥र॥ल॥कौ॥॥उं॥द॥र॥वि॥ला॥व॥क॥ला॥य॥क॥र॥स॥त॥इ॥क॥ठा॥ह॥र॥वि॥कै॥ग॥जग
अ॥रु॥म॥ग॥र॥ज॥मि॥ल॥क॥र॥ने॥ह॥॥आ॥प॥स॥में॥ल॥खै॥॥जि॥न॥व॥र॥की॥वा॥नी॥॥वि॥रो॥सु॥धा॥ध॥र॥गा॥जा॥अ॥वि॥ज॥न
ती॥कै॥लै॥जग॥॥पु॥भ॥अ॥कू॥र॥स॥मा॥जा॥अ॥म॥व॥सा॥ज॥सु॥ख॥कै॥ल॥है॥भ॥वि॥ज॥न॥हृद॥य॥अ॥ति॥सं॥तो॥धि॥या॥म
ज॥न॥द॥रि॥इ॥अ॥धी॥श॥सो॥क॥र॥ल॥खि॥त॥अ॥म॥त॥र॥स॥पि॥या॥॥व॥हु॥भ॥क्ति॥रि॥सु॥र॥श॥क्र॥ना॥चै॥माल॥दे॥न॥सु॥हा॥व॥नी॥म॥व

साजवाजसमाजः प्रभुतधन्यजनविभुवनधनीधगणधरपारनपावही॥ जग॥ इंद्रहैशिरनायमुनि
 जनध्यानधैरसदाजग॥ तुमविभुवनकेराया॥ जगएयजगहितदायतुमगुणवैलकीरतिविस्सी
 त्रैलोक्यमंडपसर्वछाये॥ शीशपरसुखफलफरी॥ बहफलप्रनोपमअविच्छिन्नअग्रेकअमितस्वभाय
 होदीजेजिनेश्वरदेवहमकोंवहसुफलसुखरूपहो॥ देहा॥ तातमातभतातुम्हीमालिकयरमदा
 लायहनिश्वयमनजानिकौलीनीआसहयाल॥ ॥ अर्थ॥ दोरा॥ वडेगरीचनिचाजमेगरीचजगमेवडे
 दीजोसर्वसमाजजोऐसोजहांचाहिए॥ ॥ अर्थ॥ ॥ अमनवीनरदीपसराहि
 दासंबंधीपूर्वदिशमयमदधिमुखपूजा॥ हा॥ देहा॥ दधिसमदधिसुखसेनयविभोजनदशहजार
 उन्नततापरजिनभवनापूजेसुरयतिसाराताकीबहुविधिभक्तिकरे॥ आस्ताननविधिसारा॥ अयनेय
 रपूजनकरे॥ अछितार्थदाता॥ ॥ अर्थ॥ नंदीश्वरदीपउत्तरदिशा॥ छितीयदधिसुखपर्वतपरसिद्धकू
 रजिनमंदिरेंभ्योनमः॥ ॥ अर्थ॥ ॥ अर्थ॥ पुष्पमंदीयाह॥ ॥ अर्थ॥ मध्यद्रुजलउजाललीजिजिनचरणा
 वुजधारसुदीजे॥ जन्मजरादुखदाहनिवारै॥ भयजीवसमकितउरयारै॥ नंदीश्वरउत्तरदिशजानौ॥ अंजन
 गिरकीपूर्वमानौ॥ दधिसुखगुरुपरजिनगरुखोहो॥ सुतरपूजितसचमनमोहो॥ ॥ अर्थ॥ नंदीश्वरदीप
 उत्तरदिशप्रथमदधिसुखजिनालेभ्योनमः॥ ॥ अर्थ॥ ॥ अर्थ॥ केशरअरुकरपूरमिलायभावनेचदन

गद्यसाय॥ जिन पद पूजित भक्ति प्रचारी॥ भव अताप मिटावत भारी॥ नंदी बानी उद्दिनि वंदी॥ उजाल अम्र
तधोय धरी जे॥ उजाल सुवर नणाल भरी जे॥ उजाल जिन पद पूज रचावो॥ उजाल भाव भविक फल
॥ उद्दिनी अमृत न॥ कुसुम अनेक प्रकार मगावो॥ कुसुमायुध विजयी गुण गावो॥ कुसुम जिनेश्वर
चढावो॥ कुसुम वाणवाधा विनशावो॥ नंदी बानी उद्दिनी पुष्प॥ उत्तम नेवज विविध वना नोष्ठत मभाज
मैधरिल कोष्ठत मभाव भविक उरलावो॥ उत्तम देव पूजि सुख पावो॥ नंदी बानी उद्दिनी चह॥ जो
तदीप कशुचिली जे॥ जोति वंत जिन पद पूजि जे॥ जोति ज्ञान हरत मकों नाशे॥ जोति वंत निज भाव प्र
शे॥ नंदी बानी उद्दिनी दीप महन कर्म अरि धूपवनवो॥ हरन शुक्ल ध्यानी पद ध्यावो॥ हरन माहि भ
पजर गो॥ हरन कर्म हनि शिव पुरपावो॥ नंदी बानी उद्दिनी धूप॥ सुफल अनेक प्रकार था लभरी जे॥ सु
कामना मन में को जे॥ सुफल दाता जी पद पूजो॥ सुफल पाय मुक्ति पति हू जो॥ मंदी बानी उद्दिनी
ठर वमय अर्घवनवो॥ आपोठों अंगनाय गुण गावो॥ अष्ट महि ति पति पूज रचावो॥ अ
पतिकरुलावो॥ नंदी बानी उद्दिनी अर्थी॥ जय माला॥ दोहा॥ नंदी श्वर जिन धामा उत्तम दधि सुख प्र
पुनि पुनिकरूप एण मगाऊ गुण माला अर्घवो॥ १॥ पद डोछु हा जय नंदी श्वर चर दीप जाना॥
जय ताकी उत्तर दिश महान॥ जय अंजन गिर सो छै उत्तंग॥ जय गोल डोल स मस्या मंग॥

गसीसहससारं कुंचोति हि ऊपरजिनागारं जयता की प्रवदिशमगारं नयसजलवापिका भरीसा
रां प्रतिहि वीच जा निदधि सुखमहारं उन्नतहेयो जनदशहजारं प्रतिस्वेतवरनदधिसम अ नूयने
हुं और दोलसमगोलरूपं अति हिं ऊपर श्रीजिन भवनसारं सवसमवशा एण शोभा अप्यारं जिन अंत
रीत्तराजै सदीव नित पूजकरतत हो भव्य जीव एतत पचधनुष जिन तन प्रमान पद्यासन सो हे दे
सिवा न भव मुद्रा तिहार्यमगल सुदकै इत्यादि और महिमा जु सर्वा जिन छु वि निरखत मन मुदि
न होय चिरकाल पापमल पुंज धोय को ई प्रापति सम कि वरतन सारं संसार खार तै करो पार छ
अति तेजवंत जिन दिव्य रूप जे परसवीत गी सरूप मनु सुवरन माहि सुगंध सारं अरु शशिक
मिलि प्रगटी अयारं जगकर मदाह करि दुखित जीव तिन की सुखदायक सकुसदी वसु अ सुस
वेनहु भक्ति लाय तुम चरन कमल सैव वनाय पुरुषि मुनि महत तुम ध्यान धार संसार उदयिते हो
यपारं मे शरणागत आये अपवार ह्ने करुणा निधि भव उदयितारं जगजीतिकर्म अस्मिके रोच
रावहु जीवन को दुख करो दूर मुनि अर्ज जिनेश्वर की हजूर निज सुख संयति दीजि स्वर दोहा
करुना निधि जिनराज तुम तारण महेश तुम पदयक ज कौन मो सकल सुरा सुर शोषार
धर्म सो रहा नमो अगव सुआठ भक्ति भावो हि देधस्तु भव भव भ्रम एन शाय अ प्रज सुनौ प्रमुदीन की

वैव नयू
॥६२॥

२॥ पुष्पं ॥ ॥६१॥ ॥ अथ श्रीनंदीश्वरदीपदक्षिणादिशास्त्रितीयदधिसुखपर्वतपरसिद्धकूट
जिनमंदिरपूजा मारु ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नंदीश्वर उत्तर दिशा ॥ अंजन गिरा खजोर भा की दक्षिणा
यिका शोभनी के जल धारा ॥ ॥ उद्ग्री नंदीश्वर दीपदक्षिणादिशास्त्रितीयदधिसुखपर्वतपरसिद्धकूट जि
द्विरेभ्यो नमः ॥ अन्नं अन्नं ॥ पुष्पं भक्तु सुमलता घंटा ॥ पुंडरी कद्रु सम उज्जल जल जलेज
धमि श्रित सुख कारा धार देत श्री जिन वर आगे जन्म जरा दुख नाशन हारा ॥ नंदीश्वर दक्षिणा अंजन
रता की दक्षिणा वापी सारा ॥ ता के बीच विराजे दधिसुख ताप एवं दौ जिन आगारा ॥ ॥ उद्ग्री नंदीश्वर दीप
दक्षिणादिशास्त्रितीयदधिसुखपर्वतपरसिद्धकूट जिन मंदिरेश्वर नमः ॥ अन्नं ॥ ध्वजं अन्नं ॥ पुष्पं ॥

॥ पुंडरीकद्रु ॥ वावन चंदन कदली नंदन सारु नि कद न हे सुख दाया ॥ पूजत श्री
लभ विभवा ताप दुख वेत नरा यमं दीक्षा ॥ उद्ग्री गंध ॥ श्री सुख दासक मोद वासम तिसर लश
वि विध प्रकारा ॥ अर्चत तपुज जिनेश्वर आगे करत भव्य पावे भव पाश नंदी बाश ॥ उद्ग्री अन्नं श्री गु
द केतकी ॥ बेला कमल चमेली लाया काम सारु निरवार नकार न जिन चरण ॥ पुज देत चढाया
पुष्प ॥ लाड ध्वज मोद कैनी ॥ घट सरस यंजन तुरत वनाय ॥ सुधारोग के दूर करन को जिन वर पद
भवि आया मंदी बा ॥ ॥ उद्ग्री चंद्र ॥ वीपरतन मय सुगय तिला वैभक्ति भाव हिर देउ मगाया ॥ केवल ज्ञा

॥६३॥

निधानमासिकेहेतुजिनेश्वरपूजेआयानंदी॥६॥हेहीपं॥चंदनअगरतगरकुसागरधूपसुगंध
मईवनवाय॥भविजनकर्मदहनकेकाजेजिनपदकमलजनेमनलायानंदी॥७॥हेहीधूपं॥लोगलाय
चीपिस्ताकिसमिसालाकेलादाखमगाथा॥धीफलआहिसुक्तिफलकारणभविजनपूजतजिनवर
पायानंदी॥८॥हेहीफलं॥जलफलइव्यमिलायगायगुणार्घवनायभक्तिउरलाय॥असुमसिति
पतिपदपावनकौसुरपतिजिनपतिपूजतआयानंदी॥९॥हेहीअर्घं॥अयमाल॥गीता॥६॥ससा
रकाननअतिभयानकाविषयविषयजोरही॥अतिप्रवलचारकषायतत्कारनासतिनकीघोरहीज
गजीवपणिकभ्रमेंनिरंतरदुःखबहुविधिपावही॥मैंचरणपूजेंदेवजिनकेसुमगजोदरशावही॥१०॥पद्
मी॥६॥जयजयजिनराजस्थानिधान॥दरशायोगमैमगमहान॥जयसमवशरणकेमध्यसार॥उप
देशदियोआनंदकार॥सबतत्वप्रकाशकियोअशेष॥आश्रवकोवर्णनयलविशेष॥आश्रवसत्ता
वनभेदसार॥तिनमूलभेदजानौजुचार॥मिथ्याअप्रव्रतनुकषाययोग॥इनहीवससुखदुखसर्वभोग
मिथ्यातभेदहैपंचजाना॥अचिरतकेवारुभेदमाना॥पच्चीसकषायकहीजिनेश॥अरुजोगजानप
दरुविशेष॥इनसर्वकौजोहेहोयसर्वसत्तावन॥आश्रवभेदपर्यंत॥मिथ्यातविवैषयचपनवलान॥अ
हारादिकविनसर्वमाना॥यज्ञासदूसरेयानजान॥मिथ्यातपाचविनयरूपमाणा॥॥अरुतीजेचौथेकेमगर

बौवनम्
॥८२॥

त्यालीस औ रष्पा ली स धार गुण पंचम मे से वी स भेद चौ वी सक हे वष्टम अखेद द्वा जय सप्तम अ
गुण मन्तार वा वी स भेद आश्रव उदार जय नव मद्यान के सा त भाग प्रति भाग एक द्वा क हानि ला भ ॥ अ
त हा प्रथम भाग सो ल ह प्रमाण ॥ अत्र रु अत भाग दश भेद जान स द्रह से एका दश प्रज त जय मध्य भा
ग यौ चो ल संत ॥ जय दश भेद श गुण भेद जान पार म नो नो प्रमाण ॥ जय तेर म गुण भेद सा
ग ॥ चौद स स्वामी जिन है प्रजोग ॥ ध्य ह आश्रव भेद क्यो जिन श सो ही सिद्धांत चक्रो विशेष गो म द
सार में क हो देवा ॥ आश्रव अधिकार विषै जु भेवा ॥ ब्रह्म व तत्व भेद दर्श जिन श स त ज्ञान दान दाय क
ह मे श हं क पा सिंधु कर ह पा सार सार खारै करे पार ॥ १ ॥ देहा ॥ तुम पद तर निज शी प्राधर कर
विनय सुरगय ॥ सो जग पति पा जग त मे भव भव ले हु सहाया ॥ २ ॥ अर्ध ॥ सो रग ॥ तुम देवन के देव
राध रादि से वै चरन ॥ छिपो न के ई भेवा ॥ मम मन सा पूरी करो ॥ ३ ॥ इति ॥ ॥ अथ उत्त
दिश त्ती य दधि सुख पूजा ॥ अद्वि त्त्व द्वा ॥ नंदी श्रवर की पञ्चाठमों जा नियो ता की दिश गिर उत्तर अं
जन मा नियो ता के पश्चिम वापी मध्य विराज ही ॥ दधि सुख गिर जिन भवन मग ष्ष विष्ण ज
हो नंदी श्रवर की पञ्च रादिश त्ती य दधि सुख पर्वत पर सिद्ध कर जिन मं दिरे भ्यो नमः ॥ अंब ॥ अंब ॥
नमः ॥ पुष्प ॥ जिगी रासा ॥ चारों गतिके जीव जगत में जन्म मरण दुख पावै ॥ तिहि दुख दूर करण के ज

ले श्री जिन चरन चढावै नंदी श्वर उत्तर अंजन गिरा की पश्चिम सोहि दधि मुख गिराय श्री जिन
 सुर सुरयति मन मोहो ॥ उँ ह्रीं नंदी श्वर उचर दिश तृतीय दधि मुख गर्व तम रसि क हृदये भोज मः ॥ जल ॥ च
 हरा हरा हे जीवन कै विधिवश मिलत नचायो तिहि दुख दूर करण कौ जिन प्रपति चं
 नंदी बभ ॥ उँ ह्रीं चंदन ॥ सुरयति नयति खगपति चकी सव पद अथि रक्तायो अतय पद पाव
 ज न भक्त तवल चढायो नंदी बभ ॥ उँ ह्रीं अतत ॥ ब्रह्मा हरि हर शक्र चक्र पति जीते काम सवीनें पुष्प च
 य जिन श्वर आगे भव्य मदन शर जीते नंदी बभ ॥ उँ ह्रीं चंदन ॥ हानव देव मनुष्य विद्या धार श्वर सवी वश जाको
 ता दुख दोष सुधा हर भुके चर न जत च रु ला को नंदी बभ ॥ उँ ह्रीं चंदन ॥ शंकर श्वर शशी हर ज
 जाल में आये ता अरि मोह महा तम नाशन जिन पद दीप चढाये नंदी बभ ॥ उँ ह्रीं दीप ॥ ज्ञान दर्श आव
 ए महा अरि दन के दहाहन का जे भविजन धूप दहन तै खैवै स मुख श्री महा राज जे नंदी बभ ॥ उँ ह्रीं धूप ॥
 त राय दुख दाय जगत मै यास मटू जो नाही ताहि निवारण काज सुफल ले भविजन भेट कर
 नंदी बभ ॥ उँ ह्रीं फल ॥ जल फल अर्घ्य वनाय मनोहर सुरयति भक्ति वढाके सुरय सुफल
 सुर नायक जिन पद अर्घ्य चढाके नंदी बभ ॥ उँ ह्रीं अर्घ्य ॥ जय मातु ॥ दोहा ॥ सुरत रप श्रु नार कवि वै
 न धारै यह जीवा देहर हित सिद्धा नि कौ तिन पदन मंस दीवा ॥ पच्छी छंत्स ॥ जय श्री पति श्री अ

॥ जगत्प्रखतचराचरवस्तुभेव जगत्प्रचारधा तिया कर्मलानि जैकेवलज्ञानलयो महान ॥ ससर्वज्ञसर्वद
 श्रीजिनेश जगत्प्रवृत्ता विस्तृतुम्ही मरुश ॥ नि समवृषारण के मध्यसार एव तुराननराजै निगाधार ॥ जै स
 तत्वषट्द्रव्य सार ॥ सववर्णन की नौ सवप्रकार ॥ तलौ जीवदेह के भेद माहि ॥ तनभेद कह्यो मै कहुं
 हि ॥ ३ ॥ औदारिक वैक्रिय देह धारा ॥ आहार कै तै जस कर्म धारा ॥ मह पांच प्रकार शरीर ज्ञान नर
 पशु कौ ॥ औदारिक प्रमाण ॥ वैक्रियिक देह ना एक शरीर ॥ प्रव ॥ आहार क विधिसु नौ ॥ वीर ॥ मुनि दशम
 रसै प्रगट होय ॥ आहार शरीर कह्यो जु सोय ॥ आगम प्रमाण मय ॥ अर्थ को या कहा मुनिके संदेह
 या ॥ सित फटिक वरण ॥ इकरु स्तमो नालि चतुर्गम्य न हि धातु जानि ॥ केवल निकट आप फि
 अप्य सुगुरु तन मै समाया ॥ केवल जिनि को हेतु न ॥ अनूप सो परम उदारिक दिव्य रूप ॥ न हिरदै
 तुंड पधातु कोया ॥ दधि फटिक समान शरीर होय ॥ ७ ॥ जै तै जस दोय प्रकार ज्ञान ॥ सुम ॥ अमु भ भेद सु

न ॥ कामी एवर्गणाबंध रूप ॥ कामी एदेह का पोत स्व रूप ॥ ८ ॥ तै जस कामी एअनादिसंग इक
 मय होय जिनि चार अंग ॥ जगत्प्रविग्रह गति विन सर्व काल ॥ तन तीन तया चारौ विशाल ॥ ९ ॥ इक वि
 हगति मै दोय देह ॥ तै जस कामी ए कही मुगे स्त ॥ जै वैक्रियिक आहार ॥ एकवताया ॥ मह पंच वैद्रिय के तो
 काया ॥ १० ॥ औदारिक ॥ एकेंद्रिय लगाया ॥ पंच वैद्रिय त क जानू सुभाया ॥ इत्यादि अनेक शरीर भेद वर्ण

की नों जिनवर अखे ॥ १ ॥ सो जगदीश्वर मम उर मकार ॥ एक खारवार संसार पा राख्य हूँ अरज जिनेश्व
 देव सा ॥ सुनिलेहु जिनेश्वर की मुकारा ॥ २ ॥ दोहा ॥ जगता री जगदीश जिना जेवं तो नय काला जे
 दमी मम दी जियो अप्रि समूह में हला ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ सो रक्षा ॥ सुनौ स्व परहित कारण बचवा दी प्रतिचं
 सम ॥ बचन सुधा उनहार मम उर वास करो प्रभू ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ अथ उत्तर दि

बधी न तु र्धदधि मुख पूजा माह ॥ चालजे गी रासा ॥ नंदीश्वर वर दी पदिशा उत्तर कही ॥ चौथे दधि
 ख गिर पर जिन गहमणि मई ॥ सकल सुरा सुर आय भक्ति मन लाय कै ॥ पूजत जिन वर चरण
 ईशिर नाय कै ॥ १ ॥ उँही नंदीश्वर दी पउत्तर दिश चतुर्थदधि मुख जिना लये भ्यो नमः ॥ अन्नना अन्न
 प्रन्न ॥ पुष्प ॥ गी वा अन्न ॥ सुर नदी को जल ॥ अन्नूपम मिष्टशीत लीजिये ॥ भवत्पादोष नि कंठ कारन
 र जिन पद दी जिये ॥ वर दी पनंदीश्वर मनोहर ता स उत्तर सज होइ दधि मुख चतुर्थ महान ता यर
 न भवन सुरज जत हो ॥ २ ॥ उँही नंदीश्वर दी पउत्तर दिश चतुर्थदधि मुख जिना लये भ्यो नमः ॥ जल
 सीर ॥ और क पूर केशर गंध द्रव्य सुहावनी ॥ भवता पनाशन हेत भवि जिन राज चरण ॥ अगार भविजन
 र ॥ ३ ॥ उँही चंदन ॥ सुख दास और क मोद तंदुला खेत वर्ण सुहावने ॥ जिन राज चरण ॥ अगार भविजन
 जधार तपावने ॥ वर ॥ ३ ॥ उँही अन्न तं ॥ मदार ॥ सुर पा ॥ स्त्रिावन मेरु कुसुम समूह ॥ जिन राज अग्र च

ढायभविजनमीनकेतमसादलै॥वर॥ॐ॥पुण्य॥मनमोदकारनमोदकादिकविविधनेवज
जही॥जिनपदचढावतभयजनकेसुधादुखसबभाजही॥वर॥ॐ॥उद्दिनेवेव॥दुतिवंतरत्नअ
मलेकरदेवनंदीश्वरविक्रै॥जिनराजचरणचढायदीपकलहतनिजसंपतिअवैवर॥ॐ॥उद्दि
दीयं॥घनसारकुसागरसुगधितद्रव्यउत्तमलाईये॥वसुविधिरुवनजिन्नचरनअगै॥भक्तिसहि
ईयेवर॥ॐ॥उद्दिधूय॥फकललितमिष्टमहत्तमनहरकनकयालभरायकौचरमुक्तिफलभ
जनलहेजिनराजचरनचढायकैश्वर॥ॐ॥फल॥जलगंधअत्ततपुष्पचरुवरदीपधूपफला
ली॥महअर्घलायचढायजिनपदसुखलहेविवुधावलीवर॥ॐ॥उद्दिअर्थ॥जयमाला॥दोहा॥दश
विधिधर्मसम्हारिकिपराविधिवंधविदागभसेजायशिवमहलमेंसोप्रभुहमकौतारा॥पड्डीचंद
जयश्रीसर्वज्ञमहंतदेवभयचतुरनिकाईकरतसेवा॥जिनससतत्वकीभैप्रकाश॥दशगोशिवपद
खासा॥ससारतत्वमेवंधभेदादशगोश्रीजिनवहुअखेद॥जहांवंधचारपरकारजाना॥यिति
तिप्रदेशनुभागमानि॥अहाप्रहतिकर्मकोनामजाना॥यो॥ज्ञानावरणादिकपिछाना॥पुन्रलगि
जानौप्रदेश॥यहदोयवंधहेजोगलेश॥जवतकविधिसंगरहेजुसोय॥यितिवंधतासकोनामहाय
जैसेसुखदुखमैफलविशाला॥अनुभागवंधवहकह्योहाला॥चारोकैचउचउभेदमानि॥उल्लसअ

शीपिष्ठान॥ अवधन्यजघन्यचतुर्थभेद॥ इमसोलहभेदगिनौ॥ अवेदाग्रहसोलहभीचउचउप्रमा
 ए॥ सादिअनादिध्रुवअध्रुवजानि॥ इतसर्वकैगुणलक्षणमहानगोमहसारतैलेहुजान॥ अधप्रवबंध
 तत्वफिरदशप्रकार॥ तिनकोवर्णनजानौ॥ अपारासंक्षेपनामकछुकहुंसोयशुरुपरमदिगंवरकक्षोजो
 या॥ अजयबंधउदयअरुउदीरणाया॥ अरुसताउत्कर्षणकहाया॥ अपकर्षणसंजमउपशमेयसवन
 धितहोछेमहिनासुनेया॥ अविधिजीवमिलेवल्वबंधजानिताकोफलउदयकियोपुरान॥ विनकालउ
 दय॥ आर्कैनुसोय॥ उदीरनजानैभव्यलोया॥ विधिद्वयरहसोसत्वसार॥ उत्कर्षणतिथिवदनीविचारथि
 निवदनेकोअपकर्षनाम॥ जोअणिकभीनर्कायुधाम॥ पररूपसंक्रमणनानसार॥ उपशमजिनकालउ
 दयप्रचार॥ संक्रमउदयाविननिधितजान॥ चउविननिकाछितबंधमान॥ ए॥ संक्रमणविनानवकरणध
 रा॥ अर्क॥ आयुर्कर्मकेहोयसार॥ वाकीसातोंविधिकेममारा॥ दशकरणहोययहउदयसार॥ ए॥ इतअदि
 अनेकविधानजान॥ सवबंधभेदवरनौपुरान॥ सोदेवजिनेश्वरजगममारा॥ इ॥ इतअदि
 श॥ दोहा॥ दशविधिबंधविदारिकैचसेमुक्तिमेंजायसो॥ सिद्धेशहमेशमम॥ हूजीशरन्सहाय॥ अ
 र्ध॥ दोहा॥ कर्मपरिहाराधारिस्वगुणममउरविषे॥ हेप्रभुजगतेतारा॥ सुमस्वामीत्रैलोक्यके॥ ए॥ इति
 ॥ अथनदीधरदीपउत्तरदिशमध्यगरतिकरपर्वतदूजभावा॥ गीताधर॥ शुभदीपनदीश्वरमनो

हरतासउत्तरमेंसही।प्रतिस्यामंजननामपर्वतखासधूरवदिशकही॥जलसहितवापीजासपहिली
 मेरतिकरकहा।तापरजिनेश्वरभवतजिसकोंसुरअसुरधूजैमहा॥उँहीनंदीधूरदीपप्रथमरतिकर
 जिनेंद्रभ्योनमः॥अत्रबाध्यत्रबाधुष्यादोहा॥जलउत्तमभंगाभरिकरउज्जलनिजभाव।जोभवि
 नवरपदजै।सोनिजरूपलखावा।नंदीधूरउत्तरदिशा॥पहिलेरतिकरएवा।नापरजिनरहजतसेसु
 पतिवसुमेका॥उँहीनंदीधूरदीपउत्तरदिशाप्रथमरतिकरजिनाखयेभ्योनमः॥जल॥एचंदनचंदमरी
 समसीतलगुणकरता॥जिनवरपदभविपूजिकै।सावतहेभवपासा।नंदी॥उँहीचंदन॥हीरनीरनी
 जशशी।तासमअक्षतखेता।मुंजदेयजिनअग्रभवि।प्रजरअमरपद॥तानंदीबाधा।उँहीअक्षत॥दृगमन
 कौंकरो।मोहितसुमनअनूपा॥जिनवरचरनचढायभवि।होतब्रह्मपदभूषा।नंदी॥उँहीयुष्य॥नेमज
 धप्रकारकोकनधा।लभराया।हुधा।दोषनिरवारहो।भविजिनचलचढाया।नंदी॥उँहीचक्र॥तमहरजो
 जगायकोहर्षहृदयमेंधारा।सुरसुरयतिजिनचलकोंपूजतखहितविचार।नंदी॥उँहीदीप॥दशवि
 मिलायकोधूपवनावै।खेया।क्रमदहनकेकारणें।मूर्जोश्रीजिनदेवानंदी॥उँहीधूप॥उत्तमफलसुचि
 मूर्जोश्रीजिनराया।भक्तिभावउरमेंधरो।मावो।निजपदराजमंदी॥उँहीफल॥जलफलद्रव्यमि
 यको।प्रवर्धवनावें।एवा।शिवसंपतिकेलाभको।मूर्जोश्रीजिनदेवानंदी॥उँहीअर्घी।जयमाल॥अड्डिला

सकलसुगसुरभूजितजिनवरचरनको॥रुषिसुनिनितप्रतिध्यानेभवदधितलनको॥चक्रपतीमहारज
जजेअघलनको॥जिनकोमेंनितजजौसुमंगलकरनको॥॥सुलगमयातछ्द॥जयोदेवदेवेइदुमचरन
ध्यावेजयोदेवनागेइनितशीशनावे॥जयोदेवइंद्रादिसेवकरहावै॥जयोदेवतारेइद्रुजारचावै॥जयोदे
वनागेइचक्कीरवगेशा॥जयोदेवतुमचरणपूजेमहेशा॥जयोदेवतुमचरणपूजेमगेइ॥जयोदेवतुमशरणअवे
सुगेइ॥जयोदेवजगमेंतुम्हीसुकलकारी॥जयोदेवतुमहीसुधर्माधिकारी॥जयोदेवतुमसर्वआनंदकर्ता
जयोदेवतुमहीमहामोहहर्ता॥जयोदेवतुमएकविद्रूपधारी॥जयोदेवदृगज्ञानगुणेश्यभारी॥जयोदे
वत्रयलकेआपस्वामी॥जयोदेवतुमनंतगुणचारयामी॥४॥जयोदेवतुमपंचकल्याणइशा॥जयोदेव
बटुखंडचक्कीमहीशा॥जयोदेवतुमसतत्वप्रकाशी॥जयोदेवतुमअष्टमीहितिनिवासी॥जयोदेवतु
महीवसुकर्मनाशी॥जयोदेवतुमअष्टरूढिप्रकाशी॥जयोदेवनवलद्विकेआपस्वामी॥जयोदेवदशधर्म
धारोअप्रकामी॥५॥जयोदेवमहिमातुमारीअनंतामहीचारज्ञानीलहेनहीतासअंता॥जयोदेवजगमेंदु
म्हीहोसहाईप्रभूसत्यमेंनेयहीजानियाई॥६॥अनेकोसतीकातुमसतवचाया॥अनेकांदुखीकोंदिया
चित्तचाया॥अनेकोअधमजीवतुमनेउवाएकैकोनशंकागणीआपहारोअप्रभूसमेंतुमारेचणकोसुचरो
महामोहनेकर्मचिरकालधरो॥सुदृढचित्तहमनैलखोशनतिरो॥तुम्हीदेवन्यायीकरौन्यावमेगोअममेने

कछूकाजविधिकोविगारो॥नमैनेँकधूरजइनकोविगारो॥विनाकाजमोकौदियेदुःखभारी॥रूपासिंधु
मेरीसुनौंयहपुकारी॥६०॥जिसेंजासकोदोषसोताहिदीजे॥तुम्हीन्यायस्वामीतुम्हीन्यायकीजे॥इमेतो
प्रभू॥एकआसानुम्हारी॥सुनौदेवयहएकअर्जहमारी॥६१॥दोहा॥निधियतिनिजनिधिदीजिगालीजे
विरदनिवाह॥आसजिनेश्वरकोभरो॥तुमहोविभुवनराया॥६२॥अर्थो॥सोखा॥करोरूपाजिनराज॥आ
जकाजयहकीजियोदीजेमुक्तिसमाज॥आयेकोयशलीजियो॥६३॥इत्यादीवर्षदा॥६४॥अर्थनंदीश्वर
दीपउत्तरदिशा॥छितीयरतिकरजिनपूजा॥माह॥जोगीराया॥नंदीश्वरवरदीप॥आठमोंताकीउत्तरजानौ
अंजनगिरताकीपूर्वदिशवापीकोनमैमानौ॥तामेंदुजोरतिकरपर्वततापरजिनगृहमानौ॥सकलसु
रासुरताहिजजतहेनक्तिमांवाधिकानौ॥६५॥इंद्रीनंदीश्वरदीपउत्तरदिशा॥छितीयरतिकरपर्वततैयोन
मः॥अन्न॥अन्न॥अन्न॥सोरा॥उजलनीरअनूपकंचनमारीमैभरो॥पूजैश्रीजिनभूपजन्म
जगदुखकौंहरो॥नंदीश्वरजिनधामभतरअंजनपूर्वदिशा॥हजोरतिकरनामासुरसुरेशपूजैसदा॥६६॥
इंद्रीनंदीश्वरउत्तरपूर्वदिशा॥छितीयरतिकरजिनलयेभ्योनमः॥जल॥६७॥वावनचंदनसारा॥केशरांघमि
लायको॥जजिनपदहितकारुण्यविनाशीपरपाई॥मंदीव॥इंद्रीचंदन॥स्वत्तसुगंधितस्वताम्र
स्तकंचनयालभरिपूजौ॥जिननिजहेताभविजनअक्षयपदमिलै॥मदी॥६८॥इंद्रीअक्षय॥सुवरनवर

नअनेकषुष्ममनोहरलीजियो॥जिनपूजाकीटेकहरेअतनवलदानकमेंनदी॥४॥उईदीपु॥नेव
जविविधप्रकारषटरसमयमनमोहने॥पूजोंजिनपदसार॥तुधारोगउरभागही॥नदी॥५॥उई
दीपु॥दीपकजोतिप्रकाशतमहरउजलचंद्रसमा॥पूजोंजिनपदसारवासलहोशिवमह
लको॥नदी॥६॥उईदीपु॥॥समागरकरपूरचंदनधूपसुगंधहो॥दुखदकर्महोदूर॥पूजोंश्री
जिनचरनकों॥नदी॥७॥उईदीपु॥॥श्रीफललोगवदामपिस्ताकिसमिसआदिलो॥पूजोंजिन
अभिराम॥मनवांछितयातेमिलें॥नदी॥८॥उईदीपु॥॥जलफलद्रव्यमिलायअर्घवनानावोभाव
सो॥पूजोंश्रीजिनराज॥कर्मबंधदुखदामितै॥नदी॥९॥उईदीपु॥॥कर्मबंधकोनाशि
को॥अयेशुद्धनिजरूपसोपरमातमसिद्धप्रभु॥सोकोंकराशिवभूषार॥५॥उईदीपु॥॥जेशुद्धद्रव्यआ
तमसरूप॥जैवीतगात्रैलोक्यभूषा॥लोकेशखरपरविद्यमानकछुदीरघसवनिजगुणस
मान॥॥जैचिनमूर्तिचैतन्यरूप॥जैनिराकार॥आहतिअनूप॥जैअमलअचलअक्षयअनंत॥जै
अविनाशीसुखमयमहंत॥जैअवंगालनउल्हससार॥शतपंचधनुषपद्मीससार॥जैधन्यधन्य
करअर्घवती॥नमध्यमतिनमाहि॥अनेकचिन्स॥खडगासनआसनपद्मधार॥अथवाअनेकआस
नमकार॥सकजलथलदार्द्रीपमाहि॥तिहिउपरसिद्धसरारहाहि॥सर्वबंधरहितप्रभुनिर्विकार

अशरनशरनांगुल निराधार नैलोक्यशिखरके अंतमाहितलवातवलयमैशिररहा हि ॥ अजैसम्प
 कूदर्शनज्ञानसारवलीरजसुक्त्वच्यनंतधारै जैनमरणकारि रहितदेवजैसर्वगुणाकरसहित
 देवाद्यजैकायविवर्जितनिष्कषाय ॥ जैक्रोधमानविनलोभमाय निर्विषयसर्वज्ञायकमहेश्वरूपि
 मुनिजमध्यानधरै हंमेश्वर ॥ मुमचरणकमलकौंशीशनायसुरअसुरध्यानधारैवनाया ॥ जैनरपति
 खगपतिनागईश्वरपदभक्तिकरतनितनायशीश ॥ अजैजै त्रिकालत्रैलोक्यमाहि ॥ जोवसुचराचरलखे
 तासिप्रभुपूरावस्यसरूपदेवाहमशीशनायनितकरतसेवा ॥ हेसर्वशिंगेमणि सिद्धदेव ॥ तुमतकनहि
 पहुँचे शब्दभेवा ॥ तदिभक्तिभावफलदायसोय ॥ भवभवकेमा ॥ हिसहायहोय ॥ वायतैमै अर्जकंरूपका
 राहिरुयासिंधुसंसारतार ॥ ह्रस्वअर्जजिनेश्वर ॥ कैरेदेवजै शिवफलदेकरसुयशलेव ॥ ॥ दोहा ॥ नंदीश्व
 रउत्तरदिशा ॥ जिनगरुहतिंकरमालाभनवकायलगायकैश्वरनीयरुजयमाला ॥ ॥ अर्ध ॥ साख्ता ॥ म
 चकायलगाय ॥ संदौसिद्धमहेशकौंजिनपदहिरदैध्यायावाहैसिद्धशिवथानको ॥ सु ॥ इति ॥ ॥ ६५ ॥
 अथनंदीश्वरदीपउत्तरदिशत्तरीयरतिकरपूजामाह ॥ गीताछंद ॥ वरदीपअष्टमदिशाउत्तरस्ति
 रतिकरराजनी ॥ तिहिशीशजिनवरभवनसोलेबहुरतनमयछाजही ॥ जिनगजविंवअरुत्यसोहैको
 विशशिखराजही ॥ छकवरसमैत्रयवारसुरप्रवितहौपूजराचवहौ ॥ ॥ उद्गीर्नीनंदीश्वरदीपउत्तरदिशा ॥

ततो यरतिकरेभ्यो नमः॥ अन्नं अन्नं अन्नं॥ सुनिराजमनसमनीरनिर्मलरतनभंगम
 राईए॥ जिनराजचरणसरोज आगे भविकनीरचटाईए॥ वरदीप अष्टमंडं दिशमैं तत्तिरतिकरगिरक
 हो॥ तापरजिनेश्वर भवनसुपतिजजतु भविजन शिरदहो॥ उँही नंदी अरदी पउत्तर दिशत तिरपु रति
 करजिनानुभेभ्यो नमः॥ जल॥ गोशीरपावगंधपावनमरु कदशा दिशमैं भरी॥ जिनराजयदतरधारदेक
 रउसता विधिरुतहरी वरकर॥ उँही पंदन॥ अतिसलशितसुचिसार अस्तवथालभरकली जिये॥ जिन
 राजचरनचटापु भविजन अखयपदकौंली जिये वर॥ उँही अस्त॥ वहुवरनसुवरनगधप्रित्तकुसुम
 वरकरलेयकौं भविअतनशरकी विपतिनाशें पुंज जिनप्रदेयकौं वर॥ उँही पुं॥ पकवानना
 विधिवनाकरकनकचालसजाईये॥ जिनराजचरनचटापु भविजननुधागेगनशईए वर॥ उँही चरु
 वरदीप जोतिप्रकाशतमहरतनसुवरनकेकरो॥ भविजीवभ्रमतमहानकारण॥ जिनचरण आगे धरो
 र॥ उँही दीप॥ दशांगधप्रसरितदशा दिशमैं धूपउत्तमली जिये॥ जिनराजचरनचटापु भविजनविघ
 नकर्मदहो जिये वर॥ उँही धूप॥ श्रीफलसुपारी लोंगपिस्तादाखवारिकली जिये॥ भविजनमहाफ
 लमुक्तिकारतभेट जिनवरकी जिये वर॥ उँही फल॥ जल आदिफलपर्यंत वसुविधिद्रव्य अर्घवनई
 ये वसुकर्मनाशक शिवनिवाशिकदेवचरनचटाईए वर॥ उँही अर्घ॥ जयमाला देहो॥ श्री अरुंतजि

वौवनपू.
॥६८॥

नेशकोश्वरनमशीशनवाय॥ जिनजयमालावरनहै॥ ज्योशस्नसहाय॥ ॥ यद्दोषद॥ जेवीतराग
ज्ञानईशा॥ जेनिजलह्मीनिधिदानईशा॥ जेप्रनुपमंउज्जलध्यानईशा॥ जेतुमजगमाहिमहानईशा॥ वि
क्रोधलोभ॥ अरिलयोमारा॥ विनमान॥ अजाचिकवृत्तिधारा॥ विनमायामायासर्वदारा॥ विनलोभगही
मति॥ अपारा॥ विनदेषदुष्टकोदुख॥ अपारा॥ विनरागसंतजनदियेनारा॥ स्पष्टवृत्ति॥ अलौकिकदेखिदेवापुर
सुरकरैतुमचरणसेवा॥ अजयनिजसंपत्तिनस्तिकरेंदाना॥ जयपरसंपतिकेनहीध्यान॥ जितोभीसबको
वसमा॥ जेदेहुधन्यदानारा॥ राजा॥ जेजाचकतुमद्वारा॥ आया॥ महिलेयकष्ट॥ इच्छापलाय॥ ज
तुम्हीदातारदेका॥ शिरनायजिनेश्वरकरतसेवा॥ जेजाचक॥ आवैतुम॥ अगारा॥ सवयुगफलमार्गे
गातारा॥ सवइच्छतफलपावै॥ प्रनूपा॥ धनितुमलह्मी॥ अक्षयस्वरूपा॥ दा॥ जेइंद्रजाचनाकरैसोयमु
रुषिभीजाचकरूपहोया॥ सुमचरणकमलकीभक्तिसारा॥ मार्गे॥ अद्भुतमहिमा॥ अयाग॥ अजयवाहिजल
अति॥ अघाया॥ जोअंतरागकोकरैसाया॥ जेनामिलैतरसनापवित्रा॥ सुरध्यावतहैप्रभु॥ एककिता
शरनशरनसहायदेव॥ सुमविनकालसुखदयदेव॥ सुमभक्सांग॥ सेंपारदेवा॥ हमकरतसदतुमचरनसे
॥ जेजवतकमेरेजगतवासा॥ जेजवतकदैवैकर्मनावा॥ जेजवतकतुमप्रदकमल॥ आसा॥ समहृदय
आय॥ वासा॥ ॥ दोहा॥ ॥ भवनाशनभगवानकेचरणनशीशनवाया॥ अरजकरतहै॥ एकमे॥ भवभवहोहु

या ॥ १ ॥ अर्घ्यं ॥ सोमदा ॥ तारणं तरणा जिनेशाय ह्प्रजनी सुनिनी जिनेये ॥ का दो सर्व कलेशा मम इच्छा पूर्णी
करे ॥ २ ॥ प्रति ॥ ॥ ५ ॥ ॥ अथ नंदी श्वर दी पउत्तर दिश चतुर्थ रतिकर जिनालय भो नमः पूजा माह
चोपाई ॥ नंदी श्वर उत्तर दिश जानै ॥ चौथोरति कर जिन गुरु मानौ ॥ सुरपतिमित प्रति पूजा चो वै ॥ जिन पद को हर
मुख पचटावै ॥ उँही नंदी श्वर दी पउत्तर दिश चतुर्थ रतिकर जिनालय भो नमः ॥ अंगन ॥ अंगन ॥ पुष्प
यग्न द्रव जल उजालाये ॥ सुरपति जिन पद अग्र चढाये ॥ भक्ति सहित प्रभु के गुण गावै ॥ जन्म मरण दु
ख मूल नशावै ॥ नंदी श्वर उत्तर दिश जानौ ॥ चौथोरतिकर गिरत हा मानौ ॥ ता पर जिन माँ दे ॥ सुख दाइ
पूजन सुर तेन हर बाइ ॥ उँही नंदी श्वर दी पउत्तर दिश चतुर्थ रतिकर जिनालय भो नमः ॥ जल ॥ मलिया रा
र चंदन घसिलीजे ॥ नाम अधिकेश गंध धरीजे ॥ शक्तिसहित जिन वस्त्र दफूजे ॥ भव आतापरहित भविहूजे
नंदी नाए ॥ उँही चंदन ॥ अक्षतंक चन थाल भरवो ॥ जिन वस्त्र न पुंज चढावो ॥ मोद साहित जिन के गुण
गावो ॥ छह विधि अक्षत यपद को पावो नंदी बाइ ॥ उँही अक्षत ॥ दश दिश गंध रही महकाय ॥ ऐसे फूल सुगंधि
त लाया मकर ध्वज भंजन के काज ॥ भव्य जीव पूजे जिन राज भंडी बाइ ॥ उँही पुष्पा ॥ फेंनी गो जा मोदक वा
जे ॥ शुद्ध सरस वन वावत ताजे ॥ दोष लुधा निरवार न काजे ॥ चरन जन जत भवि श्री जिन राजे नंदी बाइ ॥ उँही क
उत्तम दी पवन करलीजे ॥ जिन पद को भवि पूजन कीजिये ॥ ते मोह महा तम भागे ॥ ज्ञान प्रकाश अनूप मजारे

बौवनम्
॥ ६८ ॥

दीर्घद॥ उँहीदीयं॥ गंधअनूपदशोदिशसोहोभविजीवनकेमनकोमोहोअसाधूपधनंजयखे
दीन॥ ७॥ उँहीधूपं॥ श्रीफललौंगविदामघुहारे॥ नारियेलपिस्ताअधिकारे॥ श्रीजिनवरकेभेट
॥ भयजीवशिंवफलकौमावै॥ नंदी॥ उँहीफल॥ जलफलअर्घवनायचढावै॥ जिनयदम
केददेंमैंलावै॥ सोनिअैनिजपुएयवढावै॥ कंमकमसोंशिवमंदिरजावै॥ नंदी॥ ८॥ ॥ अर्घ्य॥ जयमार
हा॥ श्रीजिनचरणप्रणामकराधरिसिद्धनकोध्यान॥ जयमालावर्णनकंस्सजिनआज्ञापर
॥ ९॥ छंद॥ जयदीनबंधुकुरुणा॥ निधानजयअशरनशरनसहायमान॥ जयभक्जलकारनतर
वाभयजयकसुरपतिकरतसेका॥ जयप्रथमदिगंवरधर्मधार॥ जयजीतेदजेघातिचार॥ जय
यधर्मउपदेशदेन॥ जयजयजयविधिश्मभनेय॥ जयपरपदार्थसवत्यागदीन॥ जयआत्मस्वार्थ
रितमनकीन॥ जयपुरुषारथ्यकरिसिद्धचार॥ जयजयजयत्रयविधिश्मउचार॥ १०॥ जय
प्रथमधार॥ जयफिरलीनों॥ चारित्रसार॥ जयप्रगंदेकेवलज्ञानभान॥ जयअन्यविधिश्ममहान॥ ११॥
किजीवसुखलहेसार॥ जयदुष्टअविनयीदुखपसार॥ जयपरमवीतरागी॥ अनूपजयश्म

यजगतभूपा॥ १२॥ जयनामजपेसोसुखलहंत॥ जयध्यानधरेसोदिववसंत॥ जयनिस्यहीनिर्वाण
यश्मनत्रयविधिमहान॥ १३॥ जयऊँमध्यपातालवास॥ जयतुमचरणवुजजपेखासा॥ १४॥ लोका

तुमहीजिनेश॥ ह्रमजयजयजयत्रयवावेश॥ जयतिहुंकालमें एक रूप जयशुद्धतयापितवचस रूप
जयउत्पन्नजयउत्पातव्ययधो॥ व्यसू॥ जयजयत्रय॥ अन्नप॥ जयतुमजिनेशनिर्मलमहान
जोसमलरहेसोकरजाना॥ जोहगरोगीलखिशंखलेतपीतादिकहेसोनरअचेत॥ धमभुतुमशरीरकी
ज्योतिपाय॥ प्राकाररत्नमयभयो॥ आयाप्रभुतुमस्वभावअतिस्वत्तजान॥ प्राकारभयोस्फाटिकसमा
न॥ १०॥ जय२ तुममहिमा॥ प्रगमसार॥ गणपतिनहिपावैकहतपार॥ जयतुमप्रभावसेमानभ्यभजगमा
नहैअद्भुतअचंभा॥ ११॥ जयजयजिनराजदयानिधान॥ करदयाजिनेशरूपैमहान॥ संसारस्वार्तेकरोपार
जगबंधवयेसुनियेयुका॥ १२॥ दोहा॥ दयाधुरंधरदेवतुम॥ गुणसागअरपूर॥ करोजिनेशरूपैछपाहिर
देवसोहजू॥ १३॥ अर्ध॥ कोरु॥ याजगविपतमहार॥ विनहितबंधवतुमसुनेमेरी॥ सुनोपुकारतारतार॥ अर
जीकरु॥ १४॥ इति॥ ॥ अथ॥ ॥ अथनंदीश्रद्धीपउत्तरदिशपंचमरतिकरपूजाभाह॥
भीताछह॥ वरदीपअष्टमंडलदिशमेंयोंचमोरतिकरकहो॥ तापरअष्टकृतिमश्री॥ जिनालयसुरअसुदर्श
नलक्षो॥ तहांविवजिनवरकेअन्नूपमसुरासुरमनमोहिया॥ इंदेवसमसर्वज्ञजिनकौरलमयछवि सोहि
या॥ १५॥ इंद्रेनंदीश्रद्धीपउत्तरदिशमेंपंचमोरतिकरजिनालययोगेयोगमः॥ अमन्त्र॥ अन्न॥ सुधर्म॥ योगी
रासा॥ अंतरारुहैजगप्राणीगतिगतिमेंदुखपावै॥ तादुखदूकाएकौंकारण॥ जलजिनचरणचढो

मंशेध्वरकीउत्तरदिशमेंपंचमरतिकरसोहेतापरश्रीजिनभवनअकृत्तिमसकलसुरासुरमोक्षो॥
 नंदीश्वरदीपउत्तरदिशपंचमरतिकरजिनालयेयोनाम॥जल॥॥जन्ममरणदुखतापतपैतनभवनमेंदु
 केशांतमुधासुखपावनभविजनचंदनचलनचढावैमंरीगर॥उंहीचंदन॥तनतनधरतभरतविपताअतिज
 गमैयितरहावो॥अस्यपदकेकाजचतुरनभक्ततचरनचढावोनंदीभष्ट॥उंहीअक्षतं॥नरनारी
 डवेदकेखेदसहेकहुतेरोभादुखहरनचलजिनपतिकेपुष्पचढावतनेयेमंरीभष्ट॥उंहीमुष्प॥जगतजीवकुल
 सलजावतएकलुधाकेप्रेरोताअजीतनउत्तमचरुलैपूजतजिनपदतेरोनंदीभष्ट॥उंहीमेवदा॥ज्ञानप्र
 काशविनाजगमाहीजीवसंसादुखभारी॥ताकीप्रापतिकजजिनेश्वरपदतरदीपकधारैनंदीभष्ट॥उंही
 पं॥याविधिवसनरपतियशुद्धोवैथावरमैसुर॥कैसाविधिरहनशूपायनश्रीजिनचरनचढावैमंरीभष्ट॥उं
 हीधूपं॥सर्वोत्तमअविनाशीसुखकरसुक्तिमहाफलजानौ॥ताकेकाजभव्यजिनवरकेपदतरसुफलच
 नंदीभष्ट॥उंहीधूपं॥जलफलआठौद्रयमिलाकरअर्घवनावोभाईअष्टकर्मकेनाशनकारनपूजोंश्रीजि
 नराईमंरी॥६॥उंहीअर्घ॥जयमाल॥रोह॥शक्रचापधरवज्रधरविद्याधरवीरंभीतरगगपदतर
 निजमस्तकधरिणी॥मच्छीधंद॥जयजयजिनरणदयानिधानभवंकाननहाननद्वमहान॥ज
 यकमलगणअमलभाननयसंतचकोलचंद्रजान॥अयदुखदवागिर्कोमेघरूपात्रयखियतिमेघ

कौपवनरूपं जय अघपर्वतकौवज्ज्वाला जय भ्रमतमकौरविकिरणसारं जय कामसर्पकौंगरुडरूपा जय
 क्रोधजहरकौ अमृतकृपा जय मानमहागजकौ स्रगेन्द्र जय चरणकमलपूजे सुरेंद्र जय मायातरवरकौ
 कुण्डलजय लोभजहरकौ सुधाधारं जय मिथ्यामदगदमेघराज जय भवजलतारनकौ जहाज ॥ जय भ
 विजनकौ सुरतरु समान जय चिंतामणि तुमही पुमान जय कालचक्रकौ कालरूपा जय देवनकौ शिरे देव
 मूपा ॥ जय चारद्या तिया कर्मनाशि जय केवलज्ञान भयो प्रकाश जय भविजीवन हितकाज सारं जय
 आरजमें कीनों विहाय जय दिव्यो धर्म उपदेश देवा जय मुनि आवक दो भाँति भेवा जय सकल रती मुनि
 राजधर्म जय देशव्रती हे गृही पर्म अजय परिग्रह त्यागी नगन काय जय निस्त्रही गुरु कहें भायव सुवी
 समूल गुणधार सोय जय धर्म गुरु जानौ सुलोया जय गृही धर्म गयार ह्मकार ह्मक सुविनास व विफ
 ल सार जय समकित दरजा प्रथम जाना ह्म विना कियें सब व्यर्थ माना ॥ इत्यादि बहुत उपदेश देय शिव
 धाम विषे प्रभुवास लेया प्रसन्न य अनंत थिर है सार सो सिद्ध करो भव सिंधु पार ॥ जय वत कजग मै मम रहे वा
 सा जय वत क अरिक मर्म करे प्रकाश जय वत क तुम हो तु सहाय देवा क्रजोरि जिने प्रकरत सेव ॥ दोहा जय व
 क रविशशि गगन में मेरु रहे भूमाहि तव त कवतौ धर्म जिन जय वंतो जग माहि ॥ रईनी अर्थ सार सा देह
 बिरुस मजानि नेह तजो यातै सुधी ॥ हित अपनौ पहिवान सेवौ जिन वर धर्म कौ ॥ ३ ॥ इत्याशीर्वादादिति ॥

नंदीश्वरहीपउतरदिशषष्टमरतिकरपूजामाह॥ चालजोगीरसा॥ नंदीश्वरकीउतरदिशमें
 रसोहीतापरश्रीजिनभवनअरुचिमसुरसुरपविमनमोहे॥ भावभक्तिकरिशक्तिहीनमेंसुमप
 ॥ याहीभक्तिभावसोंनिश्चैमनवांछितफलपाऊ॥ उँहीनंदीश्वरदीपमष्टमरतिकरजिनमें
 ॥ अन्ननाभननापुष्प॥ अद्याष्टक॥ दीनाछंद॥ चहुंगतिभ्रमतदुखवहुतपायो॥ कहेथिरनराईयो
 दुखदवागिससुलक्ष्मणजिनचरणललचाईयो॥ सुभदीपअष्टमइंदिरशमेंषष्टमौरतिकरजहो
 भवनसुरपतिनिमज्जेअतिहर्षउरधारैजहो॥ उँहीनंदीश्वरदीपमष्टमरतिकरजिनासुयेभ्योनमज
 ॥ जगमाहिबहुतशरीरधारैभवातापसह्योघनो॥ तिहिशमनकारनपरमचंदनजिनचरनपूजाभनो
 ॥ प॥ २॥ उँहीचंदन॥ तिहुकालविननिजरूपजानैजगतमेंविपताभरी॥ तिहिभ्रमनिवारन
 तलायजिनपूजाकरी॥ सुभदीप॥ उँहीअनंत॥ मनकल्पनाकेजालमाहीफसवहुविधिदु
 चारुदारुविनाशकारनपुष्पपूजनजिनकह्योसुभदी॥ उँहीपुष्प॥ सुरअसुअलाह
 याकैवशपरेजिरुचुधानाशनहेतचरुलेजिनचरनआगेंधरोसुभदी॥ उँहीनैवेद्य॥ जिहतमविषै
 शिसूरभमेंजीवनिजनलखावही॥ तिहभ्रममहातमनाशकारनदीपपूजनलावही॥ सुभदी
 दीप॥ दशगंधमिश्रितधूपकीजैभवभक्तिवढायकै॥ वसुविधिजलावनहेतजिनपूजेसु

यके। शुभभाष। उँही धूँ। जग सुफल फलदायक अतः प्रमथम जिनवर को कहो। तसु मासिकारण
 भव्य उतम सुफल जिनवर पदजौ। शुभभाष। उँही फल। जलगंध अतः तसु व्यचरुवर दीपधूपवना
 ई। फललाय अर्धवनाय जिनवर चरन माहि चढाई। शुभभाष। उँही अर्ध। जयमाल। बह। तिसु
 जग चंद जिनेश के चरन नशीशन वाया। ऊँ जिन माला सही सुनौ सुधी चित लाया। यही छर। र
 जगवीतराग सर्वज्ञ देव। शत इंद्र। आपका करत सेवा जयतु मसर्वज्ञ कहें पुरान। जिन के प्रगढौ के
 बल सुज्ञान। जय सकल वसुज्ञायक सस्रूप। जय लोकवर्तित्रय काल रूप। जय सव कौं जानै एक
 भाव। जय ज्ञान शक्ति। ऐसी अपार। जय सुख अनंत तत्तायक सस्रूप। जय तै सोही बल है प्रनृपा।
 तब दर्श। अनंतानंत धार। जय जातिनंतराज तसार। जय स्तायक लब्धि अनंत रूप। गुण अक्षय धा
 रे निज अनूप। जय निराहार तन जोतिवंत। जिह प्रगै बहु रविश शिलजंत। जय प्रभा चक्र अतिज
 गमगात। भवि देव तम भवसातसात। जय तीन छत्र शिर पर सुहात। तिनकी मुकटा मणिल जल
 जात। मनु तीन रूप धरिक। अनृपा। पद जजत नख तनु तनख तस्पा। जय चौस ठिचामर डरत सोय
 दुंदुभीशब्द अति मधुर होय। जय तरु अशोक सव हरें शोक। जिह देखत भागै पाप थोक। जय न
 भसे वर से फल सार मनु अतनु भजो हथिया। लख जिन धुनि वर से सुधा धार। भवि चातक वा

हृतैः अपारं जयधर्मनौ उपदेशसारहितस्तु सदा आनंदकारुण्यसिंहासनपै अंतरीक्षमनुराननयम्रा
सनप्रतस्तु जिनवररविराजैः प्रतुलजोतिः जिनके प्रतापनिशिनाहि होतु अत्त्यादि प्रतुल जलसी निवास
जिनराजविराजितसुरभिखास जयशतयोजनचउदिशमें डारमहि पडहि काल अचिर अत्र अपार सानहि
होय जीवबंध जिनप्रभाव जयजाति विरोधी मित्रभाव जय जय जिनराजदया निधान भविजीवन कौहि
तकर महाना जय मउरमाहि वसो जिनेश जय ज्ञान जोति विकसो अशेषा जय भवभामरि निरवार देव
कर जोरि जिनेश्वर करत सेवा ॥ दोहा ॥ अकृतिम जिनचेत्य गृहवन्दो मनव वकाय बुधिवारि धिबद्धित करो मे
री करो सहाय ॥ ३ ॥ उद्दी अर्थ सोदा ॥ करो हृपामहार राज निज विद्यावलदी जियो षडे गरीव निवाज इत नोय
रा प्रभुली जियो ॥ ४ ॥ इत्याशीर्वाद ॥ ॥ ५ ॥ अथ नंदीश्वर दीप उत्तर दिश सप्तमरतिकर पूजा माहाया न अडिल ॥
नंदीश्वर दीप आठमो जानिये इंदु दिश में सप्तमरतिकर मानिये ॥ आपर श्रीजिन भवन जै सुर आय कौहम
जिन कौशिर नायन में मन लाय कै ॥ उद्दी नंदीश्वर दीप सप्तमरतिकर जिनालये भ्योनमः ॥ अत्र अत्र अत्र अत्र अत्र
व्या ॥ जो गीरा सा ल्याले मे ॥ भवि श्रीजिन वरके पाय सुकारन पूजत हे भाई ॥ टेक ॥ पद्म इह को उज्जल जल ले रत्नक
दोरी धारो धार देत श्रीजिन वर आगे जन्म जग निरवारो भंदीश्वर सप्तम उतरे गिरिरतिकर जिन गृह जानो सव सु
रा सुर पूज रचो वे सफल देव परमानो सुचार ॥ उद्दी नंदीश्वर दीप सप्तमरतिकर जिनालये भ्योनमः ॥ जलेश नावन

चंदनदाहनिकंदनकेशरसंगधसावैलक्ष्मरोगभवरोगनिवारनजिनपदप्रग्रचढावै सुबभंशे ॥ उद्दीचरं
तंदुलसुत्तसरलसितशुचिप्रतिकंचनयालभरायेप्रतयपदपावनजिनपदमेप्रततवरनचढावै सुबभंशे ॥
उद्दीअत्तं ॥ हेमरतनकरंगविंगेगुप्यसुरसुरलवैकामप्रगनिकेशमनकरनैकौ श्रीजिनवरनचढावै सुबभंशे ॥
उद्दीपुष्पं ॥ सूपकारकृतव्यजनताजे शुद्धयालभरावै सुधारोगदुखदूरकरनैकौ जिनवरनचढावै सुबभंशे ॥
उद्दीचरं ॥ नानाविधिकेदीपमनोहरशक्तिसमानवनावै ॥ प्रसतमहलकरनप्रतमहितश्रीजिनवरनचढावै
सुबभंशे ॥ उद्दीदीपं ॥ धूपसुगंधदेशैकै श्रीप्रलिसमूर्चलिवै ॥ दुष्टकर्मजारनकेकारनश्रीजिनभय
ढावै सुबभंशे ॥ उद्दीधूपं ॥ बहुविधमिष्टसिष्टफललेकर सुवरनयालभरावै ॥ मुक्तिमहाफलकाजशवीपति
नपदप्रग्रचढावै सुबभंशे ॥ उद्दीफलं ॥ जलफलप्रधवनायगायगुणसुरसमूर्चलिवै ॥ तीर्थप्रकेचननश्री
गै सुरपतिप्रग्रचढावै सुबभंशे ॥ उद्दीअर्घ्यं ॥ जयमाला ॥ दोहा ॥ त्रैसठिप्रकृतिविपायकै पायो कैवलज्ञान
जिनपदचरनसरोजकीनमो सदहितदाना ॥ पछ्हीधुं ॥ जयकेवलज्ञानधनी जिनेश जयचारणरूपिमुनिज
पतशेष ॥ जयनेसठिप्रकृतिदर्दविपाय ॥ जयतिनके नामकहौ सुभाय ॥ जयज्ञानावरणी पंचभेसभवभेददर्श
नावरणखेखवसुवीशमोहनी प्रकृतिचूषमाण ॥ अंतरायके करे दूर ॥ अजयसोलहप्रकृतिप्रघातिहा निमायो
जिनराजमहानज्ञानशतंद्रचरणकौं श्रीशनाथ ॥ मुमकौ नवकारकै रैजिनाय ॥ अजयभुवनपती दशभेददेव

प्रतिभेदपुरंदरचारएव॥ इसभौतिभुवनचालीसइंद्रवत्तीसइसीविधिव्यंतरेइ॥ भौवीसकल्पवासीसु
 प्राशिसूरदोयहुतिवरमहेशचक्रीनरेशपशुसिंहजानशतइंद्रसीविधिभयमान॥ इक्ष्मसुरप
 विभवसार॥ भविजानौजिनआगमदुवारसवकीसेनाहेसातभौतिबहुभौतिविक्रियाधरेभ्रंति॥ घ
 राजपंचकल्याणसार॥ पूजनकौं आवैसुरअपा॥ लोकांतिकतपकल्याणएवा॥ पूजनकौं आवैयहीटे
 आअहमिंद्रघोडेनिजसुथान॥ जयअैसीवलुखभावजान॥ निजथलसैंविनयकरैसुरेश॥ अतिमंद

॥ जिनराजदियोउपदेशएव॥ हमकरतसदाजिनचरतसेवा॥ जयभवतारकतुमजिनेशा॥ जग
 हिंयापतुमहीअशेष॥ जयतुमपदरजममशिरसगा॥ अनिवारहोयहअरजसारसुनिखेहुजि
 श्वरदेवएव॥ कररूपायहीजगतारदेव॥ २०॥ दोहा॥ नंदीश्वरउत्तरदिशासमरतिकरभाला॥ जिनमंदिर
 ॥ मईपूरनयरुजयमाला॥ २१॥ अर्घ्य॥ सोरठा॥ दीनबंधुमहाएज॥ प्रजसुनौममदीनकी॥ तारनतरनजि
 नभवजलपासुतासिये॥ इत्याशीर्वाद॥ २२॥

॥ अयंमंदीश्वरदीपिअसमरतिकरमाह॥ कुसुमलताहुं
 नंदीश्वरउत्तरअंजनगिरताकीउत्तरवापीजानादूजैकौंनआरमौरतिकरजिनमंदिरसोहेशिगथाना॥ चित्र
 चित्रालमयप्रतिमाइकशतआठशास्वतीजानासुरपुरपतिपूजननितआवैमैदिनकौं॥ पूजौंधरि
 नार॥ उहीनंदीश्वरहीपुउत्तरदिशाअसमरनिंदरगिराएजिनमंदिरमेनमः॥ अन्न॥ अन्न॥ अन्न॥ पुथ्य॥

जोगीरासा॥ ज्ञानावरणीकर्मउदयसेंज्ञाननशक्तीपावैताअरिनाशकरनकोभविजनजिनपदनीरचढावे
नंदीश्वरउतररतिकरगिरअष्टमजिनगृहजानेसुखसुपतिनितपूजराचोपावेसुखअधिकाने॥३॥
दीश्वरदीपअष्टमरतिकरगिरपरजिनमंदिरभ्यानमः॥जळ॥२॥ दूजो कर्मदर्शनाचणीदर्शनगुणकोरोकेजिन
वरपदपूजेचंदनसोंयातेविधिअसोखेमंदी॥३॥ उद्दीचंदन॥ तीजो कर्मवेदनीजगमोनिजकारजकोयाती
जजतजिनेश्वरपदअक्षतसोंयातेनिजनिधिपाती॥३॥ उद्दीअक्षत॥ मोहकर्मवलवानजगतमेंइंद्रादि
कवशकीनेफूलचढायजिनेश्वरागेंमोहकामकसिलीजिनंदी॥३॥ उद्दीचुण॥ आयुकर्मकोबंधनभा
रीजीवजगतकसिराखेनेवजसोंजिनपूजजगतजननिजअनुभोरसचाखेनंदी॥३॥ उद्दीनिवेद्य॥ नामकर्म
चशजोवजगतमेंनानादेहपैसोहीपक्सोंजिनपदपूजोभविजनअविचलकरैखेनंदी॥३॥ उद्दीदोष॥ गोत्रक
र्मकेउदयजीवयह्नुंचनीकुलपावोभूपदहनखेवतजिनआगेजिनपदकोंभविपावेन॥३॥ उद्दीधूपा॥ अंत
रायदुखदायवडेजगमातेंभयहरिमनमेंश्रीजिनचरनचढायमहाफलभविपाविधिकोंमानेंन॥३॥ उद्दी
फल॥ जलफलद्रव्यमिलायमनोहराअर्घकरोभरथारीश्रीजिनसन्मुखपुंजकरतभविसर्ववियतिपरिहा
रीनंदी॥३॥ उद्दीनंदी॥ शरीपअर्घीअयमाला॥ दोहा॥ अष्टमदीपमुहावनोहाकीउतरवोराअष्टमरतिकर
जिनभवनामोंसदाकरजोरायपदडीछंहा॥ जयनंदीश्वरहीपजानजयताकीउतररशिमलानअयअ

जनपर्वतस्यामरं गजयता कीउत्तरदिशः प्रभंगः ॥ प्रपराजितवापीशोभमानः ॥ तिहृदितियकौनकौमध्यमान-
 यरतिकरपर्वतकंमरूपः ॥ साऊपरजिनगरहृष्टविप्रनूपा ॥ गजयशतयोजनआयाम्मानः ॥ तंवे
 नामचहृतरयोजनहैउतंगत्वावनजिनमंदिहसीढंगः ॥ समवमवशरनरचनामहानः ॥ जिहृदेयकभविजनपा
 नजयजयजिनविंवैविराजमानः ॥ शतआरः अधिकशोभासमानः ॥ धाजयउच्चधनुषशतपंचरेखामद्भासन
 राजैगतसनेहाजयदी ॥ सिवंतअतिरूपवंतः ॥ गजयवोलतहेमानहैसंतभाजयजिनसरूपलखिदेवरजः ॥ प्र
 हर्षितउरपूजासमाजः ॥ जिनशवीसायकुभक्तिभावाजिनवरपदपूजैसहितचावाः ॥ द्वाअप्रतिउज्जलजल
 मगारः ॥ प्ररुगधसहितचंदनअपागजिनचरन्कमलतलधारदेतमानौबौधैभवसिंधुसेतः ॥ जयमुक्ता
 अक्षतअनूपा ॥ जिनपतिपूजैसुरगभूपाजयकल्पवृक्षकेकूलसारः ॥ गजयशक्रधैरैजिनपदअगारा ॥ अजय
 बहुविधिस्वादरूपसुरपतिजिनचरनजैअनूपाजयरतनअमोलिकदीपसारः ॥ आखंडलपूजैजिनागारा
 जयस्वर्गधूपअतिगंधसारः ॥ प्रमरेशचढावैजिनगाराजयउत्तमफलजिनपदमगारजयशक्रचढावैहर्षधार
 करिणुतिनुतिहरिजिनवरअगारा ॥ मुदितचढावैअर्घधारजयकरुनानिधिजिनदेवदेवहमशरनागत
 येसुएकारः ॥ शिवेशमहिततुमहेजिनायाभवभवमोकूहूजैसलयाकररूपपायहीजगवारदेवकरजोरिजि
 तसेवा ॥ १२॥ दिहा ॥ नंदीअउत्तरदिशा ॥ जगहो होयजिनभूतिनसवकैपूजैसदा ॥ अर्घचढायअनूपा ॥ शतंदी

रवरदीपकेचौवनजिनप्रागारावंदौमनवचकायकेवांछितार्थदातार॥ अर्घी॥ सोरठा॥ तुमप्रभुदीनदया
 लामैंप्रतिदीन-- सुनौ। मेरी प्रजहुपाल। फ़रोपारसंसारसैं॥ कुसुमलताछंद॥ दाईदीपएकसोसत्तर
 द्वेत्रमध्यवती। जिनरायाअथवासर्वसिद्धपरमेश्वर॥ आचारजपाठकमुनिरायभूतभविष्यंतवर्तमानकेपाँच
 परमेष्टी। हितसाज। जन्मजन्ममरणसहायक। अर्जजिनेश्वरकीसुखसाज॥ उँहानंदीश्वरदीपत्रिकालवती
 पंचपरमेश्वरी॥ अर्घी॥ इतिसंपूर्णम॥ ॥२॥ ॥ छप्य॥ श्रीमन्माधवसिंहसर्गईजैपुरस्वामी॥ प्र
 देवीकोजन्मकह्योउमंगरगढ़नामी॥ सहोवासममखासजिनेश्वरनामकहायो॥ भक्तिभावउल्लासजिनेश्वर
 कोगुणगायो॥ छंद॥ आवकउत्तमजातहो॥ प्रज्ञावतपुरवार॥ निजपरहितकेहितयत्ना॥ कियोपाठसुखकार
 शब्देशहंठारमनारग्रामराणोलीजानौ॥ अनोदिककेजोगकछूकदिनतहो॥ रानौ॥ सतसंगतपरभावदाव
 यहउतैंआयो॥ रचिनंदीश्वरपाठसकलनरभवकरपायो॥ छंद॥ शब्दरुअर्थअनादिहै। भमकर्तोमति
 जानियो॥ करजोरिजिनेश्वरइसकहै॥ पत्नीसुबुधिराख्यानियो॥ २॥ दोहा॥ चित्रसालसिंहदेवजूमजापा
 लमहारज॥ जिनकीघ्यायमेंप्रजासुखीरहेहिसाज॥ प्रपनेश्वरमेंकोपालेइष्टमहान॥ दुर्जनदुष्टन
 करिसकौ॥ कभीकिसीकीहान॥ शतउनीश॥ अरुसाठभितसंवतमहिनामाहा॥ सुदियाएससध्यासमें
 पूरणकियोनिवाह॥ सुखीरहो॥ राजाप्रजासुखीरहो॥ सबजीवसुखदायक॥ जिनधर्मयत्नाजगभैरहो

श्रीनंदीवैवन्

॥७५॥

सदीवध॥ अंनमंगल॥ रत्नज्योती॥ श्रीजगतपतीमहारज अरजसुएलीजो॥ मभुभवसागरसोंपासा
हिकरहीज्यो॥ महाराजयहीमें॥ आसलगाईजी॥ करुणा निधिजगताएकहावो॥ शरणसहाईजी॥ देर॥
याभवसागरकेमाहिवहुतदुखपायो॥ तित्यारचौरासीलाखजो॥ निफिराया॥ महाराजकंहीथि
रनाहिरहायोजी॥ हुखहीदुखभरपूरसुकवकोअंशनपायोजी॥ चिरकालनकंपश्रुजो॥ निवियति
बहुभोगी॥ अरुमानुषगतिकेमाहिभयोतनरेगी॥ महाराजकंभीसुरपदपायोजी॥ तहोंदेखकरविभ
वपराईदुखअधिकारहीजी॥ देर॥ देर॥ याकर्मअरिकेवशये॥ मैंनेसहेदुखघोरहो॥ सोनाहितुमसेधि
येप्रभुजीकरै॥ अजहूजोरहे॥ तुमकेअधमउधारस्वामी॥ व्ययोजसबहु॥ ओरहे॥ हेदेवकर्मविजयीपह
चहदिशसोरहे॥ त्वोपाईरूपक॥ सवजगकेप्रतिपालकेहावो॥ विनहितपरमक्यालकहावो॥ ऐसोविर
जगतमेंछाया॥ सुनकरकैशरनै॥ अबआयो॥ जयवंतजिनेश्वरविरद॥ आपलखलीज्यो॥ निजअनय
निधिभंडासारमोहिदीज्यो॥ महाराजतुम्हीपतिवंधुभाईजी॥ करुणानिधिजगताएकहावो॥ शरणसहा
ईजी॥ ६॥ इतिश्रीनंदीश्वरदीपवैवन्पूजासमाप्त॥ श्रीसंवत् १८८६ कार्तिकसुक्ल ११ भौमवासरे॥ लिखि
तमिदंभजनमनालालशर्मण॥ लेखक पारकाचिरंजीयाता॥ श्रीशुभम्॥ श्रीरत्न॥ कल्याणमस्तु॥ श्री

श्रीशोकनंदी७५

